

राजस्थान पुरातन बन्धुमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतर्हसिंह, एम ए., डी.लिट्.

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ११४

सांख्यायनमुनिप्रणीतं

सांख्यायनतन्त्रम्

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७० ई०

वि० स० २०२६

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १९९१

प्रधानसम्पादकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ने ५ हस्तलेखों के आधार पर किया है और पाठान्तरो को पाद-टिप्पणियों में दे दिया है। विद्वान् सम्पादक ने पुस्तक के पाठ को शुद्धतम रूप में प्रस्तुत करने के अतिरिक्त न केवल विद्वानों के लिए अपितु साधकों के लिए भी उपयोगी एवं आवश्यक सामग्री को भूमिका तथा परिशिष्टों के रूप में दे दिया है। यह ग्रन्थ यद्यपि आकार में छोटा है, परन्तु 'वगला' की साधना के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सम्पादक ने मन्त्रोद्धार को स्पष्ट करने का जो प्रयत्न किया है वह स्तुत्य है और इससे प्रकट है कि श्रीगोस्वामीजी को तन्त्र के व्यवहारपक्ष का कितना ज्ञान अपनी पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला है। इसीप्रकार पुस्तक की भूमिका के अन्तर्गत सम्पादक ने आगम-निगमादि के विषय में जो सामग्री प्रस्तुत की है वह भी बड़ी उपयोगी है और मैं इस सबके लिए विद्वान् सम्पादक को बधाई देता हूँ। तन्त्रशास्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, परन्तु व्यवहार-पक्ष की उपेक्षा करने से वे प्रायः दुर्बोध बन गए हैं। मेरी इच्छा थी कि वह कभी इस ग्रन्थ में नहीं रहती। श्रीगोस्वामीजी तन्त्र-व्यवहार में भी पारङ्गत हैं, अतः इस कमी को दूर करना उनके लिए कठिन नहीं था और उन्होंने किसी सीमा तक इसको दूर किया भी है। परन्तु फिर भी ग्रन्थ के आकार के बढ़ने के भय से बहुत सी सामग्री नहीं दी गई। आशा है वह सब दूसरे रूप में तन्त्र-शास्त्र के व्यवहारपक्ष को उपस्थित करते हुए अन्यत्र दी जा सकेगी।

ग्रन्थ का मुद्रण प्रारम्भ हो गया था, परन्तु सम्पादक महोदय की अनेक व्यक्तिगत कठिनाइयों अथवा प्रतिष्ठान या प्रेस में उपस्थित अनेक विघ्न-बाधाओं के कारण, ग्रन्थ के प्रकाशन में आशातीत विलम्ब हुआ जिसके लिए मैं प्रतिष्ठान की ओर से क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में, मैं प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष म० विनयसागर तथा साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्रीहरिप्रसाद पारीक को धन्यवाद अर्पित करता हूँ जिन्होंने रुचि एवं लगन के साथ इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने में सहयोग दिया है।

१ जनवरी, १९७० }
जोधपुर

— फतर्हासिह

भूमिका

भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश है। यहाँ अनादिकाल से निगम एव आगम-सम्मत धर्म की ही स्थिति प्रधान रूप में प्रचलित रही है। मन्त्रब्राह्मणात्मक वेदो को निगम अथवा छन्द नाम से वामन, भट्टोजी दीक्षित आदि महापण्डितों ने अभिहित किया है—‘नितरामत्यन्त निश्चयेन वा गच्छन्ति अवगच्छन्ति (जानन्ति) धर्ममनेनेति निगमश्छन्दः’ अर्थात् ‘रन्तर अथवा निश्चयपूर्वक जिसके द्वारा धर्म को जानते हैं उसे निगम अर्थात् छन्द कहते हैं। परा और अपरा-नामक विद्याओं की स्थिति भी इसी में निहित है अतः इसी निगम को धर्मशास्त्र के आचार्य मनु ने विद्या एवं धर्म का स्थान माना है ‘वेदप्रणि-हितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः’ अर्थात् वेदविहित कार्य ही धर्म एवं तदितर कार्य अधर्म है। याज्ञवल्क्य ने भी पुराण, न्याय, मीमांसा एवं धर्मशास्त्रस्वरूप अङ्गो से युक्त वेद को धर्म एव चौदह विद्याओं का स्थान बतलाया है—

‘पुर णन्यायमीमासाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः ।

वेदा. स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ।’

त्रिकालदर्शी महर्षियो ने सम्पूर्ण शब्दराशि को आगम-निगम-भेद से दो भागो में विभक्त किया है। क्यों कि प्रकृतिसिद्ध नित्यशब्दब्रह्म इन्ही दो भागों में विभक्त है। यद्यपि ‘अथो वागेवेदं सर्वम्’^१ ‘वाचीमा विश्वा भुवनान्यपिता’^२ आदि श्रौतसिद्धान्तो के अनुसार वाकतत्व से प्रादुर्भूत होने वाले शब्दप्रपञ्च से कोई स्थान खाली नहीं है तथापि स्वर्गनाम से प्रसिद्ध १४ प्रकार के भूतसर्ग के साथ प्रधानरूप से अग्निवाक् और इन्द्रवाक् का ही सम्बन्ध है। पृथिवी अग्नि-मयी है और द्युलोकोपलक्षित सूर्य इन्द्रमय है^३। पार्थिव एव सौर अग्नि अन्नाद (अन्न खानेवाले) हैं और मध्यपतित चान्द्र सोम इन अग्नियो का अन्न बन रहा है^४। अन्न जब अन्नाद के उदर में चला जाता है तो केवल अन्नाद-सत्ता ही

१ ‘द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चैवापरा च’। (१) परा—उपनिषद्विद्या। (२) अपरा—ऋग्वेदादि।

२. ऐतरेयारण्यक० ३।१।६।

३ तैत्तिरीय ब्राह्मण २।८।८।४।

४ ‘यथान्निगर्भा पृथिवी तथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी’ शतपथब्राह्मण १४।६।७।२०

५ ‘एष वै सोमो राजा देवानामन्न यच्चन्द्रमा’ “ १।६।४।५

रह जाती है, अन्न की-स्वतन्त्रता हट जाती है' । इसीलिये त्रैलोक्य के लिये 'द्यावापृथिवी' का व्यवहार ही होता है । अतः प्रधानतः पृथिवीलोक एवं सूर्य-लोक ही रह जाते हैं । दोनो अग्निमय हैं । पार्थिवाग्नि गायत्राग्नि है और सौर अग्नि सावित्राग्नि है । ये दोनो अग्नियाँ 'वाक्' कहलाती हैं^१ । वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार पृथिवी की वाक् अनुष्टुप् और सूर्य की वाक् बृहती कहलाती है । अनुष्टुप् वाक् से कचटतप-आदिरूपा वर्णवाक् का तथा बृहती-वाक् से अ आ इ-आदिरूपा स्वरवाक् का प्रादुर्भाव होता है । 'स्वरोऽक्षरम्' के अनुसार स्वर-अक्षर हैं, अविनाशी हैं । वर्ण 'क्षर' हैं, विनाशशील हैं । जिस प्रकार अर्थसृष्टि में भौतिक क्षरकूट की प्रतिष्ठा अक्षरतत्त्व है उसी प्रकार 'शाब्दे ब्रह्मणि निष्णातः पर ब्रह्माधिगच्छति' के अनुसार अर्थब्रह्म की समान धारा में प्रवाहित होने वाले शब्दब्रह्म में भी क्षररूप वर्ण की प्रतिष्ठा-अक्षररूप स्वरतत्त्व ही है । अर्थब्रह्म में जैसे अक्षररूप सूर्यसत्ता को छोड़कर क्षररूपा पृथिवी अपने रूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है इसी प्रकार सूर्यवाङ्मूलक स्वरतत्त्व के बिना पृथिवीमूलिका वर्णशाशि भी स्व-स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है । स्वरमूलक इस सूर्यविद्या का ही नाम 'त्रयीविद्या' है । सूर्य नहीं तप रहा है, त्रयीविद्या तप रही है, 'सैषात्रयेव विद्या तपति'^२ और 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' का भी यही रहस्य है । यह वेदतत्त्व नित्यतत्त्व है, स्वयं प्रादुर्भूत है, स्वयं ब्रह्म के मुख से उद्गीर्ण है । इसीलिये महर्षियो ने इसे 'निगम' एवं श्रुति की सज्ञा दी है ।

शनि, मङ्गल, शुक्र, बुध, पृथिवी आदि सूर्य के उपग्रह हैं । सूर्य का ही प्रवर्ग्यभाग शनि-आदिरूप में परिणत हो कर सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । सूर्यविद्या का अंशभूत पृथिवीलोक सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । पृथिवी-विद्या सूर्यविद्या से आई है । इसी रहस्य को समझाने के लिये महर्षियो ने पृथिवीविद्या का नाम 'आगम' रखा है । सूर्यविद्या की तरह पृथिवीविद्या स्वयं निर्गत नहीं है अपि तु निगम से आई है 'निगमादागत आगमः' । ऊपर कहा जा चुका है कि पृथिवी की वाक् वर्णवाक् स्वर से भिन्न है । अतः आगमशास्त्रोक्त प्रयोगों का उदात्तादिस्वरो से विशेष सम्बन्ध नहीं माना जाता है । वहाँ केवल

१ 'द्वय वा इदम् - अत्ता चैवाद्यञ्च । तद्यदोभय समागच्छति-अत्तैवात्स्यायते नाद्यम् । स वै य सोज्जानिरेव सः ।' शतपथब्राह्मण १०।६।३।१

२ 'तस्य वा एतस्याग्नेवग्निवोपनिषत्' । ,, १०।५।१।१

३ शतपथब्राह्मणम् १०।५।२।२ ।

शब्द की आवृत्ति से ही सिद्धि हो जाती है किन्तु निगमविद्या में यह बात नहीं है, वहाँ स्वरवाक् की प्रधानता है। विना स्वर के निगमकाण्ड निरर्थक है। अतः यह स्पष्ट है कि सूर्यविद्या निगमविद्या है और पृथिवीविद्या आगमविद्या है। इन दोनों में सूर्य एवं पृथिवी का ही निरूपण हो, ऐसी बात नहीं है, अपि तु दोनों में सारे विश्व का निरूपण है। भेद केवल दृष्टि का है। सूर्य पिता है तो पृथिवी माता^१। पिता पुरुष है तो माता प्रकृति। पुरुष रेतोधा है तो प्रकृति धोनि है। पुरुषशास्त्र निगम है जिसे वेदपुरुष कहा जाता है और प्रकृतिशास्त्र आगम है। इसी को आगमविद्या कहते हैं और इसके विना निगम अप्रतिष्ठित है।

आगम अथवा पञ्चम वेद

श्रौतकाल के अनन्तर उसके अनुसन्धान में आगमग्रन्थों का आविर्भाव हुआ है जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् में वर्णित पञ्चामृतविद्या से ज्ञात होता है।^२ उसमें सूर्यबिम्ब को 'देवमधु' कहा है और वह अपनी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चार दिशाओं की किरणों द्वारा ब्रह्माण्ड में मधुरस का प्रसारण करता है। पूर्वदिशा की किरणें ऋग्वेदरूपी पुष्प का रस खींचती हैं उसमें से जो मधु उत्पन्न होता है उससे वसुदेवता अग्नि द्वारा तृप्त होते हैं। दक्षिण दिशा की किरणें यजुर्वेद के पुष्परस को चूसती हैं और उससे उत्पन्न अमृत से रुद्रदेवता इन्द्र द्वारा पुष्ट होते हैं। पश्चिम दिशा की किरणें सामवेद के पुष्पों का रस खींचती हैं और उसके अमृत से आदित्यदेवता वरुण द्वारा तृप्त होते हैं और उत्तर दिशा की किरणें अथर्ववेद के पुष्पों के सार को खींचती हैं और उसके अमृत से मरुत् देवता सोम द्वारा पुष्ट होते हैं। विद्यारूपी अमृत अथवा मधु के आधारपुष्प ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में अवस्थित हैं और उनके सार को भगवान् सूर्य अपने बिम्ब में खींच कर उससे वसु, रुद्र, आदित्य और मरुत् इन देवताओं के गण अनुक्रम से अग्नि, इन्द्र, वरुण और सोम इन चार अध्यक्षों द्वारा मधुरस भोगकर तृप्त होते हैं। इन चार मुखों के रूपकवाले ब्रह्मदेव को चारों वेदों का प्रवर्तक माना गया है। इसके अतिरिक्त इसी उपनिषद् में सूर्य के ऊर्ध्वमुख का भी वर्णन है। उसकी किरणें परोरजा कहलाती हैं क्योंकि उसमें रजस् अर्थात् रजोगुण या राग का स्पर्श नहीं है। ये किरणें 'गुह्य आदेश' को ब्रह्मतत्त्व के पुष्प में से खींचती हैं और उसका जो मधु होता है उसे प्रणव द्वारा साध्य देवता अर्थात् सिद्धजन भोगते हैं। इसी 'गुह्य

१ 'द्योपित पृथिवी मातः' (ऋक्-४।५।११)।

२ छान्दोग्योपनिषत्—तृतीयाध्यायात्।

आदेश' को 'आगम' कहते हैं जिस प्रकार चारो वेदों में प्रकट आदेश निगम कहा जाता है। आगमवादी इस ऊर्ध्वमुख को परमेश्वर अर्थात् शिव का पञ्च-ममुख कहते हैं और वह ऊर्ध्वस्रोत द्वारा ब्रह्मविद्या चार वेदों में ही समाप्त नहीं होती परन्तु देश, काल और निमित्तों के परिवर्तन से युगानुसार सिद्धजनों द्वारा प्रकट होती है। इसीलिये 'माण्डूक्योपनिषद्' को आगमप्रकरण ही कहते हैं।

आगम का लक्षण वाचस्पतिमिश्र ने इस प्रकार किया है कि जिससे भोग और मोक्ष दोनों का स्वरूप समझा जा सके वह आगम है। प्राचीन वेद-साहित्य कर्मकाण्ड द्वारा केवल स्वर्गादि योगसाधनों का स्वरूप समझाता है अथवा ज्ञानकाण्ड द्वारा केवल मोक्ष का स्वरूप और उसके साधन बतलाता है, परन्तु पञ्चम आगम-साहित्य भोग और मोक्ष की एकवाक्यता करके क्रमपूर्वक व्यवहारसुख और परमार्थसुख दोनों दे सकता है।

तन्त्र-आगम

तन्त्र वह विज्ञान है जो ऐसे साधनों और योगों का निर्देश करता है जिनके द्वारा मनोबल की उन्नति की जा सकती है। इन साधनों एवं प्रयोगों का उद्देश्य निस्सदेह मोक्ष की प्राप्ति है। परन्तु एक जन्म में सब लोग इस स्थिति पर नहीं पहुँच सकते, अभ्यास करते-करते उनके अन्दर कुछ विशिष्ट शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं जिन्हें सिद्धि कहते हैं। सिद्धियाँ कुछ अलौकिक शक्तियाँ हैं जिनका प्रयोग वे ही कर सकते हैं जिन्होंने इन्हें प्राप्त किया है। अन्य कोई भी व्यक्ति इनका उपयोग नहीं कर सकता। पातञ्जल योगसूत्र में अणिमा, गरिमा, लघिमा आदि आठ सिद्धियाँ मानी हैं। परन्तु उसके पीछे के ग्रन्थों में चौतीस सिद्धियाँ मानी हैं। हिन्दू और बौद्ध तन्त्रों के विभिन्न आगमों के द्वारा निर्दिष्ट विधि एवं साधनों का अनुसरण करने से इनमें से कुछ अथवा अधिक सिद्धियों का प्राप्त कर लेना सम्भव है। तन्त्रों का यह उद्घोष है कि जगत् के भौतिक साधनों की उन्नति द्वारा जो कुछ सम्भव हो सकता है, उसे एक ही व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति के विकास द्वारा सिद्ध कर सकता है।

तन्त्रों के प्रति सामान्यतया यह भ्रान्ति फैली हुई है कि तन्त्र वेदों से भिन्न हैं और इनमें अनार्यों के से आचरण एवं व्यवहारों का दर्शन होता है। वस्तुतः यह भ्रान्तिमात्र है। तन्त्र वेदवाह्य न होकर वेद-सम्मत है। हाँ, इतना अवश्य है कि तन्त्र वेदों की तरह किसी भी वर्ण के लिये अग्राह्य नहीं है। तन्त्रों में सर्वसाधारणजनों के लिये साधन का मार्ग प्रस्तुत किया गया है। वेद की क्रियाएँ सामान्यजनों के लिये अधिक परिश्रमसाध्य, व्ययसाध्य एवं प्रतिबन्ध-

साध्य होने से उन क्रियाओं को यथाविधि सम्पन्न करना सहजसाध्य नहीं है । इसीलिये परमकारुणिक भगवान् शिव ने सहजसाधनगम्य तन्त्रों का प्रकटीकरण 'आगम' नाम से किया है ।

तन्त्र की व्युत्पत्ति एवं परिभाषा

भारतीय कोशकारों के अनुसार 'तन्त्र' शब्द का प्रयोग आगम, सिद्धान्त, शिवमुखोक्तशास्त्र आदि के अर्थों में हुआ है, वामन, भट्टोजी दीक्षित आदि महावैयाकरण पण्डितों ने 'तन्त्र' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—'तनोति सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तान् यत्तन्त्रम्' अर्थात् जो समस्त शास्त्रों के सिद्धान्त अथवा निर्णयों का विस्तार करे उसे 'तन्त्र' कहते हैं ।

प्राचीन शास्त्रों में यद्यपि तन्त्र-शब्द का प्रयोग अनेक विषयों के शास्त्रों के लिये हुआ है जैसे—'कपिलतन्त्र, वासिष्ठतन्त्र, जैमिनितन्त्र, पूर्वतन्त्र, उत्तरतन्त्र आदि' । तथापि इस शब्द का अधिकतर प्रचलन आगमशास्त्र, निगमशास्त्र अथवा शिवमुखोद्गीर्ण शास्त्र के लिये ही हुआ है—

आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतञ्च गिरिजामुखम् ।
मतञ्च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते ॥

(सिंहसिद्धान्तसिन्धु पृ०-४२६)

× × ×

आगतं शिववक्त्राच्च गतञ्च गिरिजामुखे ।
तेनागमानि तन्त्राणि कथितानि वरानने ॥१२७॥

यानि कानि च शास्त्राणि कथितान्यागमस्य च ।
तानि तानि प्रकथ्यन्ते कौलाचरणहेतवे ॥१२८॥

(समयाचारतन्त्र)

निर्गतं गिरिजावक्त्राद् गतं च गिरिजाश्रुतौ ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मान्निगम उच्यते ॥
आज्ञावस्तु समन्ताच्च गम्यत इत्यागमः स्मृतः ।
तनुते त्रायते नित्यं तन्त्रमित्यं विदुर्बुधाः ॥

[श्रीसत्कारिशर्मालिखित भूमिका (दुर्गासप्तशती चौ० खम्बासंस्कृत सीरीजी वाराणसी)]

तन्त्र की परिभाषा शास्त्रों में इस प्रकार प्राप्त है—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च मन्त्रनिर्णयमेव च ।
 -देवतानां च संस्थान तीर्थानां चैव वर्णनम् ॥
 तथैवाश्रमधर्माश्च विप्रसंस्थानमेव च ।
 संस्थानं चैव भूतानां यन्त्राणां चैव निर्णय ॥
 उत्पत्तिविबुधानाञ्च तरूणां कल्पसञ्जितम् ।
 संस्थानं ज्योतिषां चैव पुराणास्थानमेव च ।
 कोषस्य कथनञ्चैव व्रतानां परिभाषणम् ।
 शौचाशौचस्य चास्थानं स्त्रीपुंसोश्चैव लक्षणम् ॥
 राजघर्मो दानघर्मो युगधर्मस्तथैव च ।
 व्यवहारः कथ्यते च तथा चाध्यात्मवर्णनम् ॥
 इत्यादिलक्षणयुक्तं तन्त्रमित्यभिधीयते ।

अर्थात् तन्त्रशास्त्र उसे कहते हैं जिसमें सृष्टि, प्रलय मन्त्रनिर्णय, देवता-संस्थान, तीर्थवर्णन आदि का वर्णन हो ।

चाराहीतन्त्र के कथनानुसार तो तन्त्र 'कल्प' के अन्तर्गत है—

कल्पश्चतुर्विधः प्रोक्त आगमो डामरस्तथा ।
 यामलश्च तथा तन्त्र तेषां भेदा पृथक् पृथक् ॥

इस परिभाषा से तो वेद के छह अंगों का कल्प ही वास्तुतः 'तन्त्र' है । बौद्धों का दीर्घनिकाय इसी कल्प को 'कैम्भ' कहता है जिसका अध्ययन-अध्या न भगवान् बुद्ध के समय में खूब प्रचलित था ।

तन्त्रों में वाममार्ग और पञ्चमकार

तन्त्रों का लक्ष्य आदि से अन्त तक अद्वैत रहा है और तन्त्र वेद का साथी रहा है किन्तु 'कालस्य कुटिला गतिः' के अनुसार, वर्तमान में तन्त्रतत्त्व से अनभिज्ञ विद्वानों ने यह अान्त धारणा उत्पन्न कर दी है कि 'तन्त्रों में वाम मार्ग एवं पञ्चमकार का विशेष रूप से प्रतिपादन होने के कारण अनार्यमार्ग का प्रतिपादक है, अतः हेय है । अतः यहाँ पर वाममार्ग एवं पञ्चमकारों के सम्बन्ध में संक्षेपतः विस्लेषण करना असमीचीन नहीं होगा ।

तन्त्र-प्रवर्तक भगवान् शंकर ने वाममार्ग को योगियों के लिये भी परमगूढ एवं अगम्य बतलाया है । ऐसी अवस्था में वाममार्ग 'अनार्यों का मार्ग' हो ही कैसे सकता है ? केवल 'वाम' एवं तत्प्रतिपादित 'पञ्चमकार' शब्दमात्र से ही इसे 'अनार्य मार्ग' कहना अनुपयुक्त है क्योंकि वामशब्द का प्रयोग वेदों में भी प्रशस्तार्थ में परिलक्षित होता है । ऋग्विधान में कहा है—

अस्य वामस्य सूक्तं तु जपेच्चान्यत्र वा जले ।
ब्रह्महत्यादिकं दग्ध्वा विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अर्थात् इस वामसूक्त के पाठमात्र से ही विष्णुलोक की प्राप्ति अर्थात् 'तद्विष्णोः परम पदम्' के अनुसार विष्णुपदप्राप्तिरूपी मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

निरुक्त (निघण्टु) में वामशब्द का अर्थ 'प्रशस्य' लिखा है—

'अस्रं मा', अनेमा', अनेद्यः, अनवद्यः, अनभिशस्ताः, उक्थ्यः, सुनीथः, पाकः, वामः, वयुनमिति दश प्रशस्यनामानि ।

यहाँ वामनाम प्रशस्य का द्योतक है और प्रशस्य प्रज्ञावान् ही होते हैं— य एव हि प्रज्ञावन्तस्त एव हि प्रशस्या भवन्ति' । इससे स्पष्ट है कि प्रज्ञावान् प्रशस्य योगी का नाम ही 'वाम' है और उस योगी के मार्ग का ही नाम 'वाम-मार्ग' है । इस मार्ग में जितेन्द्रिय के लिये ही अधिकार की व्यवस्था है, न कि इन्द्रियलोलुप प्राणियों के लिये जैसा कि भगवान् शङ्कर का कथन है—

परद्रव्येषु योऽन्वञ्च परस्त्रीषु नपुसक ।
परापवादे यो मूकः सर्वदा विजितेन्द्रियः ।
तस्यैव ब्राह्मणस्यात्र वामे स्यादधिकारिता ।

(मेरुतन्त्र)

अर्थात् परद्रव्य, परदारा और परापवाद से विमुख, सयमी ब्राह्मण ही वाममार्ग का अधिकारी होता है ।

अयं सर्वोत्तमो धर्मः शिवोक्त सर्वसिद्धिदः ।
जितेन्द्रियस्य सुलभो नान्यस्यान्तजन्तुभिः ।

(पुरश्चर्यार्णव)

इसी प्रकार मेरुतन्त्र आदि आगमग्रन्थों में पञ्चमकारों की व्याख्या इस प्रकार की गई है—

मद्य मांसञ्च मीनञ्च मुद्रा मैथुनमेव च ।
मकारपञ्चकं प्राहुर्योगिनां मुक्तिदायकम् ॥

अर्थात्—मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन ये पांच आध्यात्मिक मकार ही योगियों को मोक्ष देने वाले हैं ।

व्योमपङ्कजनिष्यन्दसुधापानरतो भवेत् ।
मद्यपानमिदं प्रोक्तमितरे मद्यपायिनः ॥

ब्रह्मरन्ध्र-सहस्रदल से जो स्रवित होता है उसे सुधा (अमृत) कहते हैं जिसे

कुलकुण्डलिनी द्वारा योगजन प्राप्त करते हैं इसी का नाम मद्यपान है। इसके अतिरिक्त पीने वाला मद्यप कहलाता है।

अर्थात्—ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रारकमलरूपी पात्र से जो ब्रह्माण्ड को तृप्त करने वाली सुधा-धारा बहती है वही पीने योग्य मद्य (मदिरा) है।

पुण्यापुण्यपशुं हत्वा ज्ञानखड्गेन योगवित् ।

परे लयं नयेच्चित्त मांसाशी स निगद्यते ॥

अर्थात्—पुण्य-पापरूपी पशु को ज्ञानरूपी खड्ग से मार कर जो योगी मन को ब्रह्म में लीन करता है, वही मांसाशी (मांसाहारी) है।

और भी—

कामक्रोधी पशू तुल्यो बलि दत्त्वा जपं चरेत् ।

×

×

×

कामक्रोधसुलोममोहपशुकांश्छित्वा विवेकासिना ।

मांसं निर्विषयं परात्मसुखदं भुञ्जन्ति तेषां बुवाः ॥

अर्थात्—विवेकी पुरुष काम, क्रोध, लोभ और मोहरूपी पशुओं को विवेकरूपी तलवार से काट कर दूसरे प्राणियों को भी सुख देने वाले निर्विषयरूप मांस का भक्षण करते हैं।

मानसादीन्द्रियगणं संयम्यात्मनि योजयेत् ।

स मीनाशी भवेद्देवि इतरे प्राणिर्हिंसका ॥

मन आदि सारी इन्द्रियो को वश में करके आत्मा में लगाने वालों को ही मीनाशी (मत्स्याहारी) कहते हैं, इससे इतर जीवहिंसक हैं।

- आशातृष्णाजुगुप्साभयविषयवृणामानलज्जाप्रकोपां

ब्रह्माग्नावष्टमुद्राः परसुकृतिजन. पच्यमान ममन्तात् ।

नित्य सम्भावयेत्तानवहितमनसा दिव्यभावानुरागी ,

योऽसौ ब्रह्माण्डमाण्डे पशुहतिविमुखो रुद्रतुल्यो महात्मा ॥

अर्थात्—आशा-तृष्णादि आठ मुद्राओं को ब्रह्मरूपी अग्नि में अच्छी तरह पकाता हुआ दिव्य भाव का अनुरागी जो योगी पशु-हिंसा से पराङ्मुख होकर सावधान मन से भक्षण करे; वह महात्मा पुरुष ससार में रुद्रतुल्य होता है।

या नाडी सूक्ष्मरूपा परमपदगता सेवनीया सुषुम्णा ,

सा कान्ताऽऽलिङ्गनार्हा न मनुजरमणी सुन्दरी वारयोपित् ।

कुर्याच्चन्द्रार्कयोगे युगपवत्गते मैथुन नैव योनौ ,
योगीन्द्रो विश्ववन्द्य सुखमयभवने ता परिष्वज्य नित्यम् ॥

अर्थात्—परमानन्द को प्राप्त हुई सूक्ष्मरूपवाली सुषुम्णा नाड़ी है, वही आलिङ्गन करने योग्य उपभोग्या कान्ता है, न कि मनुष्यरूपा सुन्दरी वेश्या । सुषुम्णा-का सहस्रचक्रान्तर्गत परब्रह्म के साथ सयोग का ही नाम मैथुन है, स्त्री-सम्भोग का नहीं ।

और भी—

ध्यानं देव्याः पदाम्भोजे पञ्चम परिकीर्तितम् ।

अर्थात्—श्रीदेवी के श्रीचरणो का चिन्तन ही पञ्चम अर्थात् मैथुन है ।

सांख्यायनतन्त्र

प्रस्तुत 'सांख्यायनतन्त्र' तन्त्रशास्त्र का ही सांख्यायनमुनिप्रोक्त^१ एक लघुग्रन्थ है । यद्यपि इसकी परिगणना शिवमुखोद्गीर्ण नानागमो मे वर्णित ६४ तन्त्रो में तो नहीं की गई है, फिर भी यह मुनिप्रणीत होने के कारण उपतन्त्रो मे अवश्य ही परिगणनीय है जैसा कि वाराहीतन्त्र^२ के निम्न पद्यो से स्पष्ट है—

बौद्धोक्तान्युपतन्त्राणि कापिलोक्तानि यानि च ।
अद्भुतानि च एतानि जैमिन्युक्तानि यानि च ॥
वसिष्ठ कपिलश्चैव नारदो गर्ग एव च ।
पुलस्त्यो भार्गवः सिद्धो याज्ञवल्क्यो भृगुस्तथा ॥
शुक्रो बृहस्पतिश्चैव अन्ये ये मुनिसत्तमाः ।
एभि प्रणीतान्यन्यानि उपतन्त्राणि यानि च ॥
न संख्यातानि तान्यत्र घर्मविद्धिमंहात्मभिः ।
सारात्सारतराण्येव संख्यातानि निबोधत ॥

जैसा कि पूर्व मे कहा जा चुका है कि 'जगत् के भौतिक साधनों की उन्नति के द्वारा जो कुछ सभव हो सकता है उसे एक ही व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति के विकास द्वारा सिद्ध कर सकता है । इस मानसिक शक्ति को बढ़ाने का उत्तम साधन है—वाणी द्वारा अथवा मन ही मन मन्त्रो का उच्चारण करना । आगम-ग्रन्थो मे ऋषि महर्षियो द्वारा सुदीर्घकाल

१. पद्मजो नारदो विद्या सांख्यायनमुनि प्रति ।
उपदेशक्रमेणैव उक्तवान्मेरुकन्दरे ॥१५॥
तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागमं भुवि ।

[सांख्यायनतन्त्र-प्रथम पटल]

२ शब्दकल्पद्रुम—द्वितीयकाण्ड, पृष्ठ - ५८५ ।

तक अनुभूत एव सुपरीक्षित कुछ ऐसे शब्दों एव शब्दसमूहों का निर्देश किया गया है जिन्हें 'वोजमन्त्र', 'हृदयमन्त्र' अथवा 'मालामन्त्र' कहा गया है^१ । इन मन्त्रों का निश्चित संख्या में जप करने से (उच्चारण करने से) निश्चित ही अपने उद्देश्यों (मनोरथों) की प्राप्ति होती है जैसा कि निम्नोक्ति से स्पष्ट है—
'एक. शब्दः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामघुग्भवति' ।

प्रस्तुत ग्रन्थ इसी का एक ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें नारदोपासिता श्री-वगलामुखीदेवी की पञ्चाङ्गोपासना-विधि के साथ ऐसे विशिष्ट १५ मन्त्रों के प्रयोग-विधान बतलाये गये हैं जिनके द्वारा साधक (उपासक) मनुष्य अत्यन्त विस्मयोत्पादक अलौकिक-शक्तियों (सिद्धियों) को अर्जित कर अपनी समस्त अभिलाषाओं को प्राप्त कर सकता है ।

श्रीवगलामुखी

श्रीवगलामुखी आगमग्रन्थों में वर्णित दश महाविद्याओं^२ में अन्यतम है जिसे इस तन्त्र में ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीविद्या, स्तब्धमाया, प्रवृत्तिरोधिनी, वगला, मन्त्रजीवनविद्या, प्राणिप्राणापहारिका एव षट्कर्माधारविद्या के नाम से अभिहित किया गया है—

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा ।

प्रवृत्तिरोधिनी विद्या वगला च कुमारक ॥६॥

मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।

षट्कर्माधारविद्या च ये ते पर्यायवाचकाः ॥१०॥

(प्रथमः पटलः)

ऐसा प्रतीत होता है कि निगमशास्त्रोक्त 'वल्गा'^३ ही आगमशास्त्रों की वगलामुखी है क्योंकि संस्कृतभाषा में जैसे 'हिंस' शब्द वर्णव्यत्यय होने के कारण 'सिंह' और लौकिक भाषा में 'मतलब' मतबल बन जाता है वैसे ही निगम की

१. विशत्यर्णाधिका मन्त्रा मालामन्त्रा इति स्मृताः ।
दशाक्षराधिका मन्त्रास्तदवर्गवोजसन्निताः । (सिंहसिद्धान्तसिन्धु-पृष्ठ २६५)
२. काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
शैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥
वगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एता दश महाविद्या सिद्धविद्या प्रकीर्त्तिता ॥ (प्राणतोषिणी, पृष्ठ-७१७)
३. यदा वै कृत्यामुत्खनन्ति अथ सालसा मोघा भवति । तथो एवैप एतद्यद्यस्मा अत्र कश्चिद् द्विपन् भ्रातृव्य कृत्या वल्गा निखनति तानेवैतदुत्स्करति ॥ (शतपथब्राह्मण-३।५।४।३)

वल्गा आगम मे वगलारूप मे परिणत हुई है । इसी शक्ति की आराधना के द्वारा पुरातन युगों मे असुरो एव शत्रुओ पर अभिचारादिप्रयोग किये जाते थे जैसा कि आचार्य मनु के इस वाक्य से स्पष्ट होता है—

श्रुतीरथर्वाङ्गिरसोः कुर्यादित्यविचारयन् ।

वाक्शास्त्र वै ब्राह्मणस्य तेन हन्यादरीन् द्विज ॥

(मनु० ११।३३)

वगलाशब्दनिरुक्ति

कुब्जिकातन्त्र मे 'वगला' शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया गया है—

वकारे वारुणी देवी गकारे सिद्धिदा स्मृता ।

लकारे पृथिवी चैव चैतन्या या प्रकीर्त्तिता ॥^१

अर्थात्—वकार से-वारुणी देवी, गकार से सिद्धिदा, लकार से पृथिवी-रूपा होने से जो शक्ति चैतन्यस्वरूपा है वही वगला है ।

श्रीवगलामुखी का आविर्भाव

इस महाविद्या का आविर्भाव का कारण स्पष्ट करते हुए 'स्वतन्त्र तन्त्र' कहता है कि सत्ययुग मे वातक्षोभ के उत्पन्न होने पर चराचर सृष्टि के विनाश को देख कर अत्यन्त चिन्तामग्न विष्णु ने श्रीत्रिपुराम्बा की तपस्या की । तपस्या से सन्तुष्ट श्रीत्रिपुराम्बा ने सौराष्ट्र मे हरिद्राख्य सरोवर मे जलक्रीडा प्रारम्भ की । उस पीत सरोवर से श्रीविद्या से उत्पन्न तेज (प्रकाश) उधर-उधर अर्थात् चारो दिशाओ मे फैलने लगा । उसी तेज से त्रैलोक्यस्तम्भिनी ब्रह्मास्त्रविद्या का आविर्भाव हुआ^२ ।

१. प्राणतोपिणी पृष्ठ ७१७ ।

२ अथ वक्ष्यामि देवेशि वगलोत्पत्तिकारणम् ।
पुरा कृतयुगे देवि वातक्षोभ उपस्थिते ॥
चराचरविनाशाय विष्णुश्चिन्तापरायणः ।
तपस्यया च सन्तुष्टा महाश्रीत्रिपुराम्बिका ॥
हरिद्राख्य सरो दृष्ट्वा जलक्रीडापरायणा ।
महापीतहृदस्थान्ते सौराष्ट्रे वगलाम्बिका ॥
श्रीविद्यासम्भव तेजो विजृम्भति इतस्ततः ।
चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता ॥
कुलऋक्षसमायुक्ता वीररात्रिः प्रकीर्त्तिता ।
उस्याभेवाद्धरात्री तु पीतहृदनिवासिनी ॥
ब्रह्मास्त्रविद्या सञ्जाता त्रैलोक्यस्तम्भिनी परा ।
तत्तेजो विष्णुज तेजो विद्यानुविद्ययोगतम् ॥

प्राणतोपिणी—पृष्ठ ७१७ (कलकत्ता प्रकाशन)

सम्पादन

इस ग्रन्थ के संपादन में ५ हस्तप्रतियों का उपयोग किया गया है। इन प्रतियों में से ४ प्रतियाँ प्रतिष्ठान के संग्रह की हैं तथा १ प्रति जयपुर-निवासी प० श्रीरामकृपालुजी शर्मा के संग्रह की है। प्रतिष्ठान की प्रतियों को यहाँ पर क. ख. ग घ संज्ञा से और श्रीशर्माजी की प्रति को रा० संज्ञा से संबोधित किया गया है। इस ग्रन्थ के २६ वें पटल तक क प्रति का पाठ मूलरूप में ऊपर उद्धृत कर ख ग घ के पाठान्तरो को पाद-टिप्पणियों के रूप में नीचे दिया-गया है तथा ३०वें पटल से ३३वें पटल तक ख. प्रति का पाठ मूलरूप में देकर ग घ रा० प्रतियों के पाठान्तर नीचे उद्धृत किये गये हैं क्योंकि क० और ग० प्रति त्रिशत्पटलो में ही समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार ख प्रति यद्यपि ३५ पटलो में पूरी होती है किन्तु वस्तुतः वह ३४ पटलात्मक ही है कारण कि लिपिकर्त्ता के प्रमाद से २६वें पटल का कुछ अंश ३०वें पटल के रूप में तथा २५ पद्यात्मक ३१वें पटल को १६॥ पद्यों में ही समाप्त कर एक पृथक् पटल का रूप दे दिया गया है जिसे हमने पुस्तक में इस () कोष्ठक में आवद्ध कर-दिया है। ३४वें पटल से ३६वें पटल तक घ प्रति का पाठ ऊपर मूलरूप में और रा० प्रति के पाठान्तर नीचे उद्धृत किये हैं इसका कारण यह है कि रा० प्रति इस पुस्तक के २६ पटल तक का मुद्रणकार्य पूरा हो जाने के बाद प्राप्त हुई।

इसके अतिरिक्त ख. और घ प्रतियों में पटलो का व्युत्क्रम एवं भेद भी पाया जाता है जैसे—ख. प्रति में जो ३१, ३२ एवं ३३वें पटल हैं वे घ. प्रति में क्रमशः ३४, ३५ तथा ३६वें पटल के रूप में प्राप्त हैं और ख. प्रति का ३५वा पटल जो कि वस्तुतः ३४वा पटल है, किसी अन्य प्रतियों में प्राप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में इस पटल को ३६वें पटल के बाद ही यहाँ पर स्थान दिया गया है।

अनुमित पाठ को () चिह्नाङ्कित कोष्ठक में और अस्पष्ट एवं विनुप्त पाठ को [] चिह्नाङ्कित कोष्ठक में दिया गया है।

प्रति-परिचय

क. ग्रन्थाङ्क—१९००; लिपिकाल—१९वीं शताब्दी (विक्रम); माप—२६' × १३' से. मी; पत्रसंख्या—३८; पक्ति—११, अक्षर—३८; दशा सुन्दर एवं सुपाठ्य, अपेक्षाकृत शुद्ध प्रति।

ख. ग्रंथाङ्क-५५८५, लिपिकाल १६वीं शताब्दी (विक्रम); पत्र-संख्या ५१; माप-३४'५ + १३' से. मी.; पक्ति-६; अक्षर ३६; दशा-सुन्दर, सुवाच्य एव अपेक्षाकृत शुद्ध प्रति ।

ग. ग्रंथाङ्क-१८३६५; लिपिकाल-सं० १७६६ (विक्रम) पत्रसंख्या ४२; माप-२३' × १२'५ से. मी.; पक्ति-१२, अक्षर ३३, दशा-कुछ जीर्ण, सुवाच्य किन्तु अशुद्ध ।

घ. ग्रंथाङ्क-१८३६३; लिपिकाल-१६वीं शताब्दी (विक्रम) पत्र संख्या-१२४, पक्ति-६; अक्षर-१६; दशा-ठीक-ठीक है, सुवाच्य किन्तु अशुद्ध प्रति है ।

रा० श्रीरामकृपालु शर्मासंग्रह ग्रंथाङ्क-माप-३३' × १०'८, लिपिकाल-सं० १६२६ (विक्रम); पत्रसंख्या-४६, पक्ति-६, अक्षर-४६; दशा-जीर्ण; सुवाच्य एव अशुद्ध प्रति है ।

आभार-प्रदर्शन

मैं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के निदेशक समादरणीय डॉ० फतहसिंहजी का विशेष आभारी हूँ जिनके सत्परामर्श एव सत्प्रेरणा से इस अतिविलम्बित ग्रन्थ का संपादन-कार्य पूर्ण कर सका । जयपुर-निवासी पं० श्रीरामकृपालुजी शर्मा का भी मैं विशेष आभार मानता हूँ जिन्होंने अपने संग्रह में से ढूँढ कर इस ग्रन्थ की प्रति हमें प्रेषित की । साथ ही मैं प्रतिष्ठान के सहयोगी विशेषतः पुस्तकालय-सहायक श्रीमती गणेशी आत्रेय एव प्रतिलिपिकर्ता श्रीब्रजेशकुमारसिंह को भी साधुवादों से सत्कृत करता हूँ जिन्होंने पद्यानुक्रम बना कर मुझे सहयोग दिया । अन्त में मैं साधक विद्वानों से सनम प्रार्थना करता हूँ कि इस ग्रन्थ में दृष्टि-दोष एवं चित्तचाञ्चल्यवश कहीं कोई त्रुटि रह गई हो उसका वे समाधान करते हुये 'समादधतु सञ्जनाः' के अनुसार मुझे क्षमा करें ।

कार्तिक शुक्ल एकादशी
विक्रम संवत् २०२६

विदुषामाश्रवो
गोस्वामी लक्ष्मीनारायणदीक्षितः

विषयानुक्रमः

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
१	प्रथमः पटलः	पृष्ठ १-३	
(१)	पीताम्बरादेवीध्यानम्	१	१
(२)	मायावि-राक्षसाञ्जेतुकामस्य कार्तिकेयस्य शिवम्प्रति ज्योपायजिज्ञासा	१	२-६
(३)	कार्तिकेयं प्रति जयार्थं शिवनिगदित ब्रह्मास्त्रविद्या-घगलामनुप्रशंसनम्	१-२	७-१४
(४)	नारदस्य सांख्यायनमुनये ब्रह्मास्त्रविद्योपदेशः, तद्विद्याया भूमौ प्रकाशक्रमश्च	२	१५-१५
(५)	ब्रह्मास्त्रविद्यामन्त्रोपासनाफल, मन्त्रलब्धये कुलगुरुमुखाद् दीक्षाग्रहणावश्यकत्वञ्च	२-३	१७-१८
२.	द्वितीय पटल.	पृष्ठ ३-	
(१)	द्विभुजापीताम्बराध्यानम्	३	१
(२)	दीक्षाविधिजिज्ञासा	४	२
(३)	पुस्तकलिखितमन्त्रजपे हानिसम्भवात् कुलगुरुमुखाद्दीक्षाग्रहणप्रतिपादनम्	४	३-६
(४)	सद्गुरुलक्षणानि	४	७-११
(५)	कारणत्रयेण विद्योपलब्धि, विद्याया राजसादिभेदत्रयञ्च	५	१२-१७
(६)	शिष्यलक्षणानि	५	१८-२२
३	तृतीयः पटल.	पृष्ठ ६-८	
(१)	चाङ्मुलस्तम्भिनीवगलामुखीध्यानम्	६	१
(२)	अग्निषेक्विधिजिज्ञासा	६	२
(३)	मन्त्राभियेचने कालनिर्णयः	६	३-६
(४)	शिष्यस्नापन, गायत्रीजपस्यावश्यकत्वञ्च	६	६-७
(५)	कलशानवकस्यापनविधि.	७	८-१७
(६)	ऋत्विग्वरणविधि. कलशमार्जनविधिश्च	७-८	१८-२४
(७)	विद्यामन्त्रोपदेशविधि	८	२५-२८

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
४.	चतुर्थः पटलः	-११	
(१)	प्रेतासनावगलामुखीध्यानम्	६	१
(२)	ब्रह्मास्त्रमन्त्रसन्ध्याजिज्ञासा	६	२
(३)	मन्त्रसन्ध्याविधिः	६-१०	३-१६
(४)	त्रिकालोपस्थानम्	१०-११	१७-२५
(५)	मन्त्रसन्ध्योपस्थानयोरनिवार्यत्वम्	११	२६-२६
५	पञ्चम पटलः	पृष्ठ ११-१३	
(१)	श्रीवगलादेवीध्यानम्	११	१
(२)	एकाक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	११	२
(३)	एकाक्षरीबीजमन्त्रोद्धारः	१२	३-६
(४)	ऋष्यादिकरणडङ्गन्यासविधिः	१२	७-१०
(५)	पञ्जरन्यासविधिः	१२-१३	११-१५
(६)	मातृकान्यासविधिः	१३	१६-१८
(७)	वगलामुखीध्यानं तञ्जपविधिश्च	१३	१९-२४
६.	षष्ठः पटलः	पृष्ठ १४-१६	
(१)	स्तम्भनकारिणीवगलामुखीध्यानम्	१४	१
(२)	एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	१४	२
(३)	होमे कामनाभेदेन कुण्डभेदाः	१४	३-६
(४)	होमे कामनाभेदेन स्थण्डिलभेदाः	१४	१०-११
(५)	होम संख्याभेदेन कुण्ड-स्थण्डिलमानानि	१५	१२-१५
(६)	शान्त्यादिषट्कर्माणि तल्लक्षणानि च	१५	१६-२०
(७)	कर्मभेदेन होमद्रव्याणि तत्संख्याहृत्तिनिर्धारणं च	१६	२०-२७
७	सप्तमः पटलः	पृष्ठ १६-१८	
(१)	श्रीवगलाध्यानम् (पीताम्बरधरादेवीध्यानम्)	१६	१
(२)	षट्त्रिंशदक्षरीवगलाविद्यामन्त्रजिज्ञासा	१६	२
(३)	षट्त्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रोद्धारः	१६-१७	३-७
(४)	न्यासविद्याक्रम	१७	८-९
(५)	वगलामुखीध्यानं तदावश्यकत्वञ्च	१७	१०-१३
(६)	ऋष्यादिकथनम्	१७	१३-१४

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(७)	सङ्कल्पपूर्वकं जपमन्त्र्यानिर्द्धारः	१७	१५
(८)	तर्पण-होमद्रव्याणि तत्प्रकारश्च	१७	१६-१७
(९)	पुरश्चरणलक्षणं तद्वकरणेऽसिद्धिश्च	१७	१८-१९
(१०)	कर्मभेदेन संख्यायुतहोमद्रव्याणि	१८	२०-२९

८. अष्टमः पटलः पृष्ठ १८-२१

(१)	शिवा (वगलादेवी) ध्यानम्	१८	१
(२)	वगलामन्त्रराजप्रयोगजिज्ञासा	१८	२
(३)	कर्मभेदेन होमद्रव्ययोगा, नानाद्रव्ययोजन- प्रकारा मन्त्रयोजनविधिश्च	१८-२०	३-२९
(४)	द्रव्यतर्पणेन परकृतकर्मनिरासः	२०-२१	२७-२९

९. नवमः पटलः पृष्ठ २१-२३

(१)	वगलामुखीध्यानम्	२१	१
(२)	वगलामतोः प्रयोगमूलयन्त्रजिज्ञासा	२१	२
(३)	यन्त्रोद्वारा	२१	३-६
(४)	यन्त्रे मन्त्रलेखनविधिः	२१-२२	६-९
(५)	कर्मभेदेन नानापुष्पैर्वन्धपूजाविधिः	२२-२३	९-२७

१०. दशमः पटलः पृष्ठ २३-२६

(१)	पीतान्त्ररावगलाध्यानम्	२३	१
(२)	मन्त्रलेपनप्रयोगजिज्ञासा	२४	२
(३)	लेपने कर्मभेदेन चन्द्रनादिद्रव्यनिरूपणम्	२४-२६	३-२८

११. एकादशः पटलः पृष्ठ २६-२९

(१)	वगलादेवीध्यानम्	२६	१
(२)	यन्त्रराजतर्पणप्रयोगजिज्ञासा	२६	२
(३)	कर्मभेदेन गुडादिनर्पणद्रव्यनिरूपणम्	२६-२९	३-२८

१२. द्वादशः पटलः पृष्ठ २९-३१

(१)	चिन्मयीवगलाध्यानम्	२९	१
(२)	वगलागायत्रीजिज्ञासा	२९	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(३)	गायत्रीमन्त्रोद्धारः	२६	३-५
(४)	ऋष्यादिकथनान्ते पुरश्चर्या-न्यास-ध्यानादिनिरूपणम्	२६	६-६
(५)	कर्मभेदेन गायत्रीमन्त्रप्रयोगाः	३०-३१	१०-२६

१३. त्रयोदशः पटलः पृष्ठ ३१-३४

(१)	वगलाम्बाध्यानम्	३१	१
(२)	यन्त्रपूजाजिज्ञासा	३१	२
(३)	यन्त्रपूजाविधिः	३२	३-१३
(४)	शालग्रामादौ पूजाविचारः	३३	१४-१६
(५)	पूजा-कारणद्रव्यविचारः	३३	१७-१८
(६)	मन्त्रसिद्धिफलकथनम्	३३-३४	१९-२७

१४. चतुर्दशः पटलः पृष्ठ ३४-३७

(१)	वगलाध्यानम्	३४	१
(२)	वगलार्चाविधिजिज्ञासा	३४	२
(३)	देशभेदात् सृष्टिस्थितिसंहारपूजाकथनम्	३४	२-५
(४)	सृष्टिक्रमेण सौभाग्यार्चनविधि	३५-३६	६-१७
(५)	प्रयोगादौ सविधानां सौभाग्यार्चा विना रौरवादिगमनम्	३६	१८-२५
(६)	सौभाग्यार्चने स्वपत्न्यादिपूजाविषयकानि सांख्यायन- मृकण्डुदुर्वासो-मतङ्गमुनिमतानि	३६-३७	२६-३१

१५. पञ्चदशः पटलः पृष्ठ ३७-४०

(१)	स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीवगलाध्यानम्	३७	१
(२)	पञ्चास्त्रविद्याजिज्ञासा	३७	२
(३)	पञ्चास्त्रविद्याकथनम्	३७	३-६
(४)	वगलास्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	३८	७-१६
(५)	उल्कामुह्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	३९-४०	२०-३३

१६. षोडशः पटलः पृष्ठ ४०-४३

(१)	स्तम्भनास्त्राधिदेवतावगलाध्यानम्	४०	१
(२)	अस्त्रविस्तारजिज्ञासा	४०	२
(३)	जातवेदमुह्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	४०-४१	३-१३
(४)	ज्वालामुह्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	४१-४२	१४-२४

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(५)	बृहद्भानुमुख्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	४२-४३	२५-३७
(६)	प्रयोगान्ते सौभाग्यार्चाऽऽवश्यकत्वम्	४३	३८-४०
१७. सप्तदशः पटलः पृष्ठ ४३-४६			
(१)	वगलाम्बिकाध्यानम्	४३-	१
(२)	शताक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	४३	२
(३)	शताक्षरीमन्त्रोद्धारः	४४	३-१०
(४)	ऋष्यादि-न्यासविद्या-ध्यानानि	४४-४५	११-१५
(५)	जपसंख्या-तर्पणद्रव्यादिकथनम्	४५	१६-१७
(६)	कर्मभेदाद्वनद्रव्याणि तदाहुतिसंख्या-समय-कथनञ्च	४५-४६	१८-२८
१८. अष्टादशः पटलः पृष्ठ ४६-४९			
(१)	जिह्वास्तंभनकारिणीवगलाध्यानम्	४६	१
(२)	शताक्षरीहवनप्रयोगजिज्ञासा	४६	२
(३)	विषमज्वरादिविविधरोगविनाशनार्थं नानाद्रव्याहुति- प्रयोगाः	४६-४७	३-८
(४)	वशीकरणाद्यभीप्सितकामनाभेदादनेकविधद्रव्याहुति- प्रयोगाः	४७	९-१६
(५)	बहुभूत्रादिरोगशमनप्रयोगाः	४७-४८	१७-१९
(६)	वक्ष्याकर्षणप्रयोगाः	४८	२०-२५
(७)	शत्रुरोगकृत्प्रयोगाः	४८	२५-२७
(८)	मारणप्रयोगाः	४९	२८-३४
१९ एकोनविंशः पटलः पृष्ठ ४९-५३			
(१)	चतुर्भुजावगलाध्यानम्	४९	१
(२)	शताक्षरीमन्त्रप्रयोगोपसंहारजिज्ञासा	४९	२
(३)	रिपुमारणादिप्रसङ्गं गुलिकादिविविधप्रयोगा- स्तन्निरासविधिश्च	४९-५०	३-१५
(४)	पुत्तलिकाद्यभिचारिप्रयोगाः	५१-५३	१६-३४
(५)	प्रयोगोपसंहारविधि	५३	३५-४३
२०. विंशः पटलः पृष्ठ ५४-५७			
(१)	वगलादेवीध्यानम्	५४	१

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	परविद्याभेदनोपायप्रश्नः	५४	२
(३)	परविद्याभेदिनीमन्त्रोद्धारस्तदृष्यादिकथनञ्च	५४	३-११
(४)	तन्न्यास-ध्यान-पुरश्चर्याकथनम्	५५	१२-१८
(५)	परविद्याभेदिनीमन्त्रस्य नानाप्रयोगाः	५५-५६	१९-२६
(६)	सिद्ध मन्त्र माहात्म्यवर्णनम्	५६-५७	२६-३४

२१. एकविंशः पटलः पृष्ठ ५७-५९

(१)	परविद्यामक्षिणीवगलाध्यानम्	५७	१
(२)	परविद्याकर्षणादिमहदाश्चर्यकरा नानाप्रयोगाः	५७-५९	२-२४
(३)	प्रयोगोपसंहाराः	५९	२५

२२. द्वाविंशः पटलः पृष्ठ ५९-६१

(१)	वगलामुखीध्यानम्	५९	१
(२)	वगलास्त्रविद्याप्रश्नः	५९	२
(३)	वगलास्त्रविद्यायाः क्रमः	५९	३-४
(४)	वगलास्त्रविद्यामन्त्रोद्धारः	५९-६९	४-८
(५)	तदृष्यादि-न्यास-ध्यान-पुरश्चर्याविधि	६०	९-१८
(६)	शत्रुकुक्षयकृदादिनानाप्रयोगाः	६१	१८-३०

२३. त्रयोविंशः पटलः पृष्ठ ६२-६४

(१)	श्रीवगलादेवीध्यानम्	६२	१
(२)	वगलास्त्रमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	६२	२
(३)	वाक्सिद्धिप्रदप्रयोग	६२	३-४
(४)	व्याधिनानाशनप्रयोगः	६२	५
(५)	जिह्वा-श्रोत्र-प्राण पाद-जठराग्नि-गात्रस्तम्भन-प्रयोगाः	६२	६-११
(६)	शत्रुमार्याया गर्भलाघप्रयोगः	६२-६३	१२-१३
(७)	रिपुस्त्रीणा वन्ध्याकरणप्रयोगस्तज्ञानप्रयोगश्च	६३	१४-१६
(८)	रिपुलक्ष्मीविनाशकाद्यनेके प्रयोगाः	६३-६४	१७-२७

२४. चतुर्विंशः पटलः पृष्ठ ६४-६६

(१)	सस्तम्भरूपावगलाम्बाध्यानम्	६४	१
(२)	वगलामन्त्रमालिकालक्षणजिज्ञासा	६४	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(४)	हरिद्रामालानिर्माणविधि.	६४-६५	३-९
(४)	मालासंस्कारविधि.	६५	१०-१४
(५)	मालाया भूमौ पतने पुनस्तत्संस्कारः	६५	१५-१६
(६)	शान्त्यादिकर्मभेदान् मालालक्षणानि	६५-६६	१७-१९
(७)	पुत्तलिकानिर्माणविधिः	६६	२०-२३
(८)	प्राणप्रतिष्ठाचर्चनजपविधि.	६६	२४-२७

२५ पञ्चविंशः पटलः पृष्ठ ६६-७१

(१)	वगलादेवीध्यानम्	६७	१
(२)	चतुरक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	६७	२
(३)	चतुरक्षरीमहामन्त्रोद्धारः	६७	३-७
(४)	चतुराक्षरी-न्यासविद्याकथनम्	६७	७-१०
(५)	चतुरक्षरी-ऋष्यादिकथनम्	६७	११
(६)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रध्यानं पुरश्चर्याविधानञ्च	६८-६९	१२-२१
(७)	योगिनीलक्षणम्	६८	२२
(८)	लौकिक्यादित्रिविधपूजा तल्लक्षणानि च	६८	२३-२६
(९)	योगिनां मता निर्गुणा चतुर्थी पूजा	६९	२७
(१०)	चतुर्विधचर्याया गौडादिदेशभेदात् सृष्ट्यादिनामसङ्केत- स्तद्वर्चाविधिस्तत्फलानि च	६९-७०	२८-४४
(११)	नारीनिःशदिकरणे हानिः	७०-७१	४५-४६

२६ षड्विंशः पटलः पृष्ठ ७१-७३

(१)	वगलादेवीध्यानम्	७१	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	७१	२
(३)	मानाद्रव्ययोगेन तपणप्रयोगविधिः	७१-७३	३-३०

२७ सप्तविंशः पटलः पृष्ठ ७३-७६

(१)	परब्रह्माधिदेवतावगलाध्यानम्	७३	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रहोमप्रयोगजिज्ञासा	७३	२
(३)	कर्मभेदात् कुण्डभेदा. स्थानभेदा होमद्रव्ययोगाश्च	७४-७६	३-२६

२८ अष्टाविंशः पटलः पृष्ठ ७६-७८

(१)	स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीवगलाध्यानम्	७६	१
-----	-----------------------------------	----	---

कमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	स्तम्भविद्याया. प्रयोग जिज्ञासा	७६	२
(३)	वगलाहृदयमन्त्रप्रशस्तिवर्णनम्	७६-७७	३-१३
(४)	वगलाहृदयमन्त्रोद्धारस्तज्जपेन वन्ध्यादोष- कृत्रिमरोगादिनाशनफलञ्च	७७-७८	१४-२४
२९. ऊर्णात्रिंशः पटलः पृष्ठ ७८-८०			
(१)	वगलाध्यानम्	७८	१
(२)	वगलाहृदयमन्त्र-प्रयोगजिज्ञासा	७८	२
(३)	वगलाहृदय-मन्त्रोद्धार	७८	३
(४)	स्वर्णादिनिमित्ते यन्त्रे वगलाहृदयमन्त्रलेखनक्रमः	७९	४-७
(५)	यन्त्रपूजाविधि	७९	८-९
(६)	यन्त्रपूजायां कर्मभेदान्नानाकुसुमप्रयोगा	७९-८०	९-२२
३०. त्रिंशः पटलः पृष्ठ ८१-८३			
(१)	वगलाध्यानम्	८१	१
(२)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रजिज्ञासा	८१	२
(३)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रोद्धारस्तदृष्यादिन्यासविद्याकथनञ्च	८१	३-६
(४)	मन्त्रभेदेन वगलाध्यान तन्मन्त्रपुरश्चर्या च	८१-८२	७-१२
(५)	कर्मभेदाद् वित्त्वादिविधिवृक्षसूलेषु जपविधानेन नानाकार्यसिद्धयः	८२-८३	१३-१९
३१. एकत्रिंशः पटलः पृष्ठ ८३-८६			
(१)	भक्तचिन्तामणिवगलाध्यानम्	८३	१
(२)	वगलाष्टाक्षरीमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	८३	२
(३)	पुत्तलीप्रयोग	८४	३-६
(४)	नानाद्रव्ययोगेन जिह्वास्तम्भादिशृङ्गे भस्मचूर्ण- भक्षणाद्यनेके प्रयोगाः	८४	६-११
(५)	पशुपक्ष्याद्यङ्गावयवानां स्थानविशेषेषु निक्षेपाद्- रिपुमारणादिप्रयोगाः	८४-८५	१२-१७
(६)	नानावस्तुसयोगजघूपवासनादिप्रयोगाः	८५-८६	१८-३५
३२ द्वि त्रिंशः पटल पृष्ठ ८७-९०			
(१)	प्रेतासनस्थावगलाध्यानम्	८७	१

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	वगलास्त्रोपसंहारविद्याजिज्ञासा	८७	२
(३)	ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनिकालीविद्यामन्त्रोद्धारः	८७	३-६
(४)	विद्यामन्त्रपुरश्चर्याविधि.	८७-८८	१०-१६
(५)	वगलास्त्रोत्रपसंहारक्रम. (जिह्वास्तम्भनाद्यभिचार- शान्तिप्रयोगाः)	८८-९०	१७-४०

३३. त्रयस्त्रिंश. पटलः पृष्ठ ९०-९४

(१)	श्रीवगलादेवीध्यानम्	९०	१
(२)	वगलास्त्रोपसंहारयन्त्रजिज्ञासा	९०	२
(३)	कपिलानवनीतेनोपलिप्ते कदलीपत्रे समन्त्रयन्त्र- लेखनक्रमः	९१	३-५
(४)	यन्त्रस्याष्टदलेषु ताक्ष्यमालामनोलेखननिर्देश.	९१	५
(५)	ताक्ष्यमालामनोरुद्धारः	९१	६-६
(६)	यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा-पूजाविधि	९२	१०-१२
(७)	अभिचारशान्तिकरो यन्त्रधारणप्रयोगः	९२	१३-१७
(८)	विविधव्याधिविनाशनकरस्ताम्बूलचवणप्रयोग.	९२	१८-२१
(९)	मार्जन-तोयपानादभिचारशान्तिः	९३	२२
(१०)	धारणयन्त्रस्योद्धारस्तत्प्राणप्रतिष्ठापूजाविधीच	९३	२३-२८
(११)	विविधकृत्त्रिमरोगादिनाशनार्थं तद्यन्त्रधारण- मार्जन-प्राशन-पानप्रयोगा	९३-९४	२९-३८

३४. चतुस्त्रिंश पटल. पृष्ठ ९४-९८

(१)	वगलाध्यानम्	९४	१
(२)	सप्तस्तकम-सर्वोपद्रवादिनाशनजिज्ञासायां कृत्यावेश (वश्य)स्तम्भनप्रयोगकथनम्	९४-९५	२-१०
(३)	तत्र ज्वालाभुक्त्यादिपञ्चास्त्रप्रयोगविधिः, त्रैलोक्यविजयास्त्रप्रयोगस्तत्फलकथनञ्च	९५-९७	११-३३
(४)	तद्वन तर्पणप्रयोगाः	९७-९८	३४-३८

३५. पञ्चत्रिंश. पटलः पृष्ठ ९८-१००

(१)	वगलाध्यानम्	९८	१
(२)	धीजभेदजिज्ञासा (वगलामन्त्रनिर्णयजिज्ञासा)	९८	२
(३)	पट्त्रिंशदक्षरीविद्याया ऋष्यादिविचारे सांख्यायन-ब्रह्मयामल-जयद्रथयामल- हारिद्रसहितामतानि	९८	३-८

क्रमाङ्क	विषयः	पृष्ठ	श्लोक
(४)	कलौ सांख्यायनमतस्यैव प्राधान्यम्	६८	८
(५)	विद्यामन्त्रजपात्पूर्व मृत्युञ्जयमन्त्रजप- स्तदकरणेऽसिद्धिश्च	६८	९
(६)	सांख्यायनोक्तबीजसंज्ञायां स्थिरमायाबीजोद्धारः.	६९	१०-१२
(७)	पीतवासामते स्थिरबीजलक्षण तदुद्धारश्च	६९	१३-१५
(८)	रेफ्युक्ताया स्थिरमायाविद्याया जपेनैव सर्वसिद्धिः.	६९	१६-१७
(९)	लघुषोढा-महाषोढादिन्यासान्त एव विद्याज प प्रतिपादनम्	६९	१८-१९
(१०)	पीतवासामते वगलाध्याननिरूपणम्	१००	२०-२१
(११)	सांख्यायनमते पश्चिमाम्नायोत्तराम्नायभेदेन वगलापूजननिर्देश	१००	२२

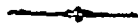
३६. षट्त्रिंशः पटलः पृष्ठ १००-१०२

(१)	वगलाध्यानम्	१००	१
(२)	साररूपा सर्वकर्मणनाशनोपायजिज्ञासा	१००	२
(३)	मन्त्र-कवच-मन्त्रात्मक सर्वकर्मणनिर्णयिनो नाम प्रथमो योगः	१००	३-६
(४)	क्षुद्रकर्मणनिर्णयिनो नाम द्वितीयो योगः	१००-१०१	६-८
(५)	कवच-स्तोत्र-मन्त्रात्मक क्रूरकर्मणनिर्णयि नाम योगः	१०१	९-१०
(६)	गायत्री-कवच-मन्त्र-स्तोत्रात्मक सर्वकर्मण- नाशनो नाम योगः	१०१	११-१२
(७)	तारा-काली-छिन्नमस्तामन्त्रात्मकः सर्वदोष- निवारणो नाम योग	१०१	१२-१३
(५)	कवच-त्राणात्मक सर्वदोषनिवारणो नाम योगः	१०१	१४-१५
(६)	रणस्तम्भ-प्राणरक्षा-दिव्यरक्षाकारक शताक्षरीमन्त्र-कवच-हृदयात्मको योगः	१०१	१६-१७
(७)	कवच-चतुरक्षरीमन्त्रात्मक कवचचन्द्रवर्णात्मको योगः	१०२	१८
(८)	एकाक्षरी-वेदाक्षरी-षट्त्रिंशदक्षरी-कवचात्मको- महाब्रह्मास्त्रयोग	१०२	१९-२५

३५. पञ्चत्रिंशः पटलः पृष्ठ १०२-१०५

(१)	पीताम्बराध्यानम्	१०२	१
-----	------------------	-----	---

क्रमाङ्कः	विषयः	पृष्ठ	श्लोक
(२)	रहस्यजिज्ञासा	१०२	२
(३)	ब्रह्मास्त्रयोगफलप्रशंसनम्	१०३	३-१६
(४)	होमयोग-प्रयोगकथनम् (प्रयोगोपतहार)	१०४-१०५	१७ ३१
(क)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १०५-११६	
	ऋष्यादिन्यासध्यानादियुता.		
	सांख्यायनतन्त्रगता मन्त्रा	१०५-११६	
(ख)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११६-११८	
	वज्रपञ्जरकवचस्तोत्रम्	११६-११८	
(ग)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११८-१२२	
	वगलामुखीत्रैलोक्यविजय नाम कवचम्	११८-१२२	
(घ)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १२२-१२८	
	श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम्	१२२-१२८	
	सांख्यायनतन्त्रस्थानास्पद्यानामनुक्रमः	१-१८	



शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१६	१२	चान्य	चान्ये
१८	११	तलतैलेन	तिलतैलेन
२१	७	शातोदरी	शालोदरी
२१	२६	विविखेत्	विलिखेत्
२४	१३	०वाक्पतिस्तुवा	०वाक्पतिस्तु वा
२७	२८	ऋषिसंख्यया	ऋषिसंख्यया
२७	२६	सक्षमीवान्	लक्षमीवान्
३१	१७	दाभिघातेन	गदाभिघातेन
३५	१७	सस्मरेत् १६'	सस्मरेत् ११'०
३८	६	लंकारं	लकारं
३८	७	ह्ल	ह्ल
३८	१६	गदा	गदा
४१	२०	मनुः ५५	मनुः १५
४३	३	तन्त्रराज०	मन्त्रराज०
४५	१	०जिह्वाभेदानार्थं	०जिह्वाभेदनार्थं
५०	२०	जिह्वास्तम्भं	जिह्वास्तम्भ
५२	५	सदाहः	स दाहः
५२	७	०मूर्द्धनि	०मूर्द्धनि
५२	२३	३ घ पुस्तके	३. घ. पुस्तके
६१	३	जिह्वास्तम्भन०	जिह्वास्तम्भन०
६४	१५	लक्षण	लक्षण
६४	२५	विशेशो	विशेषो
६४	२६	तु	तु
६७	२१	वन्यस्यता	विन्यस्यता
६७	२६	छन्दो ऋ	छन्दोऽऋ
६८	१३	द्रावरणदेवताम्	हरिद्रावरणदेवताम्
६८	२४	॥२॥	॥२२॥
७२	२	अय्युत	अयुत
७४	२	॥६॥	॥३॥
७५	१६	ध्यानपूर्वकम्	ध्यानपूर्वकम्
७६	१३	चतर्पणम्	च तर्पणम्
८३	२५	तत्तत्फल०	तत्तत्फल०
८४	२	मण्डलात्तद्०	मण्डलात्तद्०

पृष्ठ	पंक्ति	प्रशुद्धम्	शुद्धम्
८५	२२	॥२२॥	॥२३॥
८७	३०	२२. ०तद्दशाशं च	२२. रा० ०तद्दशाशं च
८८	१६	॥१७॥	॥१८॥
८८	३१	१६ रा तु षण्मास	१६. रा. श्लोकाद्धर्मिदं नास्ति
८९	२५	८. रा. यद्यद्गण०	८. रा. यद्यद्गण०
९१	२३	परम	परम्
९२	१२	कृत्त्रिमैः	कृत्त्रिमैः
९२	१६	निश्चितम्	निश्चितम्
९२	२६	विशेषोऽय	विशेषोऽय
९३	१०	शवि लिखेद्	श विलिखेद्
९३	१०	चयथाक्रमम्	च यथाक्रमम्
९३	२१	नाजयेद्	नाचयेद्
९३	२६-३०	१५ १६. १७	१४. १५. १६.
९६	१६	योगो य	योगोऽयं
९७	शीर्षं	त्रयस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशः
९९	"	"	पञ्चत्रिंशः
१००	९	षट्त्रिंशः	षट्त्रिंशः
१०१	शीर्षं	द्वात्रिंशः	षट्त्रिंशः
१०३	"	चतुस्त्रिंशः	पञ्चत्रिंशः
१०४	५	मध्यभागे	मध्यभागे
१०७	२०	ॐ बीज	ॐ बीज
११०	७	ज्वालामुख्यस्र०	ज्वालामुख्यस्र०
११०	१०	ऋष्यादि०	ऋष्यादि०
११०	१६	श्रीवृहद्भानुमुख्यस्र०	श्रीवृहद्भानुमुख्यस्र०
११०	२६	ग्राह्याणि	ग्राह्याणि
११०	२९	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०
११२	७	हुं फट् स्वाहा	हुं फट् स्वाहा
११२	९	परविद्याभक्षिणी	परविद्याभक्षिणी
११३	२६	कीलकाय	कीलकाय
११५	९	०वगलास्त्रीपसंहार०	वगलास्त्रीपसंहार०
११५	१८	ॐ शिखायै	ॐ कू शिखायै
११७	१९	विघ्नैर्ना०	विघ्नैर्ना०
११८	२१	मन्त्ररूप	मन्त्ररूपं
११८	२२	ज्ञेय	ज्ञेय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१२०	१	फ व	फ व
१२२	१४	नगात्मने	नगात्मजे
१२३	७	बीज	बीज
१२३	२४	० स्थितिध्वसने	स्थितिध्वसने
१२४	१५	० सस्तम्भन	सस्तम्भनम्
१२५	८	वान्त	वात
१२५	१०	० सुदुर्लभ	सुदुर्लभ
१२५	२५	० मतीन्द्रिय	मतीन्द्रिय
१२५	२६	१ त्यपि पाठः	इत्यपि पाठः
१२६	७	हृद्य	हृद्य
१२६	८	गोप्यतम	गोप्यतम



सांख्यायनतन्त्रम्

॥ श्रीः ॥

सांख्यायनतन्त्रम्

—००००००—

॥ अथ प्रथमः पटलः ॥

श्रीशिष्याय नमः ॥^१ पीतांबरार्थं नम ॥^२

मध्ये सुधाब्जिमणिमण्डपरत्नवेद्यां

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।

पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गी^३

देवी भजामि घृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥१॥

क्रीञ्चभेद उवाच—^४

कैलाश (स) शिखरासीन गौरीवामाङ्गसस्थितम्^५ ।

भारतीपतिवल्मीकि-^६शेषसयुतमीश्वरम् ॥२॥

अष्टदिक्पालकोशाष्ट-^७विघ्नेशाष्टकसेवितम् ।

भैरवाष्टवृतं^८ देवं मातृमण्डलवेष्टितम् ॥३॥

महापाशुपताक्रान्तं^९ प्रमथैरावृत प्रभुम् ।

नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च^{१०} इदं वचनमब्रवीत् ॥४॥

चापचर्यासुनिपुणैर्युद्धचर्याभयङ्करैः ।

नानामायाविना चैव^{११} जेतुमिच्छामि^{१२} रक्षसाम्^{१३} ॥५॥

तस्योपायं च तद्विद्यां वद मे करुणाकर ।

पुत्रोऽहं तव शिष्योऽहं कृपापात्रोऽहमेव च ॥६॥

ईश्वर उवाच—^{१४}

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रीञ्चभेदन^{१५}कोविद ।

ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रुसंहारो^{१६} न भवेत्कलौ ॥७॥

१ ख घ श्रीगणेशाय नमः ; ग. श्रीशिवौ जयत. । २ क. पीतांबरार्थं नमः ; घ. नास्ति । ३ ग. ०विभूषिताङ्गी । ४ ख घ. क्रीञ्चभेदन उवाच : ग. क्रीञ्चभेदनोवाच । ५ अ ०वामाङ्गसस्थितम् । ६ ख. ०वाल्मीकी ० ; ग. ०वाल्मिकी ; घ. वाल्मीक । ७. ख.ग.घ. अष्टदिक्पालकोशाष्ट ० । ८ ख.ग. भैरवाष्टकवृत ; घ. भैरवाष्टयुत । ९ ग. महापाशुपदाक्रान्तम् ; घ. महापाशुपताक्रान्त । १० घ. कुमारोपि । ११ ख. नानामाया-विनश्चैव ; घ. नानामायाविन जेतु । १२ घ. जानुमिच्छामि । १३ ख.घ राक्षसान् ; ग राक्षसा । १४ ग इश्वरोवाच । १५ घ. भेदेन । १६ क.ग.घ शत्रुसंहारं ।

तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम् ।
 पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित् ॥८॥
 ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा ।
 प्रवृत्तिरोधिनी विद्या वगला च कुमारक ॥९॥
 मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।
 षट्कर्माधारविद्या^१ च ये ते^२ पर्यायिवाचकाः ॥१०॥
 षट्प्रयोगास्त्रयो विद्या ये विद्यागमभूषिताः ।^३
 तिरस्कृताखिला विद्या त्रिशक्तिमयमेव^४ च ॥११॥
 स्तम्भनेन विना शान्तिर्वश्यञ्चैव तु तद्विना ।
 मोहनाकर्षणञ्चैव विद्वेषोच्चाटनन्तथा^५ ॥१२॥
 मारण भ्रान्तिरुद्वेगकारण^६ च कुमारक ।
 विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्य सुपावनम् ॥१३॥
 विना च स्तम्भिनीविद्यां “न विद्या च प्रभासते ।
 तस्मादेव^७ महाविद्या^८ कमलासनजीवनम्^९ ॥१४॥
 पद्मजो नारदो विद्या” सांख्यायनमुनिं प्रति ।
 उपदेशक्रमेणैव उक्तवान्मेरुकन्दरे ॥१५॥
 तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागम भुवि ।
 मूलमंत्रोपविद्याश्च^{१०} अङ्गमन्त्राश्च विस्तरात् ॥१६॥
 प्रयोगं चोपसंहारं^{११} तद्वाराधनतद्गुणम्^{१२} ।
 विस्तरेणोक्तवानस्मि वक्ष्ये तत्सर्वमादरात् ॥१७॥
 स्वमन्त्राक्षरणी^{१३} विद्या स्वमन्त्रफलदायका^{१४} ।
 स्वकीर्त्तिरक्षिणी विद्या शत्रुसंहारकारिका^{१५} ॥१८॥
 परविद्याच्छेदन^{१६} च परमन्त्रविदारणम्^{१७} ।
 परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारकम्^{१८} ॥१९॥

१. ग. षट्कर्माहार० । २. ख. घ एते । ३. ख. षट्प्रयोगाश्रया विद्या षड्विद्यागम-
 भूषिताः । ४. ग त्रिरात्रिमयमेव । घ त्रिशक्ति खलु मेव । ५. ग तद्वेषोच्चाटन० ।
 ६. घ. भ्रान्तिमु० । “-” चिन्हान्तर्गतोऽशः घ पुस्तके नास्ति । ७. ख. तस्मादेता । ८.
 ख. ०विद्या । ९. ख जीवनी । १०. ग घ. ०विद्या च । ११. ग. चोपहारं । १२. घ.
 ०लक्षणम् । १३. ख स्वमन्त्ररक्षणी ; घ. स्वविचारक्षणी । १४. ख. ०दायिकां ,
 ग ० दायका । घ. ० दायिनी । १५. ग ०कारक ; घ. ०कारिणी । १६. ख.
 घ. ०च्छेदनी । १७. ख घ. ०विदारिणी । १८. ख ०कारिका ; घ. ०कारिणी ।

परानुष्ठानहरण^१ परकीर्त्तिविनाशनम्^२ ।
 परापजयकृद्^३ विद्या परेषां भ्रमकारणम्^४ ॥२०॥
 ये वा विजयमिच्छन्ति^५ ये वा जेतुं क्षयं^६ कलौ ।
 ये वा क्रूरमृगेन्द्राणां^७ क्षयमिच्छन्ति मानवाः ॥२१॥
 ये(य इ)च्छन्त्याकर्षशान्त्यादि^८ वश्य सम्मोहनादिकम् ।
 विद्वेषोच्चाटन प्रीति तेनोपास्यस्त्वय मनु^९ ॥२२॥
 सत्सम्प्रदायविधिना^{१०} सद्गुरोर्मुखतस्तथा ।
 उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ॥२३॥
 कुलाचारसमायुक्त^{११} कुलमार्गेण पुत्रक ।
 दीक्षा कुलगुरोर्योगात् गृहीतव्या सुबुद्धिना^{१२} ॥२४॥
 साधयेत्कुलमार्गेण तेन मन्त्र प्रयोजयेत् ।
 उपसहारण^{१३} तेन कर्त्तव्य कुलयोगिना ॥२५॥
 सौभाग्यचर्यासमायुक्त^{१४} सदा तर्पणपूर्वकम् ।
 सदा पूजासमायुक्त^{१५} चिन्तित भवति ध्रुवम् ॥२६॥
 ऋषिसिद्धामरैश्चैव विद्याधरमहोरगैः ।
 यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचनृहाराक्षसैः^{१६} ॥२७॥
 पञ्चैन्द्रियैश्च सञ्चार सद्यो नाशकरो^{१७} मनु^{१८} ।
 पिण्डजाण्डजजीवैश्च किम्पुनः क्रौञ्चभेदन^{१९} ॥२८॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यानतन्त्रे प्रथमं पटलम्^{२०} ॥१॥

॥ अथ द्वितीयः पटलः ॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्^{२१} ।
 गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजां नमामि ॥१॥

१ ख. ०हारिणी । २ ख. ०विनाशनी । ३ घ. परापजयिनी । ४ ख. ०कारणी ;
 ग. घ. ०कारकम् । ५ ग. विलय० । ६ ख. ग. जतुक्षय । ७ घ. क्रूरमृगश्चैव ।
 ८ ख घ. इच्छन्ति शान्तिकर्माणि ; ग. येच्छन्ति शान्तिकर्माणि । ९ क. ग. ०मिद मनु ;
 घ. मिद मनु । १० घ. तत्संप्रदाय० । ११ क. ख. समायुक्तो ; १२ घ. सुबुद्धिमान् ।
 १३ घ. उपसहरणं । १४ ग. ०समायुक्तो । १५ ग. समायुक्तः । १६ ग. पीसाचा० ।
 १७ क. ग. घ. नाशकर । १८ ग. मुनिः ; घ. मनु । १९ ग. ०भेदनः ; घ. भेदेन ।
 २० ख. ग. प्रथमपटलम् , घ. मन्त्रवर्णनं नाम प्रथमः पटलः । २१ ग. परिपीडयति ।

क्रौञ्चभेद उवाच^१—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगकङ्कण ।

वद दीक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनादयः^२ ॥२॥

इश्वर उवाच^३—

पुस्तके लिखितान्मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः^४ ।

स जीवन्नेव चण्डालो मृतः^५ श्वानो भविष्यति ॥३॥

दीक्षामार्गं विना मन्त्रं शैवं शाक्तञ्च^६ वैष्णवम् ।

यो जपेत्त दहत्याशु देवता च जुगुप्सति ॥४॥

दीक्षाविधिं विना मन्त्रं यो जपेत्कोटिकोटयः ।

न स सिद्धिमवाप्नोति सिन्धुसंकतवर्षवत्^७ ॥५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दीक्षा कुलगुरोर्मुखात् ।

उपदेशक्रमेणैव मन्त्रसङ्ग्रहणं चरेत् ॥६॥

वेदवेदाङ्गपारङ्गं वेदान्तार्थसुनिश्चितम् ।

वैदिकाचारसयुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः ॥७॥

गर्भकौलागमासक्तं^८ नानाकौलपरायणम् ।

अष्टपाशविनिर्मुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः^९ ॥८॥^{१०}

पुरश्चरणकृत्सिद्धमन्त्रागमविशारदम् ।

उद्धत्तुं चैव सहत्तुं समर्थं सत्यवादिनम् ॥९॥

प्रस्थानज्ञानपारीणं^{११} नीतिशास्त्रार्थकोविदम् ।

श्रीविद्यामन्त्रयन्त्रज्ञं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः^{१२} ॥१०॥

चक्रपूजासमायुक्तं (क्तो) न्यासविद्याविशारदम् (द) ।

गुरुर्यत्नाच्च^{१३} कर्त्तव्यं^{१४} सततं सिद्धिकाक्षिभिः^{१५} ॥११॥

१. ख. घ. क्रौञ्चभेदन०, ग. क्रौञ्चभेदनोवाच । २. ख. स्तम्भनादिकम् ; घ. स्तम्भनास्त्रयोः । ३. घ. इश्वरोवाच । ४. ख. जपेच्च यः ; ग. जपन्ति ये ; घ. जपति यः । ५. ग. घ. मृत । ६. घ. वा शाक्त । ७. घ. सिन्धोः० । ८. घ. गुरुसेवासमानक्तं । ९. ग. ०मतन्द्रित । १०. श्लोकोऽयं ख. पुस्तके नास्ति ; घ. पुस्तके विशेषतोऽवलोक्यतेऽयं श्लोक — 'धृणा शका भय लज्जा जुगुप्सा चेति पञ्चकम् । कुल शीलं च मानं च अष्टपाशा[न्] विवर्जयेत्' ॥ ११. ख. प्रास्थान० ; घ. स्वस्थान० । १२. ग. ०मतन्द्रितम् । १३. क. घ. गुरु० ; ग. गुरु० । १४. ग. कर्त्तव्या ; क. घ. कर्त्तव्य । १५. घ. सिद्धिकाक्षिणः ।

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन घनेन वा ।
 अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपलभ्यते ॥१२॥
 शुश्रूषया गुरु सम्यक् तोषयेच्छिष्य अन्वहम्^१ ।
 प्रसन्नचेतसा दत्त मन्त्रमुत्तममर्भक^२ ॥१३॥
 स्वल्प वा बहून् चायं शिष्यद्रव्यं गुरुः स्वयम् ।
 गृहीत्वा मन्यमादत्ते विक्रीतं तदुदाहृतम् ॥१४॥
 राजस चैव तद्विद्याद्^३ भोगद भुवि पुत्रक ।
 विद्याप्रतिनिधिं विद्या[द्] यद्दत्त^४ तामसं मतम्^५ ॥१५॥
 मोक्षार्थी च गुरु यत्नात् शुश्रूषेणैव तोषयेत् ।
 शुश्रूषेणैव यत्त्व्व^६ तद्विद्यात्^७ सर्वसिद्धिदम्^८ ॥१६॥
 नो देय (या)^९ विद्यया विद्या वित्तकाली तथैव च ।
 सच्छिष्याय प्रदातव्यं^{१०} धनदेहाद्यवञ्चकैः ॥१७॥
 दुरालापसमायुक्तं दुर्गुणेन समन्वितम् ।
 सर्वथा वर्जयेच्छिष्यं स्वगुरोर्वाभिमानिनम्^{११} ॥१८॥
 अष्टपाशममायुक्तं अष्टाचारसमन्वितम् ।
 सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाविवर्जितम्^{१२} ॥१९॥^{१३}
 निमंत्सर निरालम्बं नीतिशास्त्रविचारदम् ।
 नित्यानित्यविवेकं च शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२०॥
 अष्टाभक्तिसमोपेतं धनदेहाद्यवञ्चितम्^{१४} ।
 अष्टपाशविनिर्मुक्तं शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२१॥
 गुरुशिष्यावुभौ मोहादपरीक्ष्य^{१५} परस्परम् ।
 उपदेशं ददन् गृह्णन् प्राप्नुयात्तो पिशाचताम् ॥२२॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे द्वितीय पटलम्^{१६} ॥

१. स. तोषयेच्छिष्यमन्वहम्; ग तोषयेच्छिष्यमन्वहम्, घ सतोष्याभीष्ट-
 सिद्धिदम् । २. ख. ०मर्भकं । ३. क. ख. ग. तद्विद्या । ४. घ तद्वत् । ५. घ रमृतम् ।
 ६. ग. यत्त्व्व; घ य लक्वा । ७. क. ग. तद्विद्या; घ. सा विद्या । ८. घ.
 सर्वसिद्धिदा । ९. ग. नोपदेय । १०. घ. प्रदातव्या । ११. घ. गुरुसेवाभिमानिनम् ।
 १२. ग. घ. गुरुसेवाभिमानिनम् । १३. घ. पुस्तके विशेषीय इलोकः—

‘कामुक काञ्चनासक्त करणालयवर्जितम् ।
 सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाभिमानिनम्’ ॥

१४. ख. घ. ०वञ्चकम् । १५. ख. ०दपरीक्ष्य; ग. ०दपराक्ष । १६. ख. घ.
 द्वितीयः पटलः ।

॥ अथ तृतीयः पटलः ॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थला^१

लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुविम्बाननाम् ॥

गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला^२

स्मरामि बगलामुखी विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम्^३ ॥१॥

क्रीञ्चभेद उवाच—^४

पूजाधारणयन्त्रज्ञ^५ सर्वमन्त्रविशारद ।

अभिषेकविधिं तात वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच^६—

आश्विने कार्तिके चैव^७ चैत्रमासे^८ कुमारक ।

कुर्युस्तमभिषेक^९ च मानवाः^{१०} सिद्धिकाक्षिणः^{११} ॥३॥

रवीं गुरौ भृगावब्जवासरे^{१२} च कुमारक ।

मन्त्राभिषेक कर्त्तव्य सतत सिद्धिकाक्षिभिः ॥४॥

रोहिणीश्रवणे चैव पुष्ये^{१३} चैव विशाखयोः ।

मन्त्राभिषेक कर्त्तव्य सद्यः^{१४} सिद्धिकर भुवि ॥५॥

एव शुद्धदिने^{१५} सम्यक् पूर्वोऽह्नि^{१६} समुपोषितम् ।

स्नापयेत्पञ्चगव्येन ततश्चामलकेन तु ॥६॥

तत शिष्य समानीय^{१७} देवतासन्निधौ पुनः ।

अयुत प्रजपेन्मन्त्र गायत्रीजपमाचरेत्^{१८} ॥७॥

देवस्येशानभागे तु गोमयेनोपलेपितम्^{१९} ।

रङ्गवल्ल्या लिखेद्यन्त्र रक्तपीतसितासितैः ॥८॥

१ ग. पुस्तके 'चलत्कनककुण्डलो' इत्यस्मादग्रेतनपदाशो नास्ति । घ चलत्कनक-
कुण्डला लसत्० । २. घ. कलितवैरि० । ३ ख. घ विमुखवाङ्मन । ४. ख. घ.
क्रीञ्चभेदन उवाच, ग. क्रीञ्चभेदनोवाच । ५. क. पुस्तके 'पूजा' स्थाने 'पूज्य' एवं
च ख पुस्तके 'यन्त्रज्ञ' स्थाने 'यन्त्रज्ञ' इति शब्दो स्तः । ६ ग. पुस्तके 'क्रीञ्चभेदनोवाच'
तथा च 'ईश्वरोवाच' इत्येवाय प्रयोग. सर्वत्र दृश्यते; अतोऽग्रे एतच्छब्दयो रेष एव पाठान्तर
रुहनीयो विद्वद्भिरिति ७. ख. चैत्रे । ८. ख. वैशाखे तु । ९ ख ग. कर्त्तव्यमभिषेक,
घ. कर्त्तव्य चाभिषेक । १०. ख. ग मानवैः । ११ ख. ग. सिद्धिकाक्षिभिः । १२.
ग भृगा[वि]दी०, घ भृगो इदु० । १३ ग. स्वर्सी । घ सापं । १४ ग. सर्वं ।
१५. ग सिद्धिदिने । १६. ग. पूर्वोऽह्नि, घ. पूर्वाह्ने । १७ ग घ समानीत्वा ।
१८ घ. गायत्री वेदमातरम् । १९. क ग. लेपिताम्, ख. लेपयेत् ।

षोडशाङ्गुलमान' तु लिखेद् विन्दुमनन्यधी ।
ततो(तदु)परि लिखेद् वृत्त^१भष्टपत्रं तु शोभनम् ॥६॥
प्रियङ्गुशालिगोधूमचरणकाटकमाषकैः^२ ।
कुलत्थमुद्गनीवारैः^३ क्रमान्मध्यादि विन्यसेत् ॥१०॥
प्रस्थं चैव चतुर्विंश प्रत्येक घान्यमेव च ।
अन्नण स्थूलकलश मध्ये सस्थाप्य बुद्धिमान् ॥११॥
अष्टपत्रे^४ न्यसेत्पुत्र कलशाष्टकमादरात् ।
क्षारिलतं चासित^५ शुद्ध कलश च समर्पयेत्^६ ॥१२॥
षोडशैरुपचारैश्च घृपाद्येनेव^७ विन्यसेत् ।
आपोवानेन पूर्येत नदीजलमकल्मषम् ॥१३॥
नि.क्षिपेन्नवभाण्डेषु नवरत्नान् कुमारक ।
कस्तूरीचन्दनोपेतान्^८ नवभाण्डेषु नि.क्षिपेत् ॥१४॥
मध्ये देवी समावाह्य चिन्मयी बगलामुखीम् ।
प्राणस्थापनमार्गेण केरलोक्तविधानतः ॥१५॥
वाणी चैव रमा गौरी शची स्वाहा रतिस्तथा ।
दुर्गा छाया^९ समभ्यर्च्य पूर्वाष्टकपत्रयोः^{१०} ॥१६॥
अर्चयेत्पूर्ववत्पुत्र केरलोक्तविधानतः ।
नवीननवसख्याक्वस्त्रेणैव तु वेष्टयेत् ॥१७॥
सुगन्धपत्रपुष्पादीन्^{११} विन्यसेत्कलशान्तरे ।
तत्र शिष्य^{१२} समानीत्वा(य) ऋत्विग्वरणमाचरेत् ॥१८॥
वेदवेदागपारीणमण्टी^{१३} ब्राह्मणमादरात् ।
प्रार्थयेद्युग्मसयुक्त^{१४} मर्चयेद्वस्त्रभूषणं ॥१९॥
गाकुत्सादिषु मन्त्रेषु प्रथम कलशमार्जनम्^{१५} ।
लक्ष्मीसूक्तेन श्रीयुक्त^{१६} द्वितीय कलशन्तथा^{१७} ॥२०॥

१. ख. ०माने । २. ख.-०पद्य । ३ ग घ चणकाटकमापकी । ४. घ
०नीवारा । ५. ख. अत्र पत्रे । ६ क. चासित । ७. ख. ग. घ. समर्चयेत् । ८ घ.
घृपाद्यैः परि । ९ घ ०चन्दनोपेत । १०. घ. पुस्तके चाण्ड्यादिशब्दा द्वितीयान्ता दृश्यन्ते ।
११. घ. पूर्वाष्टकसिद्धय । सुगन्धि पुत्र० ; घ. सुगंध पुत्र पुष्पादि । १३.
ग. शिषा । १४ घ. ०पारीणान्ण्टी । १५. घ. ०दध्यंसयुक्त० १६. घ. कुम्भ-
मार्जनम् । १७ घ श्रीयुक्तैः । १८ घ. कुम्भमार्जनम् ।

पौरुषेणैव सूक्तेन तृतीय कलश तथा^१ ।
 नारायणानुवाकेन^२ चतुर्थं रुद्रसूक्तकैः^३ ॥२१॥
 पञ्चब्रह्ममयैर्मन्त्रैः^४ पञ्चम कलश तथा ।
 षष्ठ चाम्भस्यवारेण^५ ब्रह्मपल्ल्या च^६ सप्तमम् ॥२२॥
 अष्टमं कठवल्ल्या^७ च मार्जयेन्मन्त्रकोविदः^८ ।
 मध्यम^९ पूर्वकलश^{१०} मूलमन्त्रेण^{११} मार्जयेत् ॥२३॥
 एवञ्च मार्जनं कृत्वा नवीनैर्वस्त्रभूषणैः ।
 अलंकृत्वा तु शिष्य^{१२} तमानीय^{१३} मण्डपान्तरे ॥२४॥
 वामोरूपरि विन्यस्य मूर्द्धनि चाघ्राय सादरात् ।
 एकैकं च पुरश्चर्यामूलमन्त्रं कुमारक ॥२५॥
 स हिरण्योदके पूर्वं दद्याच्छिष्याय पुत्रक ।
 स्वहृत्कमलमध्यस्था विद्या ज्योतिर्मयी पुनः ॥२६॥
 शिष्यस्य हृदयं चैव प्रविशन्तीति भावयेत्^{१४} ।
 तद्वच्छिष्यस्तु^{१५} सभाव्य गुरु यत्नेन तोषयेत् ॥२७॥
 एव मन्त्राभिषेकञ्च^{१६} कुर्याद् ब्रह्मास्त्रविद्यया ।
 सद्यः^{१७} सिद्धिर्भवेत्पुत्र पुरश्चर्या विना^{१८} भुवि ॥२८॥
 इति षड्विद्यागमे^{१९} सांख्यायनतन्त्रे तृतीयं पटलम्^{२०} ॥३॥

१. घ कुम्भमार्जनम् । २. ख. अनुवाक्येन; ग. नुजाकेन; घ पादाशो नास्ति ।
 ३. ख. ग. कलशं तथा; घ. कुम्भमार्जनम् । ४. घ. ब्रह्ममयी० । ५. ख. चाम्भस्य
 चारेण; घ. चाम्भस्य पारेण । ६. ख. ग. ब्रह्मवल्ल्या च; घ. ब्रह्मवल्ल्या तु । ७.
 ख. ग. कठवल्ल्या; घ. भृगुवल्ल्या । ८. घ. अथवा कठकेन च । ९. घ. मध्यस्थ ।
 १०. ग. घ. पूर्णकलशं । ११. घ. मुक्तमन्त्रेण । १२. घ. तच्छिष्यं । १३. घ.
 आनीत्वा । १४. घ. पुस्तकेऽय विशेष पाठः—

“तत्प्रयोग तत्र उक्त्वा तन्मन्त्राणां पदे पदे ।

षष्ठक्रमोदकं कृत्वा प्रत्येकं च विभावयेत् ॥

विद्यारूपे भवेत् पुत्र साम्राज्य परिवेष्टयेत् ।”

१५. घ. तद्वच्छिष्यं तु । १६. घ. मन्त्राभिषिक्तं च । १७. घ. सर्वं । १८. घ.
 पुरश्चर्यादिना । १९. ख. ग. गमरहस्ये । २०. घ. दीक्षाविधितृतीयपटलः ।

॥ अथ चतुर्थः पटलः ॥

पीयूषोदधिमध्यचारविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे,

श्रीसिंहासनमौलिपातितरिपुप्रेवासनाध्यासिनीम् ।

स्वर्णाभां करपोडितारिरसना भ्राम्यद्गदां विभ्रती,

स्वप्ने^१ पश्यति तस्य याति विलय सद्योऽम्ब^२ सर्वापद ॥१

श्रीञ्चभेद(दन) उवाच—

गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गौरोपति^३ नमो नमः ।

ब्रह्मास्त्रमन्त्रसध्यां च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रमध्यापयेत्^४ सम्यक् शिष्यस्य गुरुरादरात् ।

तदारब्ध^५ तु तन्मन्त्र^६ मन्त्रसन्ध्या समाचरेत्^७ ॥३॥

तन्मन्त्रसध्या वक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।

मन्त्रसन्ध्याविहीनस्य सर्वं तन्निष्फल भवेत् ॥४॥

पञ्चाङ्गविधिना स्नात्वा मन्त्रस्नानमनन्तरम्^८ ।

ततः स्नायादङ्गमन्त्रमूलेनैव तु मार्जयेत् ॥५॥

घौतवस्त्रं परीधाय स्वगृहोक्तविधानतः ।

नित्यकर्म समाप्याथ मन्त्रसध्यां समाचरेत् ॥६॥

अङ्कुशेनैव मुद्रायाः^९ सूर्यमण्डलग जलम् ।

आनयेत्तोयमध्ये तु ध्यानयोगेन बुद्धिमान् ॥७॥

आवाहिनी स्थापनी च सन्निधानमतः^{१०} परम् ।

सन्निरोधनमुद्रा च सम्मुखी प्रार्थनी तथा ॥८॥

एता मुद्राश्च ततो^{११} दर्शयेत्साधकोत्तमः ।

शोधयेदङ्कुशेनादौ^{१२} चामृतीकरणं^{१३} ततः^{१४} ॥९॥

तज्जल वामचुलुके गृहीत्वा साधकोत्तमः ।

मूलेनैव त्रिषामन्त्र्य अष्टपत्राम्बुज लिखेत् ॥१०॥

१. घ. यस्त्वां । २. ग. सद्योप । ३. ख. ग. घ. गौरीप्रिय । ४. घ. मन्त्रसध्यापंयेत् ।
 ५. ख. घ. तदारभ्य । ६. ख. घ. तन्मन्त्रैः । ७. घ. समाधर । ८. घ. ०मत
 परम् । ९. ख. मुद्रायाः अकुशेनैव । १०. क. सन्निध्यानमतः । ग. सन्निधापनीतः ।
 ११. ख. सर्वतं । घ. ततोये । १२. घ. नादा । १३. घ. वामृती० । १४. घ. तथा ।

मध्ये एकाक्षरीमन्त्र बगलानाम्नि पुत्रक ।
 वेदसख्यामन्त्रवर्णान्^१ सप्तपत्रे^२ क्रमाल्लिखेत् ॥११
 अन्त्यपत्रे चाष्टवर्णा^३ल्लिखेन्मू १मनु तथा ।
 पुनरेकाक्षर मन्त्र त्रिसप्तमभिमन्त्रयेत्^४ ॥१२॥
 तेन मूलेन सम्मार्ज्यं मार्जनक्रमतोऽर्भक ।
 तन्मार्जनविधिं वक्ष्ये ऐहिकामुष्मिकेषु च^५ ॥१३॥
 त्रिधा मूर्द्धंनि द्विधा बाह्वोस्त्रिधा हृत्त्राभिदेशयो ।
 द्विधा पादेषु सम्मार्ज्यं सौम्यकर्मस्वयं^६ क्रम. ७ ॥१४॥^५
 एवञ्च मार्जनं कृत्वा गायत्र्या बगलाह्वया ।
 अर्घ्यत्रयञ्च निष्क्षिप्य हृदि सभाव्य देवताम् ॥१५॥
 मूलेन मन्त्रित तोय त्रिवारञ्च त्रिधा क्षिपेत्^६ ।
 एवमेव त्रिकालञ्च मन्त्रसन्ध्या समाचरेत् ॥१६॥
 उपस्थान त्रिकालस्य वक्ष्येऽहं क्रीञ्चभेदन ।
 उपस्थान विना सन्ध्या निष्फला^{१०} नात्र सशयः ॥१७॥
 गम्भीरा च मदोन्मत्ता स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।
 चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ॥१८॥
 मुद्गर दक्षिणे पाश वामे जिह्वा च विभ्रतीम्^{११} ।
 पीताम्बरधरा सौम्या दृढपीनपयोधराम् ॥१९॥
 हेमकुण्डलभूषाङ्गी पीतचन्द्रार्द्धशेखराम् ।
 पीतभूषणभूषाङ्गी स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ॥२०॥^{१२}
 एव ध्यात्वा तु देवेशी^{१३} प्रातः सन्ध्या समाचरेत् ।
 उपस्थान प्रवक्ष्यामि मध्याह्नस्य^{१४} कुमारक ॥२१॥

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशर्मन दारिद्र्यविद्रावणम्,

भूभृत्स्तम्भनकारण मृगदृशा चेत.समाकर्षणम् ।

१. घ. देवसख्या । २ क घ सप्तपत्रे । ३. घ अन्त्यपत्रे अष्टवर्णा । ४. ख. त्रि. सप्त० । ५ ख. वा । ६ ख ग . ०कर्मस्वय । घ मार्गस्वय । ७. घ. क्रमात् । ८. घ पुस्तके विशेष पाठः

“पादादिमूर्द्धं निपयन्त क्रूरकर्मेषु मार्जयेत्” ।

९. ख. घ पिबेत् । ग. पुन. । १० घ निष्फलं । ११. क. विभ्रकम् । ग. घ. वज्रकम् । १२. घ. पुस्तकेऽयमशो विशेषः—

“रत्नसिंहासना वन्दे ध्वी त्रैलोक्यसुन्दरीम्” ।

१३. ग. देवेशि । घ देवेश । १४ घ. मध्याह्ने च ।

सीभाग्यैकनिकेतनं मम दृशो. कारुण्यपूर्णेक्षण^१ ,

विघ्नौघं बगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२२॥

एव मध्यदिनोपास्थि^२ कुरु^३ कर्म सुपुत्रक^४ ।

‘उपस्थान प्रवक्ष्यामि’^५ सायाह्नस्य कुमारक ॥२३॥

मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वाञ्चलां कीलय

ब्राह्मी मुद्रय^६ मुद्रयागु विषणामघ्नचोर्गति स्तम्भय ।

शत्रूश्चूर्णय चूर्णयागु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे^७,

विघ्नौघ बगले हर प्रतिदिन कल्याणि तुभ्यं नम ॥२४॥

सायमौपास्थि^८ कर्तव्यमेवमेव^९ कुमारक ।

विघ्नग्रहविनाशाय^{१०} एव ध्यायेज्जगन्मयीम्^{११} ॥२५॥

मन्त्रसन्ध्यां विना मन्त्र कोटिकोटि जपन्ति ये^{१२} ।

न भवेन्मौनसिद्धाद्यै^{१३} मन्त्रसिद्धि कुमारक ॥२६॥

त्रिकालमाचरेत्सन्ध्यामुपस्थान तथैव च ।

सहस्र च जपेन्नित्यं सिद्धि. षण्मासतो भवेत् ॥२७॥

पूर्वोक्तविधिवत्संध्यां कृत्वा चाष्टोत्तर जपेत् ।

यं यं वापि स्मरन्^{१४} पुत्र त त प्राप्नोति निश्चितम् ॥२८॥

सन्ध्यामन्त्रेषु सर्वेषु^{१५} श्रद्धमेव कुमारक ।

न प्रसिद्धयत्यङ्गहीनं^{१६} तस्मात्सन्ध्या समाचरेत् ॥२९॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतत्रे चतुर्थं पटलम्^{१७} ॥४॥

॥ अथ पञ्चमः पटलः ॥

पीतवर्णा मदाघूर्णा समपीनपयोधराम् ।

चिन्तयेद् बगला देवी स्तभनास्त्राधिदेवताम् ॥३०॥

क्रौंचभेवन उवाच—

नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ भस्मोद्धूलितविग्रह ।

एकाक्षरीमहामन्त्रं बगलाख्यं महाप्रभो^{१८} ॥३१॥

१. ख. कारुण्यपूर्णेक्षण । २. घ. ०पास्ति । ३. घ. कूर । ४. घ. पुस्तके विशेष. पाठ—

“उपस्थान चैवमेतत्कर्तव्यं विधिवन्नर” ।

५. ‘-’ चिह्नगतोऽसौ नैवास्ति घ. पुस्तके ।

६ ग. पुस्तके नास्ति । ७. घ. पीताम्बरी । ८ घ. ०मौपास्ति । ९. घ. ०मन्ही मेव । १० घ. ०विनाशे च । ११ घ व्यायं० । १२ घ. जपेन तु । १३ घ. ०मौनिसिद्धाद्यै । १४. घ. स्मरेत् । १५. घ. पूर्वेषु । १६. ख. न च सिद्धय त्यंग-हीना । १७. घ. ०सन्ध्यादिघिर्नाम चतुर्थं पटलः । १८ घ वद प्रभो ।

ईश्वर उवाच—

तत्तदेकाक्षरीबीजं तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम् ।
 उत्तम बीजमुक्तं^१ च मन्त्रसर्वार्थसाधनम्^२ ॥३॥
 नानामन्त्रेषु मन्त्रं वा बीजाढ्यं^३ सर्वसिद्धिदम् ।
 निर्बीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा^४ ॥४॥^५
 तद्वीजोद्धारमनघं^६ सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
 पूजनं च प्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥५॥
 सान्तं रान्तसमायुक्तं चतुर्थस्वरसयुतम् ।
 रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरं (रो) मनुः^७ ॥६॥
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय (न्दोऽस्य) गायत्री समुदाहृतम् ।
 देवता बगला नाम^८ शक्तिश्चिन्मयरूपिणी ॥७॥
 लं बीजं ह्रीं च शक्तिश्च ईं कीलकमुदाहृतम् ।
 न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धिकरं^९ नृणाम् ॥८॥
 भूशुद्धिं भूतशुद्धिञ्च मातृकाद्वितयं न्यसेत् ।
 पञ्चाक्षरेण^{१०} विन्यस्य तद्विधिं शृणु पुत्रक ॥९॥
 नेत्रबाणं पुनः पञ्च नव पञ्चदशाक्षरम् ।
 विन्यसेदगुलीभिश्च षडङ्गेषु तथैव च ॥१०॥
 वक्ष्येऽहं पञ्जरं न्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम् ।
 बगला पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्या च गदाधरी ॥११॥
 पीताम्बरा^{११} दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते^{१२} ।
 जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत्^{१३} पश्चिमे सर्वतोमयी^{१४} ॥१२॥
 वायव्ये च मदोन्मत्ता कौबेरे^{१५} च त्रिशूलिनी ।
 ब्रह्मास्त्रदेवतैशान्ये^{१६} पाताले स्तभमातरः^{१७} ॥१३॥

१. घ. बीजयुक्तं । २. घ. मन्त्र सर्वार्थसाधकम् । ३. घ. बीजाढ्य । ४. घ. तथा
 ५. घ. अयमशो विशेष.—‘एकाक्षरी बगला उद्धार’ । ६. ख. ०मनघ । ७. ग. योजन ।
 ८. ख. मनुम् । ९. ख. घ. नाम्नी । १०. ख. ०सिद्धिकरी । ११. ख. घ. मन्त्रा-
 क्षरेण । १२. घ. पीताम्बरी । १३. घ. नैऋती । १४. घ. जिह्वां कीलयतो रक्षो ।
 १५. ख. सर्वचिन्मयी । ग. सर्वतामयि । घ. सर्वतोमयि । १६. घ. कौबेर्या । १७.
 ख. घ. ०देवतेशान्ये । १८. घ. पातालस्तम्भमातृकः ।

ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी ।
 एव दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥१४॥
 एवं न्यासविधिं कृत्वा यत्किञ्चिज्जपमाचरेत् ।
 तस्य सस्मरणादेव^१ गत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥१५॥
 सर्वं^२ न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृकां न्यसेत् ।
 तन्मातृकाविधिं वक्ष्ये सारात्सारतरं तथा ॥१६॥
 तारञ्च मातृकावर्णं^३ बगलावीजमेव च ।
 नमोज्ज्तेन च विन्ध्यस्य मातृकास्थानतोऽनघ ॥१७॥
 ध्यानेन^४ मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यान सर्वार्थसाधनम्^५ ।
 ध्यानं विना भवेन्मूकः सिद्धमन्त्राऽपि पुत्रक ॥१८॥

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वेश्वानरः शीतति,
 क्रोधो शांतति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ॥
 गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यत्रिणा^६ यन्त्रितः^७,
 श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥१९॥

एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं^८ तत्त्वलक्ष सुबुद्धिमान् ।
 गुडोदकेन सन्तर्प्य तद्दशांशं कुमारक ॥२०॥
 त्रिकोणकुण्डे जूहुयाद्धस्तनिम्नोन्नते शुभे ।
 ह्यारिकुसुमेनेव सरक्तेनाज्यसयुतम्^९ ॥२१॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् तत्त्वसख्या तु युग्मकम् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम्^{१०} ॥२२॥
 वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्य पुष्पिणीम् ।
 मन्त्रसिद्धिकरं चैतत्^{११} सर्वदा रिपुनाशनम् ॥२३॥
 परमन्त्रप्रयोगेषु नानाकृत्त्रिमचेटकैः ।
 सद्यः स्तम्भनविद्या च^{१२} बगला च न सशयः ॥२४॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पंचमं पटलम्^{१३} ॥४॥

१. घ. ०देव । २. ग. घ. सर्व । ३. ख. मातृकावर्णः । ग. मातृकावर्णः । ४. घ. न्यासेन । ५. घ. ०साधकम् । ६. ग. त्वद्यत्रिणा । घ. त्वद्यत्रिणो । ७. घ. यत्रितो । ८. घ. जपेन्मूलम् । ९. ख. सरक्तेन्याज्य० । ग. सरक्तेनाह्य० । १०. घ. शिव-भाषणम् । ११. घ. चैव । १२. ख. स्तम्भनकृद्विद्या । घ. स्तम्भनविद्यादि । १३. ग. ०एकाक्षरमन्त्रकथनं नाम पञ्चमः पटलः ।

॥ अथ षष्ठः पटलः ॥

पाठीननेत्रां^१ परिपूर्णवक्त्रां^२ पञ्चेन्द्रियस्तम्भनचित्तरूपाम् ।

पीताम्बराढ्यां पिशितासना^३ सदा भजामि संस्तम्भनकारिणी सदा ॥१॥

क्रीञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नम. कारुणिकोत्तम ।

एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोग^४ वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

उत्तम कुण्डहोमञ्च स्थण्डिलञ्चैव मध्यमम्^५ ।

स्थण्डिलेन विना होम निष्फल भवति ध्रुवम् ॥३॥

पट्कोण चाष्टकोणञ्च चतुष्कोणं कुमारक ।

त्रिविध स्थण्डिलं चैव वक्ष्येऽहं कुरु श्रादरात् ॥४॥

लक्ष्मी (:) शान्तिस्तथा पुष्टिविघ्नाविघ्ननिवारणः^६ ।

चतुरस्रे हुनेत्कुण्डे तन्त्रवित् परिशोधिते ॥५॥

वशीकरणसम्मोहे वाणिज्ये द्रव्यसग्रहे ।

कीर्तिकामस्तु जुहुयाद्भ्रगाकारे च कुण्डके^७ ॥६॥

दशेन्द्रियस्तम्भने तु दिव्यैर्गन्धैस्तथैव च ।

त्रिकोणकुण्डे जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान् ॥७॥

विद्वेषणे तु जुहुयाद्वत्तुले कुण्डमध्यमे^८ ।

उच्चाटने तु जुहुयात् पट्कोणाख्ये तु^९ कुण्डके ॥८॥

मारणे चाष्टकोणे तु कतत्तत्कर्मनुसारतः^{१०} ।

तत्तद्द्रव्येण जुहुयात्तत्तद्ग्रन्थोक्तमेव च ॥९॥

वक्ष्येऽहं स्थण्डिलैर्होम^{११} षट्कर्मसु^{१२} कुमारक ।

जुहुयाच्छान्तिवश्येषु स्थण्डिले चतुरस्रके ॥१०॥

विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयादष्टकोणके ।

मारणोच्चाटने पुत्र पट्कोणेषु विधीयते ॥११॥

१ ग. पाठिन नेत्रा । घ. भालेन नेत्रां । २ घ. ०गात्रां । ३. ख. ग. पिशिताशना । घ पिशिनी । ४. ग. घ. ०महामन्त्र० । ५ घ. स्थण्डिलं मध्यमं तथा । ६. ग. घ. विद्या विघ्न० । ७. क कुण्डले । ८. घ कुण्डमध्यगे । ९ घ. च । १०. ग. तत्तत्कामा० । ११ ख. घ. स्थण्डिले होम । १२. ख ग. षट्कर्मेषु ।

प्रादेशं शतहोमे च^१ अरत्तिश्च सहस्रके ।
 हस्तं चायुतहोमेषु^२ द्विहस्त लक्षहोमके ॥१२॥
 गुणहस्त कोटिहोमे^३ कुण्ड निम्नोन्नत सुत^४ ।
 स्थण्डिलस्य च^५ वक्ष्यामि तान्त्रिकोक्तस्य लक्षणम् ॥१३॥
 अरत्तिर्हस्तमात्र च द्विरत्तिश्च द्विहस्तयोः^६ ।
 शतं सहस्रमयुतं लक्षहोमेष्वय क्रमः ॥१४॥
 सर्वत्रैवोन्नतं पुत्र प्रादेश स्थण्डिलक्रमम्^७ ।
 लक्षणं स्थण्डिलैः^८ कुण्डैः^९ न ज्ञात्वा निष्फलं हुतम् ॥१५॥
 शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटन तथा ।
 मारणान्तानि शसन्ति पट्कर्माणि मनीषिणः ॥१६॥
 नानारोगैः कृत्त्रिमैश्च नानाचेटकमेव च ।
 विषभूतप्रयोगेषु निरासः^{१०} शान्तिरुच्यते^{११} ॥१७॥
 वश्य जनानां सर्वेषां वात्सल्य हृद्गत स्मृतम् ।
 स्तम्भन रोधन पुत्र सर्वकर्मसु निष्फलम्^{१२} ॥१८॥
 मंत्रस्य^{१३} कलहोत्पत्तिविद्वेषणमुदाहृतम्^{१४} ।
 चलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदम्भुवि ॥१९॥
 प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ।
 प्रत्येकमेषां वक्ष्यामि होमयोग सुनिश्चितम् ॥२०॥
 दूर्वाहोमं त्रिमध्वक्तं जुहुयादयुतत्रयम् ।
 रोगहन्ता^{१५} ग्रहादिभ्यः सद्यः शान्तिकर भवेत् ॥२१॥
 सुमन्त-^{१६} कुसुमैराज्य^{१७} कृत वाणायुतं तथा ।
 जुहुयान्निशि काले च वश्यं सम्मोहन^{१८} भवेत् ॥२२॥
 विभीतकसमिद्धिर्वा करञ्जैर्बीजमेव च ।
 नेत्रायुत हुनेत्पुत्र स्तम्भन परम मतम्^{१९} ॥२३॥

१. घ. तु । २. घ. चायुतहोमे तु । ३. घ. कोटिहोमं । ४. घ. तथा । ५. ग. प्र । ६. ख. द्विहस्तकम् । ७. घ. स्थण्डिल क्रमात् । ८. ख. लक्षणै । ९. ख. स्थण्डिल । घ. स्थण्डिले । १०. ख. कुण्ड । ११. क. घ. निरासः । १२. क. ऽमुच्यते । १३. घ. निश्चितम् । १४. ख. मित्रस्य । १५. ख. ऽविद्वेषे च मुदा० । १६. ख. रोगकृत्वा । १७. ख. स्यमन्त । घ. शान्त । १८. घ. राज्यै । १९. घ. मोहनकां । २०. घ. परम् ।

निम्बार्कपत्रहोमेन निम्बतैलेन मिश्रितम् ।
 नेत्रायुतेन विद्वेष भवेत्पापाणयोरपि ॥२४॥
 उलूककाकयोः पत्रैर्वाणायुनमस्त्रण्डिभिः ।
 जुहुयाच्च ततो रात्री भवेदुच्चाटन सुत ॥२५॥
 तिलतैलसमायुक्त^१ शात्मलीकुसुम^२ तथा ।
 लक्षमेकं हुनेद्रात्री प्रेताग्नी प्रेतकानने ॥२६॥
 नग्न. प्रेतमुखे^३ भीमे^४ प्रेतकाष्ठेन^५ वृद्धिमान् ।
 मृकण्डुसदृश^६ चैव मारणं भवति ध्रुवम् ॥२७॥

इति षड्विधागमे सांख्यायनतन्त्रे षष्ठ पटलम्^७ ॥६॥

॥ अथ सप्तमः पटलः ॥

पीताम्बरधरां देवी पूर्णचन्द्रनिमाननाम् ।
 वामे जिह्वा गदां चान्य धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥१॥
 क्रीञ्चभेवन उवाच—

महापात्रुपताक्रान्त नम. पन्नगभूषण^८ ।
 षट्त्रिंशदक्षरी विद्या^९ वगलापात्रमेव च^{१०} ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम् ।
 प्रयोग चोपसहारं शान्तिं तच्छृणु पुत्रक^{११} ॥३॥
 तारं च वगलात्रीज वगलापदमुच्चरेत् ।
 मुखीति पदमुच्चार्य सर्वशब्द ततोच्चरेत् ॥४॥
 दुष्टानां पदमुच्चार्य वाच^{१२} मुखं पद^{१३} वदेत् ।
 स्तम्भयेति पद चोक्त्वा जिह्वा कीलय उच्चरेत्^{१४} ॥५॥
 बुद्धिशब्दं ततोच्चार्य विनाशय^{१५} ततो^{१६} वदेत् ।
 स्थिरमाया^{१७} ततोच्चार्य प्रणवं च ततोच्चरेत् ॥६॥

१. घ. तिलतैलेन सयुक्तं । २. ग. शात्मली० । ३. घ. प्रेतमुख । ४. क. ग्नी मे ।
 घ. भीमेः । ५. घ. प्रेतकाष्ठे च । ६. ख. मृकण्ड० । घ. मृकुण्डसदृशे । ७. घ.
 ०एकाक्षरीषट्प्रयोगकथन नाम षष्ठः पटलः ॥ ८. ख. ०भूषणम् । ९. ख. ग. षट्त्रिंशदक्षरी-
 विद्या । १०. ख. वगलां तां च मे वद । ग. वगलायाश्च मे वद । घ. वगलायाश्च
 देवता । ११. घ. साम्प्रत शृणु पुत्रक । १२. ख. वाचे । १३. ग. पदे । १४. घ.
 कीलयमुच्चरेत् । १५. ग. विनाशयेति । घ. विनाशाय । १६. घ. पदं । १७. घ.
 स्तम्भमायां ।

वह्निजायां समुच्चार्य्य एवं मन्त्रं समुद्धरेत् ।
 षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥७॥
 न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि सदा सिद्धिकरीं पराम् ।
 वगलामातृकां चादौ कामतार्तीयवाग्भवम् ॥८॥
 श्रीमायामातृकां चैव वगलोपञ्जरं न्यसेत् ।
 लघुषोढा च विन्यस्य सर्वमन्त्रेष्वयं क्रमः ॥९॥
 ध्यानं यत्नात्प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम्^१ ।
 आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥१०॥
 चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।
 त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ॥११॥
 बिम्बोष्ठी कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।
 पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥१२॥
 नारदो ऋषिरेवात्र बृहतीच्छन्द एव च ।
 देवता वगला नाम स्तम्भनास्तं चिन्मयीम्^२ ॥१३॥
 लं बीजं चैव ह्ये शक्तिः ई^३ कीलकमुदाहृतम् ।
 शत्रूणां स्तम्भनार्थञ्च जपेऽह^४ विधिपूर्वकम् ॥१४॥
 सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कीलचक्रक्रमेण च ।
 पृथ्वीलक्षं जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम् ॥१५॥
 तर्पयेत्तद्दशांशं हेतुमिश्रेण^५ वारिणा ।
 जुहुयाद्विल्वकुसुमं^६ तद्दशांशं च बुद्धिमान् ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तद्दशांशं घृतप्लुतम् ।
 तर्पयेत्^७ तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत् ॥१७॥
 पूजां त्रैकालिकीं नित्यं जपस्तर्पणमेव^८ च ।
 होमो^९ ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥१८॥
 पुरश्चर्या^{१०} विना मन्त्रं न प्रसिद्धयति^{११} भूतले ।
 एवं स्वाधीनमन्त्रेण^{१२} षट्प्रयोगान् समाचरेत् ॥१९॥

१ ख. सर्वकामार्थसिद्धिदम् । २ ख. स्तम्भनास्त्रे च चिन्मयी । ग. घ. स्तम्भनास्त्र
 च चिन्मयी । ३ ग. रं । ४ घ. जपेयं । ५ घ. हेतुमिश्रं । ६ ग. विल्वकुसुमैः ।
 ७, घ. तर्पणे । ८ ग. घ. जपतर्पणं । ९ घ. होमः । १० घ. पुरश्चर्या । ११.
 घ. सा सिद्धयति । १२. घ. साधितमन्त्रेण ।

शान्त्याद्य (न्त्यर्थं) जुहुयाच्छालिसक्तुराज्यसमन्वितम्^१ ।
 गुणायुत हुते^२ धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात् ॥२०॥
 वशीकरणकार्येषु वित्वपत्र घृतप्लुतम्^३ ।
 गुणायुत चामलकप्रमाण क्रौञ्चभेदन^४ ॥२१॥
 स्तम्भनेषु^५ हुनेद्धीमान् तालक घृतसम्प्लुतम् ।
 बदरीफलमात्रं तु गुणायुतमनन्यधीः ॥२२॥
 विद्वेषणे च जुहुयात्पत्रैर्निम्बार्कसयुतैः^६ ।
 रात्रौ वेदायुत धीमान् सद्यो विद्वेषण परम्^७ ॥२३॥
 राजीलवणसयुक्तं वाणायुतमनन्यधीः ।
 तस्य^८ चोच्चाटन^९ शीघ्रं ध्रुवकूर्मादियोरपि^{१०} ॥२४॥
 तलतैलेन सयुक्तं मापहोम गुणायुतम् ।
 प्रेताग्नी प्रेतकाण्डे^{११} च जुहुयात्प्रेतकानने ॥२५॥
 भीमवारे निशा^{१२} नग्नी जुहुयात्प्रेत उल्मुके^{१३} ।
 सद्यो मारणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च^{१४} ॥२६॥
 ॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे सप्तम पटलम्^{१५} ॥

॥ श्रयाष्टमः पटलः ॥

बिम्बोष्ठी चारुवदना समपीनपयोधराम् ।
 पानपात्र वरिजिह्वां धारयन्ती शिवा भजे ॥१॥

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमः कौलागमाचार्य वेदवेदाङ्गपारग ।
 बगलामन्त्रराजस्य प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

राजीलवणमादाय मूलमन्त्रेण पुत्रक ।
 ग्रस्त कृत्वा साध्यनाम जुहुयादयुत निशि ॥३॥

१. ख ०शक्तुमाज्य० । २. ख ग. घ. हुनेद् । ३. ख. घृतप्लुते । ४. घ. पुस्तके पद्यमिद नास्ति । ५. ख. स्तम्भने सु । घ. स्तम्भने तु । ६. ख. घ ०निम्बार्क समर्व । ७. ख. ग. घ. भवेत् । ८. घ. सद्य । ९. ग. उच्चाटन । घ. मुच्चाटन । १०. ख. ध्रुव कूर्मा० । घ ध्रुवकर्मा० । ११ खः प्रेतकाण्डे । १२. ख. निशी । ग. घ निशा । १३. ख. गोल्मुके । घ. दिङ्मुखे । १४. घ. वा । १५. घ. मंत्र-राजकथन नाम सप्तम. पटलः ।

नानारोगहरं चैव नानाभूतनिकृन्तनम् ।
 नानाकृत्त्रिमनाशञ्च भवेत्सत्य न संशयः ॥४॥
 हरिद्राखण्डहोमेन श्रयुतेन कुमारक ।
 वशीकरणसम्मोह भवेच्छङ्करभाषणम् ॥५॥
 तालकेन हुनेद्रात्री नेत्रायुतमनन्यधी ।
 नानास्तम्भनमार्गेषु सत्यमेतन्न संशयः ॥६॥
 खरस्य^१ रक्तमादाय जातिकर्म्मविरोधिनाम् ।
 निम्बार्कपत्रमादाय प्रत्येक नाम चालिखेत् ॥७॥
 प्रेताग्नी प्रेतकाष्ठे च नग्ने च^२ प्रेतदिङ्मुखे^३ ।
 हुनेत्प्रेतवने धीमानयुतं द्वेषकारकम् ॥८॥
 अनाथस्य चित्ती रात्री शत्रुप्रकृतिं लिखेत् ।
 हृदये नाम आलिख्य^४ मारयेति ललाटके ॥९॥
 दहयुग्मं लिखेद् बाहौ ऊर्वोस्तस्य^५ कुरुद्वयम् ।
 एव च विलिखेत्सम्यक् सशत्रोर्वर्णमादरात्^६ ॥१०॥
 ताडयेद् हृदये^७ मन्त्री शतमष्टोत्तरं जपेत् ।
 तद्भस्म संग्रहे^८ धीमान् गोपयेन्नगराद्वहिः^९ ॥११॥
 पुनर्भौ^{१०} मनिशाकाले मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः ।
 अष्टोत्तरसहस्रं च शत्रुमूर्द्धनि^{११} विनिक्षिपेत्^{१२} ॥१२॥
 स शत्रुः सप्तरात्रेण श्रियते नात्र संशयः ।
 उष्ट्राखण्ड रिपुं ध्यात्वाग्रस्य दण्डेन^{१३} मन्त्रयेत्^{१४} ॥१३॥
 निक्षिपेत्सप्तरात्रं तु सप्तधा मन्त्रित^{१५} तथा ।
 उच्चाटनं भवेत्सत्यं शिवस्य वचनं यथा^{१६} ॥१४॥
 प्रेतभस्म रवौ^{१७} ग्राह्यं बगलामन्त्रराजतः ।
 सहस्रं मन्त्रयेच्छत्रो^{१८} रात्री^{१९} नग्ने न^{२०} भीमके ॥१५॥

१. ग. घ. वाराह । २. ख. नग्नेश्च । घ. नग्ने वा । ३. ख. घ. प्रेत-
 दिङ्मुख । ४. ग. घ. मालिख्य । ५. ख. ऊर्वोर्भस्म । घ. ऊर्वोर्भस्म । ६. ख.
 स्वशत्रोः । घ. शत्रोर्वर्णसमादरात् । ७. ग. घ. गदया । ८. ख. ग. घ. संग्रहेद् ।
 ९. घ. गोपयेन्न । १०. घ. शत्रोन्मूर्धनि । ११. घ. निक्षिपेत् । १२. ख. ग्रस्य-
 दण्डेन । घ. ग्रस्तं कृत्वा तु । १३. घ. मन्त्रवित् । १४. ख. मन्त्रिते । १५. घ.
 तथा । १६. क. वशी । १७. ख. भस्म । घ. रात्री । १८. घ. मन्त्री । १९.
 ख. नग्नेऽथ । ग. घ. नग्नेन ।

खाने पाने च तद्भ्रूस्म दातव्यं शत्रुमण्डले ।
 वाक्पाणिपादपायुश्च^१ नेत्रश्रोत्रमतिस्तथा ॥१६॥
 स्तंभनं च भवेच्छीघ्रं वृहस्पतिसमोऽपि च^२ ।
 किम्पुनर्मानवादीनां स्तंभनं^३ क्रीञ्चभेदन ॥१७॥
 क्षुद्रप्रयोजनैः^४ पुत्रं न कर्त्तव्यं कदाचन ।
 अज्ञानात्कुस्ते यस्तु देवताशापमाप्नुयात् ॥१८॥
 ग्रस्तं कृत्वा वैरिनाम विलिखेत्तालपत्रके ।
 निशाकाले चार्कवारे निर्दहेद्दीपवह्निना ॥१९॥
 कुवेरसदृशः श्रीमान् मासमात्रेण पुत्रकः ।
 मन्दबुद्धिर्दरिद्रोऽपि जायते भुवि पुत्रकः ॥२०॥
 चित्तिवस्त्रं रवौ ग्राह्यं तदङ्गार रवौ पुनः ।
 चित्तिकाष्ठं रवौ ग्राह्यं रवौ कुर्यात्स लेखिनीम् ॥२१॥
 रवौ रात्रौ च सलिख्यं शत्रुनाम^५ च तत्पटे ।
 वेष्टयेद् वगलावीजं मूलमत्र ततो लिखेत् ॥२२॥
 वह्निवीजेन सवेष्टयेद् वेष्टयेज्जीवनीमनु^६ ।
 तद्वस्त्रगुलिका^७ कृत्वा वेष्टयेत् श्वेतरज्जुना^८ ॥२३॥
 स्थापयेच्च कपाले तु निशि भीमे च^९ चर्चिते^{१०} ।
 प्रादेशगर्तं कृत्वाथ स्मशाने^{११} च सुबुद्धिमान् ॥२४॥
 रवौ रात्रौ च^{१२} निक्षिप्य पूरयेद्भ्रूस्म सादरात्^{१३} ।
 तत्र नग्ने^{१४} जपं कुर्यादियुतं मूलविद्यया ॥२५॥
 मन्दाग्निर्मन्दबुद्धिश्च^{१५} नेत्रश्रोत्रेषु^{१६} मन्दताम्^{१७} ।
 पाणिपादौ^{१८} च मन्दत्वं निर्वीर्यो भवति ध्रुवम् ॥२६॥
 एव रोगसमायुक्तो मण्डलाद्रिपुनाशनम् ।
 चन्द्रप्रस्तारमंत्रेण द्रव्यतर्पणमाचरेत् ॥२७॥

१ घ. पायुश्च । २ घ. वा । ३ ग. सुगम । ४. ०ख. घ. ०प्रयोजने । ५.
 घ. रिपोर्नाम । ६ ख. ०जीवनी० । ७. घ. तद्वस्त्र गुटिका । ८. ख. प्रेतरज्जुना ।
 ९. ख. घ. भीमेन । १० घ. चार्चयेत् । ११. ग. स्मशाने तु । १२. ख. पि ।
 १३ घ. सादरात् । १४ घ. नग्ने । १५. ग. मन्दाग्नि० । १६. घ. नेत्रश्रोत्रे च ।
 १७ घ. मन्दता । १८. ख. पाणी पादे ।

शत सहस्रमयुतं कार्यलाघवगौरवात् ।
 तत्तर्पणासवं^१ पीत्वा^२ प्रयोग शान्तिमाप्नुयात् ॥२८॥
 न कर्तव्यं मुमुक्षुश्च^३ परपीडां कदाचन ।
 प्राणैः कण्ठगतैः कुर्यात् पश्चात् सस्कारमाचरेत् ॥२९॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टम पटलम्^४ ॥८॥

॥ अथ नवम. पटलः ॥

पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णां शातोदरी^५ शर्वमुखामृताचिताम्^६ ।
 पीनस्तनालङ्कृतपीतपुष्पा सदा स्मरेय बगलामुखी हृदि ॥१॥

कौचभेदन उवाच—

नमोऽस्तु मन्नागमकोविदाय श्रीनीलकण्ठाय नमो नमस्ते ।
 एतन्मनोर्यन्त्रमखण्डतेजसे^७ प्रयोगमूल वद चन्द्रचूड ॥२॥

ईश्वर उवाच—

यन्त्रप्रयोगं यमशासने^८ कलो यन्त्रप्रयोगं यमिनां च दुर्लभम् ।
 यन्त्रप्रयोगं यतयस्तु कुर्वता^९ यज्ञाद्धि^{१०} गोविप्रयतेश्च^{११} रक्षणे ॥३॥

विन्दु^{१२} त्रिकोणं वृत्तं च अष्टकोणं ततोपरि ।
 ततोपरि लिखेत्पुत्र षट्कोणं वृत्तमादरात् ॥४॥
 ततोपरि लिखेत्सम्यक् भूपुरद्वयमादरात्^{१३} ।
 विन्दुमध्ये लिखे^{१४} त्रिकोणत्रितये^{१५} त्रितयं^{१६} त्रिषा ॥५॥
 अष्टकोणेषु^{१७} विलिखेद् गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 षट्कोणेषु^{१८} सुसंलिय^{१९} विद्यां षट्त्रिंशदक्षरीम् ॥६॥
 वृत्तेषु^{२०} विलिखेत्पुत्र पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 भूपुरेषु च सलिय प्राणस्थापनक मनुम्^{२१} ॥७॥

१ ख. तत्तर्पणाम्भः । २. ख. संपीत्वा । ३. ख. मुमुक्षुश्च । ४. अष्टमः पटलः ।
 ५. ख. शान्तोदरी । ६. ख. शर्वमुखामरा० । ७. क, ख. ग. येतन्मनोर्यन्त्रमखण्ड-
 तेक्ष । ८. घ. यमशासनं । ९. घ. कुर्वन् । १०. ख. घ. यज्ञादि । ११. घ. यतश्च ।
 १२. ख. घ. विन्दुः । १३. ख. ग. घ. पुस्तकेष्वयमेशो विशेषः—

“विन्दुमध्ये लिखेद्वीजं बगलायाश्च पुत्रक ।

साध्यं तद्वीजगर्भं (मध्य. घ.) स्थ कुर्यात् सम्यक् सुबुद्धिमान् ॥

१४. क. ख. ग. तद्वीजं विलिखेत् । १५. घ. त्रितयेषु । १६. घ. त्रिषा । १७. घ. अष्ट-
 कोणेषु । १८. षट्कोणके । १९. ख. घ. च सलिय । २०. घ. वृत्तेषु । २१. घ. मनु ।

रजते स्वर्णपट्टे वा प्रादेशं चतुरस्रके ।
 लेखिन्या स्वर्णमय्या^१ च लिखेद्भ्रार्गववासरे ॥८॥
 पूजायत्रमिदं पुत्रपूजनात् सर्वसिद्धिदम् ।
 पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मुनिगुह्यं सुपावनम् ॥९॥
 मूलमन्त्रेण सम्पूज्य उपचारैश्च षोडशैः ।
 शुद्धप्रदेशजा दूर्वा निर्मला च सुकोमलाम् ॥१०॥
 सग्रहेत्क्षालयेत् सम्यक् मंत्रराजेन पुत्रक ।
 मन्त्रान्ते च नमः^२ पूर्वं^३ निक्षिपेद् दूर्वमादरात्^४ ॥११॥
 एव भूतसहस्रं च पूजयेच्च दिने दिने ।
 मण्डलाद्वचाधयः^५ सर्वे^६ मुच्यन्ते कृत्त्रिमादयः ॥१२॥
 भूतप्रेतपिशाचाद्याः क्रूराः खेचरभूचराः ।
 पूजनाग्नाशमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥१३॥
 अर्चयेत्पूर्ववद्यन्त्रमुपचारैश्च षोडशैः ।
 सग्रहेद्रक्तकुसुमं^७ हयारिं च सुनिर्मलम् ॥१४॥
 तेन पूजा प्रकर्त्तव्या^८ पूर्ववन्मण्डलसुधीः ।
 सम्मोहनं च वश्यञ्च द्रव्यलाभं भवेद्भ्रुवम् ॥१५॥
 बिभीतकोद्भवं पुष्पमाहरेद्भ्रूमवासरे ।
 पूजयेत्पूर्ववत्पुत्रानानास्तम्भनकर्मणि ॥१६॥
 निम्बार्ककुसुमेनाथ^९ यन्त्रं वापि^{१०} कुमारकम् ।
 पूर्ववत्पूजयेन्मन्त्री^{११} सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥१७॥
 घत्तूरकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुतः ।
 उच्चाटनं भवेत्सत्यं नान्यथा शिवभाषणम् ॥१८॥
 विषतिन्दुकपुष्पेण पूर्ववत्सम्यगर्चयेत् ।
 सद्यो विनाशमाप्नोति^{१२} मृकण्डुसदृशो^{१३} रिपुः ॥१९॥

१. ख स्वर्णमय्याः । २. ग. पुनः । ३. ख. पूर्वा । ४. घ. क्षिपेद्दूर्वा समाद-
 रात् । ५. घ. ऽदामया । ६. ख. सर्वा । ७. क. सग्रहे प्रकुसुमं । ८. घ.
 प्रकर्त्तव्यं । ९. घ. ऽचाथ । १०. घ. पुत्रेणाथ । ११. घ. ऽपूजयन् । १२. ख.
 विनाशमायाति । घ. नाशमवाप्नोति । १३. घ. मृकुण्ड० ।

शमन्तकुसुमेनैव^१ पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 पूर्ववज्जायते^२ लोके वेदशास्त्रार्थकोविदः ॥२०॥
 पलाशकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 सद्यो मन्दो भवेद्द्वारमी लभेत्सर्वज्ञतां सुत ॥२१॥
 पूर्ववत्पूजयेत् पुत्र अशोककुसुमेन च ।
 ईप्सिता^३ लभते^४ कन्या सा तु पुत्रवती भवेत् ॥२२॥
 तुलसीमञ्जरीभिश्च पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 ज्ञानभक्तिश्च वैराग्यं लभते^५ तरलैरपि^६ ॥२३॥
 नन्दावर्त्तेन^७ सम्पूज्य वातरोग व्यपोहति ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव पूजयेज्ज्वरशान्तये ॥२४॥
 कुसुमैश्चम्पकैरर्च्य^८ शीतज्वरनिवारणम् ।
 अर्चयेज्जातिकुमुमैर्मेहरोग^९ विनश्यति ॥२५॥
 वन्यैश्च मल्लिकापुष्पैर्निक्षेप^{१०} लभते ध्रुवम् ।
 केतकीकुसुमेनार्च्यं द्रव्यवान् जायते ध्रुवम् ॥२६॥
 एव च पूजयेद्यन्त्र न जपेन च होमतः ।
 प्रयोगसिद्धिर्भवति बगलायाः प्रसादतः ॥२७॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यानतन्त्रे नवम पटलम्^{११} ॥६॥

॥ अथ दशमः पटलः ॥

कम्बुकण्ठीसुताओष्ठी^{१२} मदविह्वललोचनाम् ।
 भजेऽह बगलां देवी पीताम्बरधरां शुभाम् ॥१॥

श्रीञ्चमेवन उवाच—

अष्टमूर्त्ते महामूर्त्ते नमस्ते चन्द्रशेखर ।
 वद प्रयोग मंत्रस्य^{१३} लेपनक्रममादरात्^{१४} ॥२॥

ईश्वर उवाच—

पूर्वोक्त यन्त्रमालिख्य^{१५} प्राणस्थापनपूर्वकम् ।
 अर्चयेदुपचारेण^{१६} चन्दनेन विलेपयेत् ॥३॥

१. घ. स्यमन्त । २. ग. पुत्रवान्० । घ. पुत्र वा० । ३. घ. ईप्सिता च । ४. घ. लभेत् । ५. ग. लभ्यते । ६. घ. च परैरपि । ७. ख. नन्दावर्त्तेन । नन्दावर्त्तेश्च । घ. नन्दावर्त्तेन । ८. घ. ०रर्त्ते । ९. ग. महारोगे । १०. घ. निक्षिप्त । ११. घ. ०यत्रप्रयोग नाम नवम पटलः । १२. ख. ग. कम्बुकण्ठी० । १३. घ. यन्त्रस्य । १४. घ. लेपन० । १५. घ. ०मालिख्यं । १६. घ. ०दुपचारैश्च ।

वाणायुतं जपेद्धीमान् नित्यपूजासमन्वितम् ।
 राज्यसिद्धिर्भवेत्सत्यमयत्नेन^१ कुमारक ॥४॥
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात्सम्यग्चितयन्त्रके ।
 नित्यं वाणसहस्रं च^२ न्यासध्यानसमन्वितम् ॥५॥
 मण्डलद्वययोगेन रोगकृत्याग्रहादयः ।
 तत्क्षणान्नाशमायान्ति^३ तमः सूर्योदये^४ यथा^५ ॥६॥
 पूर्तिं चार्द्धपल^६ नित्यं लेपयेद्यन्त्रमादरात् ।
 जप कुर्यात्पूर्ववच्च मासं वा मण्डल तु वा ॥७॥
 वशीकर तु सम्मोह द्रव्यसंग्रहमेव च ।
 भवत्येव न सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥८॥
 हरिद्रातालक चैव अर्कक्षीरेण मर्दितम्^७ ।
 त्रिकाल लेपयेन्नित्यं त्रिसहस्र जपेद्दिने ॥९॥
 महास्तभनमाप्नोति^८ कर्णाक्षिवाक्पतिस्तुवा^९ ।
 मण्डलान्नगर^{१०} ग्रामं रणसम्मोहमेव च^{११} ॥१०॥
 सर्षपास्त्रिकदूर्वैश्च^{१२} दुग्धैर्वज्रार्कसम्भवेः ।
 क्षारेण^{१३} मर्दयेत्सम्यक् यन्त्रलेपनमाचरेत् ॥११॥
 कृत्वार्धमण्डल चैव षट्सहस्रं दिने दिने ।
 विद्वेषण भवेत्सिद्ध शिवस्य वचन यथा ॥१२॥
 घत्तूर तिन्दुक^{१४} बीज तालकेन समन्वितम् ।
 निम्बपत्रद्रवेनैव मर्दयेत्लेपयेत्त्रिधा ॥१३॥
 एव मासप्रयोगेण नगरं ग्राममेव च ।
 रणे^{१५} वा राजगेहे^{१६} वा शीघ्रमुच्चाटन भवेत् ॥१४॥
 प्रेतान्नं प्रेतभस्म^{१७} च प्रेताङ्गारं समं समम् ।
 अर्कवज्रीमय^{१८} क्षीर खल्वेनैव^{१९} तु मर्दयेत् ॥१५॥

१. क. ०मयनेन । २. घ. तु । ३. घ. ०माप्नोति । ४. घ. सूर्योदयः । ५. घ. तथा । ६. ख. भूचिन्तार्थं फलं । ७. घ. मर्दयेत् । ८. घ. पक्ष्यात् । ९. ख. कर्णाक्षिवाक्युतिस्तु । घ. कर्णाक्षी वाङ्मतिस्तु । १०. घ. नगरे । ११. घ. वा । १२. ख. सर्षपास्त्रिकदूर्वैश्च । ग. सर्षपास्त्रिकदूर्वैर्वा । घ. सर्षपां त्रिकदूर्वैश्च । १३. ग. क्षीरेण । घ. खल्वेन । १४. घ. नितिदुवकं । १५. घ. रणं । १६. घ. राजगेह । १७. ख. प्रेत-भूति । १८. ग. अर्कवज्रमयी । घ. अर्कवज्रमयं । १९. क. खलेनैव ।

त्रिकालं लेपनं कुर्यात् प्रीतये होमयुक्तिना^१ ।
 नित्यं^२ ऋतुसहस्रं^३ तु मन्त्रराजमिमं^४ जपेत् ॥१६॥
 पक्षान्मारणमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
 अथवा निम्बतैलेन तद्वत्कृत्वा तु मारणम् ॥१७॥
 तिलतैलेन संयुक्तं मर्दयेद् गरमादरात्^५ ।
 यन्त्रस्य लेपनं कुर्यात् त्रिकालं मूलविद्यया ॥१८॥
 सन्तपेद्दीपशिखया पक्षमेकं कुमारक ।
 मारणं च भवेन्नित्यं नात्र कार्या विचारणा ॥१९॥
 वज्रीक्षीरं^६ त्रिकालं तु पूर्ववत्लेखनेषु^७ च ।
 तापञ्चरस्य पीडाया षण्मासाद्रिपुमारणम् ॥२०॥
 पूर्ववत्लेपनं चैव जपसन्तर्पणं^८ तथा ।
 त्रिसप्तदिनमात्रेण मारणं चोरगौरजैः^९ ॥२१॥
 घत्तूरद्रवसंयुक्तं मर्दयेत्सर्षपं तथा ।
 जपलेपनयोः^{१०} पुत्र गुल्मरोगी भवेद्विपुः ॥२२॥
 निम्बपत्रद्रवं चैव विषकण्टकजं^{११} तथा ।
 विषतिन्दुकजं चैव त्रिविधं च समं समम् ॥२३॥
 त्रिकाललेपनं^{१२} कुर्यात् षट्सहस्रं^{१३} मनुं जपेत् ।
 पक्षेण^{१४} द्वादशाहेन^{१५} मारणं च समं समम्^{१६} ॥२४॥
 त्रिकालं लेपनं कुर्यात् षट्सहस्रं मनुं जपेत्^{१७} ।
 मर्दयेदारनालेन मारिचं त्रिफलां तथा ॥२५॥
 त्रिकालं लेपनं कुर्यात्^{१८} त्रिकालं जपमाचरेत् ।
 करपादादिदाहेन^{१९} मण्डलान्छत्रुमारणम्^{२०} ॥२६॥

१. घ. सन्तपेद्दीपवहिना । २. घ. निसं । ३. घ. क्रतु० । ४. घ. ०मिद ।
 ५. घ. ०रलवमा० । ६. घ. वज्रक्षीर । ७. घ. ०लेपनेन च । ८. ग. जपः० । ९.
 घ. वैरिर्कृगृहः । ग. चोरगौरजैः । १०. ख. यत्रलेपनयोः । घ. जपलेपनया । ११. ग.
 ०कण्टककं । १२. ख. घ. त्रिकालं० । १३. क. सहस्रं । १४. घ. पक्षाद्वा । १५. घ.
 द्वादशाहं वा । १६. ख. ग. घ न सशयः । १७. पादद्वयं पुस्तकान्तरेषु नास्ति । १८.
 घ. कृत्वा । १९. क. करपाद्यपि० । ग. करपादावि । घ. करपाददहेनैव । २०. क.
 ०तारयम् ।

गोमयैर्लेपनं^१ दत्त्वा गुल्मरोगी भवेद्विपुः ।
 गोमूत्रं छागमूत्रं च मिश्रितं पूर्ववत्तथा ॥२७॥
 पित्तरोगी^२ भवेच्छत्रुरर्द्धमण्डलमात्रतः ।
 लेपनं छागरक्तेन भ्रान्तान्पैत्ति^३ भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥
 मत्कुणस्य च रक्तेन उन्मादी जायते रिपुः ॥

॥ इतिषड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे दशम पटलम्^४ ॥१०॥

॥ अर्थकादशः पटलः ॥

नमस्ते वगलादेवीमासवप्रियभामिनीम्^५ ।
 भे(भ)जेऽहं स्तम्भनाथं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम्^६ ॥१॥

कौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते मीलिससेव्यं^७ नमः पन्नगभूषणं^८ ।
 तर्पणेन^९ प्रयोगं च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

पूजयेद्यन्त्रराजं च उपचारैश्च षोडशैः ।
 तद्यत्रोपरि सन्तर्प्यं तर्पणस्य विधिं शृणु ॥३॥
 गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात्पचायुतं तथा ।
 शान्तिकृत्य भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥४॥
 द्रव्येण^{१०} तर्पणं कुर्यात् पूर्वसख्यासु पुत्रक ।
 वश्यं सम्मोहनं चैव भवेत्तर्पणयोगतः ॥५॥
 मोहिनीद्रवसमिश्रं^{११} जलेनैव तु तर्पणम् ।
 नेत्रायुतप्रमाणेन जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥६॥
 गतिगर्भं^{१२} च वाक्यानि^{१३} गात्रं श्रोत्रं तथाक्षिकम् ।
 क्षुधा तृष्णा च निद्रा^{१४} च स्तम्भनं च भवेद् ध्रुवम् ॥७॥
 निम्बार्कपत्रजद्रावैर्मिश्रितं कूपवारिणा ।
 पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥८॥

१. ग गोमये० । २. घ. पैत्यरोगी । ३. ख. भ्रान्तचित्तो । ग. भ्रान्तान्पैत्ति ।
 घ. भ्रान्तिरोगी । ४. घ. ०त्रि(वि)लेपन नाम दसम. पटलः । ५. ग. वगला० । घ.
 वगलादेवी वासवप्रियमोदिनी । ६. घ. विभ्रती । ७. घ. मौनि० । ८. घ. ०भूषणे ।
 ९. घ. तर्पणस्य । १०. ख. ग. घ. द्रव्येण । ११. घ. मोहिनीद्रवसयुक्त । १२. ग.
 गतिस्तंभं । घ. गतिं गर्भं । १३. ग. घ. वाक्पाणि । १४. घ. तृष्णा क्षुधा च निद्रां ।

वज्रार्कक्षीरमिश्रं च 'कान्ता च' तर्पणेन च ।
उच्चाटनं^१ - भवेच्छत्रोरयुतत्रयमादरात् ॥१६॥
प्रेतान्नं प्रेतभस्मं^३ च प्रेताङ्गारं च पुत्रक ।
समं समं गरं^४ - ग्राह्यं जीवेनैव^५ - तु मिश्रितम् ॥१७॥
नेत्रायुतं तर्पणेन साक्षाद् रिपुविनाशनम् ।
हारिपत्रजद्रावैमिश्रितं^६ मारणं भवेत् ॥१८॥
कूर्पूरमिश्रितं तोयं^७ पंचाशच्छतमादरात् ।
नित्यं च तर्पयेद् घीमान् मासमेकमतन्द्रितः ॥१९॥
पुराणज्वरमृत्युग्रं^८ पित्तरोगं विनश्यति ।
चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कृत्रिमजं हरेत् ॥२०॥
कस्तूरीमिश्रितं तोयं राज्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।^९
यैस्तु^{१०} तर्पणमात्रेषु^{११} अयुतं रविसख्यया^{१२} ॥२१॥
कुवेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः ।
माध्वीद्रव्येण सम्मिश्रं^{१३} पूजितं^{१४} शुद्धवारिणा ॥२२॥
रत्नायुतं^{१५} तर्पणेन लक्ष्मीर्वा^{१६} जायते ध्रुवम् ।
गोक्षीरतर्पणेनैव ईप्सितां सिद्धिमाप्नुयात् ॥२३॥
तत्रेण तर्पणं चैव^{१७} पित्तरोगं व्यपोहति ।
श्रारनालेन संतर्प्य जलदोषं च^{१८} शाम्यति ॥२४॥
हृदिद्राम्भस्तर्पणेन स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
शमतकुसुमेनैव^{१९} मिश्रितं जलतर्पणम् ॥२५॥
पुत्रवान् जायते मर्त्यो^{२०} अयुतेन न संशयः ।
कदलीफलगोक्षीरं शर्करा च समं समम् ॥२६॥

१. '—' ख. करांभः । घ. कौशांभः । २. क. उच्चाटनी । ३. ख. प्रेतभूमि ।
४. घ. च स० । ५. ख. मानेनैव । ६. घ. मयूरपत्रजै द्वारैः० । ७. क. तोये । ८.
ग घ. ०मृत्युग्रं । ९. घ. पुस्तकेऽय विशेषः पाठः—

“गौढीद्रव्यस्तर्पणेन द्रव्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।”

१०. ख. ग पैण्ट्या । घ. पैण्टी । ११. ख. तर्पणमात्रेण । ग. तर्पणमात्रेण ।
घ. तर्पण-
मात्रेण । १२. घ. ऋषिसख्यया । १३. घ. संमिश्र । १४. घ. पूरितं । १५. ख.
तत्रायुतं । घ. तत्त्वायुतं । १६. ख. ग. घ. लक्ष्मीवान् । १७. ख. घ. तर्पणेनैव । १८.
ख. प्र । १९. घ. त्यमन्त० । २०. घ. मृत्यो ।

पलाष्टकं च प्रत्येकं मिश्रितं जलतर्पणम् ।
 मत्रसिद्धिविना^१ सिद्धिर्भक्तिवैराग्यमेव च ॥२०॥
 भ्रमज्ञानं व्यपोहंति नान्यथा शिवभाषणम् ।
 छागरक्तेन समिश्र चार्चितं तैलतर्पणात्^२ ॥२१॥
 मूकाश्च कुरुते प्राज्ञान्^३ रिपुसंघाननेकशः^४ ।
 जलेन मिश्रितं पुत्र शोणितं विड्वराहजम्^५ ॥२२॥
 वेदायुत तर्पणेन उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरक्तेन सम्मिश्र तर्पणं शुद्धवारिणा^६ ॥२३॥
 जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः स भवेन्नन्दको^७ भुवि ।
 उलूकरक्तसमिश्रं वारिणा तर्पणं तथा ॥२४॥^८
 व्रणेन म्रियते शत्रुरयुतद्वयसमंततः^९ ।^{१०}
 श्वानरक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥२५॥
 श्वानवज्ज्वलते^{११} शत्रुम्रियते नात्र संशयः ।
 मार्जाररक्तसमिश्रं^{१२} तर्पणं वारिणा तथा ॥२६॥
 क्षयरोगी भवेच्छत्रुः षण्मासैर्म्रियते रिपुः ।^{१३}
 उष्टरीशोणितं^{१४} मिश्र तोये^{१५} सन्तर्पयेत् सह^{१६} ॥२७॥

१. घ. ०ज्ञान । २. घ. तेन तर्पणम् । ३. घ. यत्नाद् । ४. घ. ०संघाननेकशः ।
 ५. घ. विड्वराहकम् । ६. घ. मिष्टवारिणा । ७. घ. सन्ततिनिन्दिता । ८. ग. घ.
 पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठः—

‘नेत्रायुत^१ भवेच्छत्रुर्नेत्ररोगी^२ न संशयः ।

खररक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥

९. ख. ०द्वयमन्ततः । ग. ०द्वययोगतः ।

१०. घ. पुस्तके पादद्वयस्थानेऽयमक्षो दृश्यते—

तुणवज्ज्वलते शत्रुरयुतं ज्वरयोगतः ।”

११. ख. जायते । ग. घ. जल्पते । १२. घ. ०सयुक्त । १३. ख. पुस्तकेऽस्मात्परमंशो
 विशेषः—

“भुजगशोणितेनैव तर्पयेदहंरात्रके ।

निशि सहस्रमानेन सिद्धं रिपुविनाशनम्” ॥

१४. घ. उष्ट्रस्य शोणितं । १५. ख. तोयैः । घ. तोयं । १६. घ. संतर्प्यं बुद्धिमान् ।

१. घ. नेत्रायुताद् । २. घ. नेत्रनाशो ।

मासेन शत्रुमरणं मृकंडुसहशोऽपि वा ।
जपसख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ॥२८॥
दिनसख्या यत्र नोक्ता पक्षमेव^१ न संशयः ॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे एकादश पटलम्^२ ॥११॥

॥ अथ द्वादशः पटलः ॥

कौलागर्मकसवेद्यां सदा कौलागमाम्बिकाम् ।
भजेऽह सर्वसिद्धयर्थं बगलां चिन्मयी हृदि^३ ॥१॥

काचभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश गर्वितासुरभञ्जन ।
गायत्री बगलाख्यां च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रमाहात्म्यमेव च ।
पुर^४श्चर्याप्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥३॥
ब्रह्मास्त्रायपदं चोक्त्वा 'विद्महेति पदं ततः'^५ ।
स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा बाणाय तदनन्तरम् ॥४॥
धीमहीति पदं चोक्त्वा तन्नः^६ शब्दं ततो(दो)च्यते^७ ।
बगलापदमुच्चार्य उद्वरेच्च प्रचोदयात् ॥५॥
गायत्री बगलानाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(स्य) गायत्री समुदाहृतम्^८ ॥६॥
देवता बगलानाम्नी चिन्मयी^९ शक्तिरूपिणी ।
बीज 'चैव शक्तिह्री'^{१०} कीलक विद्महे पदम् ॥७॥
चतुर्लक्ष पुरश्चर्या तद्दशांशं च तर्पणम् ।
तद्दशांशं हुनेदाज्यं तावद्ब्राह्मणभोजनम् ॥८॥
न्यासध्यानादिक सर्वं कुर्यात् 'तन्मन्त्रतो जपेत्'^{११} ।
प्रयोगानथ वक्ष्यामि गायत्रीबगलाह्वये^{१२} ॥९॥

१. घ. पक्षसंख्या । २. घ. ०एकादशः पटलः । ३. ग. बगलाख्य करुणाकरम् । ४. क. पुन । ५. '—' ख. विद्महेति पदं तथा । घ. विद्महेति ततः पदम् । ६. ग. तत । घ. तन्नो । ७. ग. घ. ततोच्चरेत् । ८. ख. यमुदाहृतम् । ख. बगला । १०. '—' घ. शक्तिह्रीं चैव । ११. '—' घ. तन्मन्त्रराजवत् । १२. ख. •बगलाह्वया । घ. गायत्र्या बगलाह्वया ।

तारादि प्रजपेन्मन्त्र मोक्षार्थी^१ च कुमारक ।
 शान्त्यर्थं च^२ जपेत्पुत्र शारदाबीजपूर्वकम्^३ ॥१०॥
 सम्मोहनार्थं प्रजपेत् कामराजपुरस्सरम् ।
 स्तम्भनार्थं प्रजपेच्छक्तिदाहकपूर्वकम्^४ ॥११॥
 वाराह शक्तिवाराहं स्तब्धमायापुरस्सरम् ।
 प्रजपेन्मन्त्रमेतद्धि मारणं भवति ध्रुवम् ॥१२॥
 वाग्भवादि जपेन्मन्त्रं विद्यासिद्धिर्भविष्यति ।
 बालादि प्रजपेन्मन्त्र 'कन्यकां क्षिप्रमाप्नुयात्'^५ ॥१३॥
 वाराहीबीजमध्यस्थां^६ गायत्री लक्षजापनात् ।
 भूलाभ(भो) जायते तस्य अनायासेन^७ पुत्रक ॥१४॥
 श्रीबीजादि जपेत् पुत्र गायत्री^८ बगलाह्वयाम्^९ ।
 कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र सशयः ॥१५॥
 ताक्ष्यबीजादि मन्त्रं प्रजपेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 नानाविषप्रयोगांश्च ग्रहरोगादिनाशनम्^{१०} ॥१६॥
 भैरवी^{११} बीजमाद्य च प्रजपेच्च कुमारक ।
 भूतप्रेतपिशाचाद्यास्तत्प्रयोगाद् व्यपोहति ॥१७॥
 जपेदमृतबीजानि^{१२} गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 तापञ्जरमहातापं^{१३} शमयेत्^{१४} क्रौञ्चभेदन ॥१८॥
 जपेच्च वायुबीजादि गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 क्षिप्रमुच्चाटनं चैव भवेच्छङ्करभाषणम् ॥१९॥
 अग्निबीजादिगायत्री प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।
 महता(दा)तापसयुक्तः^{१५} पक्षाच्छत्रुमृतो भवेत् ॥२०॥

१. घ. मोक्षार्थं । २. घ. प्र । ३. घ. तारावाराहपूर्वकम् । ४. ख. ग घ. पुस्तकेष्वय पाठः—

स्तम्भनार्थं जपेत्पुत्र बगलाबीजपूर्वकम् ॥

विद्वेषणार्थं प्रजपेद्धृकारद्वयपूर्वकम् ।

उच्चाटनार्थं (घ. उच्चाटने) जपेत्पुत्र शक्तिवाराहपूर्वकम् ।

५. घ. कन्याकांक्षी मवाप्नुयात् । ६. घ. वाराहीमध्यबीजस्थां । ७. ग. अत्यायासेन ।
 ८. क. ग. घ. गायत्री । ९. ख. बगलाह्वया । १०. घ. गलरोगादि० । ११. ख. घ.
 भैरव । १२. ख. घ. बीजादि । १३. ख. तापञ्जर महातापं । घ. महावात । १४.
 घ. नाशयेत् । १५. घ. संयुक्तं ।

मायादि प्रजपेत् पुत्र गायत्री वगलाह्वयाम् ।
 इष्टसिद्धिर्भवेत् क्षिप्रं शिवस्य वचनं यथा ॥२१॥
 मन्त्रराजस्य गायत्री पादाद्यवयवं^३ तथा ।^४
 गायत्रीं च विना मन्त्रं न सिद्धयति कलौ युगे ॥२२॥
 पुरश्चरणकाले तु गायत्री प्रजपेन्नरः ।
 मूलविद्यां^५ दशांशं च मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥२३॥
 त्यक्त्वा तन्मन्त्रगायत्री यो जपेन्मन्त्रमादरात् ।
 कोटिकोटिजपेनैव 'तस्य सिद्धिर्न जायते'^६ ॥२४॥
 जपसंख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ।
 दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेक न संशयः ॥२५॥
 गायत्री वगलानाम्नी वगलायाश्च जीवनम् ।
 मंत्रादौ चाथ मन्त्रान्ते जपेद्^७ ध्यानपुरस्सरम् ॥२६॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे द्वादश पटलम्^८ ॥२७॥

॥ अथ त्रयोदशः पटलः ॥

निधाय पादं हृदि वामपाणिना,
 जिह्वां समुत्पाटनकोपसयुताम् ।
 दाभिघातेन च फालदेशे^९,
 अम्बां भजेऽहं वगलां हृदब्जे ॥

क्रीञ्चभेदन उवाच—

श्रीकण्ठ श्रीगराधार^{१०} शार्दूलाम्बरभूषण^{११} ।
 शान्तवद्^{१२} वद मे पूजां वगलायाश्च शङ्कर ॥२८॥

१. अतः पर ख. ग. घ. पुस्तकेषु विशेषः पाठः—

“राजा वा राजपुत्रो वा मरणान्तं वशीभवेत् ।

महामाया (ग. मायामाया) दिगायत्रीं प्रजपेद् वगलाह्वयाम् ॥”

२. घ. तथा । ३. घ. पादाद्यवयव । ४. घ. पुस्तकेऽयं विशेषः—

मन्त्रसिद्धिर्भवेत् क्षिप्रं शिवस्य वचनं यथा

५. ख. घ. मूलविद्या । ६. ‘-’ घ. न च सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् । ७. ख. ग. जपे । घ. जप ।

८. घ. ०द्वादशः पटलः । ९. ख. बालदेशे । घ. फालदेशे । १०. घ. श्रीधराधार ।

११. घ. ०भूषणम् । १२. घ. शान्तवद् ।

ईश्वर उवाच—

विन्दुमध्ये च सम्पूज्य स्वर्णसिंहासनोपरि ।
 चिन्मयी बगलादेवी सर्वसिद्धिप्रदायिकाम् ॥३॥
 चतुर्भुजां च द्विभुजां गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ।
 पीतवर्णां महापूर्णामर्चयेन्मूलविद्यया^१ ॥४॥
 त्रिकोणे पूजयेत् पुत्र 'वाणी गौरी रमा'^२ क्रमात् ।
 तत्तद्बीजेन सम्पूज्य तदावाहनपूर्वकम्^३ ॥५॥
 पञ्चास्त्र^४ पञ्चकोणेषु वक्ष्ये तत्पूजनं क्रमात् ।
 पूर्वकोणे तु सम्पूज्य अस्त्रं च बगलामुखीम् ॥६॥
 द्वितीयकोणे संपूज्य अस्त्रराजं कुमारक ।
 उल्कामुखीति विख्यातं तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥७॥
 तृतीयकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारक ।
 'नाम्नी ज्वालामुखी चैव तन्मन्त्रेणैव पूजयेत्'^५ ॥८॥
 'चतुर्थकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारक'^६ ।
 जातवेदमुखीनाम्नीं तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥९॥
 पञ्चमेषु च कोणेषु अस्त्रराजं कुमारक ।
 बृहद्भानुमुखी ख्याता त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥१०॥^७
 पञ्चकोणेष्वेवमेतत्पञ्चास्त्रं^८ सम्यगर्चयेत् ।
 मूलमन्त्रेण तेनैव पूजायन्त्रं कुमारक ॥११॥
 तदुपरि समभ्यर्च्य दिक्पालाष्टकमादरात् ।
 तद्वाहनं च तच्छक्तिदशायुतपुरस्सरम्^९ ॥१२॥
 तदुपरि समभ्यर्च्य मातृकाष्टकमेव च ।^{१०}
 तदुपरि समभ्यर्च्य विघ्नेशाष्टकमेव च ॥१३॥

१. ख. घ. मदाधूर्णां । ग. महाधूर्णां । २. घ. वाणीगौरीरमाः । ३. घ. तत्तद्वाहनपूर्वकम् । ४. घ. पञ्चास्त्रान् । ५. '—' चिह्नं नगोऽशो घ. पुस्तके नास्ति । ६. '—' चिह्नं नान्तगंतोऽशो नार्चलोक्ष्यते घ. पुस्तके । ७. घ. पद्यमिदं नास्ति । ८. घ. पञ्चमेषु च कोणेष्वेवमेव पञ्चास्त्रं । ९. ख. तच्छक्तिदशायुषु । घ. तच्छक्तिस्तदायुषु । १०. घ. पुस्तके विशेषः—

“तदुपरि समभ्यर्च्यं भैरवाष्टकमेव च ।”

‘पूजायंत्र क्रमेणैव’^१ एवमेव कुमारकं ।
 शालग्रामशिलायां वा वह्निमण्डलमध्यमे ॥१४॥
 कन्यकां^२ चाथवा पुत्रं पूजयेद् बगलाम्बिकाम्^३ ।
 उत्तमं^४ युवतीपूजा मध्यमं^५ वह्निमण्डले^६ ॥१५॥
 अघमं^७ च शिलापूजा क्रम एष^८ शिवोदितः^९ ।
 नमोऽस्तेनैव नाम्ना च पूजयेच्च कुमारक ॥१६॥
 एवं च पूजयेत् सम्यक् पुरश्चरणके विधौ ।
 द्रव्यं यत्त्रिविधं^{१०} प्रोक्तं पूजायां च विशेषतः ॥१७॥
 गौडी माध्वी च पैष्टी च गौडी चैवोत्तमोत्तमा^{११} ।
 छागकुक्कुटमत्स्य^{१२} च बगलाप्रीतिकारकम् ॥१८॥
 त्रिकालं पूजयेद्देवी त्रिकालं च^{१३} जपेन्मनुम् ।
 यस्य दर्शनमात्रेण षण्डितैर्वान्वितां धरैः ॥१९॥
 तस्य^{१४} प्रज्ञा पलानीय^{१५} तमः सूर्योदये^{१६} यथा^{१७} ।
 तेजोभेदमनेकं च सर्वशत्रौ^{१८} कुमारक ॥२०॥
 वह्नी यद्वत् प्रविशति^{१९} तद्वद्वादय^{२०} चातुरी^{२१} ।
 बगला मन्त्रसिद्धस्य^{२२} हृदये च प्रविश्यति^{२३} ॥२१॥
 प्रतिवादि^{२४} भवेत्स्तम्भो^{२५} बृहस्पतिसमोऽपि च ।
 प्रज्ञाकर्षणशक्तिश्च बगला भूतले स्मरेत्^{२६} ॥२२॥
 विद्यामाकर्षणार्थं^{२७} च स एव च^{२८} न संशयः^{२९} ।
 ब्रह्मचारी गृही वापि वानप्रस्थोऽथवा यतिः ॥२३॥

१. ‘—’ पूजायन्त्रक्रमे चैव । २. स्त्र. कन्यायां । ३. घ. बगलामुखीम् । ४. घ. उत्तमा । ५. घ. मध्यमा । ६. घ. वह्निमण्डलम् । ७. घ. अघमा । ८. स्त्र. एष । ९. घ. एव । १०. घ. त्रय । ११. क. ग. शिवोदिता । १२. घ. त्रिविधं । १३. क. ग. उत्तमा । १४. मासं । १५. घ. प्र । १६. घ. तस्य । १७. घ. पलायते । १८. घ. सूर्योदयः । १९. घ. तथा । २०. घ. शत्रो । २१. घ. प्रशस्यति । २२. ख. तद्वद्वादयपद । २३. घ. चातुरम् । २४. घ. मन्त्रसिद्धिः स्याद् । २५. ‘—’ घ. दूरादेव प्रदर्शनात् । २६. घ. प्रतिवादी । २७. ख. घ. भवेत् स्तम्भो । २८. ख. स्मृता । २९. घ. वज्ञानाकर्षणार्थं । ३०. घ. तु । ३१. ख. घ. पुस्तकद्वयेऽधिकोऽयमशो दृश्यते—

“उल्लघ्य बगलामंत्रमुपवास (घ. मूपासक) मनन्यधीः” ।

यत्किञ्चित् कुरुते (घ. क्रियते) कर्म पृथ्वी (घ. शिला) बीजमिवाङ्कुरैः (घ. वाङ्कुरैः)”

बगलामन्त्रसिद्धस्तु^१ सैव पूज्यो यतीश्वरः^२ ।
 बगलामन्त्रसिद्धश्च^३ यत्र तिष्ठति भूतले ॥२४॥
 पञ्चक्रोशप्रमाणेन विद्वानेव च भासते ।
 न भासते चान्यविद्या न स्मरन्न परामुखी^४ ' ॥२५॥
 प्रयोगं चैव न भवेद् बगलार्चापरैः^५ पुरा^६ ।
 ग्रसने^७ सर्वविद्यानां बगला यैव^८ भूतले ॥२६॥
 बगलाया विना मन्त्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
 तत्सम्प्रदायविधिना^९ साधयेद् बगलामुखीम् ॥२७॥
 एव च बगलामन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे त्रयोदश पटलम्^{१०} ॥१३॥

॥ अथः चतुर्दशः पटलः ॥

सुधाब्धौ रत्नपर्यङ्के मूले कल्पतरोस्तथा ।
 ब्रह्मादिभिः परिवृता बगलां भावयेद्^{११} हृदि ॥१॥

श्रीञ्चभेवन उवाच—

वीर^{१२} विद्रूप विश्वेश चिदानन्दस्वरूपिणे^{१३} ।
 बगलार्चाविधिं चैव वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

'सृष्टि स्थिति च संहारं'^{१४} पूजा च त्रिविधा कली ।
 केरले सृष्टिरूपा च गर्भकौलागमक्रमात् ॥३॥
 अर्चनं गौडदेशे^{१५} च^{१६} स्थितिमार्गं^{१७} कुमारक ।
 सारूपा अर्हदेशे तु^{१८} सहारार्चनमेव^{१९} च ॥४॥
 गुप्तं कौलागमं नाम^{२०} गौडदेशार्चनादिभिः^{२१} ।
 कामरूपागम नाम सहारक्रमपूजनम् ॥५॥

१. घ. ०सिद्धिस्तु । २. '—' घ सर्वैः पूज्यो मुनीश्वरैः । ३. घ. ०सिद्धिश्च ।
 ४. घ. तस्य वक्त्रात् पराङ्मुखी । ५. घ. ०र्चापर । ६. घ. परा । ७. घ. ग्रस्ते ।
 ८. घ. एव । ९. ख घ. तत्सम्प्रदाय० । १०. घ. ०त्रयोदशः पटलः । ११. घ.
 चिन्तयेद् । १२. घ. चिद । १३. घ. स्वरूपक । १४. '—' घ. सृष्टिस्थितिश्च सहार ।
 १५. घ. गौडदेश । १६. घ. स्य । १७. ख. स्थितिमार्गं । १८. '—' ख. घ.
 कामरूपाख्यदेशे तु । १९. घ. संहारक्रममेव । २०. घ. नाम्ना । २१. घ. गौडदेशेऽर्चन
 विधिः ।

लाटार्चनं^१ चावलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा ।
 उक्तवानागमं^२ चैव सृष्टचर्यं^३ शृणु पुत्रक ॥६॥
 सर्वाङ्गसुन्दरी श्यामां सर्वावयवशोभिनीम् ।
 नवोढां पुष्पिणी चैव प्रार्थयेद्विप्रकन्यकाम् ॥७॥
 कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कुमारक ।
 अथवा भौमवारे च निशा^४ भृगुवासरे^५ ॥८॥
 'सुवासिनी च^६' तैलेन कुर्यादभ्यगनं^७ तथा ।
 तूलिकातल्पमानीत्वा^८ आस्तीर्योदङ्मुखेषु^९ च ॥९॥
 तस्योपरि ततस्तीर्यं^{१०} शमन्तैर्जातिचम्पकैः ।
 कपूरं चैव कस्तूरीमिश्रित चन्दनं तथा ॥१०॥
 सर्वाङ्गे लेपनं कुर्यात्लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान् ।
 पर्यङ्कोपरि तत्कन्यां चन्दनेन विलेपिताम् ॥११॥
 घृवाद्यैरिति^{११} मन्त्रेण कुर्याद्वक्षिणतोमुखीम् ।
 उन्मुखेत्यर्चनं^{१२} कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारक ॥१२॥
 पादौ प्रसार्यं^{१३} तत्कन्यां^{१४} गुप्तेनार्चनमाचरेत् ।
 न्यस्त्वा षोढाद्वय चादौ वगलापञ्जरं न्यसेत् ॥१३॥
 कन्यां चैव न्यसेदेव तत्तदङ्गानि^{१५} सस्मरेत्^{१६} ।
 गन्धद्वारेति^{१७} मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥१४॥
 मूलमन्त्रेण चाभ्यर्च्यं^{१८} पुष्पमालां समर्चयेत्^{१९} ।
 निवेदयेद् द्रव्यशुद्धिं तत्रैव जपमाचरेत् ॥१५॥
 शतं वाऽथ सहस्रं वा मन्त्रराजमिदं सुत ।
 पुरश्चरणमध्ये तु प्रतिभार्गववासरे ॥१६॥

१. ग. लाजार्चन । घ. गौडागमं । २. घ. उक्तमार्गक्रमे । ३. घ. सृष्टचर्यं ।
 ४. ख. ग. घ. निशाया । ५. ख. ग. घ. भृगुवासरे । ६. घ. सुवासितेन । ७. ग.
 ०दम्यंगना । ८. घ. ०दम्यगर्कं । ९. घ. ०मानीय । १०. घ. ०मुखेन । १०. ख.
 घ. समास्तीर्यं । ११. घ. घृवाद्यैरिति । १२. घ. तन्मुखे ह्यर्चनं । १३. घ.
 प्रस्तार्यं । १४. ख. तां कन्यां । १५. घ. तत्र चांगानि । १६. ख. घ. संस्पृशेत् ।
 १७. ख. घ. पुस्तकद्वये विशेषः पाठः—

घनंजयपुरं चैव अर्चयेत् (घ. मार्जयेत्) मूलविद्यया ।

१८. घ. गन्धद्वारेण । १९. घ. तस्यैव । २०. ख. घ. समर्चयेत् ।

अथवा पीर्णमास्यां वा सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 प्रयोगसिद्धिदं शस्तं^१ मंत्रसिद्धिकरं परम् ॥१७॥
 एतत्पूजां विना पुत्र प्रयोगं न भवेत् कलौ ।
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रयोगादि च भूतले ॥१८॥
 सौभाग्यार्चां विना पुत्र न भवेज्जपकोटिभिः ।
 अभिमानाष्टकं त्यक्त्वा त्यक्त्वा चैत्रेषणाश्रयम् ॥१९॥
 त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासक्तिं सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 सुखदुःखे समे^२ कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ॥२०॥
 शीतोष्णे^३ समतां कृत्वा सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 षोढाद्वयं च न ज्ञात्वा यः करोत्यर्चनं भुवि ॥२१॥
 स पतितो भवेत् पुंसां रौरवं नरकं व्रजेत् ।
 बाह्याभ्यन्तरतः^४ पुत्र अभेदज्ञानयोर्विना ॥२२॥
 सौभाग्यार्चनकर्तृणां मनन्तं^५ शापमाप्नुयात् ।
 संकल्पं च विकल्पं च त्यक्त्वा विश्रान्तमानसः^६ ॥२३॥
 कुर्यात् सौभाग्यसम्पूजां च नो चेद् भ्रष्टो भवेन्नरः ।
 जितेन्द्रियः^७ सुखं त्यक्त्वा कुर्यात् सौभाग्यपूजनम् ॥२४॥
 सुखापेक्षेण यत् कुर्याद् देवताशापमाप्नुयात् ।
 स्वस्थादेशविधिं^८ चैव न ज्ञात्वा क्रौञ्चभेदन ॥२५॥
 यः करोत्यर्चनं चैव स विप्रः पतितो भवेत् ।^९
 स्वपत्नी भ्रातृपत्नी वा गुरुभार्यामथापि वा ॥२६॥
 अर्चयेत् षड्रसोपेतां^{१०} सांख्यायनमतं त्विदम् ।
 दीक्षालयस्थां रजकी कुलालगृहकन्यकाम् ॥२७॥

१. घ. पुंसां । २. घ. समौ । ३. घ. शीतोष्ण । ४. ग. बाह्याभ्यन्तरतः । घ
 बाह्याभ्यन्तरयोः ५. घ. ०कर्तृणां देवता । ६. घ. विश्रान्तमानसः । ७. घ. जित्वेन्द्रिय ।
 ८. घ. स्वस्थादेशविधि । ९. अतः पर ख. घ. पुस्तकद्वये विशेषः—

“कल्पते (करोति घ.) चित्तसंक्षोभं तत्(घ. त्वत्)कन्यायाः कुमारक ।

भ्रान्तचित्तो भवेत् सद्यो (घ. सोपि) वाचस्पतिसमोऽपि वा” ॥

घ. पुस्तकेऽस्मादप्यधिकोऽयमद्यो दृश्यते—

“नोत्पादयेत् कामनया वेदनं च शरीरयोः ।
 वेदना जनयेद्यस्तु स नरः पतितो भवेत्” ॥

१०. घ. यौवनोपेतां ।

पुलिन्दकन्यकां चैव मृकण्डुमतमादिशेत् ।
 अर्चयेद् ऋषिपत्नीं^१ च पूर्वोक्तां लक्षणांविताम् ॥२८॥
 अर्चयेद्^२ विधिमार्गेण पूजा दुर्वाससम्मता^३ ।
 सर्वलक्षणसम्पन्नां पुष्पिणीमर्चयेत्ततः^४ ॥ २९॥
 मतङ्गमुनिनोक्तं च^५ सद्यः सिद्धिकरं भुवि ।
 इति^६ मार्गमतं^७ पुत्र नास्ति सिद्धिर्गुरोर्विना ॥३०॥
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेनार्चयेद्^८ गुर्वनुज्ञया ॥३१॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे चतुर्दश. पटलः ॥१४॥

॥ अथ पञ्चदशः पटलः ॥

पीतवर्णां मदाघूर्णां दृढपीनपयोधराम् ।
 वन्देऽह वगला देवी स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ।

कौञ्चभेदन उवाच—

राजराज स वै^९ श्रीमान् रजताद्रिनिकेतन ।
 पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तम्भनाख्यान्सुपावनात्^{१०} ॥३॥

ईश्वर उवाच—

आद्यास्त्र वगलानाम्नी रणस्तम्भनकारणम्^{११} ।
 उल्कामुखी द्वितीय^{१२} च स्तम्भनं भुवनत्रये ॥३॥
 ज्वालामुखी तृतीयास्त्रं स्तम्भन त्रिषु^{१३} दैवतैः ।
 जातवेदमुखी चैव चतुर्थास्त्रं कुमारक ॥४॥
 ब्रह्मविष्णुमहेशानां स्तम्भनं नात्र सशयः ।
 बृहद्भानुमुखी चास्त्रं पञ्चमं तु कुमारक ॥५॥
 षट्पञ्चकोटिचामुण्डा कालिकादिशत^{१४} सुत ।
 सपादकोटि त्रिपुरा-स्तम्भनास्त्रं च उत्तमम्^{१५} ॥६॥

१. घ. वैश्यपत्नी । २. घ. अर्चनं । ३. घ. दुर्वाससम्मता ४. घ. पुष्पितां० ।
 ५. घ. मार्तण्डमुनिना चोक्तं । ६. ख. ग. घ. सिद्धि । ७. घ. मार्गमत । ८. ख.
 ० प्रयत्नेन वा० । ग घ. प्रयत्नेन अर्चयेद् । ९. ख. सुख । ग. स चे । घ. सख ।
 १०. ख. स्तम्भनाख्याः सुपावनी । घ. स्तम्भनाख्याः सुपावनी । ११. घ. ० कारणीम् ।
 १२. घ. द्वितीया । १३. घ. ऋषि । १४. घ. कालिकोदिशतं । १५. घ. पञ्चमम् ।

पञ्चास्त्रोद्धारमतुलं तत्प्रयोगविधिं तथा ।
 वक्ष्ये तस्योपसहारं साम्प्रत तव^१ - पुत्रक ॥७॥
 तारं च विलिखेत् पूर्वं स्तब्धमायामतः परम् ।
 वाराहं शक्तिवाराहं बगलामुखिं चोच्चरेत् ॥८॥
 ह्ला ह्ली ह्लौ^२ च ततोच्चार्य सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
 लंकारं^३ दीर्घसंयुक्तं बिन्दुनादविभूषितम् ॥९॥
 ह्लौ ह्ली ह्लश्च^४ ततश्चैव 'वाचं मुखपदं'^५ वदेत् ।
 स्तम्भयद्वितयं प्रोक्त्वा ह्लः ह्लीं ह्लौं^६ च ततो वदेत् ॥१०॥
 जिह्वा कीलय उच्चार्य ह्लूं ह्लीं ह्लां^७ च ततः परम् ।
 बुद्धिं विनाशयोच्चार्य शक्तिवाराहमुच्चरेत् ॥११॥
 वाराहं बगलाबीजं तारवर्मास्त्रसयुतम्^८ ।
 रणस्तम्भनबाणं च दुर्लभं भुवि पुत्रक ॥१२॥
 पञ्चाशदुत्तरं पञ्चबीजबद्धं सुपावनम् ।
 ऋषिरेवास्य मन्त्रस्य वसिष्ठः^९ छन्दसां पुनः ॥१३॥
 पञ्चास्यदेवतामन्त्र-^{१०} रणस्तम्भनकारिणी^{११} ।
 न्यासविद्यां च कर्त्तव्यं^{१२} पूर्वोक्तं मन्त्रराजवत् ॥१४॥
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि बगलामुखिदेवतां ।
 पीताम्बरधरा देवी द्विसहस्रभुजान्विताम् ॥१५॥
 अर्द्धजिह्वां गदा चार्द्धं धारयन्ती शिवां भजे ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं सुबुद्धिमान् ॥१६॥
 तालकेन हुनेल्लक्षं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।
 गजाश्वरथसामन्तकोटिकोटिबलं तथा ॥१७॥
 निवीर्यो जायते सद्यो मृतशेषः^{१३} पलायते ।
 प्रयोगान्ते समभ्यर्च्य मन्त्रसंस्कारमाचरेत् ॥१८॥

१. घ. शृणु । २. घ. ह्लौं ह्लीं ह्लूं । ३. घ. नकारं । ४. ह्लौं ह्लीं ह्लश्च ।
 ५. घ. वाचा मुखपदं । ६. घ. ह्लः ह्लीं ह्लौं । ७. घ. ह्लूं ह्लीं ह्लां । ८. घ.
 तारं वर्मा० । ९. क. ख. ग. वसिष्ठः । १०. ख. पञ्चोत्तरं देवतामन्त्रं । घ. पक्व्याख्यो
 देवता चात्र । ११. ख. ग. घ. रूपिणी । १२. ख. कर्त्तव्यां । घ. कर्त्तव्या । १३.
 क. ग. घ. मृतः शेषा ।

संस्कारेण विना मन्त्रं साधकस्य प्रमादकृत् ।
लोकालोकस्तंभनं च नाम्ना उल्कामुखी^१ तथा ॥१६॥
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।
तार च स्तब्धमायां च शक्तिवाराहमेव च ॥२०॥
वगलामुखीपदं चोक्त्वा बीजत्रयं तु सर्वं च ।
दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥२१॥
वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं^२ वदेत् ।
स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा 'बीजत्रयं ततो'^३ वदेत् ॥२२॥
जिह्वां कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रयं वदेत् ।
दुद्धिं विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रयं^४ वदेत् ॥२३॥
प्रणवं वह्निजायां च उल्कामुख्या अयं मनुः ।^५
पञ्चाशद्वृद्धं चैवाष्टबीजवद्धं^६ सुपावनम् ॥२४॥
ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्छन्दः^७ ककुभमेव च ।
उल्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥२५॥
बीजं च वगलाबीजं शक्तिः^८ स्वाहासमन्वितम् ।
कीलकं शक्तिवाराहं न्यास पूर्ववदाचरेत् ॥२६॥
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदे^९ कुमारक ।
विलयानलसकाशां^{१०} वीरवेषेण^{११} संस्थिताम् ॥२७॥
वीराम्नायमहादेवीं^{१२} स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।
एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं मनुलक्षं कुमारक ॥२८॥
प्रपञ्चस्तम्भनं कृत्वा स्वविद्यां च प्रकाशयेत् ।
तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेकं हुताशने^{१३} ॥२९॥
मत्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीर्त्तिमान् भवेत् ।
तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमात्मकम् ॥३०॥
कुमारकं प्रवर्त्तन्ते^{१४} सर्वाश्चर्यकरं भुवि ।
'सिद्धिं चतुर्विधा'^{१५} चैव एतन्मन्त्रस्य जापके ॥३१॥

१. घ. चोल्कां मुखी । २. घ. पुनर्बीजत्रय । ३. घ. पुनर्बीजत्रय । ४. घ. पुनर्बीज० ।
५. घ. स्तब्धमायां घ्रुवं वह्निजायातुल्कामुखीमनुः । ६. घ. ०बीजयुक्तं । ७. घ. ऋषिश्च ।
यज्ञवाराहश्छन्दः । ८. घ. शक्ति । ९. घ. मन्त्रभेदं । १०. घ. विलया० । ११. ख.
वीरवेषेण । घ. वीरावेषेण । १२. घ. विराम्णयी महादेवी । १३. क.ख.ग. क्षपाशन ।
१४. घ. प्रवर्त्तत । १५. ख. घ. सिद्धिश्चतुर्विधा ।

इच्छया वर्तते सर्वभाश्चर्यकरमादरात् ।
 नदी नदश्च^१ रतिमान्^२ नानापादपसंकुलम् ॥३२॥
 आगच्छेत्याज्ञया^३ तस्य पुनर्गच्छन्ति चादरात्^४ ।
 किन्न स्यात् पद्ययुक्तानि माहात्म्यं पदगं मनो^५ ॥३३॥
 कामयेन्मन्त्रेमेतद्धि^६ क्रीचभेदनकोविद ॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चदशपटलः^७ ॥१५॥

॥ अथ षोडशः पटलः ॥

बन्धूककुसुमाभासा^८ बुद्धिनाशनतत्पराम् ।
 वन्देऽहं वगलां देवी स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥१॥
 क्रीञ्चभेदन उवाच—
 नमस्ते गिरिजानाथ मन्त्रविद्यागमप्रभो ।
 अघुना चास्त्रविस्तार वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

तार च स्तब्धमायां च प्रासादं^९ च ततः परम् ।
 पुनर्लिख्य^{१०} स्तब्धमायां प्रणर्वं च ततः परम् ॥३॥
 वगलामुखिपदं चोक्त्वा सर्वद्रुष्टपद वदेत् ।
 न(ल?)कारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुना भूषित तथा ॥४॥
 बीजपञ्चकमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ।
 स्तम्भद्वयमुच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥५॥
 जिह्वां कीलय उच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ।
 बुद्धि विनाशयुग^{११} पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥६॥
 वह्निजायासमायुक्तं^{१२} षष्टिवर्णोत्तिकं^{१३} मनुम्^{१४} ॥५॥
 जातवेदमुखीमन्त्र जगदाश्चर्यकारकम् ॥७॥
 अर्कपञ्चकवर्णेन बद्धोऽयं मन्त्रनायकः ।
 ऋषिः कालाग्निरुद्रस्तु पंक्तिश्छन्द उदाहृतम् ॥८॥

१. घ. नदाश्च । २. घ. गिरयो । ३. घ. आगच्छन्त्याज्ञया । ३. घ. सादरात् ।
 ५. ग. किन्न तस्यात्पद्ययुक्तानि० । घ. पुस्तके विशेषः—

किं तस्य जपयुक्ताना माहात्म्यं चेदृशं मनोः ।

यद्गोपयति पुण्यात्मा त्रैलोक्याकर्षणक्षमः ॥

६. घ. गोपयेन्मन्त्र० । ७. घ. ०अस्त्रप्रयोग पञ्चदशपटलः । - ङ. घ. भाषां । ९. ख.
 ग. प्रसाद । १०. घ. पुनर्लिखेत् । ११. घ. नाशययुगम च । १२. ख. ०समायुक्तः ।
 १३. ख. ०त्मको । १४. ख. मनुः । १५. पादद्वयं घ. पुस्तके नास्ति ।

जातवेदमुखी मत्रदेवता^१ समुदाहृता ।
 ॐ वीजं ह्रीं^२ च शक्तिश्च ह कीलकमुदाहृतम् ॥६॥
 पूर्ववन्त्यासविद्यां^३ च ध्यानं वक्ष्यामि पुत्रक ।
 जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणी ॥१०॥
 भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनी^४ विश्वरूपिणीम्^५ ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं त्रिशल्लक्षं सुपावनम् ॥११॥
 चर्मधृग्वसनो भूत्वा चिन्तितार्थप्रदं ध्रुवम् ।
 गन्धर्वांश्चैव यक्षांश्च गरुडोरगपन्नगान् ॥१२॥
 वेतालडाकिनीप्रेतशाकिनीब्रह्मराक्षसान् ।
 ऋषिदेवगणांश्चैव सिद्धान्त्यांश्च पुत्रक ॥१३॥
 अघुना स्तम्भयत्येतत्^६ सत्यं शङ्करभाषणम् ।
 तारं च स्तब्धमायां च वह्निवीजं च पञ्चकम् ॥१४॥
 प्रस्फुरद्वितयं चैव वीजं चैव^७ त्रयोदश ।
 ज्वालामुखी 'पदं चोक्त्वा'^८ वदेद्बीजं^९ त्रयोदश ॥१५॥
 सर्वशब्द ततोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
 वीजं^{१०} त्रयोदशं चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत् ॥१६॥
 स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा पुनर्वीजं^{११} त्रयोदश ।
 जिह्वां कीलय चोच्चार्यं^{१२} पुनर्वीजं त्रयोदश ॥१७॥
 बुद्धिं 'विनाशयं चोक्त्वा'^{१३} पुनर्वीजं त्रयोदश ।
 वह्निजायासमायुक्तं ज्वालामुख्यमयं^{१४} मनुः^{१५} ॥१८॥
 शतोत्तरं भवेद्विंशद्बीजवद्धो मनुस्त्वयम् ।
 अत्रिश्च ऋषिरेवात्र^{१६} गायत्रीछन्द उच्यते^{१७} ॥१९॥
 ज्वालामुखी देवता च स्तम्भनाय त्रिमूर्तिभिः ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि न्यासपूर्ववदाचरेत् ॥२०॥

१. घ. देवी देवता । २. ख. घ. ह्रीं । ३. घ. ०विद्याः । ४. घ. स्तम्भनी ।
 ५. घ. विश्वरूपिणी । ६. घ. मन्तूनां संभवेत्येतत् । ७. घ. न्योत । ८. घ. च उच्चार्यं ।
 ९. क. वीज । १०. घ. बीजां । ११. ०बीजां । १२. घ. युग्म च । १३. घ.
 नाशययम् च । १४. ख. ज्वालामुख्यांस्त्वयं । १५. घ. स्तब्धमामात्रिवृद्धिजाया
 ज्वालामुखीमनु । १६. घ. ०रेवास्व । १७. घ. एव च ।

ध्यानं विना भवेन् मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ।

ज्वालापुञ्जसटोन्मुक्ता^१ कालानलसमप्रभाम् ॥२१॥

चिन्मयी स्तंभनी देवी भजेऽह विधिपूर्वकम् ।

एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं सुबुद्धिमान् ॥२२॥

तर्पणं च गवां क्षीरंस्तालकेन हुनेत् सदा ।

तर्पणं च चतुर्लक्षं लक्षमेक हुनेत्सदा^२ ॥२३॥

सहस्रद्वितयं चैव 'ब्राह्मणाना सुभोजयेत्'^३ ।

त्रिमूर्त्ति स्तम्भयेन्मन्त्री पञ्चतत्वान्यपि क्षणात् ॥२४॥

आश्चर्यं महामन्त्रं नराणां दुर्लभं भुवि ।

इदानी मन्त्रराजं च बृहद्भानुमुखाह्वयम् ॥२५॥

'मारणं स्तंभबाण'^४ च आश्चर्यं च कली युगे ।

तारं ह्रूं ह्रौं च उच्चार्यं ह्रूं ह्रूं ह्रूं च ततः परम् ॥२६॥

ह्रूंस्तथाप्युच्चरेत् पुत्र ह्रूं ह्रूं ह्रूं च ततः परम् ।

ह्रूं ह्रूं ह्रूंश्च ततश्चोक्त्वा^५ वगलामुखिपद वदेत् ॥२७॥^६

सर्वशब्द तंतोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।

वाचं मुखं पद चोक्त्वा स्तम्भयद्वयमुच्चरेत् ॥२८॥

आद्यबीज पुनश्चोक्त्वा^७ उद्धरेत् पुनराद्यवत् ।^८

जिह्वां कीलय उच्चार्यं पूर्ववद् बीजमुद्धरेत् ॥२९॥

बुद्धिं विनाशयोच्चार्यं^९ पूर्वबीजानि^{१०} चोच्चरेत्^{११} ।

वह्निजायासमायुक्तो बृहद्भानुमुखीमनुः ॥३०॥^{१२}

सविता च ऋषिः ख्यातो^{१३} गायत्रीछन्द एव च ।

देवता स्तम्भनार्थं च बृहद्भानुमुखी तथा ॥३१॥

१. घ. ज्वलपुञ्जटामुक्ता । २. घ. ०सुत । ३. ख. ब्राह्मणान् सुत भोजयेत् ।

४. घ. रणस्तम्भनबाणं । ५. घ. ततस्तार । ६. अतः परमयमशो दृश्यते घ. पुस्तके—

“आद्यबीजं मनोः सख्या उद्धरेत् पुनरादरात्”

७. घ. मनोः संख्या । ८. घ. पुनरादरात् । ९. घ. नाशय उच्चार्यं । १०. घ.

पूर्वबीजं । ११. घ. समुच्चरेत् । १२. घ. पुस्तके त्वयमशो विशेष —

स्तब्धमाया तारकं च वह्निजायान्तक सुत ।

बृहद्भानुमुखीमन्त्रं षडुत्तरशतार्णवे” ॥

१३. घ. ऋषिश्चात्र ।

वीजं च बगलावीजं शक्तिर्माया कुमारक ।
 कीलकं प्रणवं चात्र विनियोगस्ततः^१ परम्^२ ॥३२॥
 पूर्ववन्त्यासविद्यां च तन्त्रराजवदाचरेत् ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥३३॥
 कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।
 कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम्^३ ॥३४॥
 स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम् ।
 मदिरामदसंयुक्तां^४ बृहद्भानुमुखीं भजे^५ ॥३५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मंत्रमर्कलक्षं कुमारक ।
 तर्पयेत्तद्दशांशं च गुडोदकसमन्वितम् ॥३६॥
 तालकेन हुनेत्तस्य दशांशं संस्कृताग्निना ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् तद्दशांशं कुमारक ॥३७॥
 मन्त्रान्ते च प्रकर्त्तव्यं सौभाग्यार्चनमादरात् ।
 सौभाग्यार्चां विना पुत्रमन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥३८॥
 पञ्चास्त्रमन्त्रसिद्धिर्हि दिवि देवेषु दुर्लभा^६ ।
 गोपयेत् सर्वदा पुत्रं 'गुप्ता वीर्यवती'^७ भवेत् ॥३९॥
 'न कर्त्तव्यः प्रयोगोऽस्य'^८ शपथादि^९ कदाचन ।
 यः करोति प्रयोगं च देवताशापमाप्नुयात् ॥४०॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे षोडशः पटलः ॥१६॥

॥ अथ सप्तदशः पटलः ॥

'जिह्वाग्रमादाय 'करेण देवी'^{१०} 'वामेन शत्रून् परिपीडयन्ती'^{११} ।
 पीताम्बरां पीनपयोधरादद्यां^{१२} सदा 'स्मरेऽहं बगलाम्बिकां'^{१३} हृदि ॥१॥
 कौञ्चभेदेन उवाच—

चन्द्रचूडं नमस्तेऽस्तु इन्दिरापतिपूजित ।
 शताक्षरीमहामंत्रं बगलायाश्च मे वद ॥२॥

१. घ. विनियोगं च । २. घ. संस्मृतम् । ३. घ. ललज्जिह्वासमन्विताम् । ४. घ. मदिरामोदसंयुक्तां । ५. घ. भजेत् । ६. घ. दुर्लभम् । ७. घ. पुत्रा । ८. घ. गोप्ता वीर्यवती । ९. घ. न कर्त्तव्यं प्रयोगांश्च । १०. ख घ. आपद्यपि । ११. इतः पूर्वमयमंशो घ पुस्तके—'हरीहरेश्च समर्था' । १२. घ. करद्वयेन । १३. घ. मुत्पाद्यन्तिमरिशक्तियुक्ताम् । १४. घ. पीत० । १५. घ. स्मरेयं बगलामूर्त्ती ।

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि पुरश्चर्याविधिं तथा ।
 प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रकं ॥३॥
 स्तब्धमायां च वाग्बीजं माया मन्मथमेव च ।
 श्रीबीजं शक्तिवाराहं वगलामुखि चोच्चरेत् ॥४॥
 स्फुरद्वयं तथा चोक्त्वा सर्वशब्दं^३ ततोच्चरेत् ।
 दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ॥५॥
 स्तम्भद्वयमुच्चार्यं प्रस्फुरद्वयमुच्चरेत् ।
 विकटाङ्गीपदं चोक्त्वा घोररूपीपदं^४ वदेत् ॥६॥
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं^५ महाशब्दं ततोच्चरेत् ।
 पश्चाद्भ्रमकरी चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत् ॥७॥
 विरामपदं^६ चोक्त्वा 'सर्वप्रज्ञामयीति च'^७ ।
 प्रज्ञां नाशय उच्चार्यं उन्मादीकुरु^८ युग्मकम् ॥८॥
 मनोपहारिणी चोक्त्वा स्तम्भमायां^९ समुच्चरेत् ।
 शक्तिवाराहबीजं च लक्ष्मीबीजं^{१०} ततः परम् ॥९॥
 कामराजं च हृल्लेखां वाग्भव तदनन्तरम् ।
 स्तब्धमायां ततोच्चार्यं वह्निजायासमन्वितम् ॥१०॥
 शताक्षरीमहामन्त्रं वगलानाम् पावनम् ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥११॥
 देवता वगलानाम्नी जगत्स्तम्भनकारिणी ।
 ह्रली^{११} बीजं शक्तिरित्येव वाग्भवं कीलकं तथा ॥१२॥
 पूर्वोक्ता न्यासविद्यां च वगलापञ्जरादयः ।
 न्यासानुक्तक्रमेणैव^{१२} 'जपाद्या पच एव च'^{१३} ॥१३॥
 पीताम्बरधरां सौम्यां पीतभूषणभूषिताम् ।
 स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरघः^{१४} ॥१४॥

१. घ. रमा च । २. ह्रलीकारं वगलामुखी । ३. घ. सर्वं शब्द । ४. घ. घोररूप पद । ५. घ. मुच्चार्यं । ६. घ. विरामपदीपदं । ७. घ. सर्वप्रज्ञामयीत्यरे । ८. घ. उन्मादीकुरु । ९. घ. स्तब्धमाया । १०. घ. रमाबीज । ११. घ. न्यास-मुक्तक्रमेणैव । १२. ख. जपादावाचरेत् सुधीः । घ. जपादावाचरेत् सुधीः । १३. घ. ०स्तथा ।

वैरिजिह्वाभेदानार्थं^१ छुरिकां^२ विभ्रती शिवाम् ।
 पानपात्रं गदां पाशं धारयन्ती भजाम्यहम् ॥१५॥
 एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं क्षपाशनः ।
 तर्पयेद्धेतुमिश्रेण वारिणा वाथ पुत्रक ॥१६॥
 'जातिपंचकसंमिश्रजलेन'^३ च कुमारक ।
 पूजायुतं^४ च सन्तर्प्यं ह्यर्चितेन जलेन च ॥१७॥
 त्रिमध्वक्तं पायसेन^५ अथवा पायसाज्ययोः ।
 चरुणा वा हुनेत् पुत्रं सहस्रं तत्त्वसंख्यया ॥१८॥
 नानादेहजरोगांश्च कृत्रिमग्रहसंभवान् ।
 यावकांश्च^६ प्रयोगांश्च^७ 'तुल्यघातुसमुद्भवान्'^८ ॥१९॥
 सद्योनाशनमाद्यान्ति मन्त्रहोमेन साधकः ।
 'साज्यसक्तुघृताक्त'^९ च शमन्तकुसुमेन वा ॥२०॥
 षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र स्थण्डिले वाथ कुण्डके ।
 वशीकरं च संमोह कीर्त्तिः प्रज्ञा भवेद् ध्रुवम् ॥२१॥
 तालकेन हुनेत् पुत्र सहस्रं चसुसंख्यया ।
 कुण्डे चैव भगाकारे राजताग्नौ^{१०} कलौ निशा ॥२२॥
 स्तम्भनं च भवेत् पुत्र नात्र कार्या विचारणा ।
 अर्कैश्च पिचुमर्द्दैश्च^{११} समिधः^{१२} सग्रहेन्नरः ॥२३॥
 प्रत्येकं त्रिसहस्रं च प्रादेशसमिधा क्रमः^{१३} ।
 मन्त्रं सर्वं समुच्चार्य समिधाद्वयमेव च ॥२४॥
 हुनेद् ध्यानसमायुक्तः सद्यो विद्वेषणं भवेत् ।
 विभीतकस्य समिधो ग्राह्यास्तु^{१४} त्रिसहस्रकम् ॥२५॥
 षट्कोणकुण्डे जुहुयात्त्रिशायां कृष्णपक्षके ।
 स्थावरांश्च गिरींश्चैव नदीपादपसंकुलान्^{१५} ॥२६॥

१. घ. ०छेदनार्थं । २. घ. क्षुरिकां । ३. ख. ग. घ जाती(ति) जपक० । ४. घ. बाष्पामृत । ५. घ. पायस च । ६. घ. पुस्तकेऽस्मात्परमधिकोऽशो दृश्यते —

'पर्यायफलदायक । तर्पणेन हुनेत्पुत्र' ।

७.-८. घ. यावकाश्च प्रयोगाश्च । ९. ख. ग. घ. घालप(त्य)घातु० । १०. ख. शाली-
 सक्तु० । ग. साज्यसक्तु० । घ. शालिषक्तुघृताफतां च । ११. घ. रजकाग्नौ । १२.
 ख. पिचुमर्द्दैश्च । १३. घ. समिधा । १४. ख. ग. प्रादेशसमिधः क्रमः । घ. प्रादेश-
 समिधाक्रमात् । १५. क. ग्रहास्तु । ग. ग्रहाणु । १६. घ. नदीपादपसंकुसुर्भं तथा ।

क्षणदुच्चाटनं कुर्याद् होमस्यास्य प्रभातः ।
 निम्बतैलेन सयुक्तं शात्मलीकुसुम तथा ॥२७॥^१
 जुहुयाद्देवतां^२ ध्यात्वा^३ मारणं भवति ध्रुवम् ।
 षट्कर्मनिर्माणमिदं^४ सुसिद्ध
 शताक्षरीमन्त्रमशेषदुःखहम् ।
 होमेन संस्तम्भनमाचरेद् बुधो-
 विद्यासुसिद्ध मुनिगुह्यमादरात् ॥२८॥

॥ इति षट्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे सप्तदश^५ पटलम्^६ ॥१७॥

॥ अथ श्रष्टादशः पटलः ॥

नमस्ते जगतां^७ देवी जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
 भजेऽहं शत्रुनाशार्थं^८ साधकासक्तमानसाम्^९ ॥१॥

कौञ्चभवेन उवाच—

सम्यग्ज्ञानं^{१०} महेशान नित्यनित्यस्वरूपकं^{११} ।
 चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु प्रयोगं वद मे प्रभो ॥२॥

ईश्वर उवाच—

षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र दूर्वाहोममतन्द्रितः ।
 'सम्यग् विषज्वर'^{१२} हन्ति बगलायाः प्रसादतः ॥३॥

कुशेन जुहुयात्तस्य तापज्वरहर^{१३} परम् ।
 हुनेत् तावत् श्वेतदूर्वा ज्वरं चातुर्थिकं हरेत् ॥४॥

त्रिमध्वक्त^{१४} श्वेतदूर्वा षट्सहस्रं हुनेत् क्रमात् ।
 नानाविध गर हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥५॥

दधिमिश्र गुडूचीभिः शर्करागुडसम्मिलम्^{१५} ।

जुहुयात् षट्सहस्रं तु नानामेहनिवारणम् ॥६॥

१. घ. पुस्तके श्लोकोऽय नास्ति । २. घ. जुहुयादयुत । ३. घ. ध्यायन् । ४. घ. षट्कर्मणि मिदं । ५. ग. सप्तदशम । घ. सप्तदशः । ६. घ. पटलः । ७. घ. बगला । ८. घ. शत्रुनाशाय । ९. घ. मदिरासक्त० । १०. घ. सत्यज्ञान । ११. घ. नित्यानित्य० । १२. घ. सद्यस्तापज्वरः । १३. घ. शीतज्वर० । १४. घ. त्रिमधुक्ता । १५. ख. मिश्रितम् ।

सर्षपं लवणोपेतं पूर्ववज्जुहुयान्नरः ।
 नाशयेद् गुल्मरोग^१ च औषधेन विना महत् ॥७॥
 षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 'पित्तोद्वेकादिसर्वाश्च^२' रोगान्नाशयति^३ ध्रुवम् ॥८॥
 शालिसक्तुं^४ घृतोपेतं^५ वशीकरणमुत्तमम् ।
 लाजाहोमं^६ षट्सहस्रं लभेद्वाञ्छितकन्यकाम् ॥९॥
 हरिद्राखडहोमं^७ तु षट्सहस्रं^८ सुबुद्धिमान् ।
 गर्भस्तभो भवेन्नारी सापि वश्या^९ भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 केतकीदलहोमेन गणिका वश्यमाप्नुयात्^{१०} ।
 हुनेत् पद्मदलेनैव नेत्ररोगं विनश्यति ॥११॥
 मल्लिकाकुसुमेनैव श्रद्धिका च मतिर्भवेत्^{११} ।
 जातीफलेन जुहुयादुन्मत्तो जायते रिपुः ॥१२॥
 षट्सहस्रं देवकुसुमं^{१२} शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 बुद्धिगं^{१३} चैव चाञ्चल्यं सज्ञानमुन्मतिस्तथा^{१४} ॥१३॥
 अलीकेन^{१५} क्षुद्रमतिर्दुर्बुद्धिः सिद्धबुद्धिता^{१६} ।
 तत्क्षणान्नाशमाप्नोति तमः सूर्योदये^{१७} यथा ॥१४॥
 मांसं संपुटसयुक्तं^{१८} 'द्रव्येण सममेव च'^{१९} ।
 अयुतं जुहुयाद्रात्री सद्यो धनपतिर्भवेत् ॥१५॥
 मध्वाक्तं 'छागमांसं च'^{२०} त्रिसहस्रं हुनेत् सुत ।
 'भूलाभ जायते'^{२१} शीघ्रं ग्रामादिपतिरेव^{२२} च ॥१६॥
 गौडोद्रव्येण जुहुयात् सहस्रं बाणसंख्यया ।
 बहुमूत्रादिरोगांश्च नाशयेत्तान्^{२३} न संशय ॥१७॥

१. ग. रुमरोगं । २. घ. पैत्योद्मवांश्च षतशो । ३. ०नाशयेद् । ४. ख. ग
 घ. शालिशक्तु । ५. घ. सितोपेतं । ६. घ. लाजहोमात् । ७. घ. होमस्तु । ८.
 क. सहस्रं । ९. ख. वश्या । १०. घ. ०मादरात् । ११. ख. वाधिका शुभमतिर्भवेत् ।
 १२. घ. देवपुष्प । १३. ख. उद्वेग । १४. उच्चाटकमतिस्तथा । १५. ख. अविवेक
 घ. अविवेको । १६. ख. मन्दबुद्धिता । घ. सिद्धिबुद्धिता । १७. घ. सूर्योदयो । १८.
 ख. तु कुक्कुटस्यैव । घ. कुक्कुटसमूत । १९. घ. त्रिमधुः सहितेन । २०. घ. छागपि-
 शितं । २१. घ. सुलभ च भवेत् । २२. घ. ग्रामाधि० । २३. क. ग. घ. नाशयति ।

माध्वीद्रव्येण जुहुयात् षट्सहस्रं क्रमेण च ।

ज्वरपैक्ष्यादिरोगाश्च^१ सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१८॥

पैष्टीद्रव्येण जुहुयान्निशास्वष्टसहस्रकम् ।

सग्रहग्रहणीरोग सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१९॥

अन्नेन 'अन्वहो हुत्वा'^२ अन्नदानपतिर्भवेत्^३ ।

घृतेन कान्तिमान् भूत्वा^४ नारीणामात्मदो^५ भवेत् ॥२०॥

क्षीरेण भ्रमनाशश्च दधना तापनाशनम्^६ ।

पञ्चगव्येन जुहुयात् पूर्ववत् पाप नाशयेत्^७ ॥२१॥

गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री^८ षट्सहस्रं क्रमेण च^९ ।

तालीमद्येन^{१०} जुहुयात् स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥२२॥

खजूरजेन द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत् ।

तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥२३॥

एरण्डतैलेन जुहुयाद्^{११} वाचाकर्षणमाप्नुयात्^{१२} ।

कुसुंभतैलहोमेन^{१३} काकगृध्राननेकशः^{१४} ॥२४॥

आकर्षणं भवेच्छीघ्र खेचराः पक्षिजातयः^{१५} ।

यवना^{१६} पानहोमेन अग्निमध्याद्रिपुः^{१७} स्वयम् ॥२५॥

रोगी च जायते मासाच्छिवस्य वचनं यथा ।

जुहुयादारनालेन पित्तरोगी भवेद्रिपुः ॥२६॥

निम्बपत्रद्रव्येणैव वातरोगी भवेद्रिपुः ।

मोहिनीपत्रजद्रावैः^{१८} श्लेष्मरोगी भवेद्रिपुः ॥२७॥

१ ग घ. ज्वरपैत्यादि० । २ घ. हुत्वान्नकामी । ३ घ. ०दानपरो० । ४ घ. हुत्वा । ५. नारीणां मन्मथो । ६ घ. तापनिवारणम् । ७. घ. पापशान्तये । ८. घ. हुनेद्दीमान् । ९. घ. पुस्तके विशेषः—

'विदार विवशो भावाद्रिपुभ्रान्तो भविष्यति' ।

१०. ख तालीमद्येन । घ. तालमद्येन । ११. घ एरण्डतैलहोमेन । १२. घ. गन्धाकर्षणं० ।

१३. ख. ग. घ. पुस्तकेष्वतः परमयमंशो दृश्यते विशेषः—

'पूर्ववद्धोममात्रतः । जलजानां च होमेन [घ. जलजाश्चैव यो भेदा] भवेदाकर्षणं सुत । करजतैलहोमेन' ।

१४. घ. काकगृध्राण्यनेकशः । १५. घ. पक्षिजा यत' । १६. ख. यवना । घ. यावतालाघ्र । १७. घ. अग्निमाद्यं रिपु । १८. ख. मोहिपत्रजतेद्रावैः ।

अर्कपत्रद्रवेणैव क्षयरोगी भवेद्रिपुः ।^१

'वज्रीक्षीरेण संयुक्तमारनालेन'^२ पुत्रक ॥२८॥

जुहुयात् षट्सहस्रं तु वगलाध्यानपूर्वकम् ।

नाडीव्रणसमायुक्तो^३ (:) षण्मासान्म्रियते रिपुः ॥२९॥

गरं^४ च तिलतैलं च आरनालयुतेन च ।

'ग्रामे वा नगरे वाथ^५ वगलाध्यानपूर्वकम् ॥३०॥

'स्फोटव्रणाश्च जायन्ते'^६ रिपुर्योजनमात्रतः^७ ।^८

तिलतैलेन संयोज्य यावनालान्नमेव^९ च ॥३१॥

जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु^{१०} मण्डलाच्छिन्नशोषकः^{११} ।

कर्पूरमिलितं^{१२} चैव तिलतैलं हुनेत् सुधीः^{१३} ॥३२॥

मारणं^{१४} मण्डलाच्छत्रो^{१५} नान्नि कार्या विचारणा ॥३४॥

इति षड्विधागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टादशःपटलः ॥१८॥

॥ अथैकोनविंशः पटलः ॥

'चतुर्भुजां त्रिनयना पीतवस्त्रधरां शुभाम्'^{१६} ।

वन्देऽहं वगलां देवीं शत्रुस्तंभनकारिणीम् ॥१॥

१. सप्तविंशतिपद्योत्तराद्धं स्यात्प्राविंशतिपद्यपूर्वाद्धंस्य च स्थानेज्यमशो लभ्यते घ. पुस्तके-

'पत्रं विभीतकोद्भूतं तस्य स्वरसहोमतः

जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुर्नान्यथा शिवमापितम् ॥

तत्कारिपत्रजद्रावः कर्मभ्रष्टो भवेद्रिपुः ।

निगुण्डीपत्रजद्रावैर्ज्वररोगी भवेद्रिपुः ॥

कर्पासपत्रजद्रावैर्होमिन कुमारक ।

बद्धकोष्ठाश्च रोगस्य स्वभावेनैवसिद्धयति ॥

हरीतकीश्च होमेन व्रणरोगी भवेद्रिपुः ।

२. घ. वज्रीक्षीरेण संमिश्र० । ३. घ. नाडीव्रणपरो भूत्वा । ४. घ. अगरं । ५. घ. पुस्तके विशेषः—

नगरे वाघ ग्रामे वा अर्कक्षीरं चारनाल पूर्ववज्जुहुयात् क्रमात् ।

भगदरव्रणो भूत्वा षण्मासान् म्रियते रिपुः ॥

६. घ. फोटकव्रहा रोगेन । ७. घ. रिपुर्यो० । ८. अतः परमश. ख. घ. पुस्तके विशेष

'म्रियते नात्र सन्देहः शिवस्य वचनं यथा ।

क. ख. पावनालान्नमेव १०. घ. पूर्ववत्पुत्र । ११. ख. ग. छिन्नसंशय. । घ.

०शत्रुमारणम् । १२. घ. ०मिश्रितं । १३. घ. सुत । १४. घ. म्रियते । १५. घ.

च्छत्रु । १६. घ. शिवाम् ।

स्कन्द^१ उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नमः^२ कारुणिकोत्तम ।
प्रयोगं चोपसंहारं वद मे सर्वमङ्गल ॥२॥

ईश्वर उवाच—

प्रेताङ्गारमषी^३ कृत्वा सितवस्त्रेण^४ बुद्धिमान् ।
शल्य^५ तदन्तरे भस्म वैरिनाम^६ च सलिखेत् ॥३॥
'एकार्णा बगलां देवी^७ ' वेष्टयेत् सम्यगादरात् ।
'शताक्षरी च सवेष्टय ईशानादिषु^८ ' वेष्टयेत् ॥४॥
तद्वस्त्रं^९ गुलिकीकृत्य^{१०} वेष्टयेत् प्रेतरञ्जुना ।
भौमवारे समानीय स्थापयेद् वृक्षकोटरे ॥५॥
वृक्षमूले जपेन्मन्त्रममुत्।ध्यानपूर्वकम् ।
पुत्रदारादिसंयुक्तः पक्षाच्छत्रुर्मृतो भवेत् ॥६॥
भूर्जपत्रे^{११} लिखेन्नाम^{१२} वगलाबीजमध्यमम् ।
कोटरे स्थापयेत् पुत्र विभीतकतरोस्तथा ॥७॥
जिह्वास्तम्भं भवेच्छत्रोः पक्षमात्रेण पुत्रक ।
बृहस्पतिसमो वापि वाचस्पतिसमोऽपि वा ॥८॥
तालमध्ये लिखेन्नाम वगलाबीजमध्यमम्^{१३} ।
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाऽथ^{१४} निर्देहेद्^{१५} दीपवह्निना ॥९॥
जपेत्तत्र सहस्रं कं शताक्षरमनुं^{१६} तथा ।
जिह्वांस्तम्भं भवेच्छीघ्रं^{१७} शेषभाषापतिः स्वयम् ॥१०॥
प्रेतभाण्डे लिखेन्नाम प्रेताङ्गारेण^{१८} साधकः ।
प्राणस्थापनकं कृत्वा रवौ रात्रौ सुबुद्धिमान् ॥११॥
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठे तु^{१९} निर्देहेत् प्रेतकानने ।
नग्नः श्मशानमध्ये तु जपेद् दक्षिणदिङ्मुखः ॥१२॥

१. घ. श्रीञ्चभेदन । २. घ. महा । ३. ख. ०मयी । घ. मशि । ४. घ. प्रेत-
वस्त्रे च । ५. ख. ग. घ. शल्पं । ६. घ. अरि० । ७. घ. एकाक्षरीं च वगलां । ८. घ.
मन्त्रशताक्षरींभिश्च ईशान्ये दिक्षु । ९. क. घ. तद्वस्त्र । १०. घ. गुटिकीकृत्य । ११.
ग घ भूर्यपत्रे । १२. घ. रिपुनिमि । १३. ख. ग घ. ०मध्यगम् । १४. घ. ० तु ।
१५. ग. निर्देही । १६. घ. शताक्षरिमनु । १७. ०च्छत्रोः । १८. प्रेतामारण्ये
१९. घ. पु ।

सहस्रं ध्यानपूर्वं तु प्रातयामि समासतः^१ ।
 एवं कृत्वा तु^२ सप्ताहं ज्वरस्थो जायते भुवि ॥१३॥
 मासान्मृत्युवशो^३ भूत्वा विनश्यति न सशयः ।
 श्रीसूक्तमार्जनेनैव तन्मन्त्रेणाभिमन्त्रितम् ॥१४॥
 शतमष्टोत्तरं चैव^४ सहस्रं वा कुमारक ।
 मंत्रितोदकपानेन पुण्यं सुखमवाप्नुयात् ॥१५॥
 चिताभस्म^५ चिताङ्गार चितान्नं^६ च कुमारक ।
 मोहिनीपत्रजद्रावैर्मर्दयेत् सूक्ष्मतोऽनघ ॥१६॥
 समं समं रिपूच्छिष्टं मर्दयेत् कल्पयेत् पुनः ।
 'चतुरङ्गुलां पुत्तली'^७ कुर्यात् सर्वाङ्गसयुताम् ॥ ७॥
 हृदि तन्नाम चालिख्य ललाटे वगलां लिखेत्
 सर्वाङ्गे चाग्निबीजं च लिखेद् विन्दुं च निर्दहेत् ॥१८॥
 प्रेतवह्नी प्रेतकाष्ठे प्रेतमांसं सुपुत्रक^८ ।
 जपेत्तन्नायुतं पुत्र रिपुर्गच्छेद्यमालये^९ ॥१९॥
 स्नुह्या^{१०} क्षीरेण सयुक्तं 'मर्दयेत् श्वेतसर्पपै'^{११} ।
 चनुरङ्गुलपुत्तल्या लिखेत् पूर्ववदाचरेत् ॥२०॥
 'स्थापयेच्चुल्लचघोभागे'^{१२} यमघटकयोगतः ।
 तत्रोपरि दिवारात्री अग्निं सस्थाप्य बुद्धिमान् ॥२१॥^{१३}
 वगलाबीजमध्यस्थं साध्यनाम च संलिखेत् ।
 वेष्टयेद्वगलामन्त्रं ईशानादिशताक्षरम्^{१४} ॥२२॥
 प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु सहारक्रमतोऽर्चयेत् ।
 शताक्षर्यैर्कक्षीरैस्तु स्नुहीक्षीरेण लेपयेत् ॥२३॥^{१५}

१. घ. समापयेत् । २ घ. नु । ३. क.ख.ग. ०वशे । ४ घ. वाध । ५. घ. चितिमस्म ।
 ६. घ. प्रेतान्नं । ७ घ. चतुर पुत्तली चैव । ८. घ. च पुत्रक । ९ ख. ग. घ.
 ०यमालयम् । १०. घ स्नुही । ११. घ. श्वेतसर्पप मर्दयेत् । १२. घ. ०चुल्लय० ।
 १३. ख घ पुस्तकस्थोऽयमशो विशेष —

अयुतं च दिवारात्री एकाक्षरमनु जपेत्
 मसूरिकाज्वराच्छत्रुः पक्षान्मरणमाप्नुयात् ॥
 अकपत्रं लिखेन्नाम अकक्षीरेण बुद्धिमान् ।

१४. घ. ईशान्यादि० । १५ ख. ग. घ पुस्तकेषु निर्माशो विशेषः—
 संतपेद्दीपशिक्षया पुत्तली तां विशेषतः ।
 भृष्टोत्तरशतं कृत्वा शताक्षर्यादि कल्पयेत् ॥

एवं कृते सप्तरात्रं स शत्रुश्च मृतो भवेत् ।
 मसूरिकाजरासक्तः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥२४॥
 मन्त्रयेन्निम्बपत्रेण एकमेकं क्रमं क्रमम् ।
 चन्द्रप्रसादमन्त्रेण शीतलाविद्यया तथा ॥२५॥^१ ॥
 सपर्णा^२ क्षालयेत् क्षीरैः सदाहः शान्तिमाप्नुयात् ।^३
 तिक्तकोशातकीजातिः^४ तापिच्छी सादरं तथा ॥२६॥
 घत्तूरकं च तन्मूढ्नि^५ 'कारवेल्या फलाकृतिम्'^६ ।
 'षट्मनःशिलाबीजैश्च'^७ कुर्यात् पादद्वयं तथा ॥२७॥
 बदरीमूलतो गत्वा प्राणस्थापनक चरेत् ।
 मन्त्रमुच्चारयेत्पुत्र तदन्तः शत्रुमुच्चरेत् ॥२८॥^८
 श्रोत्रालीगण्डभ्रूमध्ये जिह्वानासास्यशेफसी^९ ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१०} वगलासम्पुटद्वयम्^{११} ॥२९॥
 ब्रह्मस्थाने तालुदेशे कण्टकानर्कसख्यया ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१२} रोपयेन्नग्नतस्तथा^{१३} ॥३०॥
 पञ्च पञ्च करे रोप्य पार्श्वे कुक्षौ च पृष्ठके ।
 कण्टकान् सप्तसंख्याकान् 'मन्त्रयेत् पूर्ववत् क्रमात्'^{१४} ॥३१॥
 रोपयेत् पादयुग्मे तु प्रत्येक^{१५} द्वादशं तथा ।
 'मन्त्रपूर्वं च सरोप्य'^{१६} बदरीकण्टकांस्तथा ॥३२॥
 पुत्तली प्रेतवस्त्रेण बद्ध्वा प्रादेशगर्भके^{१७} ।
 श्मशानाग्नौ^{१८} क्षिपेद्^{१९} रात्रौ बलि दद्याच्च कुक्कुटम्^{२०} ॥३३॥

१ अतः परमयमंशोऽत्रलोक्यते घ. पुस्तके—

“एकाक्षरीविद्यया च शताक्षर्या च विद्यया” ।

२ सुपर्णान् । ३. घ. पुस्तके निम्नांशो दृश्यते

मंत्रित जुहुयान्मंत्रो क्षीरे वापि तथैव च ।

सप्ताहाच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये तथा ॥

४. घ जाती । ५. ख. कारवेल्य० । घ. कारवत्या० । ६. ख. ग. षट्शिलां निबन्धीजैश्च ।

घ. षट्छितां निम्बपत्रैश्च । ७. घ. पुस्तके विशेषः पाठः—

कण्टकान्तो(न्ता)पयेदकनेत्राद्यगेषु पुत्रक ।

८. घ ०शेफसीः । ९. क. ग. घ. पुस्तकेषु नास्ति । १०. घ. पुस्तके नास्ति । ११.

घ. दक्षिणाभिमुखं स्थित्वा । १२. घ. ०सन्नतो रवौ । १३. घ. रोपयेन्मन्त्रपूर्वकम् ।

१४. घ. द्वादश । १५. घ. मंत्रपूर्वान् समारोप्य । १६. घ. ०गर्भके । १७. घ. श्मशाने ।

१८. घ. निक्षिपेद् । १९. घ. कुक्कुटम् ।

अश्मर्यद^१ रिपोरङ्गे नाडीगूलं भवेद् ध्रुवम् ।
 तेनैव दुःखितः शत्रुः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥ ३४ ॥
 चक्ष्येऽहं चोपसंहारं जीवस्थोऽपि रिपुं^२ (पुर) यथा^३ ।
 रवी रात्रौ वर्लि दत्वा^४ चानीत्वा^५ साधकोत्तमः ॥ ३५ ॥
 उत्पाट्य कण्टकान्यादो^६ क्षीरेण क्षालयेत् सुत ।
 तच्छलाकां^७ च^८ संक्षाल्य निःक्षिपेत् कूपमध्यगे ॥ ३६ ॥
 निःक्षिपेन् मन्त्रपूर्वं च एकैकं चोत्तरामुखः^९ ।
 शत्वकेनैव^{१०} मन्त्रेण मन्त्रयेत् कलशोदकम् ॥ ३७ ॥
 सहस्रवारं विधिवन्^{११} मन्त्रेण^{१२} वारिभिः क्रमात् ।
 प्रयोग^{१३} पीडित^{१४} तेन मार्जयेच्छाम्भवेन^{१५} तु ॥ ३८ ॥
 स्थापयेत्^{१६} तेन मन्त्रेण मन्त्रसिद्धिस्तु पुत्रक ।
 ताम्रपात्रे नदीतीये^{१७} नदीवेगाग्रवेष्टितः^{१८} ॥ ३९ ॥
 'तस्मिंश्च मन्त्रयेत् साध्य मन्त्रैर्णैव शतं तथा'^{१९} ।
 त्रिकालं प्राशयेत्तोयं मध्याह्ने मार्जनं तथा ॥ ४० ॥
 त्रिदिनं चाथवा पञ्च ऋषिसंख्यादिनेषु च^{२० २१} ।
 एवं कृते पीडितस्य^{२२} 'पीडां सूर्योदये यथा'^{२३} ॥ ४१ ॥
 'संहरेच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा'^{२४} ।
 न ज्ञात्वा चोपसंहारं यः करोति नराधमः ॥ ४२ ॥
 स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः स्वानो भविष्यति^{२५} ।
 प्रयोगं चोपसंहारमभ्यसेच्च कुमारक ॥ ४३ ॥
 इति षड्विंशद्भागमे सांख्यायनतन्त्रे एकोनविंशः^{२६} पटलः ॥ १६ ॥

१. ख. अश्मर्यदं । घ. अर्चयेत् । २. घ. रिपु । ३. घ. यदा । ४. घ. दत्वा ।
 ५. ख. नीत्वा सा । घ. दानीत । ६. घ. कण्टकान् सर्वा । ७-८. घ. तलालटं तु । ४.
 घ. चोत्तरं मुखम् । १०. ख. ग. शाभवेनैव । घ. शालुवेशेन । ११. विधिना । १२.
 घ. मन्त्रित । १३. ख. घ. प्रयोग । १४. घ. मुदितं । १५. घ. शालुवेन । १६.
 घ. तर्पयेत् । १७. घ. तीय । १८. घ. नदीवेगान्निवेशितम् । १९. घ. मन्त्रयेत् शत्य-
 मन्त्रेण शतवारं सहस्रकम् । २०. घ. वा । २१. घ. पुस्तके विशेषः पाठः—
 देवता शान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा
 २२. घ. तस्य पीडा । २३. घ. शान्तिमाप्नोति निश्चितम् । २४. घ. पुस्तके नास्ति ।
 २६. घ. निजायते । २६. घ. एकोनविंशतिम् ।

॥ अथः विशः पटलः ॥

सर्ववियवशोभादद्या^१ समपीनपयोधराम् ।

हृदि संभावये^२ देवी वगलां सर्वसिद्धिदाम् ॥१॥

स्कन्द^३ उवाच—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगभूषण ।

परविद्याभेदनं च वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रसभेदनाविधिम् ।

प्रयोगं चोपसंहारं शृणु सर्वं कुमारक ॥३॥

उद्धरेत्तारमादौ तु स्तब्धमायां ततः परम् ।

श्रीर्माया शक्तिवाराह 'वाग्भवं मन्मथं तथा'^४ ॥४॥

विलिखेत्ताक्ष्यबीज^५ च वगलामुखी^६ समुच्चरेत् ।^७

परप्रयोगमुच्चार्य ग्रसयुग्मं 'ततः परम्'^८ ॥५॥

पूर्ववन्नवबीज च ब्रह्मास्त्रपदमुच्चरेत् ।

रूपिणीपदमुच्चार्य परविद्यापद^९ वदेत् ॥६॥

ग्रसतीति^{१०} पद चोक्त्वा भक्षद्वितयमुच्चरेत्^{११} ।

पूर्ववन्नवबीज च परप्रज्ञापदं वदेत् ॥७॥

हारिणीति पदं चोक्त्वा 'प्रज्ञाख्यातियुगं वदेत्'^{१२} ।

पूर्ववन्नवबीजं च स्तम्भनास्त्रपदं वदेत् ॥८॥

रूपिणीपदमुच्चार्य बुद्धि 'वाचायुग वदेत्'^{१३} ।

पञ्चेन्द्रियपदं चोक्त्वा ज्ञानं भक्षद्वय वदेत् ॥९॥

पूर्ववन्नवबीज च वगलामुखि उच्चरेत् ।

हुँ फट् स्वाहासमायुक्त वगलामत्रमुत्तमम्^{१४} ॥१०॥

शतोत्तरं मत्रबीजमष्टाविंशतिरेव च ।^{१५}

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥११॥

१. घ ०शोभाख्या । २. क सभावयवे । ३ घ क्रौञ्चभेदन । ४. घ. वाराहं वाग्भवं स्मर । ५. घ. सलिखे० । ६ ०मुखि । ७. घ. वोच्चरेत् । ८. घ. ततोच्चरेत् । ९. घ. ०परं । १०. घ गसतीति । ११. घ. भक्षद्वय० । १२. घ. प्रज्ञां भ्रंशययुग्मकम् । १३. घ. विनाशययुग्मकम् । १४. घ. श्वाक्षिचद्रवर्णाढ्यं मंत्रमुत्तमम् । १५. पदद्वयमिदं नास्ति घ. पुस्तके ।

परविद्याभक्षणी च वगला देवता स्वयम् ।
 अत्र प्रयोग वक्ष्यामि मन्त्रस्यास्य कुमारक ॥१२॥
 पाशाङ्कुशेनान्तरितः शक्तिबीजेन^१ विन्यसेत् ।
 'तत्तद्वागीश्वरीबीजेस्तद्वच्छ्रीबीजतो न्यसेत्'^२ ॥१३॥
 लघुषोढां च विन्यस्य क्रमादेव कुलेश्वरी ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि क्रौञ्चभेदनकोविद ॥१४॥
 सर्वमन्त्रमयी देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
 सर्वविद्याभक्षणीं^३ च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥१५॥
 एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं लक्षमेक क्षपाशनः ।
 तर्पयेदासवेनैव तद्दशांशं कुमारक ॥१६॥
 छागमांसेन जुहुयान् मध्वाज्येन^४ समन्वितम् ।
 खण्डमामलकप्रत्यमयुतं^५ च कुमारक ॥१७॥
 योगिनी वीरपूजां च ह्याचरेच्च समादरात् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा ॥१८॥
 परप्रयोगकालेषु^६ मन्त्रमेतं^७ कुमारक ।
 'सहस्रत्रितयं जप्त्वा'^८ स शत्रुरवशिष्यते ॥१९॥
 शत्रवश्च पुरश्चर्या यत्र कुर्वन्ति पुत्रक^९ ।
 तत्रायुतं जप कुर्यात् तत्र विघ्नं प्रजायते ॥२०॥
 यत्र कुत्रापि रिपवस्तपः कुर्वन्ति निश्चलात् ।
 तत्रायुतं जपेन्मन्त्रं ग्रसते^{१०} परविद्यया^{११} ॥२१॥
 अयुतं तस्य मन्त्रन्तु^{१२} अभिमन्त्र्य^{१३} फलं भवेत् ।
 द्रव्याभिमानिनो ये च ये च विद्याभिमानिनः ॥२२॥
 रूपाभिमानिनो ये च 'ये च'^{१४} ग्रीवतमानिनः ।
 यत्र कुत्रापि तिष्ठति मन्त्रमेतं कुमारक ॥२३॥

१. घ. शक्तिबीजं च । २. घ.

ततो नागीश्वरी तद्वच्छ्रीबीज च ततो न्यसेत् ।

३. ०ख. घ. भक्षिणीं । ४. घ. माध्वाज्येन । ५. घ. ०प्रत्यमयुतं । ६. घ. तु ।
 ७. घ. ०मेन । ८. घ. सहस्रत्रितयान् पुत्र । ९. क. ग. निपुत्रक । १०. घ. ग्रस्ते ।
 ११. घ. रिपुविद्यया । १२. घ. मन्त्रस्य । १३. घ. अग्निमन्त्र्य । १४. घ. नास्ति ।

परविद्याभक्षणाख्यं^१ मंत्रं चैवायुतं जपेत् ।
 श्वेतकेशान्^२ समायाति दन्तशून्यो भवेद्विपुः ॥२४॥
 सद्यो यौवनहीनं^३ तु^४ 'तमः सूर्योदयं यथा'^५ ।
 रूपवान् व्रणयोगी च भवत्येव न संशयः ॥२५॥
 जात्याभिमानिनो ये च 'निन्दको भवति ध्रुवम्'^६ ।
 'तपोऽभिमानिनो ये च'^७ अङ्गहीनो विजायते^८ ॥२६॥
 वैदिकं च परित्यज्य विपरीतकृतं^९ भवेत् ।
 विद्याभिमानिनः सर्वेऽप्ययुतं^{१०} जपमाचरेत्^{११} ॥२७॥
 भवेद्विद्याविहीनोऽपि मुष्करो^{१२} भवति ध्रुवम् ।
 देहाभिमानी पुरुषो नष्टदेहो भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥^{१३}
 दौर्भाग्येन समायुक्तः^{१४} सर्वं सम्मोहनं भवेत् ।
 एतन्मंत्रस्य माहात्म्यं न जानन्ति ऋषीश्वराः ॥२९॥
 'सर्वे स्व'^{१५} देहजं मह्यं^{१६} स्वप्रभावात्^{१७} प्रकाशिनी ।
 योगाभ्यासो^{१८} योगसिद्धो^{१९} तपस्वी सत्यवादिनः ॥३०॥
 मन्त्रेण^{२०} सिद्धोऽसिद्धोऽपि यत्र प्रत्येति^{२१} पुत्रक ।
 परविद्याभेदनं च मन्त्रोपासनतत्परः ॥३१॥
 यत्र गत्वा समासीन एतन्मन्त्रायुतं जपेत् ।
 'योगसिद्धो मन्त्रसिद्धस्तपस्वी शतजीविनः'^{२२} (तः)^{२३} ॥३२॥
 महाक्रान्तो^{२४} भवेन्नो चेन्नन्दकोऽपि भवेद् ध्रुवम् ।
 ये ये^{२५} तन्मन्त्रराजं च नित्यमष्टोत्तरं जपेत् ॥३३॥
 'एतद्राज्यं स मासेन'^{२६} अम्बासेवापरो^{२७} भवेत् ।
 न तत्समाधिको^{२८} भूयान्नैव द्वेषकरो भवेत् ॥३४॥

१. घ. ०भक्षणाख्यं । २. घ. श्वेतकेशाः । ३. घ. ०हीनः । ४. घ. च ।
 ५. घ. भवत्येव न संशयः । ६. घ. पुस्तके नास्ति । ७. घ. नास्ति । ८. घ. पि जायते ।
 ९. घ. विपरीतक्रमो । १०. घ. सर्वं प्ययुताज् । ११. घ. जपमासुत । १२. ख.
 घ. सूकरो । १३. ख. घ. पुस्तकस्थः पाठोऽयं विशेषः —

द्रव्याभिमानी पुरुषो नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ।

१४. घ. समायुक्तं । १५. ख. सर्वस्व । १६. घ. मोहं । १७. घ. स्वप्रकाशात् ।
 १८. घ. योगाभ्यासे । १९. घ. योगसिद्धिः । २०. घ. यन्त्रेण । २१. घ. तिष्ठति ।
 २२. घ. योगसिद्धस्तपस्वी च मन्त्रसिद्धः समीपतः । २३. ख. ग. मदाक्रान्तो । घ. पापा-
 क्रान्तो । २४. घ. ए । २५. घ. तद्राज्यं च जनाः सर्वे । २६. घ. वश्याः सेवा० ।
 २७. घ. ०समाधिको ।

नैव निन्दाकरो भूयाद् 'यदीच्छेद्ये च (च्चेत्स्व) जीवितम्' ॥

॥ इति षड्विद्यागमै साख्यापनतन्त्रे विंशतिः^२ पटलः ॥२०॥

॥ अथैकविंशः पटलः ॥

परप्रज्ञोपसंहारी^३ परगर्वप्रभेदिनीम्^४ ।^५

परविद्याकर्षणं^६ च प्रयोगं वद शङ्कर ॥१॥

ईश्वर उवाच—

विश्वमेतद्भक्तिमयं^७ 'सा भक्तिर्वंगलामया'^८ ।

'एतच्च भासमानां'^९ तां वगलां च कुमारक ॥२॥

वाङ्मय चैव वैचित्र्य त्रिषु लोकेषु वर्तते ।

तद्गर्वहरणार्थं च विद्यामेतां कुमारक ॥३॥

मनसा 'तं जपन्मन्त्रं'^{१०} मुखं तस्यावलोकयेत् ।

भयं च विस्मृतिभ्रान्तिस्तत्क्षणाद् भवति ध्रुवम् ॥४॥

पानपात्रं वैरिजिह्वां गदां शूलेन सयुताम् ।

पीतवर्णां मदाघूर्णां चिन्तयेदाननं रिपोः ॥५॥

स तु भाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरिव स्वयम् ।

'स तु जात्यंतरो,'^{११} भूत्वा निन्दितो भवति ध्रुवम् ॥६॥

अस्त्रशस्त्रमयं मन्त्रं यो जानाति कुमारक ।

तत्र गत्वा महामन्त्रं जपेद्देवीमनन्यधीः'^{१२} ॥७॥

त्रिसहस्रं ध्यानयुक्तं तस्य विद्या कुमारक ।

विस्मृतिश्च भवेच्छीघ्र नात्र कार्या विचारणा ॥८॥

अत्यन्तैश्वर्य्यंसंयुक्तो'^{१३} द्विषता'^{१४} वर्तते'^{१५} यदि ।

तस्य गेहे'^{१६} भौमवारे निशि नग्नेन बुद्धिमान् ॥९॥

१. घ. यदीच्छेज्जीवनं भुवि । २. घ. परविद्याप्रयोगनाम विंशतिः । ३. घ. प्रज्ञापहरणी । ४. घ. ०प्रभेदनी । ५. ख. ग. घ. पुस्तकेषु निम्नांशो विशेषः—

परविद्याभक्षिणीं तां वगलां हृदि भावयेत् ।

स्कद (घ. श्रीञ्चभेदत) उवाच ॥

नमस्ते योगिसंसेव्य योगिराज नमो नमः ।

६. घ. ०कर्षणीं च । ७. घ. ०च्छक्तिमयं । ८. घ. तच्छक्तिर्वंगलाह्वया । ९. ख. एतत्प्रभासमाना । घ. एकत्र भासमानां । १०. घ. च जपेन्मन्त्रं । ११. घ. सद्यो जाडघतमो । १२. घ. जपेद्भूवि० । १३. घ. ०संयुक्तं । १४. ख. द्विषितो । घ. द्विषतो । १५. घ. वर्तये । १६. घ. गेहं ।

प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा दिशि कौवेरदिङ्मुखः ।
 सहस्रं सप्तरात्रौ^१ च नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 ग्रामं वा नगरं वाथ नित्यं कृत्वा प्रदक्षिणम् ।
 जपेद्युतसंख्या तु^२ तद्ग्रामं तु^३ कुमारक ॥११॥
 सस्यादिभिर्विनश्यन्ति द्रव्यं^४ चोरेण नश्यति ।
 पशुभिर्भ्रियते पुत्र मासाद्दीर्घग्यामाप्नुयात् ॥१२॥
 फलितं पुष्पितं चैव^५ शत्रोराराममाश्रितः ।
 रवौ रात्रौ निशाकाले नग्नो भूत्वा सुनिश्चयः^६ ॥१३॥
 प्रदक्षिणत्रयं कृत्वाप्ययुतं जपमाचरेत् ।
 वृक्षो निर्मूलमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥१४॥
 एकाक्षरी च बगलां साध्याख्यं^७ मध्यदेशतः ।
 चिन्तयेज्जाप्यकालेषु^८ सहस्रं जपमाप्नुयात्^९ ॥१५॥
 लक्षं जप्त्वा मनोरेव मृत्तिकां च कुमारक ।
 प्रवाहोपरि निःक्षिप्य नद्या उपरि बुद्धिमान् ॥१६॥
 स्तम्भयेत्तं नदीवेगं महदाश्चर्यकारणम् ।
 महानद्यामेवमेव कुर्यात्^{१०} गुरुलाघवान्^{११} ॥१७॥
 व्यालव्याघ्रादयश्चैव ये ये क्रूरमृगादयः ।
 त्रिसप्तमन्त्रितं भस्म मूर्द्धनि क्षेपणमात्रतः ॥१८॥
 वाक्पाणिबदनाक्षणां च^{१२} तत्क्षणात् स्तम्भनं भवेत् ।
 मन्त्रयेत् संस्कृतं भस्म मन्त्रेणानेन पुत्रक ॥१९॥
 अष्टोत्तरशतं सम्यक् ध्यानमात्रेण^{१३} बुद्धिमान् ।
 सर्वाङ्गोद्धूलनं कुर्यात् तद्भस्मना^{१४} कुमारक ॥२०॥

वनेचरास्तामसजन्तवश्च चौराग्निदुष्कर्मकृदल्पहानपि^{१५} ।

प्रेताश्च^{१६} भूताश्च^{१७} पिशाचभूचराः^{१८} सिंहाश्च सस्तंभयति ध्रुवश्च^{१९} ॥२१॥

१. घ. सप्तरात्र । ग सदा रात्रौ । २. ख. घ. क । ३. घ. च । ४. घ. घर्त्त ।
 ५. घ. ०वापि । ६. घ. धु निश्चितम् । ७. ख ससाध्व । घ. साध्यास्व । ८. घ.
 ०काल तु । ९. ख. घ ०जपमाचरेत् । १०. घ. कुर्यात् । ११. घ. ०लाघवात् ।
 १२. घ. घि । १३. घ ध्यानपूर्वे सु । १४. ख. तद्भस्मेन । १५. घ. चौरादि-
 दुष्कर्मकरा नराश्च । १६. घ. प्रेतांश्च । १७. भूतानपि । १८. भूचराश्च । १९.
 क. ख. ग च ध्रुवम् ।

एतन्मन्त्रवरं पुत्र मनसा जपमाचरेत् ।
 वादार्यं चाथ वाणिज्यं सभायां राजसन्निधौ ॥२२॥
 गत्वा तु रिपवः सर्वे जिह्वास्तंभनमाप्नुयात् ।
 'शत्रुमुद्दिश्य मन्त्रं च श्रयुतं प्रजपेत्ततः'^१ ॥२३॥
 पक्षमात्राद् भवेच्छत्रोजिह्वास्तंभनमाप्नुयात् ।
 तेनैव म्रियते शत्रुर्मण्डलार्थेन^२ मानवः ॥२४॥
 दक्षिणामूर्त्तिमन्त्रेण मन्त्रितं जलमादरात् ।
 त्रिकालं चैव पीत्वा तु मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ॥२५॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यानतन्त्रे एकविंशतिः^३ पटलः ॥२१॥

॥ अथ द्वाविंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशी जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
 पानपात्रगदायुक्तां भजेऽहं वगलामुखीम्^४ ॥१॥

स्कन्द^५ उवाच—

त्रिपुरारे त्रिलोकज्ञस्त्रिकालात्मं^६ स्त्रियंवक ।
 वगलास्त्रं वदास्माकं 'मयि वात्सल्यगौरवान्'^७ ॥२॥

शिव^८ उवाच—

वगलास्त्रमिदं पुत्र^९ सुरामुरसुपूजितम् ।
 अगस्त्यः प्रोक्तवान् पूर्वं राम दाशरथिं प्रति ॥३॥
 तेनोक्तमाञ्जनेयाय तेनोक्तं चार्जुन प्रति ।
 तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि वगलाहृदय'^{१०} मनुम्^{११} ॥४॥
 प्रथमं वगलावीजं वाराह तदनन्तरम्^{१२} ।
 'मम शत्रूस्ततः शक्ति'^{१३} वगलावीजमुद्धरेत् ॥५॥
 वगलामुखिपदं चोक्त्वा 'वाच मुख'^{१४} पदं वदेत् ।
 असद्वय'^{१५} च उच्चार्यं खाफीयुग्म'^{१६} ततः परम् ॥६॥

१. घ.—'प्राप्नुयाच्छत्रुमुद्दिश्य तन्मन्त्रं प्रजपेत्ततः' ।

२. क. मण्डलार्थेन । ३. घ. परविद्याकर्षणं नाम एकविंशतिः । ४. घ. वगला-
 म्बिकाम् । ५. घ. क्रीचमेदन । ६. घ. कालज्ञ । ७. घ. मानवात्सल्यगौरवान् ।
 ८. घ. ईश्वर । ९. घ. मंत्रं । १०. घ. वगलास्त्रमिदं । ११. घ. मनु । १२.
 घ. च ततः परम् । १३. घ. ततश्च शक्तिवाराह । १४. घ. मम शत्रु । १५. ख.
 ग्रहयुग्मं । १६. घ. खाहियुग्मं ।

भक्षयुग्मं ततोच्चार्य शोणितं पिब-युग्मकम् ।
 वगलामुखि^१ उच्चार्य^२ वगलाबीजमुच्चरेत्^३ ॥७॥
 'शक्ति वाराहमुच्चार्यं वर्मास्त्रं च समुद्धरेत्'^४ ।
 'त्रिचत्वारिंशद्वर्णयुक्त'^५ वगलायाः^६ सुपावनम् ॥८॥
 दुर्वासि^७ ऋषिरेवात्र^८ छन्दोऽनुष्टुप् भवेच्छुभम्^९ ।
 देवता वगलानाम्नी^{१०} जगद्व्यापकरूपिणी ॥९॥
 ग्लौ^{११} बीजं ह्रीं च शक्तिश्च फट्कारं कीलकं तथा ।
 'मंत्रराजेन देव्याश्च'^{१२} न्यासविद्यां समाचरेत् ॥१०॥
 ध्यानभेदं^{१३} प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ।
 चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नतपयोधराम् ॥११॥
 जिह्वा खड्गं पानपात्रं गदा धारयन्ती पराम्^{१४} ।
 पीताम्बरधरां देवी पीतपुष्पैरलङ्कृताम् ॥१२॥
 बिम्बोष्ठी चारुवदनां मदाधूणितलोचनाम् ।
 सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ॥१३॥
 भजेऽहं चास्त्रवगलां सर्वाकर्षणकर्मसु ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं बाणलक्षं कुमारक ॥१४॥
 तर्पयेत्तद्दशांशं च जपासंमिश्रवारिणा^{१५} ।
 तद्दशांशं हुनेत् पुत्र तालकं चाज्यसंयुतम्^{१६} ॥१५॥
 भगाकारे सुकुण्डेऽस्मिन्^{१७} मुद्रया हस^{१८} बुद्धिमान् ।
 चदरीफलमात्रं च आहुतीश्च कुमारक ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् सहस्रं शतमेव च ;
 योगिनीं पूजयेत् पुत्रं द्रव्यशुद्धिसमन्विताम् ॥१७॥
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो^{१९} देवता च प्रसीदति ।
 शिवालये जपेन्मन्त्रमयुतं च सुबुद्धिमान् ॥१८॥

१. घ. वगलामुखी । २. घ. समुच्चार्य । ३. घ. तद्बीजं च पुनर्वदेत् । ४. 'तस्यश्च शक्तिवाराह वाराह च समुच्चरेत्' । ५. घ. त्रयश्चत्वारिंशद्वर्णं । ६. घ. वगला-
 स्त्रं । ७. घ. दुर्वासि । ८. घ. ऋषेवास्य । ९. घ. एव च । १०. घ. त्रास्त्रवगला
 ११. घ. ह्रीं । १२. मन्त्रराजवदेवात्र । १३. घ. ध्यानं यत्नात् । १४. घ. शिवाम् ।
 १५. घ. हेतुः संमिश्र० । १६. घ. चाल्पसंयुतम् । १७. घ. तु कुण्डे० । १८. घ.
 हसीमुद्रेण । घ. हंसमुद्रेण । १९. घ. सत्यं ।

शत्रुक्षयं भवेत् सद्यो नान्यथा शिवभाषितम् ।
 षट्सहस्रं जपेन्मन्त्रं निशायां चण्डिकालये ॥१६॥
 जिह्लास्तम्भनमाप्नोति बृहस्पतिसमोऽपि वा ।
 'जपित्वा च' सहस्रं तु भैरवस्य च सन्निधौ ॥२०॥
 बुद्धिभ्रंशो भवेत् सद्यो वाणोपतिसमोऽपि वा ।
 चीरभद्रालये पुत्र अयुतं जपमाचरेत् ॥२१॥
 सिद्धिदो जायते वत्स नान्यथा शिवभाषणम् ।^१
 मातृकासन्निधौ मंत्री जपेद् दशसहस्रकम्^२ ॥२२॥
 सद्यः स्तम्भनमाप्नोति वाल्मीकिसदृशोऽपि वा ।
 ध्यानपूर्व^३ जपेन्मन्त्री^४ अयुतं च कुमारक ॥२३॥
 रूपयौवनवाञ्छत्रुर्व्याधिमान्^५ भवति ध्रुवम् ।
 त्रिसहस्रं^६ जपेन्मन्त्रं^७ त्रिसहस्रं दिने दिने ॥२४॥
 मण्डलाच्छत्रुसम्मोहं^८ कुबेरसदृशोऽपि च ।
 ऐश्वर्यं नाशमाप्नोति कुबेरसदृशोऽपि वा ॥२५॥
 त्रिकालमयुतं जप्त्वा ध्यानपूर्वं सुबुद्धिमान् ।
 चगलाध्यानतो मन्त्रमयुतं जपमाचरेत् ॥२६॥
 सर्वाङ्ग^९ वायुना शत्रुः शीघ्रं गच्छेद् यमालयम्^{१०} ।
 पार्वतीसन्निधौ मंत्री जपेदयुतमादिशन्^{११} ॥२७॥
 रात्रौ पूजासमायुक्तो नरनो दक्षिणदिङ्मुखः ।
 अन्धो भवति तच्छत्रुरवश्यं^{१२} क्रौञ्चभेदन ॥२८॥
 विघ्नरार्जं समभ्यर्च्य रवौ^{१३} तु जपमाचरेत् ।
 त्रिसहस्रं जपेन्मन्त्रं कुक्षिरोगी भवेद्रिपु ॥२९॥
 मण्डलान्नाशमायाति नात्र कार्या विचारणा ।
 प्रयोगान्ते च संस्कार पूजाकाले समाचरेत् ॥३०॥

इति श्रीषड्विंशतितमोऽध्यायः पटलः ॥

१. ख जपित्वाष्ट । घ. जपेत्पच । २. घ निर्वीर्यो जायते शत्रुर्नान्यथा शिव-
 भाषितम् । ३. घ. षट्सहस्रकम् । ४. घ. 'ध्यानात् पूर्व' । ५. घ. जपेन्मन्त्रं । ६.
 घ. 'व्याधितो' । ७. ख. त्रिसहस्र । घ त्रिसहस्र च । ८. ख. जपते मन्त्रं । ९. क. ग.
 शत्रुसमूहः । १०. ख. घ. सर्वाङ्ग । ११. घ. यमालये । १२. घ. 'दयुतसहस्रया' । १३.
 घ तच्छत्रोर्मण्डला [त्] । १४. घ. रात्रौ ।

॥ अथ त्रयोविंशः पटलः ॥

स्वर्णसिंहासनासीनां सुन्दराङ्गी शुचिस्मिताम् ।
बिम्बोष्ठी चारुनयनां ध्यायेत् पीनपयोधराम् ॥११॥

स्कन्द^१ उवाच—

नमस्ताण्डवरुद्राय तापत्रयहराय च ।
वगलास्त्रमहामन्त्रैः प्रयोगान् वद शङ्कर ॥२॥

शिव^२ उवाच—

त्रिकालं तु समासीनो ध्यानपूर्वं तु^३ साधकः ।
त्रिसप्त मन्त्रयित्वा तु जप पश्चात् समाचरेत् ॥३॥

नित्यं च त्रिसहस्रं तु षण्मासं विजितेन्द्रियः ।
वाचासिद्धिर्भवेत्तस्य शापानुग्रहकारका^४ ॥४॥

अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं ध्यानपूर्वकम् ।
भक्षणाद् व्याधिनाशं च भवेदेवं न संशयः ॥५॥

विभीतकतरोर्मूले अयुतं जपमाचरेत् ।
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति साक्षाद्वागीश्वरोऽपिवा ॥६॥

कपित्थवृक्षमूले^५ तु प्रजपेदयुतं तथा ।
श्रोत्रस्तम्भनमाप्नोति सद्यो बधिरतां व्रजेत् ॥७॥

पिचुमदतरोर्मूलेऽप्ययुतं जपमाचरेत् ।
प्राणस्तम्भनमाप्नोति^६ रोगी पीनसवान् भवेत् ॥८॥

कदलीमूलमाश्रित्य अयुतं जपमाचरेत् ।
पादस्तम्भो भवेत् सद्यो वातरोगी भवेद् रिपुः^७ ॥९॥

करञ्जमूलमाश्रित्याप्ययुतं जपमाचरेत् ।
स्तम्भयेज्जठराग्निस्तु अन्नद्वेषो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥

विषतिन्दुकमूलं च समाश्रित्य मनु जपेत् ।
अयुताच्च^८ भवेत् पुत्रं गात्रस्तम्भनमाप्नुयात् ॥११॥

नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिदघ्नजले^९ स्थितः^{१०} ।
तर्प्येद् वगलास्त्रेण ग्रस्तं कृत्वारिनाम^{११} च ॥१२॥

१. घ. क्रीञ्चभेदन । २. घ. ईश्वर । ३. घ. सु । ४. घ. त्रिसहस्रे । ५.

क. ख. ग. ०कारकम् । ६. घ. कपित्थतरु० । ७. घ. घ्राणस्त० । ८. घ. नरः ।

९. घ. नाभिमात्रे जले । १०. घ. नरः । ११. घ. तद्वारिनाम ।

दिने दिने सहस्र^१कं वगलाध्यानपूर्वकम् ।
 गर्मन्त्रावं भवेत्तस्य भार्यायाः^२ शिवभाषितम् ॥१३॥^३
 वल्लीपलाशमूले तु जपेदयुतसंख्यया ।
 मन्त्रमध्ये रिपोभर्यां ग्रस्तं कृत्वा कुमारक ॥१४॥
 तर्पणं च दिवा कृत्वा रात्रौ रात्रौ^४ जपेन्मनुम् ।
 सापि वन्ध्या भवेत् सत्य नात्र कार्या विचारणा ॥१५॥
 श्मशाने प्रजपेन्मन्त्रं ग्रस्तं कृत्वा तु पूर्ववत् ।
 सद्यस्तद्भ्रायानाशं च भवेदेव न सशयः ॥१६॥
 शून्यागारे जपेदेवमयुतं^५ ध्यानपूर्वकम् ।
 लक्ष्मीर्नाशयते नूनं^६ स शत्रुरवशिष्यते ॥१७॥
 जंबीरतरुमूले तु अयुतं जपमाचरेत् ।
 'भ्रमाकुलकुलं सर्वं मण्डलास्त्राशमाप्नुयात् ॥१८॥
 शतवार मन्त्रित च शर्करोदकमेव च^७ ।
 रिपूणां चैव दातव्यं जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥१९॥
 तं मन्त्रित चैव नारिकेलफलोदकैः ।
 पाययेद्रात्रि^८रिपुभिर्जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥२०॥
 नागवल्लीदलं चैव क्रमुकं चूर्णमेव च ।
 सहस्रं मन्त्रित पुत्र दातव्यं शत्रु(त्रू)णां निशि ॥२१॥
 ताम्बूलचर्वणाच्छत्रुजिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 चन्दनं चैव कस्तूरीघषितं मन्त्रयेत् सुत ॥२२॥
 पुनश्च मन्त्रयेत्ताम्रपात्रे गुणसहस्रकम् ।
 तच्चन्दनलेपनेन^९ रिपुभ्रान्तो^{१०} भविष्यति ॥२३॥
 दन्तघावनकाष्ठं च मन्त्रयेत् त्रिसहस्रकम् ।
 तत्काष्ठेन रिपो^{११} पुत्र दन्तघावनमात्रतः ॥२४॥

१. क ग. घ. नार्याया. २. घ पुस्तकेऽय पाठो विशेष—

ततो(तः) पलाशमूले तु प्रजपेच्च परे द्वयम् ।

३. घ रात्रौ तु प्र । ४. घ. जपेन्मन्त्रं । ५. घ. शीघ्रं । ६. ७. घ. पुस्तके नास्ति ।
 ८. घ. प्राक्षयेद्भारि । ९. घ. ० विलेपेन । १०. घ. परिभ्रान्तो । ११. घ. रिपुः ।

जिह्वां वाणी च बुद्धि च 'मनः पादादिकं' १ तथा ।

स्तम्भनं च भवेच्छीघ्रं शिवस्य वचनं यथा ॥२५॥

प्रेतवस्त्रं रवी ग्राह्यं चित्तिकाष्ठं च वेष्टयेत् १

श्मशाने निखनेद् रात्रौ त्रिसहस्रं जपेत्तदा २ ॥२६॥

शेषभाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरपि स्वयम् ।

जिह्वास्तम्भनमाप्नोति सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ॥२७॥

इति षड्विद्यागमे साख्यायनतन्त्रे त्रयोविंशतिः ५ पटलः ॥२३॥

॥ अथ चतुर्विंशः पटलः ॥

अम्बां पीताम्बराढ्यामरुणकुसुमगन्धानुलेपा त्रिनेत्रां,

गम्भीरां कम्बुकण्ठी कठिनकुचयुगा चारुविम्बावरोष्ठीम् ।

शत्रोर्जिह्वासिपत्र ५ शरधनुसहिता व्यक्तगर्वाधिरूढा ६,

देवी सस्तम्भरूपा सुविरलरसनामम्बिका ७ तां भजामि ८ ॥१॥

स्कन्द ९ उवाच—

नमस्ते वृषभारूढ नमः पन्नगकङ्कण १० ।

लक्षण वद मे देव बगलामन्त्रमालिका ११ ॥२॥

ईश्वर उवाच

भृगुवारे च सगृह्य १२ 'आरामस्थनिशां तथा' १३ ।

'ता शुष्का' १४ सप्तरात्र तु 'कृत्वा मेतामनन्तरम्' १५ ॥३॥

भूताविपरितं १६ चैव कपिलागोमय तथा ।

पुनरेकान्तराद्ग्राह्य १७ भाण्डमध्ये तु निःक्षिपेत् ॥४॥

सविष जलसंयुक्तं कुर्यान्मेलनमेव च ।

हरिद्रां तत्र नि क्षिप्य पूजयेदाशु तत्क्रमात् ॥५॥

चुह्लयोपरि च तद्भाण्डं रवी रात्रौ च निःक्षिपेत् ।

द्विगुणं जलसयुक्तं १८ कुर्यान्मेलनमेव च ॥६॥

१ घ. क्षुत्पिपासामल । २. घ. पुस्तकस्थोऽयं पाठो विशेषो दृश्यते—

प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु पूजा चैव तु कारयेत् ।

३ घ. जपेन्मनुम् । ४. घं बगलास्त्रविवरणं नाम त्रयोविंशतिः । ५. घ. ०सिपत्रां ।

६. घ. शुक्लगरवाधिरूढा । ७. घ सुविरलवसना० । ८. घ. नमामि । ९. घ.

क्रौञ्चभेदन । १०. ०भूषण । ११. ०जपमालिकाम् ॥ १२. घ. सग्राह्य । १३. घ.

आरामस्वासिशां निशि १४. ख. छायाशुष्कां । घ. छायाभुक् । १५. घ. कृत्वा तु

तदनन्तरम् । १६ ख. भूमावपतित । घ. भूमा(मौ) तु पतित । १७. ख. पुनरेकां कराद्

ग्राह्यं । घ. पुनरेकां तशाद्ग्राह्यं । १८. घ. जपसयुक्तं ।

अश्वत्थैरिन्धनेरेव ज्वालां 'कृत्वा सुबुद्धिमान्' १ ।
 तस्यां २ मृदु भवेत्तावत्पचनं सम्यगाचरेत् ॥७॥
 गोमयस्थां ३ हरिद्रा च क्षालयेद्वारिणा ४ ततः ।
 छायाशुष्कं च कर्त्तव्यं हरिद्रामणिमादरात् ॥८॥
 तेन कुर्यान्मालिकां च अष्टोत्तरशतं तथा ।
 पुण्यस्त्रीनिमित्तं ५ सूत्रं ६ 'मंत्रैः संच्छेदयेत्' ७ पुनः ॥९॥
 तन्मालिकां रवौ 'वारेऽप्यमृतेनैव' ८ मार्जयेत् ।
 अर्चयेन्मूलमन्त्रेण षोडशैरुपचारकैः ॥१०॥
 निवेदयेत् पायसं च शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 सहस्रं प्रजपेदादौ १० पञ्चाशद्वर्णमादरात् ॥११॥
 'एकाक्षरीमहामन्त्रैर्वंगलानाम्नि' ११ पावनैः ।
 अयुतं प्रजपेत् पुत्रं मालिकासिद्धिमाप्नुयात् ॥१२॥
 एवं च मालिकां कुर्यान् मंत्रसिद्धिमपेक्षता १२ ।
 हरिद्रावस्त्रमाच्छाद्य सिद्धयर्थं जपमाचरेत् ॥१३॥
 हरिद्रामयपुष्पं १३ च हरिद्रामयचन्दनम् १४ ।
 समर्पयेदलङ्कृत्य १५ जपं रात्रौ समाचरेत् ॥१४॥
 वी भूत्वा जपेद्देवीमर्चयेद्विधिवद्यथा १६ ।
 प्रमादान् मालिका भूमौ पतिता चेत् कुमारक ॥१५॥
 पुनः पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववज्जपमाचरेत् ।
 अथ वक्ष्ये प्रयोगांश्च मालिकालक्षण तथा ॥१६॥
 पञ्चविंशतिभिर्मोक्ष. १७ 'सर्गं त्रिंशतिरेव च' १८ ।
 वशीकरणसमोहे १९ 'कला'सत्या सुमालिका' २० ॥१७॥ २१

१. घ. कुर्यात् प्रयत्नतः । २. घ. यावन् । ३. घ. गोमय । ४. घ. लक्षोयेद्वा० ।
 ५. घ. पुनः । ६. ख. पुण्यस्त्री० । घ. स्त्रीनिमित्ते । ७. घ. सूत्रे । ८. घ.
 एकैकं ग्रंथयेत् । ९. घ. रात्रौ मूलेनैव तु । १०. घ. च जपेच्चादौ । ११. घ. एकाक्षर-
 महामन्त्रैर्वंगलायाश्च । १२. घ. ०मपेक्षिता । १३. घ. हरिद्रावर्णपुष्पं । १४. घ.
 हरिद्रावर्णचन्दनम् । १५. घ. समर्प्यं पूजनं कृत्वा । १६. घ. ०राया । १७. घ.
 मोक्षार्थी । १८. घ. घनार्थी त्रिंशदेव च । १९. घ. संमोहं । २०. क. पुस्तके
 ५मंमंशो नास्ति । २१. अतः परं निर्माशो विशेषः ग. घ. पुस्तकद्वये—
 'विशद्विः स्तम्भनं विद्याद् विनाशे पञ्चमालिका' ।

द्विपञ्चसप्तविंशद्भिः^१ रुच्चाटे चार्कसख्यया ।
 ज्वरे^२ रोगादिपीडार्थं पञ्च चैव चतुर्दश ॥१८॥
 पञ्चाशच्छान्तिकर्माख्ये^३ बुद्धि च चतुरुत्तरे ।
 पञ्चदशाभिचारे^४ च मालिकाक्रममी(ई)दृशः^५ ॥१९॥
 भृगुवारे च सगृह्य^६ द्रव्याण्येतानि पुत्रक ।
 'हरिद्रापङ्कज वस्तु कर्पूर मृगनाभि च'^७ ॥२०॥
 श्रीखण्डरोचनागरु-केशरं^८ च समं समम् ।
 मर्दयेन्मु(दु)षसि प्रज्ञ^९ खल्वेनैव कुमारक ॥२१॥
 तेन कुर्यात् पुत्तली च चतुरङ्गुलमानतः ।
 सर्वाङ्गसुन्दरी^{१०} देवी द्विभुजां वगलामुखीम् ॥२२॥
 चित्रपीताम्बरधरां^{११} पीनोन्नतपयोधराम् ।
 पीतवर्णा मदाघूर्णामिर्द्धचन्द्रा च पुत्तलीम् ॥२३॥
 प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु सस्नाप्य^{१२} विधिनाऽर्भकम् ।
 अखण्डतण्डुलेनैव हरिद्राक्षतमेव च ॥२४॥
 कृत्वा एकाक्षरीमन्त्रैरक्षतान्^{१३} मूर्द्धनि नि.क्षिपेत् ।
 नित्यं चायुतपूजा च कुर्याच्चैव च पुत्रक ॥२५॥
 देवी सम्पूजयेत्सम्यक् जपं कुर्यात् सुबुद्धिमान् ।^{१४}
 एवं कृत्वा तत्त्वलक्षं देवी प्रत्यक्षतामियात्^{१५} ॥२६॥
 यत् परस्मै^{१६} न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ।
 एवं पूजाविधिं कृत्वा पुरा 'दुर्वाससेन च'^{१७} ॥२७॥
 तत्त्वलक्षप्रमाणेन प्राप्तं 'ग्रन्थोदित फलम्'^{१८} ।

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे चतुर्विंशतिः^{१९} पटलः ॥२४॥

१. क. पुस्तके 'द्विपञ्च' हीनः 'सप्तविंशद्भिः' शब्द एव दृश्यते । घ. विद्वेषे सप्त-
 विंशद्भिः । २. घ. ज्वर । ३. घ. ०कर्मेषु । ४. घ. पञ्चदश्याभिः । ५. घ.
 ०मीदृशम् । ६. घ. संग्राह्य । ७. ख. घ. पुस्तके निम्नोऽय पाठो विशेषः—

हरिद्रापङ्कज वस्तु^१ चन्दन कुसुमानि च ।

कस्तूरी चैव कर्पूर 'कर्पूरः मृगनाभि च'^२ ॥

घ. घ. गौरोचनमुशीर च केशरं । ९. ख. ०नुपसि प्रज्ञ । घ. मर्दयेन्मदिरायुक्त । १०. घ.
 सुषा च सुन्दरी । ११. घ. वगला वज्रधरा चैव । १२. घ. सस्नाप्य । १३. घ. एकाक्षरैर्मन्त्रैः ।
 १४. घ. पादद्वय नास्ति । १५. घ. प्रत्यक्षमाप्नुयात् । १६. घ. यस्मै कस्मै । १७. घ.
 दुर्वासमीनिराट् । १८. घ. ग्रन्थोक्त फलमाप्नुयात् । १९. घ. मालाप्रकरणं नाम चतुर्विंशति ।

१. घ. रक्तं । २. घ. श्रीखण्ड चागरुं तथा ।

॥ अथ पञ्चविंशः पटलः ॥

नमामि वगलां देवी शत्रुवाक्स्तम्भरूपिणीम् ।
भजेऽहं विधिपूर्वं च जय देहि रिपून् दह ॥१॥

स्कन्द^१ उवाच—

नमः कैलाशनाथाय^२ नमस्ते मुनिसेवित^३ ।
चतुरक्षरीमहामन्त्रं वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच—

सप्तकोटिमहामन्त्रै^४ मन्त्रराजमिमं^५ शृणु ।
षट्प्रयोगैः स्तभनं च सर्वकर्मोत्तमोत्तमम् ॥३॥

यदा शत्रुभयोत्पन्न^६ तदानीमेव पुत्रक ।
अयुतं च जपेन्मन्त्र वगलाचतुरक्षरम्^७ ॥४॥
मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि न्यासध्यानादिकं तथा ।
प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥५॥
वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाशबीजं ततः परम् ।
स्तब्धमाया ततोच्चार्य अंकुश बीजमेव च ॥६॥
चतुरक्षरी च वगलां सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमाम् ।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥७॥

पाशाङ्कुशान्तरितशक्तिरमां च तद्व-

तद्वन्वसेन्मदनबीजमथो वराहम् ।

वागोश्वरी च वगलाख्यसुबीजराज,

विन्यस्यता करयुगे हृदयादिकेषु ॥८॥

चतुर्व्वणात्मिके^८ मन्त्रे^९ मातृकाबीजपूर्वकम् ।
प्रत्येकं च न्यसेत् पुत्र मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥९॥
अथवा वगलामन्त्रं सर्वैरङ्गुलिभिर्न्यसेत्^{१०} ।
ततो जपेन्मन्त्रराज वगलाचतुरक्षरम्^{११} ॥१०॥
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दो न गायत्री समुदाहृतम् ।
देवता वगलानाम्नी ध्यानं वक्ष्ये कुमारक ॥११॥

१. घ. श्रीञ्चभेदन । २. घ. कैलासवासाय । ३. घ. मौनिसेवित । ४. घ. चतुरक्षरीमहामन्त्र । ५. घ. ०मिद । ६. घ. ०भयं प्राप्त । ७. घ. वगलां चतुरक्षरीं । ८. ख. घ. चतुर्व्वणात्मिक । ९. ख. घ. मन्त्र । १०. घ. अङ्गुलीषु न्यसेत्तथा । ११. घ. ०चतुरक्षरीम् ।

कुटिलालकसंयुक्तां^१ मदाघूर्णितलोचनाम् ।

मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाघराम्^२ ॥१२॥

सुवर्णशैलसुप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम्^३ ।

दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसंयुताम् ॥१३॥

रम्भोरूपादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम् ।

एव ध्यात्वा महादेवी कुर्याज्जपमतन्द्रितः ॥१४॥

वेदलक्षं जपं कुर्यात् पर्वताग्रे कुमारक ।

‘भिक्षाशिनः फलाशीनो’^४ मौनी भूत्वा समाहितः ॥१५॥

तर्पणं च दिवा कुर्याद् रात्रौ वा प्रजपेन्मनुम् ।

एव कुर्यात् पुरश्चर्यां देवी प्रत्यक्षमाप्नुयात् ॥१६॥

रात्रौ होमं च कर्त्तव्यं दिवा ब्राह्मणभोजनम् ।

हरिद्रावस्त्रसयुक्तं हरिद्रावर्णचन्दनम् ॥१७॥

‘हरिद्रां चाक्षमालां च’^५ हरिद्रावर्णदेवताम् ।

स्मरेच्च जपकाले तु सर्वसिद्धिकर नृणाम् ॥१८॥

मधूकपुष्पसंमिश्रमर्चितेन जलेन वा ।

तर्पणं तद्दशाशं च देवतामूर्द्धनि निःक्षिपेत् ॥१९॥

आज्येन मिश्रितं चैव शर्करापायस हुनेत् ।

पूर्णाहुत्यन्तमनघ^६ ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः ॥२०॥

योगिनी पूजयेत् पश्चाद् द्रव्यशुद्धिसमन्वितः ।

मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ॥२१॥

आदौ भास्वररूपिणी^७ कुरुं तदा सद्वंशजां^८ योगिनी,

नानालक्षणसयुता कुचभरां प्रौढां नवौढां तथा ।

स्ता(स्ता)ताभ्यजनभूषणैश्च संहिता सच्चन्दनै^९ लेपितां,

पूजागारमुपानयेद्रहसि सा^{१०}द्रव्यैश्च शुद्ध्या रहः^{११} ॥२२

१. घ. कटिलालकसंयुक्तां । २. घ. ०पराम् । ३. घ. सुवर्णकलशा० । ४. घ. भिक्षाशी च फलाशी च । ५. घ. हरिद्राया क्षमा माला । ६. ख. मनष । घ. मनना । ७. ख. भास्कर० । घ. भाषर० । ८. घ. सज्जातिजा । ९. ख. सच्चन्दनै । १०. ख. तां । घ. सद् । ११. ख. घ. सह ।

लौकिके^१ चैव गुप्तात्र सौभाग्यार्चा कुमारक^१ ।
 'मन्त्रसिद्धिकरं वक्ष्ये गोपनं कुरु सर्वदा'^२ ॥२३॥
 अङ्गत्रयेण संयुक्तं लौकिकार्चनमेव च ।
 चतुरंगुलसंयुक्ता^४ गुप्तपूजा कुमारक ॥२४॥^४
 सौभाग्यार्चाविधिश्चैव^१ पञ्चाङ्गोपासन भुवि ।
 योषिद्भुक्तिद्रव्ययुक्त^५ लौकिकार्चनमेव च ॥२५॥^५
 योषिच्छुद्धिद्रव्यपूजा पञ्चमीयुतमादरात् ।
 एतत्सौभाग्यपूजा च मुनिगुह्यमुपासनम्^६ ॥२६॥
 विन्दुपात्रयुता पूजा निर्गुणा योगिनां मतम्^७ ।
 एतच्चतुर्विधा चर्या^{११} देशनामार्चनाविधिः^{१२} ॥२७॥
 वक्ष्येऽहं^३ विधिवत्पुत्र न देयं यस्य कस्यचित् ।
 सृष्टिः स्थितिश्च संहारं जीवन्मुक्तिपदं^४ तथा ॥२८॥
 एतदर्चाविधिर्नामसंकेत मुनिभिः^{१५} सह ।
 सृष्टिश्च गौडदेशेषु^{१६} स्थितिः केरलदेशके ॥२९॥
 संहारार्चा कामरूपे 'कुरुपाञ्चालयोः परम्'^{१७} ।
 पीठोपरि समावेश्य गर्भकौलागमक्रमात्^{१८} ॥३०॥
 अर्चनं^{१९} गौडदेशीयं^{२०} सृष्टिपूजाक्रमस्त्वयम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतां मृदुपर्यङ्कके^{२१} तथा ॥३१॥
 शयनीकृत्य कन्यां^{२२} च स्थित्यर्चाममादरात्^{२३} ।
 केरले तु स्थितिश्चैव सिद्धयसिद्धिकरी^{२४} तथा ॥३२॥
 कौलसारं च तन्नाम सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतास्तिष्ठन्ति कन्यका भुवि ॥३३॥

१. घ. लौकिकी । २. अत पर निम्नांशोऽयं घ. पुस्तक एव दृश्यते—

एव त्रिविधपूजा च मुनिगुह्य सुपावनं ।
 एकैकस्य च पूजाया लक्षण कथ्यते सुत ॥

३. पादयुगं ग. पुस्तके नास्ति । ४. घ. चतुरङ्गसमायुक्तां । ५. श्लोकोऽयं ग. पुस्तके नास्ति । ६. ख. घ. विधिश्चैव । ७. घ. योषित्शुद्धि । ८. अत. परं निम्नांशो घ. पुस्तक एवाऽवलोक्यते—

योषिच्छुद्धिद्रव्यपूजा सुगुप्तार्चनमादरात् ।

९. घ. मुनिगुप्त सुपावनम् । १०. घ मता । ११. घ. चार्चा । १२. घ. ऽनामार्चन । १३. ग. हे । १४. घ. ऽमुक्तं पदं । १५. घ. योगिभिः । १६. घ. देशे तु । १७. घ. कौलिकारवो (र्चा, चार) तत्पराम् । १८. घ. भर्गकौलागमं । १९. क. अर्चनं । घ. अर्चना । २०. घ. गौडदेशीय । २१. क. मृत्युं । २२. ग. घ. शयनीकृतकन्यां । २३. घ. स्थित्यर्चामर्च्यं । २४. ख. घ. सद्यः सिद्धिकरी ।

कामरूपाख्यदेशे तु सहाराह्वयपूजनम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेता कृत्वाभ्यञ्जनमादरात् ॥३४॥
 बिन्दुमात्रं^१ गृहीत्वा तु कृत्वा मुक्त्यर्चनं^२ भुवि ।
 कुरुपाञ्चालदेशीयमनिशं^३ पूजन तथा ॥३५॥
 कौलसारपरं^४ नाम चागमं भुवि^५ दुर्लभम् ।
 सम्यक् पूजाविधिश्चैव उपसंहृतमानसः^६ ॥३६॥
 पञ्चमी चैव कर्त्तव्या सौख्यार्थं तस्य पुत्रक ।
 'पात्रं चैव समासेन'^७ जपध्यानसमन्वितः ॥३७॥
 देवो भूत्वा स्वयं पुत्र पञ्चमी च समाचरेत् ।
 सहारार्चनयोरेवमुपसंहृत्य^८ पूजनम् ॥३८॥
 सम्पूजयेत्^९ पञ्चमी चैव सौख्यार्थं तस्य साधकः ।
 आदौ मध्ये तथा चान्ते बिन्दुपात्रार्थमेव^{१०} च ॥३९॥
 अर्चयेत् पञ्चमी कुर्याद् ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
 कुरुपाञ्चालदेशेऽथ^{११} निर्गुणाच्चाविधिस्तथा ॥४०॥
 एतदर्चाविधिश्चैव दुर्लभो^{१२} विधिशङ्करैः^{१३} ।
 गौडदेशार्चनं पुंसां शान्तिपुष्टिकरं^{१४} सदा ॥४१॥
 एवमेव विधिः पुत्र सर्वैश्वर्यप्रदायकः ।
 कामरूपार्चनं पुंसां मारणविप्रयोगदा^{१५} ॥४२॥
 कुरुपाञ्चालदेशाच्चा सर्वसिद्धिप्रदा सदा ।^{१६}
 एतदर्चाविधि चैव यः करोति सुबुद्धिमान् ॥४३॥
 जीवनमुक्तः स एवात्र स सिद्धो नात्र सशयः ।
 नारीनिन्दा न कर्त्तव्या स्वपादैस्तां न^{१७} संस्पृशेत्^{१८} ॥४४॥
 नारी दृष्ट्वा मानसेन वन्दन च समाचरेत् ।
 स्वप्रियामर्चयेत् पुत्र प्रिया पञ्चमिकां चरेत् ॥४५॥^{१९}

१. घ. बिन्दुपात्रं । २. गुप्तार्चन । ३. घ. ०देशे तु अनिश । ४. घ. ०सारतर ।
 ५. घ. शुचि । ६. ख. जपसंहृत० । घ. उपसपेद्वत्यसाधकः । ७. घ. न्यासं न्यस्त्वोभयोर्देशे ।
 ८. घ. सहारार्चनयोग च उप० । ९. पूजयेत् । १०. घ. बिन्दुप्रात्यर्थं० । ११. घ.
 तु । १२. घ. दुर्लभम् । १३. घ. भुवि पण्मुख । १४. घ. पुष्टिकरि तथा । १५.
 ख. मारणादिप्रयोगदम् । घ. मारणादिप्रयोगकृत् । १६. पदयुग्मं घ. पुस्तके नास्ति ।
 १७. घ. स्वपादौ तां च । १८. घ. स्पृशेत् । १९. इलोकोय नास्ति घ. पुस्तके ।

स्वप्रियाविन्दुपात्र^१ च गृहीत्वा साधकोत्तमः^२ ।

असह्येनार्चनं कृत्वा विन्दुपात्रं तथैव च ॥४६॥

उन्मादी च भवेत् पुत्र मृतः श्वानो भविष्यति ।

॥ इति षड्विंशतमो सांख्यायनतन्त्रे पञ्चविंशतिः^३ पटलः ॥ २५ ॥

॥ अथ षड्विंशः पटलः ॥

जातवेदमये^४ देवि^५ जगज्जननकारिणि^६ ।

जय पीताम्बरधरे^७ वगलायै नमो नमः^८ ॥१॥

स्कन्द^९ उवाच—

नमस्ते सिद्धससेव्य सिद्धविद्याधराचित ।

वगलाचतुरक्षर्याः प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

शिव^{१०} उवाच—

‘प्रयोगं तर्पणं चैव’^{११} वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ।

तर्पणं देवतावासं तर्पणं यंत्रसिद्धिदम्^{१२} ॥३॥

तर्पणं मन्त्रसस्कारं सर्वं तत्तर्पणाद् भवेत्

तर्पणं द्रव्ययोगं च ततः^{१३} सिद्धिर्न संशयः ॥४॥

अर्चनं कलशे चैव काशमण्डलवर्जितम्^{१४} ।

गृहीत्वा क्षालयेत् सम्यक् पूजयेन्मूलमन्त्रतः^{१५} ॥५॥

तज्जलं च समानीय पूजयेत् सुसमाहितः ।

श्रापो वा इति मन्त्रेण मन्त्रयेत्तज्जलं पुनः ॥६॥

उपचारैः षोडशभिः पूजयेत् कुम्भमादरात् ।

तत्पवित्रेण संयुक्तं तर्पणस्यायुतेन च ॥७॥

तेनोक्तविधिना सम्यक् पूजनं तदुदाहृतम् ।

काकोलूकच्छदेनैव^{१६} पवित्रं ग्रन्थिमादरात् ॥८॥

तत्पवित्रेण संयुक्तं तर्पणस्यायुतेन^{१७} च ।

नेत्ररोगी भवेच्छत्रुदिवान्धो जायते ध्रुवम् ॥९॥

१. घ. स्वस्त्रिया० । २. ख. साधकोत्तमै. । ३. घ. पूजाप्रकरणं नाम० । ४. ५. ६. ७. घ. पुस्तके द्वितीयान्तः पाठः । ८. घ. वगलाम्बां नमाम्यहम् । ९. क्रीचभेदन
१०. घ. ईश्वर । ११. घ. तर्पणार्थं प्रयोगं च । १२. घ. मन्त्रसिद्धिदं । १३. घ. च
तच्च । १४. घ. कालमण्डलं । १५. घ. मूलविद्यया । १६. घ. काकोलूकच्छदाम्बा
च । १७. घ. तर्पणोत्थायुतेन च ।

काकपत्रेण संयुक्तं^१ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तेनैव सह सन्तर्प्यं अय्युत साधकोत्तमः ॥१०॥
 काकवद् भ्रमते शत्रुर्महीमामरणान्तिकम्^२ ।
 काकोलूकस्य पक्षाभ्यामेकीकृत्वा^३ सुबुद्धिमान् ॥११॥
 कृत्वा पवित्रग्रन्थि च तेन सन्तर्प्यं चादरात्^४ ।
 अयुतं वगलामन्त्रैः शत्रुविद्वेषणं भवेत् ॥१२॥
 विड्वराहमजारोमैः^५ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तर्पयेदयुतं तेन^६ वगलाघतुरक्षरैः ॥१३॥
 अन्नद्वेषो^७ जायते च स शत्रुरवधिष्यते ।
 केशं च कलशस्थं च पवित्रग्रन्थिमादरात्^८ ॥१४॥
 अयुतं तर्पणेनैव 'स शत्रोर्नाशनं'^९ भवेत् ।
 उष्ट्रोमेण कृत्वा तु पवित्रग्रन्थिरेव च ॥१५॥
 तेनायुतं तर्पणेन मूको भवति पण्डितः ।
 पूर्ववद्वाजिरोमेण तर्पणं च कुमारक ॥१६॥
 हिक्वारोगो भवेत्तस्य^{१०} शीघ्रं^{११} भ्रान्तो भविष्यति ।
 खररक्तेन समिश्रमर्चितं जलतर्पणात्^{१२} ॥१७॥
 जिह्वास्तभो भवत्येव वाणीपतिसमोऽपि वा ।
 इवानरक्तेन समिश्रमर्चितं शुभवारिणा ॥१८॥^{१३}
 अयुतं^{१४} तर्पणात्पुत्रं^{१५} उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरक्तेन समिश्रमर्चितं शुद्धवारिणा ॥१९॥
 अयुतं तर्पणात्पुत्रं काकवद् भ्रमते महीम् ।
 उलूकरक्तसमिश्रमर्चितं शुभवारिणा ॥२०॥
 रिपुरन्धो भवेत् पुत्रं अयुताच्च न संशयः ।
 मार्जारवालरक्तेन मिश्रिताञ्जलतर्पणात्^{१६} ॥२१॥

१. घ. कृत्वा तु । २. घ. ०मातर्पणान्तिकम् । ३. घ. एकीकृत्य तु । ४. घ. बुद्धिमान् । ५. घ. गृध्रवाराहजैर्लोमैः । ६. घ. चैव । ७. ख. अन्त्यद्वेषो । घ. अन्तद्वेषो । ८. घ. ०माचरेत् । ९. घ. स्वशक्त्या० । १०. घ. भवेच्छीघ्रं । ११. घ. रिपुर् । १२. घ. शुद्धवारिणा । १३. घ. पुस्तकेऽयं श्लोको नास्ति । १४. घ. अयुतात् । १५. घ. तर्पयेत् पुत्रं । १६. घ. मिश्रितं जलतर्पणम् ।

भ्रान्तचित्तो भवेच्छत्रुरयुताच्च न संशयः ।
 विड्वराहस्य^१ रक्तेन मिश्रितं जलतर्पणम् ॥२२॥
 उन्मादो च भवेच्छत्रुरयुतादेव^२ पुत्रक ।
 लुलायरक्तसम्मिश्रजलेनैव तु तर्पणम् ॥२३॥
 'अयुतादरिगर्वं तु'^३ मूकत्व कुरुते नृणाम् ।
 भुजङ्गरक्तसंमिश्रजलेनैव तु तर्पणम्^४ ॥२४॥
 शत्रूणां मारणं पुत्र अयुताच्च न संशयः ।
 छागरक्तेन संमिश्रमचितेन जलेन च ॥२५॥
 तर्पणेनायुतेनैव व्रणरोगी भवेद्विपुः ।
 शशकस्य तु रक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^५ ॥२६॥
 क्षयरोगी 'भवेन्मर्त्योऽप्ययुताच्च'^६ न संशयः ।
 मत्कुणस्य च 'रक्तेन मिश्रितेन जलेन च'^७ ॥२७॥
 अयुतात्तस्य शत्रोश्च भवेन्मरणमुत्तमम् ।
 मेषस्य पुच्छरक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^८ ॥२८॥
 अयुताज्वररोगी^९ च जायते तत्क्षणाद्रिपुः ।
 द्रव्येणैव च समिश्रमचितं जलतर्पणम्^{१०} ॥२९॥
 अयुताच्चिन्तितं कार्यं भवत्येव न संशयः ।
 एतत्तर्पणयोगं च सिद्धात् सिद्धतरं सुत ॥३०॥
 न वक्तव्यं न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतंत्रे षड्विंशः^{११} पटलः ॥२६॥

॥ अथ सप्तविंशः पटलः ॥

नानालङ्कारशोभाढ्यां नरनारायणप्रियाम् ।
 वन्देऽहं बगला-देवीं परब्रह्माधिदेवताम् ॥१॥

स्कन्द^{१२} उवाच—

वन्दे पाशुपताध्यक्ष-परमानन्दविग्रह ।

वद होमप्रयोगं च बगलाचतुरक्षरं ॥२॥

१. घ. विड्वराहेण । २. घ. अयुताच्चैव । ३. घ. अयुदक्षिणा पञ्च । ४. घ. तर्पणात् । ५. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ६. घ. भवेच्छत्रुरयुतात् । ७. घ. मिश्रितं जलतर्पणम् । ८. घ. मिश्रितं जलतर्पणम् । ९. घ. अयुताच्चमरोगी । १०. घ. पुस्तके पाठोऽय विशेषः—
 नररक्तेन समिश्रमचितं जलतर्पणम् ।

११. घ. चतुरक्षरीतर्पण प्रयोगं नाम षड्विंशति । १२. घ. कौञ्चभेदेन ।

शिव उवाच^१—

वक्ष्ये होमविधिं सम्यक् सावधानेन श्रूयताम् ।
 अयुतं पुत्रं होम^२ च पिचुमंदफलैर्हनेत् ॥६॥
 अयुताच्छत्रुसंहारो भ्रान्तभीतो^३ भवेद् ध्रुवम् ।
 'करवीराणि रक्तानि'^४ अयुतं चाज्यसंयुतम् ॥४॥
 हुनेत् त्रिकोणकुण्डे तु अयुताद्^५ रिपुमारणम् ।
 विषतिन्दुकबीजं च सौवीरद्रवसंयुतम् ॥५॥^६
 ग्राममध्ये हुनेन् मन्त्री भगाकारे च कुण्डके ।
 तद्ग्रामे वेदशास्त्राणि सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् ॥६॥
 शेषभाषापतिप्रख्यः^७ 'स एव जडतामियात्'^८ ।
 वटमूलं समाश्रित्य कृत्वा कुण्डं त्रिकोणकम् ॥७॥
 तत्फलेन हुनेद् रात्रौ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
 भाषापतिसमो विद्वांस्तत्क्षणाद् भ्रान्तिमाप्नुयात् ॥८॥
 अश्वत्थमूलमाश्रित्य षट्कोणाकृतिकुण्डके ।
 तत्फलं च हुनेद् रात्रौ^९ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ॥९॥
 स्फोटकव्रणसंयुक्तो 'म्रियते यमशासनात्'^{१०} ।
 उदुम्बरस्य^{११} मूले तु षट्कोणाकृतिकुण्डके ॥१०॥
 कोमलं तत्फलं सम्यगयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
 जुहुयाद्रजकस्याग्नीं जुहुयादक्षिणामुखं^{१२} ॥११॥
 ग्रामं वा नगरं वाथ रणं राजकुलं 'तु वा'^{१३} ।
 नाडीव्रणसमायुक्तो नानादुःखेन पुत्रक ॥१२॥
 म्रियते 'न च'^{१४} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ।
 राजवृक्षं समाश्रित्य तन्मूले च कुमारक ॥१३॥

१. घ. ईश्वर । २. घ. होमाच् । ३. घ. भ्रान्तचित्तो । ४. घ. ह्यारिरक्त-
 कुसुमैः । ५. घ. तत्क्षणाद् । ६. ख. घ. पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठः—

अयुतं जुहुयान्मन्त्री तत्क्षणाद्रिपुमारणम् ।
 पलाशबीजमयुतं तिलतैलेन संयुतम् ॥

७. घ. ०प्रख्या । ८. घ. सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् । ९. घ. पुत्र । १०. घ. मारक
 भवति ध्रुवम् । ११. घ. श्रीदुम्बरस्य । १२. घ. नग्नो दक्षिणदिग्मुखः । १३. घ.
 तथा । १४. घ. नात्र ।

हस्तमात्रं भगाकारं कुण्ड कुर्याद् विचक्षणः ।
तत्फल निम्बतैलेन मिश्रितं निशि बुद्धिमान् ॥१४॥

नेत्रायुतं हुनेद् घीमान् ग्रामं वा नगरं तथा ।
स्फोटकव्रणसंयुक्तो हस्तपादादिभग्नतः ॥१५॥

पर्यायान् म्रियते चैव^१ नात्र कार्या विचारणा ।
सर्षप लवणं चैव तिलतैलेन मिश्रितम् ॥१६॥

अयुतं जुहुयान्मन्त्री ज्वररोगी भवेद्रिपुः ।
पिचुमदस्य^२ तैलेन मिश्रितं लवणं तथा ॥१७॥

हुनेच्च^३ पूर्ववत् कुण्डे अयुतं प्रेतपावके ।
कुष्ठरोगी भवेच्छत्रुम्रियते तेन निश्चितम् ॥१८॥

शमीमूले हुनेत्पुत्रं शृणु वक्ष्यामि तत्फलम्^४ ।
तिलतैलेन समिश्रं^५ तत्फलं निशि पुत्रक ॥१९॥

जुहुयात्तत्क्षणात् पुत्रं शृणु वक्ष्यामि^६ तत्फलम् ।
वातरोगी भवेच्छत्रुम्रियते नात्र सशयः ॥२०॥

अपामार्गस्य बीजं तु तिलतैलेन मिश्रितम् ।
शमीमूले हुनेत्पुत्रं अयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥२१॥

तत्रस्थाः शत्रुभार्याश्च तद्गृहे तत्र योषितः ।
चन्ध्याः स्त्रियो भवेयुश्च सत्यमेव^७ शिवोदितम् ॥२२॥

शमीमूलं समाश्रित्य शलाटुं च समासतः^८ ।
तिलतैलेन समिश्रं जुहुयादयुतं तथा ॥२३॥

प्रेताग्नौ रजकाग्नौ वा पूर्वोक्ते चैव कुण्डके ।
वैरिस्त्रीणां भवेत् सद्यः^९ स्रवद्रक्तं^{१०} निरन्तरम्^{११} ॥२४॥

तिलतैलेन समिश्रं शलाटुं^{१२} शाल्मलीभवम्^{१३} ।
पूर्ववच्च हुनेत् पुत्रं मेहरोगी^{१४} भवेद्रिपुः ॥२५॥

१. घ. शत्रुः । २. घ. पिचुमदेन । ३. घ. हुनेत्तु । ४. ख. ग घ. भगाकारे तु कुण्डके । ५. घ. संयुक्तं । ६. घ. वक्ष्यामि शृणु । ७. घ. सत्यमेतच् । ८. घ. शाद् लस्य च मांसतः । ९. घ. सद्यो । १०. घ. वायद्रक्त । ११. घ. सुनिश्चितम् । १२. घ. शल्लय । १३. घ. ०भवेत् । १४. घ. महद्रोगी ।

एवं होमप्रयोगं च रात्रौ कुर्यात् कुमारक ।

'प्रयोगं चोपसहारं सत्पुत्रायापि नो वदेत्'^१ ॥२६॥^२

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे सप्तविंशतिः^३ पटलः ॥२७॥

॥ अथाष्टाविंशतिः पटलः ॥

बालभानुप्रतीकाशां^४ नीलकोमलकुन्तलाम्^५ ।

वन्देऽह वगलां देवी स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥१॥

स्कन्द उवाच—^६

विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु विरूपाक्ष नमो नमः ।

सुगमं^७ स्तम्भविद्याया. प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

शिव^८ उवाच—

वगलाहृदय मंत्रं गुप्तगुप्ततरं^९ तथा ।

एतच्छ्रवणमात्रेण मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥३॥

न ध्यानं न च होमं च न जपं न चतर्पणम् ।

सकृदुच्चारणान् मन्त्राच्चिन्तितं^{१०} भवति ध्रुवम् ॥४॥

न चाभिषेकं न च मन्त्रदीक्षा,

न चात्र^{११} दिक्काल ऋतुश्च^{१२} देवता^{१३} ।

न चापि पञ्चेन्द्रियनिग्रहं च,

सकृत् स्मरन्वै वगलाख्यहृन्मनुम्^{१४} ॥५॥

वगलाहृदयं मंत्रं ब्रह्मादीनां च दुर्लभम् ।

सकृत् स्मरणमात्रेण वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥६॥^{१५}

१. घ. पुस्तकेऽयमंशो विशेषः—प्रयोगादौ प्रयोगान्ते पूजां कुर्यात् प्रयत्नतः ।

२. घ. पुस्तके श्लोकोऽयं विशेषो लभ्यते—

एव य. कुरुते पुत्र प्रयोगं सिद्धिमाप्नुयात् ।

पूजा विना कृतं कर्म प्रयोगं निष्फलं भवेत् ॥२७॥

३. घ. चतुरक्षरीहोमकथनं नाम सप्तविंशतिः । ४. घ. बालभावः । ५. घ. कुण्डलाम् ।

६. घ. क्रीञ्चभेदनः । ७. घ. सुगमं । ८. घ. ईश्वरः । ९. घ. गुप्तात् ।

१०. घ. तस्य चिन्तितं । ११. घ. न चापि । १२. ख. दिक्कालक्रमश्च । घ. दिक्पालकः ।

१३. घ. देवताश्च । १४. घ. हृन्मनुः । १५. पद्याद्धमिदं ख. ग. पुस्तकद्वयेऽधिकं दृश्यते—

सचारवान् भवेत् पञ्चुर्वादी मूकत्वमाप्नुयात् ।

दरिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् स्तब्धीभवति^१ पण्डितः ।
 चतुरो मुष्करश्चैव^२ कीर्त्तिमान् निन्दको भवेत् ॥७॥
 कवीश्वरोऽपि चोन्मादी^३ भोगासक्तोऽपि रोगवान् ।
 रोगवान्^४ क्षयरोगी स्यात्^५ कुलजो^६ निन्दको भवेत् ॥८॥
 मानी लघुतरश्चैव^७ नैष्ठिको भ्रष्टतां व्रजेत् ।
 एतद्विना कलौ पुत्र मुकृतकीर्त्तिकारणम्^८ ॥९॥
 गुणश्च वर्त्तते पुंसां तस्योत्पन्नकारणम्^९ ।
 वगलाहृदयं मंत्रं सकृदावर्त्तयेत्तु यः ॥१०॥
 तस्योल्लंघनमात्रेण नष्टः स्यात्पद्मजोऽपि वा ।
 वगलाहृदयं मन्त्रमुपासनपरस्य च ॥११॥
 करोति यस्य^{१०} सन्तोषं तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 येन केनाप्युपायेन हृन्मंत्रं येन^{११} जायते ॥१२॥
 सन्तोष जनयेत् तस्य^{१२} चिन्तितं फलमाप्नुयात् ।
 तन्मन्त्रोद्धारमतुलं 'तत्त्वतः स्वविधानतः'^{१३} ॥१३॥
 वक्ष्येहं तत्र सर्वञ्च^{१४} क्रीञ्चमेदन तच्छृणु ।
 पाशबीज ततोच्चार्यं^{१५} स्तब्धमायां ततोच्चरेत्^{१६} ॥१४॥
 अकुश बीजमुच्चार्यं भूव (वा) राह तथोच्चरेत् ।
 वाराह वाग्भव चैव कामराजं ततः परम् ॥१५॥
 श्रीबीज भुवनेशी च 'वगलामुखिपद वदेत्'^{१७} ।
 आवेशयद्वयं चोक्त्वा पाशबीजमतोच्चरेत् ॥१६॥
 स्तब्धमायां ततोच्चार्यं^{१८} मङ्कश बीजमुच्चरेत् ।
 ब्रह्मास्त्ररूपिणी चोक्त्वा एहियुगमं ततोच्चरेत् ॥१७॥
 पाशबीजमतोच्चार्यं^{१९} स्तब्धमायां ततोच्चरेत् ।
 अङ्कुश बीजमुच्चार्यं मम शब्दं ततोच्चरेत् ॥१८॥

१. क. स्तल्ली० । ख घ स्तब्धी भवति । २. घ. पुष्कर० । ३. घ. उन्मादी ।
 ४. ग. रोगवान् । घ. सत्ववान् । ५. घ. च । ६. घ. कुलवान् । ७. घ. लज्जा-
 विहीनस्तु । ८. ख घ. मुकृत कीर्त्ति० । ९. ख. ग. तस्योपासन० । घ. तस्य नाशन०
 १०. घ. तस्य । ११. घ. यस्य । १२. घ. सद्यः । १३. घ. तदाराधनलक्षणम् ।
 १४. घ. सर्वत्र । १५. घ. समुच्चार्यं । १६. घ. समुच्चरेत् । १७. घ. वगलामुखि
 उच्चरेत् । १८. घ. समुच्चार्यं । १९. घ. पाशबीजं समुच्चार्यं ।

हृदये 'तु समुच्चार्य' १ आवाहययुग वदेत् ।
 सान्निध्यं कुरुयुग्मं च पुनर्बीजत्रयं वदेत् ॥१६॥
 ममैव हृदयेत्युक्त्वा चिरं तिष्ठद्वयं वदेत् । २
 'पुनर्बीजत्रयं चोक्त्वा' ३ हु फट् स्वाहासमन्वितः ४ ॥२०॥
 अशीतिवर्णसयुक्तो ५ 'वगलाहृदय मनुः' ६ । ७
 वन्ध्यामुन्मार्जयेदङ्ग ८ वगलाहृदयेन च ॥२१॥
 वन्ध्या पुत्रवती चैव षणमासाद् भवति ध्रुवम् ।
 वगलाहृदयेनैव त्रिसप्तमभिमन्त्रितम् ॥२२॥
 'पयः पिबति वा सा स्त्री' ९ वन्ध्या १० पुत्रवती भवेत् ।
 कृत्रिमेषु च रोगेषु नानाभयसमुद्भवे ११ ॥२३॥
 त्रिसप्तमन्त्रितं तोय सद्यो नैर्मल्यमातनोत् ।
 नित्यमष्टोत्तरशतं १२ वगलाहृदयं मनुम् ॥२४॥
 चिन्तितं च भवेत् पुत्रं नात्र कार्या विचारणा ।
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टाविंशतिः १३ पटलः ॥२८॥

॥ अथोर्नात्रिंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमः स्वर्णविभूषणे ।
 पानपात्रयुते देवि वगले त्वा नतोऽस्म्यहम् ॥१॥

स्कन्द १४ उवाच—

अष्टमूर्त्ते नमस्तुभ्यं आनन्दगणसागर १५ ।
 वगलाहृदय यन्त्र १६ प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

विन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तत्रयविभूषितम् ।
 षट्कोणं चैव वृत्तं च भूपुरद्वयसयुतम् ॥३॥

१. पदमुच्चार्य । २. निम्नांशोऽयं घ पुस्तक एव दृश्यते विशेष—

पाशवीज ततोच्चार्यं स्तब्धमायां ततोच्चरेत् ।

३. घ अङ्गुलीवीजमुच्चार्यं । ४. घ. स्वाहेति उच्चरेत् । ५. घ. ०मंत्रोऽय । ६. घ. मुनिगुह्य सुपावनम् । ७. घ. पुस्तक एवायमंशो विशेषः—

पुत्रं देय शिरो देय न देय हृदय मनु ।

८. घ. वन्ध्यायां मार्जयेदेव । ९. घ. पिवेदुदयकाले तु । १०. घ. सापि । ११. घ. ०समुच्चये । १२. घ. ०अष्टोत्तरं जप्त्वा । १३. घ. हृदयप्रयोग नाम अष्टाविंशतिः । १४. घ. क्रीञ्चमेदन । १५. आनन्दगुणसागर । १६. घ मन्त्रं ।

मध्ये लिखेन्महामन्त्रं वगलाहृदयं तथा ।
 त्रिकोणेषु लिखेद् बीज वगलाख्य सुपावनम् ॥४॥
 षट्कोणे वा लिखेन्मन्त्रं षट्त्रिंशद्वर्णकारकम् ।
 शताक्षरीमहामन्त्रभाद्यवृत्ते लिखेत् क्रमात् ॥५॥
 'तस्योपरि च सवेष्ट्य वगलाबीजमादरात्' ।
 तस्योपरि^१ विलिखेद्यन्त्र 'स्वर्णे वा रोप्यपत्रके'^२ ॥६॥^४
 लिखित्वा शुभलग्ने तु स्पष्टरेखाश्च^५ संलिखेत् ।
 स्पष्टबीजानि सलिख्य पूजयेदर्कवासरे ॥७॥
 'सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं दुर्गाहृदयमादरात्'^६ ।
 योगिनीः पूजयेत्तत्र धूपदीपार्चनादिभिः ॥८॥
 कौलार्चनविधानेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद्^७ ध्रुवम् ।
 सुरक्तं पूजयेद्यन्त्रं 'ह्यारिकुसुमैः शुभैः'^८ ॥९॥
 इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य अयुत जपमादरात् ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव^९ ह्यष्टोत्तरशतं जपेत् ॥१०॥
 वगलाहृदयेनैव ह्यर्चयेज्ज्वरशान्तये ।
 'मल्लिकाकुसुमेनैव ह्यष्टोत्तरशतं जपेत्'^{१०} ॥११॥
 वगलाहृदयेनैव अष्टादशशतं तथा ।
 अत्रान्तं^{११} वेदशास्त्राणां व्याख्याता भवति ध्रुवम् ॥१२॥

१. ख घ. पुस्तकद्वये पादद्वयस्थाने निम्नांशो लभ्यते —

तदुपरि च सवेष्ट्य पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 तस्योपरि च सवेष्ट्य वगलाबीजमादरात् ॥
 तस्योपरि च षट्कोणे वगला चतुरक्षरी ।
 कोणे कोणे लिखेन्मन्त्रं प्रत्येकं च कुमारकं ॥

२ ख. घ. एवं च । ३. घ. स्वर्णरोप्यादिताम्रके । ४. अस्याग्रे निम्नांशो दृश्यते-
 षडिकः ख. घ. पुस्तकयुग्मे—

'अष्टम्यां च'^१ चतुर्दश्यां नवम्या मौमवासरे'^२
 उत्तराभिमुखो भूत्वा लेखिम्या स्वर्णजातया^३ ॥

५. घ. स्पष्टरेखासु । ६ घ.—

प्रजपेद् वगलायाश्च सहस्रं हृदयं मनु ।

७. घ. सिद्धमन्त्रो भवेद् । ८. घ. ह्यारिश्च सुदुद्धिमान् । ९. ख. कुसुमैश्चैव । घ.
 कुसुमैर्दिव्यैः । १०. ख घ — स्यमन्तकुसुमेनैव ह्यर्चयेज्ज्वरमादरात् । ११. घ. अश्रुतान् ।

१. घ. कृष्णाष्टम्यां । २. घ. मघवा पौर्णिमादिने । ३. हेमतारयो ।

वकुलः पूजयेद्यत्रं पुत्रवान् जायते नरः ।
 'पालाशकुसुमैरर्चेद्यत्रराजं'^१ कुमारक ॥१३॥
 विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र पूर्वसंख्याक्रमात्सुत^२ ।
 पद्मपत्रेण सम्पूज्य पूर्ववद्यंत्रमादरात्^३ ॥१४॥
 कुबेरसदृशो भूत्वा 'लभते भुवि संपदः'^४ ।
 नन्द्यावर्त्तेर्यन्त्रराज पूजयेत् पूर्ववत् सुत ॥१५॥
 त्रैलोक्यं 'वशमाप्नोति पूजायाश्च प्रभावतः'^५ ।
 चम्पकेनैव सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१६॥
 तस्य दर्शनमात्रेण वादिनां स्तम्भन भवेत् ।
 विल्वपत्रेण सम्पूज्य पूर्वसंख्यासु बुद्धिमान् ॥१७॥
 द्रव्यलाभं^६ भवेत्तस्य तत्क्षणादेव पुत्रक ।^७
 अशोकपुष्पैः सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१८॥
 श्रेष्ठराज्य भवेत्पुत्र अनायासेन साधकः ।
 केतकीकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ॥१९॥
 निधानं^८ लभते तस्य शिवस्य वचन यथा ।
 पीतवर्णेन पुष्पेण 'निर्गन्धेन सुगन्धिना'^९ ॥२०॥
 अर्चयेद्युतं मन्त्री षोडशैरुपचारकैः ।
 वाचा^{१०} सिद्धिर्भवेत्तस्य देवीरूपो न संशयः ॥२१॥
 तस्य दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।
 यजेत्तद्वगलायन्त्रं^{११} मुनिगुह्यं सुपावनम् ॥२२॥
 प्रकाशयेत्^{१२} कस्यापि देवताशापमाप्नुयात् ।
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे एकोनत्रिंशः^{१३} पटलः ॥२६॥

१. घ. पालाशपुष्पसंपूज्यः मन्त्रराजं । २. पूर्वसंख्या-पुत्रक । ३. घ. पूर्ववत् क्रीच-
 भेदन । ४. घ. मोदितो भुवि संपदः । ५. घ. वशमायाति यावज्जीव न संशयः ।
 ६. घ. द्रव्यलाभो । ७. घ. पुस्तक एव निम्नः श्लोको दृश्यते विशेषः—

सुलसीमंजरीभिस्तु पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।

राजलाभो भवेत् सद्य अयत्नादेव पुत्रक ॥

८. ख. विधान । ९. घ. निर्गन्धैर्वा सुगन्धिभिः । १०. घ. वाञ्छा । ११. घ. य-
 एतद्वगलामंत्रं । १२. घ. न देयं यस्य । १३. घ. वगलायंत्रप्रकाशन नाम एकोनत्रिंशः ।

अथ त्रिंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशि पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी(नि) ।

स्तम्भनार्थं भजेऽहं त्वां पीतमाल्यानुलेपनाम्^१ ॥१॥

स्कन्द^२ उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश पुराणपुरुपोत्तम ।

वगलाष्टाक्षरमंत्रं^३ वद मे करुणाकर ॥२॥

शिव^४ उवाच—

वेदादि 'त्रिलिखेत् पूर्व'^५ पाशवीजमनन्तरम् ।

स्तम्भमाया^६ ततोच्चार्य अङ्कुश वीजमेव च^७ ॥३॥

'हुं फट् स्वाहा'^८-समायुक्तं मन्त्रमष्टाक्षरं^९ तथा ।

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य^{१०} गायत्री समुदाहृता ॥४॥

'देवता वगलानाम्नी चिन्मयी विश्वरूपिणी'^{११} ।

ॐ वीज ह्र् ली शक्तिश्च क्रो कीलकमुदाहृतम् ॥५॥

न्यासविद्यां च वगलामन्त्रराजवदाचरेत्^{१२} ।

ध्यानं चैव प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥६॥

युवती च मदोद्विक्तां^{१३} पीताम्बरधरां शिवाम् ।

पीतभूषणभूषागी समपीनपयोधराम् ॥७॥

भदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ।

'पानपात्रं च शुद्धिच'^{१४} निभ्रती वगलां स्मरेत् ॥८॥

एव ध्यात्वा जपेत् पुत्रं^{१५} वगलाष्टाक्षरीमनुम् ।

ध्यानेर्नैव^{१६} जप कुर्याद् ध्यायेदाद्यन्तयोस्तथा^{१७} ॥९॥

'अशोकमूले निवसन् मधुरारससंयुतम्'^{१८} ।

हरिद्रामालिकाभिश्च वर्णलक्ष जपेन्मनुम् ॥१०॥

१ ग, पीतमाल्यानुलेपनाम् । २ घ रा क्रौञ्चभेदन । ३ ख, घ रा, वगलाष्टाक्षरी-
मन्त्र । ४ ख, घ रा, ईश्वर । ५ ख, शक्तिराधी तु । ६ ख, घ, रा, स्तब्धमायां । ७,
रा, वीजमृषचरेत् । ८ ख, वगला च । ९ घ, मन्त्रमष्टाक्षरी । १०, रा छन्दोऽत्र ।
११, '-' अयमश ख, पुस्तके नास्ति । रा, ०वीजरूपिणी । १२, ख घ, वगला० । १३,
ख, घ, ०मयोन्मत्तां । रा योषनां च मदोन्मत्तां । १४, घ, रा वैरिजिह्वां पानपात्र । १५,
घ, रा, मन्त्रं । १६ रा, व्यायज्ञेव । १७, ख ०पराम् । १८, घ, रा अशोकमूलमाश्रित्य
हरिद्राम्बरसंयुताम् ।

अष्टायुतं तर्पणं च हेतुसम्मिश्रवारिणा ।
तद्दशाश हुनेत् पुत्र अन्नेन^१ 'च सम मघु'^२ ॥११॥

योगिनी पूजयेत् पश्चाद् गर्भकौलागमक्रमात् (मैः) ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाच्छतं^३ 'वाष्टशतं तु वा'^४ ॥१२॥५

एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं शिवो जानाति नान्यथा ।
वित्त्वमूले जपेन्मन्त्रमयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥ १३॥

लक्ष्मीवान् जायते पुत्र दरिद्रस्तु^५ न संशयः ।
अश्वत्थमूले प्रजपेदयुत पूर्ववन्नरः^६ ॥१४॥

अश्रुतानां^७ च वास्त्राणां^८ व्याख्याता भवति ध्रुवम् ।
शमीमूले जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववन्नरः^९ ॥१५॥

अष्टराज्यं लभेत्पुत्र^{१०} अनायासेन निश्चितम्^{११} ।
वदरीमूलमाश्रित्य अयुत पूर्ववज्जपेत्^{१२} ॥१६॥^{१३}

वशीकरणसम्मोही 'जाय (ये)ते नात्र संशयः'^{१४} ।
उदम्बरतरोमूले^{१५} पूर्ववज्जपमाचरेत् ॥१७॥^{१६}

कुवेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः ।
कदलीमूलमाश्रित्य पूर्ववज्जपमाचरेत्^{१७} ॥१८॥^{१८}

१. ख. आज्येन । रा. तत्फलं । २. रा. कुसुमं मघु । ३. घ. रा. पुत्र शतं । ४. रा. वा तु तदद्वयं कम् । ५. ख घ. रा पुस्तकेषु विशेषः पाठो दृश्यते—

घ. रा. ध्यानोक्ता वगला देवीं चमद्गदर्शनी भवेत् ।

ख. ईमदर्शने भवे देवि नान्यथा शिवभाषितम् ।

६. ख. घ. दरिद्रोऽपि । ७. घ. ध्यानपूर्वकम् । ८. ख घ. अश्रुतानि । रा. अश्रुतं । ९. ख. घ. वास्त्राणि । रा. वेदशास्त्राणां । १०. ख. प्रजपेन्नर । ११. ख. भवेत् सद्यो । १२. ख. रा. पुत्रक । १३. रा. ०न्नर । १४. श्लोकोऽयं नास्ति घ पुस्तके । १५. रा. स्वभावेनैव जायते । १६. घ. ओदुम्बर० । १७. घ. पुस्तके श्लोकोऽयं नास्ति १८. घ. रा. अयुत पूर्ववत् जपेत् । १९. घ. पुस्तके पद्यमदो नास्ति ।

‘प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत’^१ ॥१६॥

॥ इति षड्विद्यागमे साख्यायनतन्त्रे त्रिंशत्पटलः^२ ॥३०॥

॥ अथ एकत्रिंशः पटलः ॥

विराट्स्वल्लपिणी देवी विविधानन्ददायिनीम् ।

भजेऽहं बगलां देवी भक्तचिन्तामणिं शुभाम्^३ ॥१॥

क्रीञ्चभेदन उवाच—

चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसनुतः^४ सर्वमङ्गला(ल) ।

बगलाष्टाक्षरीमन्त्रं(न्त्र) प्रयोगान्^५ वद शङ्कर ॥२॥

१. ख. पुस्तके एतदशस्थानेऽयमशः समुपलभ्यते—

‘प्रयोगादीनि सर्वाणि पूर्ववत्कारयेत् सुधी ।

एतत्क्रमेणैव पुत्र . बगलाष्टाक्षरीविधि ।

सक्षेपेन मया प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥

अस्याग्रे निम्नांशो घपुस्तक एव दृश्यते—

अयुताल्लभते भोगं वाञ्छितं शिवता इव ।

पूगीवन समाश्रित्य अयुत पूर्ववज्जपेत् ॥१६॥

निक्षेपं समते पुत्र अयुतात्मासमाश्रितः ।

जंवीरतरुमाश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत् ॥२०॥

राजा चैव यथो मूत्वा सर्वस्वं दीयते ध्रुवम् ।

सद्यानवनमाश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत् ॥२१॥

यं य वापि स्मरेत् पुत्र त तं प्राप्नोति निश्चितम् ।

पुष्पवाट्या जपेन्मन्त्रमयुत पूर्ववत् सुत ॥२२॥

राजलामो भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ।

नदीतीरे जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववन्नरः ॥२३॥

पुत्रवान् जायते लोके धनघान्यादिसंयुतः ।

एतन्मन्त्री जपेन्मन्त्र तत्तत्फलमवाप्नुयात् ॥२४॥

एतदष्टाक्षरीमन्त्रं सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ।

प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत ॥२५॥

२. अष्टाक्षरीप्रयोगं नाम त्रिंशत्पटल ।

३: रा० नमस्ते लोकजननी(नि) व्यासबालमीकिवन्दिते ।

स्तम्ब(म्)नास्यस्वल्लपिण्यं बगले तां नमाम्यहम् ॥

४. रा० इन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसन्तुष्ट । ५. रा. प्रयोग ।

ईश्वर उवाच—

सर्षपं लवणं चैव चिताभस्मं समं समम् ।
 अर्कक्षीरेण खल्वेन मर्दयेत्^१ सूक्ष्मतोऽनघ^२ ॥३॥
 अङ्गुष्ठमात्रां^३ कृत्वा तु पुत्तली पूर्ववत् सुत ।
 बदरीकण्टक^४ चैव सर्वाङ्गे तस्य लेपयेत्^५ ॥४॥
 आरनालस्य भाण्डे तु अघोमुखी^६ विनिक्षिपेत् ।
 'अङ्गारवासरे पूज्या'^७ पुनस्तत्रैव निक्षिपेत् ॥५॥
 एवं मासत्रयं कृत्वा 'जिह्वास्तभं भवेद् रिपोः'^८ ।
 रवौ रात्रौ च सगृह्य^९ चिताभस्मं समादरात् ॥६॥
 वगलाष्टाक्षरीमन्त्रं 'अयुतं मन्त्रयेत्'^{१०} सुत ।
 खाने पाने च तद्भस्मं दातव्यं वैरिणस्तथा^{११} ॥७॥
 जिह्वा मुखं^{१२} च कर्णाक्षिपादादिस्तभन^{१३} भवेत् ।
 तेनैव म्रियते शत्रुर्मासान्मण्डलमात्रतः^{१४} ॥८॥
 आरनालेन^{१५} तद्भस्मं रहस्येन विनिक्षिपेत्^{१६} ।
 तदन्नभक्षणेनैव बुद्धिभ्रंशोऽपि^{१७} जायते ॥९॥
 तद्भस्मं तिलतैलेन शिरोभ्यङ्गं समाचरेत् ।
 तेनैव तत्क्षणात् पुत्र^{१८} चित्तचाञ्चल्यवान्^{१९} भवेत् ॥१०॥
 तद्भस्मं चूर्णमिश्रं^{२०} 'कृत्वां चूलं च वर्णकम्'^{२१} ।
 'तेन शत्रुस्तत्क्षणाच्च'^{२२} बुद्धिजाड्यो भवेद् ध्रुवम् ॥११॥
 विप्रचाण्डालयोः शत्यं^{२३} (सत्य) प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
 वगलाष्टाक्षरीमन्त्रं^{२४} मन्त्रयित्वा सहस्रकम्^{२५} ॥१२॥

१. रा. मर्दयं । २. रा. सूक्ष्मतो मुखम् । ३. घ. मात्र । ४. रा. कण्टकान् ।
 ५. रा. निक्षिपेत् । ६. रा. अघोभागे । ७. '—' रा. अङ्गारवारे सम्पूज्य । ८. रा.
 शत्रुस्तम्भो भवेद् ध्रुवम् । ९. रा. सग्राह्य । १०. रा. मन्त्रयेत्युत । ११. वैरिणा
 तथा । १२. रा. मतिः । १३. रा. कर्णादि० । १४. रा. शत्रुमण्डलं नात्र सद्यः ।
 १५. रा. आरनाले च । १६. रा. च निक्षिपेत् । १७. रा. बुद्धिभ्रण्टोऽपि । १८. रा.
 शत्रुः । १९. रा. चित्तं चाञ्चल्यवान् । २०. रा. मिश्रं तु । २१. रा. कृत्वा ताम्बूल-
 चर्वणम् । २२. रा. कृत्वा तत्क्षणाच्च्युत् । २३. रा. शत्य । २४. रा. वगलाष्टाक्षरे-
 मन्त्रः । २५. रा. मघस्रकम् ।

रवौ रात्रौ शत्रुगेहे^१ ईशान्ये नव(चैव) निक्षिपेत् ।
 मण्डलांतद्ग(तर्गु)हस्योऽपि^२ म्रियते नात्र सशयः ॥१३॥
 कटकं^३ पुरपक्षस्य^४ त्रिसहस्र तु मन्त्रयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने नित्य क[ल]हमाप्नुयात् ॥१४॥
 काकोलूकदलं चैव 'भोमे वा रविवासरे'^५ ।
 संग्रहेत् प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेद् रविवासरे ॥१५॥
 निक्षिपेद् रविवारे तु रिपु(पो)र्गेहे तु^६ बुद्धिमान् ।
 ग्र(गृ)हविद्वेषणं^७ सद्यो जायते नात्र संशयः ॥१६॥
 सर्पं(पं) मण्डूकयोः शल्यं प्रेतरज्वा तु वेष्टयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने स क्ष[त्रु]रवशिष्यति ॥१७॥
 मार्जारवालरोमाञ्च(णि)^८ रवौ रात्रौ च संग्रहेत् ।
 प्रेतवस्त्रं रवौ ग्राह्यं शिवनिर्माल्यमेव च ॥१८॥
 रवौ रात्रौ च संग्राह्य नरास्थि च समं समम् ।
 चूर्णं(र्णी) कृतं^९ तु तत्सर्वं मन्त्रयेदयुतं तथा ॥१९॥
 घूपयेच्छत्रुसदने तस्य संचारयो(ण)-स्थले ।
 'तद्घूपवासने शत्रुमू'को'^{१०} भवति तत्क्षणात् ॥२०॥
 तच्चूर्णं देवतागारे भृगुवारे च घूपयेत् ।
 'पलायते च तन्मन्त्री'^{११} शिवस्य वचन यथा ॥२१॥
 गजाश्ववृषभोलूकमहिपोरगकुक्कुटम्^{१२} ।
 तच्चूर्णं घूपयोगेन सर्वं तृणजलादिकम् ॥२२॥
 म्रियते सप्तरात्रेण स्वेदजाण्डजपिज(ड)जा.^{१३} ।
 एतच्चूर्णं वृक्षमूले घूपयेच्च^{१४} कुमारक ॥२२॥
 फलितं पुष्पित वाथ स्थूलवृक्षमथापि वा ।
 'सप्ताहात् शुष्कता'^{१५} याति सिद्धियोगः कुमारकः ॥२४॥

१. रा. गृहे । २. रा मण्डलं तु ग्रहस्तोपि । ३. रा कटकं । ४. रा. पर-
 पुष्टिश्च । ५. रा. भोमवारस्य वासरे । ६. रा सु । ७. रा. ऽगृहे० । ८. रा. मार्जारी-
 रोमवालं च । ९. रा. चूर्णं कृत्वा । १०. रा. घूपवासने शत्रुश्च मूको । ११. रा
 पलायंती वनं मूर्ति । १२. रा. ऽकुक्कुटाः । १३. रा श्वेतजशिक्षांडजापि च । १४.
 रा. ऽत्तु । १५. रा. समाहाच्छुष्कान्तं ।

मृगाणां^१ चैव शत्रूणां खाने पाने प्रयत्नतः ।
 बुद्धिनाशो भवेच्छत्रु(त्रो)स्त्रिदिन भक्षणात्^२ सुत ॥२५॥
 प्रजा^३ बुद्धि श्रिय चैव ऐश्वर्यं हरते^४ नृणाम् ।
 एतच्चूर्णाप्रयोगं^५ च ऋषीणामपि दुर्लभम्^६ ॥२६॥
 चिताभस्म रवी रात्रौ संग्रहेच्च^७ तदर्भक ।
 अयुत मन्त्रयित्वा तु रिपुमूर्ध्न विनिक्षिपेत् ॥२७॥
 काकवद् भ्रमते शत्रुर्महि(ही)मामरणान्तिकम् ।
 'शिलामामलकं प्रस्थ'^८ सहस्रं सग्रहेद् बुधः ॥२८॥
 'श्रकंवारे तु सध्याया'^९ मन्त्रेणैकेन मन्त्रये[त्]^{१०} ।
 मन्त्रित 'निक्षिपेद् द्वारे(द्वारे)^{११} दक्षिणाभिमुखेन च ॥२९॥
 नित्यं चैव सहस्र तु निक्षिपेद् दशवासरे^{१२} ।
 उच्चाटन भवेच्छत्रोर्नान्यथा शिवभाषणम् ॥३०॥
 घत्तूरपत्रमादाय सहस्र मन्त्रयेन्निशि ।
 प्रेतवस्त्रेण सवेष्ट्य भौमे शत्रुनिकेतने ॥३१॥
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु मूको भवति तद्रिपुः ।
 तन्मार्गं सचरेद् यस्तु तत्सर्वेऽप्यरिमन्दिरे^{१३} ॥३२॥
 'खरबालं च रोम च'^{१४} प्रेतरज्जुस्तथैव च ।
 मन्त्रयेदयुत^{१५} मंत्र^{१६} निक्षिपेच्छत्रुमन्दिरे ॥३३॥
 पक्षाद् वा मासयोगेन् 'स शत्रुर्बान्धवैः सदा'^{१७} ।
 म्रियते नात्र^{१८} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥३४॥
 एतच्च बगलामन्त्रप्रयोगं^{१९} भुवि दुर्लभम्^{२०} ।
 गुरुपुत्राय दातव्य^{२१} न दद्याद्^{२२} यस्य कस्यचित् ॥३५॥
 इति श्री^{२३} सांख्यनतन्त्रे 'श्रुटाक्षरीप्रयोगं नाम'^{२४} एकत्रिंशत्पटलः ।

१. रा. पितृणां । २. रा. भक्षयेत् । ३. रा. प्रज्ञां । ४. रा. हनते । ५. रा. प्रयोगः । ६. दुर्लभः । ७. रा. संग्रहेत् । ८. रा. शटालूमूलकेप्रस्थ । ९. रा. श्रव-
 काशपिसंख्यायां । १०. रा. चं वदेत् । ११. रा. विनिक्षिपे । १२. रा. ०वासरम् ।
 १३. रा. ०प्यतिमन्दधी । १४. रा. खरबालकरोमाणि । १५. १६. रा. ०दयुर्तर्मन्त्रं ।
 १७. रा. बुद्धिनाशनपूर्वकम् । १८. रा. न च । १९. रा. ०प्रयोगो- । २०. रा. दुर्लभः ।
 २१. रा. दातव्यो । २२. रा. देयो । २३. रा. श्रीषड्विद्यागमे । २४. रा. नास्ति ।

॥ अथ द्वात्रिंशत्पटलः ॥

मन्त्रादी तव बीजपूर्वकमथ क्ली व्लूं म्लूं^१ सौं^२ ग्लौ जप[न्]^३,
ताव[द्]ध्यानपराय[णः]^४ प्रतिदिनं पीत्ता (ता)क्षमालाघरः ।
साध्याकर्षणवश्यमाशु बगले साध्यस्य शीघ्र भवेत्,
प्रेताढ्यासनपूर्विके^५ विवसने तत्प्रेमभूमौ निशि ॥१॥

क्रीञ्चभेदन उवाच —

नमः पापविह्वराय नमस्ते चन्द्रशेखर ।

बगलां^६ चोपसहारविद्यां वद सुपावनी[म्]^७ ॥२॥

ईश्वर उवाच —

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली विद्या चास्त्रमुपावनी^८ ।

तस्यास्तत्स्मरणादेव^९ बगला शान्तिमाप्नुयात् ॥३॥

तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि शान्तीं^६ तच्छृणु^{१०} षण्मुख ।

उच्चरेच्छक्तिवाराहं वाराहं^{११} तदनन्तरम् ॥४॥

वाग्बीजं च ततो(थो)च्चार्यं भुवनेशी^{१२} ततः परम् ।

महामायां^{१३} ततो(थो)च्चार्यं श्रीबीजं तदनन्तरम् ॥५॥

कालीशब्दद्वयं^{१४} चोक्त्वा (क्त्वा) महाकालीपद^{१५} वदेत् ।

एहि शब्दद्वयं चोक्त्वा कालरात्री(त्रि)पद वदेत् ॥६॥

स्फुरद्वय समुच्चार्यं प्रस्फुरद्वितयं^{१६} लिखेत्^{१७} ॥७॥

स्तंभनास्त्रपद चोक्त्वा क्षमनीपदमुच्चरेत् ।

ह्रूं फट् स्वाहा-समायुक्तं मन्त्रमेवं समुद्धरेत्^{१८} ॥८॥

पंचाशद्दूध्वं मंत्रस्य^{१९} वर्णत्रयविभूषितम्^{२०} ।

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीकालीमन्त्रमेतन्न संशयः ॥९॥

पलाशमूलमाश्रित्य लक्ष्मेकं जपे[त्]स्मयः^{२१} ।

तत्पर्येत्तद्दशांशेन^{२२} कर्पूरमिश्रित जलैः^{२३} ॥१०॥

१. रा. नास्ति । २. रा. सौ । ३. रा. जपे । ४. रा. ०परायण । ५. रा. प्रेताध्यासन० । ६. रा. बगला । ७. रा. चास्त्रे सु । ८. तस्य स्मरणमात्रेण । ९. क. शान्तीं । १०. रा. च शृणु । ११. रा. ह्रुद्धार । १२. रा. भुवनेश । १३. रा. मम माया । १४. रा. कालि० । १५. रा. महाकालि० । १६. रा. महामोहद्वय । १७. रा. वदेत् । १८. रा. समुच्चरेत् । १९. रा. मन्त्रस्तु । २०. रा. तवकेन विभूषितः । २१. रा. जपेन्नर । २२. ०तद्दशांशश्च । २३. रा. जलम् ।

पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्चतुरस्रो च कुण्डले (के) ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पुत्र^१ सहस्र शतमेव वा ॥११॥
 मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽय (स्य) गायत्री समुदाहृतम्^२ ॥१२॥
 देवता कालिका नाम^३ स्तम्भनास्त्रविभेदिनी^४ ।
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥१३॥
 काली करालवदनां कलाधरघरां^५ शिवाम् ।
 स्तम्भनास्त्रैकसहारीं ज्ञानमुद्रासमन्विताम्^६ ॥१४॥
 वीणापुस्तकसंयुक्ता कालरात्रिं नमाम्यहम् ।
 बगलास्त्रोपसहारीदेवता^७ विश्वतोमुखीम्^८ ॥१५॥
 भजेऽह कालिका देवी जगद्वशकरा^९ शिवाम् ।
 एव ध्यात्वा तु मन्त्रज्ञः प्रजपेच्छुद्धि (द्ध)^{१०} मानसः ॥१६॥
 वक्ष्येऽह चोपसहारक्रम लोकोपकारकम्^{११} ।
 जम्बीरफलमादाय मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१७॥
 भक्षयेत् प्रातहृत्याय निद्रान्ते च कुमारक ।
 एव चार्कदिन कृत्वा जिह्वास्तम्भादिकृत्त्रिमम् ॥१७॥
 सद्यो नेर्मा (र्मं) ल्यमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 रवी श्वेतवचा^{१२} ग्राह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१८॥
 प्रातःकाले भक्षयित्वा त्रिसहस्रं मनुं जपेत् ।
 वाच^{१३} मुख पद चैव 'जिह्वा बुद्धीन्द्रियाणि च'^{१४} ॥२०॥
 स्तम्भित मन्त्रयोगेन तत्सर्वं शान्तिमाप्नुयात् ।
 ताम्रपात्रे समादाय नदीजलमकल्मषम्^{१५} ॥२१॥
 शतवार मन्त्रयित्वा प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात्^{१६} ।
 गोमूत्र चैव संगृह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२२॥

१. रा. पश्चात् । २. रा. समुदाहृत. । ३. रा. नाम्नी । ४. रा. स्तम्भना-
स्त्रकभेदिनी । ५. रा. कलाधारवरी ।

६. रा. स्तम्भनास्त्रैकसहारी वंदेह भद्रकालिकाम् ॥१४॥

स्तम्भनास्त्रोपसहारी ज्ञानमुद्रासमन्वितम् (ताम्) ।

७. रा. बगलास्त्रोपसहारी विश्वतो । ८. रा. देवतामुखी । ९. रा. जाड्यवक्ष्यकरी ।
 १०. रा. ०स्सिद्धि । ११. रा. लोकोपकारकम् । १२. रा. श्वेतवला । १३. रा. वाचा ।
 १४. रा. जिह्वाबुद्ध्यादिकान्यपि । १५. रा. श्लोकाद्धर्मिर्दं नास्ति । १६. रा. तु षण्मास ।

एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं^१ उन्माद^२ शान्तिमाप्नुयात् ।

मन्त्रयेदारनालं च प्रातः प्रातः पिवेन्नरः ॥२३॥

मण्डलज्वररोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ।

‘अष्टोत्तरं मन्त्रयित्वा धारोलंब’^३ पिवेन्नरः ॥२४॥

गर्भस्तभनदोषं च मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात्^४ ।

भस्म च मन्त्रयेत्^५ प्रातः त्रिसप्त त्रिशतेन^६ वा ॥२५॥

तत्रेण^७ सहितं पीत्वा त्रिसहस्रं दिने दिने ।

वगलामन्त्रयोगेन एतत्प्राणसमुद्भवः^८ ॥२६॥

नाशयेदाशु तत्सर्वं तुलराशिमिदानलः ।

यक्षधूप^९ समानीता^{१०} मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२७॥

धूपयेत्तेन सर्वाङ्गं दक्षरात्र कुमारक ।

यक्षधूपोद्भव^{११} चैव प्रयोगं चैव^{१२} कृत्विमम् ॥२८॥

तत्क्षणान्नाशमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।

रवी ब्राह्मी समादाय छायाशुष्क समाचरेत्^{१३} ॥२९॥

मन्त्रयेत् त्रिसहस्रं तु भक्षयेत् प्रातरेव च ।

एतद्विद्या जपेन्नित्यं त्रिसहस्रं कुमारक ॥३०॥

वगलास्त्रकृत^{१४} यद्यत् प्रयोगं दुर्लभम् भुवि ।

तत्सर्वं नाशमाप्नोति मासं मण्डलमात्रतः ॥३१॥

ब्राह्मीरस समादाय मन्त्रयेच्छतधा पुनः ।

शर्करासहितं पीत्वा सहस्रं जपमाचरेत् ॥३२॥

नानाकृत्विमदोषं च वगलामन्त्रतः^{१५} कृतम् ।

अमङ्गल्यो [द्] भवं नाथ^{१६} भूतले यदि^{१७} दुर्लभम् ॥३३॥

१. रा. तु पण्मासं । २. रा. उन्मादः । ३. रा. अष्टोत्तरशत मन्त्र धारोष्णं च ।
४. रा. मण्डलान्नाशमा० । ५. रा. मन्त्रयन् । ६. रा. सप्तमेव । ७. रा. मन्त्रेण ।
८. रा. यद्यद्द्वेषसमुद्भवम् । ९. रा. वृक्षधूपं । १०. रा. समानीय । ११. रा. वृक्षधू-
पीद्भव । १२. रा. नाश । १३. रा. समाचरेत् । १४. रा. वगलाधिकृत । १५.
रा. गर्भे वा यन्त्रित । १६. रा. वाघं । १७. रा. यत्तु ।

मण्डलान्नाशमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या साम्प्रदाय^१ गुरुवतान्^२ लब्धमन्त्रवान् ॥३४॥
 लक्षमेकं जपेन्मन्त्री^३ प्रयोग नाशमाप्नुयात् ।
 अशक्तश्च स्वयं पुत्र 'कुर्वते ब्राह्मणामपि'^४ ॥३५॥
 द्विगुणां जपमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या सम्प्रदाय वद्वये ब्राह्मणानपि ॥३६॥^५
 द्विगुण जपमात्रेण सर्वशान्तिमवाप्नुयात् ।
 एतद्विद्यां विना पुत्र कलौ च बगलामुखि(खीं) ॥३७॥
 प्रयोगशान्तिर्न^६ भवे[न्] मन्त्रयन्त्रीषधादिभिः ।
 सप्तकोटिमहामन्त्रप्रयोगेषु च पुत्रक ॥३८॥
 एतद्विद्यापुरश्चर्या नाशयेदाशु^७ निश्चयम्^८ ॥
 नमः श्रीकालिकादेव्यै कालरात्र्यै नमो नमः ॥३९॥^९
 उपसंहाररूपिण्यै देव्यै नित्य नमो नमः^{१०} ॥४०॥

इति ऋषिद्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'प्रयोगसंहार नाम'^१ द्वात्रिंशत्पटलः ॥

॥ अथ त्रयस्त्रिंशत्पटलः ॥

पीनोत्तुङ्गजटाकलापविलसद्भालेन्दुसच्छेखराम्,^{१२}
 बिभ्राणा शितशान्तकुम्भमुकुटां^{१३} (ट)नेत्रत्रयालङ्कृताम् ।
 शब्दब्रह्ममयी त्रिलोकजननी शक्ति परा श्नाम्भवीम्,
 देवीश्रीबगलां सुरासुरवरैरभ्यर्चिता भावयेत्^{१४} ॥१॥

श्रीञ्चभेदन उवाच—

नमः शिवाय साम्बाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्त्तये ।
 वद मे चीपसंहार यत्र लोकोपकारकम् ॥२॥

१. रा. समादाय । २. रा. गुरुतो । ३. रा. ०मन्त्र । ४. रा. प्रार्थयेद्ब्रा-
 ह्मणानपि । ५. रा. पद्यमिदं नास्ति । ६. घ. ०शान्ति न । ७. घ. नाशयेदशु ।
 ८. घ. निश्चयः । ९. रा. पद्याद्धमिदं नास्ति । १०. रा. पद्याद्धमिदं नास्ति । ११.
 रा. नास्त्ययमंशः । १२. रा. ०द्वालेन्दु० । १३. रा. सित० । १४. घ. श्रीबगलां
 ब्रह्मास्त्रवीसुरनशैरभ्यर्चितामाश्रये ।

ईश्वर उवाच—

कपिलानुवनीत च कदलीपत्रमध्येतः^१ ।
 लिप्त्वा^२ मन्त्र^३ लिखेत्तत्र 'कृत्वा पूजा'^४ च साधकः ॥३॥
 षट्कोणं चाष्टकोणं च वृत्तं भूपुरमेव च ।
 षट्कोणकर्णिकायां व (च) षट् बीजानि मनोर्लिखेत् ॥४॥
 शिष्टाक्षराणि कोणेषु ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीमनुः ।
 अष्टपत्रे लिखेन्मन्त्रं ताक्ष्यमालामनुस्तथा ॥५॥^A
 कोऽयस्ताक्ष्यमनुश्चेति वक्ष्येऽहं मन्त्रनायकम् ।
 B आद्यवर्णं समुच्चार्य ताक्ष्यबीजं ततः परम् ॥६॥
 ॐ नमो पदमुच्चार्य पश्चाद् भगवते पदम् ।
 ताक्ष्यबीजं पक्षिराजायोक्त्वा ताक्ष्यं ततः परम् ॥७॥
 सर्वशब्दं ततो (धो) च्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ।
 ध्वंसकाय पदं क्षीमो ह्यु फट् स्वाहा-समन्वितम् ॥८॥ B
 ताक्ष्यस्य मालामन्त्रश्च द्वात्रिंशद्वर्णसंयुतम् ।
 अष्टपत्रे वेदवेदवर्णान् पूर्वादितो लिखेत् ॥९॥^४

१. रा. कदलीपर्णके तथा । २-३. घ. लिप्यं यत्र । ४. रा. यन्त्रमध्ये ।

A-A चिह्नान्तर्गताशस्थाने रा० पुस्तके निम्नोऽंश एवोपलभ्यते—

षट्कोणमध्ये विलिखेद्ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीमनुः ।
 अष्टपत्रे लिखेन्मन्त्रं ताक्ष्यमालामनुस्तथा ॥

B-B चिह्नान्तर्गताशस्थाने रा० पुस्तके निम्नाद्धित. पाठभेदो दृश्यते—

अन्त्यवर्णं समुच्चार्य चतुर्थस्वरपूर्वकम् ॥४॥

बिन्दुना भूषितं पुत्रं ताक्ष्यं एकाक्षरी तथा ॥

ॐकारबीजमुच्चार्य ताक्ष्यबीजं ततः परम् ॥

ॐ नमो, पदमुच्चार्यं ततो, भगवते पदम् ।

पक्षिराजा उच्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ॥

ध्वंसकाय पदं चोक्त्वा ह्यु फट् स्वाहासमन्वितम् ॥६॥

मन्त्रः—ॐ क्षीं नमो भगवते पक्षिराजाय अभिचारादिसकलकृत्त्रिमध्वंसकाय ह्यु फट् स्वाहा ॥

५. श्लोकस्यास्य रा० पुस्तके निम्नोऽयं पाठभेदः—

मालामन्त्रं ताक्ष्यविद्यां पठन्विंशद्वर्णसंयुता ॥

अष्टपत्रे लिखेत्तत्र प्रादक्षिण्यक्रमेण तु ॥७॥

प्राणप्रतिष्ठां यंत्रस्य^१ आद्यवृत्ते लिखेत् सुत ।

तदुपरि लिखेद् वर्णान्^२ पञ्चाशल्लिपिसयुतान्^३ ॥१०॥

पाशाङ्कशं च विलिखेद् भूपुरेषु यथाक्रमम् ।

१. 'अष्टैकौणे लिखेद् वर्णान्^४ वज्रान्ते वर्मं फट् तथा ॥११॥

एवं लिखित्वा यत्र च पूजयेन्मानसेन तु ।

एव कृत्वा तु तत्सर्वं नवनीतं कुमारकं ॥१२॥^५

भक्षयेद् बदरोमात्रं सायं प्रातस्तु बुद्धिमान् ।

देवतावेशमतुलं मन्त्रयन्त्रादिकृत्त्रिमं^६ ॥१३॥

शल्यदारुमयं तत्र प्रयोगं बगलाश्च यत्^७ ।

नाशयेन्मण्डलादेव शि [व] स्य वचनं यथा ॥१४॥

एतद्यन्त्रं हृदि ध्यायेद् दुःखकाले सुबुद्धिमान् ।

दशरात्राद् व्यपोहंतु(ति) दारुणैरुपि^८ कृत्त्रिमं^९ ॥१५॥

रौप्ये वा स्वर्णपट्टे वा लिखेद् यन्त्रमिमं बुधः^{१०} ।

पूजयेद् रक्तपुष्पेण^{११} षोडशरूपचारकं ॥१६॥

कण्ठे वा बाहुमूले वा शिखाया वा कुमारकम् ।

बंधयित्वा वाभिचार नाशमाप्नोति निश्चयतम्^{१२} ॥१७॥

नागवल्लीदलेनैव^{१३} एतद्यन्त्रं कुमारकम् ।

चूर्णेन विलिखेत् सम्यक् पूर्वं ताम्बूलचर्वणम् ॥१८॥

एव कुर्यात् प्रातरैव तद्वत् सायं समाचरेत् ।

मासत्रयं^{१४} चरेदेवं कृत्त्रिमं हरते नृणाम् ॥१९॥^{१५}

कुर्यात् कृत्त्रिमरोगेण पीडिताय कुमारकम् ।

तत्कार्यं गौरव चैव लाघव चावलोकयेत् ॥२०॥^{१६}

पक्ष वाथ त्रिसप्ताह^{१७} मास वा मण्डलं तथा ।

यथा यार्धित्रियुक्तं^{१८} च तावत्कालं कुमारकम् ॥२१॥

१. रा. मन्त्र तु । २. रा. ० वर्णं । ३. रा. ० द्वयैर्युतम् । ४. रा. वज्र । ५. श्लोकोयं रा पुस्तके तास्ति । ६. रा. कृत्त्रिमः । ७. रा. यच्च बगलायोग-मात्रतः । ८. रा. दारुणानपि । ९. रा. कृत्त्रिमान् । १०. रा. बुधः । ११. रा. रक्तपुष्पेस्तु । १२. रा. निश्चयात् । १३. रा. ० चैव । १४. रा. मासमात्रं । १५. रा. पुस्तकेऽतः परं विशोषोऽयं श्लोको दृश्यते—

स्तम्भनास्त्रोपसहार मन्त्रेण च कुमारकम् ।

मार्जनं बिल्वपत्रेण आरोहादवरोहकम् ॥२०॥

१६. रा. ० लोकयन् । १७. रा. त्रिसप्ताह । १८. रा. व्याधिविमुक्त्वं ।

अनेन(नया) विद्यया पुत्र मार्जनं मुनिसमतम्^१ ।
 अथवा मन्त्रितं तोयं^२ सद्यः कृत्विमनाशनम् ॥२२॥
 भूपुर वृत्तयुग्म च तन्मध्ये च कुमारक ।
 पञ्चकोण लिखेत् सम्यक् तन्मध्ये चन्द्रमण्डलम् ॥२३॥
 इन्द्रमध्ये^३ लिखेद् विद्यां कृत्विमघ्नी^४ च कालिकाम् ।
 मनुरेव लिखेत् सम्यक् स्यष्टवर्णेन^५ सयुतम् ॥२४॥
 पञ्चकोणे^६ लिखेन्मन्त्रं^७ पञ्च ब्रह्माख्यमेव च ।
 आद्यपत्रे लिखेन्मन्त्रं^८ प्राणस्थापनक तथा ॥२५॥
 द्वितीये विलिखेत् सम्यक् पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 पाशाङ्कुशं वि लिखेद् भूपुरेषु चयथाक्रमम् ॥२६॥
 एतद्यन्त्रं लिखेद् भूर्ये कसूर्या(स्तूर्या) क्रीञ्चभेदन ।
 यन्त्रे^९ प्राणान्^{१०} प्रतिष्ठाप्य पञ्च ब्रह्ममनुं जपेत् ॥२७॥
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा त्रिशतं शतमेव च ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् विद्याशाठ्यं न कारयेत् ॥२८॥
 तद्यत्रधारणादेव कृत्विमादिरनेकशः^{११} ।
 तत्क्षणान्नाशमाप्नोति जीवेद्^{१२} वर्षशतं तथा ॥२९॥
 एतद्यन्त्रं^{१३} हृदि ध्यात्वा मानसेनैव पूजयेत् ।
 त्रिसप्तदिनमात्रेण नानाकृत्विमनाशनम् ॥३०॥
 ताम्रपात्रे जलं ग्राह्यं श्रीसूक्तेनैव मन्त्रयेत् ।
 शतं वाद्विंशतं वाथ त्रिसप्तमथ पुत्रक ॥३१॥
 तुलसीमञ्जरीभिश्च नार्जयेद् रोगपीडितः^{१४} ।
 आरोहादवरोहेण ऋचान्ते मार्जनं तथा ॥३२॥
 त्रिकालमेककालं वा नार्जयेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 त्रिमोथं^{१५} च यद्रोग नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३३॥
 श्रीसूक्तेनैव जिह्वायां नार्जयेत् तुलसीदलैः ।
 त्रिसप्त^{१६} प्रातृरुत्थाय जिह्वास्त[भ]नशान्तिकृत् ॥३४॥

१. रा मुनिसमतम् । २. रा तोयः । ३. रा चन्द्रमध्ये । ४. रा. कृत्विमघ्ने ।
 ५. रा. स्यष्टवर्णेण । ६. रा. पञ्चवर्णेण । ७. रा. मन्त्रः । ८. रा. यन्त्रेण ।
 ९. रा. प्राण । १०. रा. रनेकशः । ११. रा. जपेद् । १२. रा. एवं यत्र । १३. रा. रोग-
 पीडिते । १४. कृत्विमोथ (य) । १५. रा. त्रिसहस्रं ।

गोक्षीर प्रातरुत्थाय श्रीसूक्तेनैव मंत्रयेत् ।
 दशवारं^१ ध्यानपूर्वं तत्क्षीरं प्राशयेन्नरः^२ ॥३५॥
 कीटिल्यस्थापनं चैव मार्जयेन्मूलविद्यया ।
 पुत्तल्यादिप्रयोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३६॥
 ताम्रपात्रे जलं शुद्धं मंत्रयेदर्कसख्यया ।
 तज्जलप्राशनादेव बुद्धिभ्रंशो^३ विनश्यति ॥३७॥
 उष्णोदकं ताम्रपात्रे त्रिसप्तमभिमंत्रयेत् ।
 नानाशूलं च हृद्रोगं नाशमाप्नोति पुत्रक ॥३८॥
 इति श्रीषड्विद्यागमे^३ स्तम्भनास्त्रोपसंहार^४ नाम त्रयस्त्रिंशत्पटलः ।

॥ अथ चतुस्त्रिंशः पटलः ॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वानन्दस्वरूपिणी ।
 पीतवस्त्रादिसन्तुष्टा^५ पीतद्रुमनिवासिनी ॥१॥^१

क्रौञ्चभेदन उवाच

विश्वाराध्य भवानीश विश्वोत्पत्तिविधायक^६ ।
 'भ्रूहि मे कृपया तात सकलागमकोविद'^७ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

समस्तकर्मणां^८ ध्वंसे सर्वोपद्रवनाशने ।
 जातिस्तम्भे मनःस्तम्भे क्रूरकर्मनिवारणे^९ ॥३॥
 श्रष्टवेतालशमने सर्वभेदवनाशने^{१०} ।
 मातृणां शान्तिजनकं स्तम्भनं जलरक्षसाम् ॥४॥
 'देवदानवदैत्यारीन्(रि)शमने भ्रमनाशने'^{११} ।
 समस्तोपद्रवध्वंसे पूतनादिविनाशने^{१२} ॥५॥

१. रा. पूर्ववत्क्षीरं प्राशयेन्नरं तत्परः । २. रा. बुद्धिभ्रान्तो । ३. रा. पुस्तके
 'सांख्यायनतन्त्रे' इत्यधिकः पाठः । ४. रा. उपसंहारप्रयोग । ५. रा. पीतवस्त्राय० ।
 ६. ख. पुस्तके—

ईश्वरी विश्ववन्द्या च विश्वानन्तरूपिणी ।

पीतवस्तुदयं तुष्टा पीत हृदयनिवासिनीम् ॥

७. ख. ०गुणाकर । रा. ०कुमारक । ८. ख. रा. पद्याद्धंमिदं नास्ति । ९. ख. समस्ते० ।
 १०. ख. परकृत्यानिवारणे । ११. रा. सर्वभयविनाशिनी । १२. ख. देवदानवदैत्या-
 दिशमनोऽत्र विनाशने । १३. ख. पूजनादिविचारणे ।

कपटादिविनाशार्थे^१ प्राप्ते प्राणस्य सङ्कटे ।
 विशन्मनुविनाशार्थे^२ षट्त्रिंशद्भोगनाशने^३ ॥६॥
 सूचिप्रयोगविध्वसे महाशस्त्रास्त्रपातने ।
 गतिस्तम्भे^४ मतिस्तम्भे^५ सूर्याग्निस्तम्भनेषु^६ च ॥७॥
 नानारोगविनाशार्थं नानाक्लेशनिवारणे ।
 रणे राजकुले शान्तौ^७ प्रयोगनाशनेऽपि च ॥८॥
 परप्रयोगविध्वसे परकृत्यानिवारणे ।
 कृत्यावेशस्तम्भनेऽप्य^८ प्रयोग षण्मुखाचर^९ ॥९॥
 अनेन योगवर्येण सर्वदोषनिवारणम् ।
 शृणु षण्मुख तद्योग सर्वयोगोत्तमोत्तमम् ॥१०॥
 'पीतावरणभूषी च पीतवस्त्रद्वयान्वितः'^{१०} ।
 पीतयज्ञोपवीतस्तु महापीताश (स)ने^{११} स्थितः^{१२} ॥११॥
 'ज्वालामुख्यभिघ बाण त्रिशतं प्रजपेत् सुत'^{१३} ।
 'हरिद्राक्षमणि पीत'^{१४} सर्वकार्यं जपादिकम् ॥१२॥
 बडवानलनामानं बाणमादौ जपेच्छतम् ।
 उत्कामुख्यभिघ^{१५} बाणं द्विशतं प्रजपेत् सुत ॥१३॥
 ज्वालामुख्यभिघ बाणं त्रिशतं प्रजपेत् नरः^{१६} ।
 जातवेदमुखीबाण 'वेदसख्याशत'^{१७} सुत ॥१४॥
 बृहद्भानुमुखीबाण जपेत् पञ्चशतं सुत ।
 'य एकादि'^{१८} महाविद्या कुल्लुकादिसमन्विताम्^{१९} ॥१५॥
 नेत्रलक्ष जपेन्मन्त्रं क्रूरकर्मादिनाशने^{२०} ।
 हरिद्रायां^{२१} चरेद्भौ (द्धो)मं काम्य गौरवमिच्छति ॥१६॥

१. ख. क्रूरग्रहविनाशाये । २. ख. विशनष्टि विनाशार्थे । ३. ख. षट्त्रिंशद्वाणं ।
 ४. ख. मणिस्तम्भे । ५. ख. रतिस्तम्भे । ६. ख. ०स्तम्भनेऽपि । ७. ख. शान्ती ।
 ८. ख. कृत्याविप० । ९. ख. षण्मुखाचरः । १०. ख. पीताभरणभूषणया पीतवस्त्रहयान्वितः ।
 ११. ख. महापीतासुनि । १२. ख. सुत । १३. '—' अयमशो घ. रा पुस्तकयो नस्ति ।
 १४. ख. हरिद्राक्षेण मणित्ता । १५. घ. उत्कामुखाभिघ । १६. ख. सुत । रा. ततः ।
 १७. ख. तदन्ते सस्मरेत् । १८. ख. एकाक्षरी । १९. घ. कुमार्कोदि० । २०. ख. क्रूरकर्माणं । रा. कुकर्मादि० । २१. ख. हरिद्रया ।

शतं त्रिशतकं पुत्र हुनेद्दशसहस्रकम्^१ ।
 'हरिद्राघृतसमिश्रैः क्रूरकर्मविनाशनम्'^२ ॥१७॥
 'हरिद्राहोममात्रेण क्रूरकर्मण(वि)नाशनम्'^३ ।
 'तर्पणात्तालनीरेण हेतुना'^४ मार्जयेत् सुत ॥१८॥
 'सुवासिनी ब्राह्मणाश्च'^५ 'वगलार्चा कुमारक'^६ ।
 सौभाग्यार्चाक्रमेणैव^७ 'ब्राह्मीमुद्रां च'^८ धारणात् ॥१९॥
 'बन्धन त्रिपुरश्चैव दीपिका तस्मिन्^९ योजनात् ।
 'कृत्यावश्यस्तम्भनाख्यो(ख्य) 'योग सर्वं भयापहम्'^{१०} ॥२०॥
 त्रैलोक्यविजयं नाम विजयं^{११} मण्डलं तथा ।
 पञ्चास्त्रमूलपठनाद् भारुडो जायते सुत ॥२१॥
 पीताशी पीतत्राणी च पीतशय्यासमन्वितः ।
 पीताम्बरादिसयुक्तः पीतपूजापरायणः ॥२२॥^{१२}
 पञ्चक्रमसमायुक्तां^{१३} (क्तः) सिद्धयोगी^{१४} नरः सुत ॥
 ग्रसिनी सर्वविद्यानां रक्षणी सकलापदाम् ॥२३॥
 मदिनी^{१५} सर्वशत्रूणा नाशिनी सर्वरक्षसाम् ।
 उपसहारयोगेषु योगो यं भवति^{१६} ध्रुवम् ॥२४॥
 'अन्ययोगसमारम्भ कृत सिद्धयति वा न वा'^{१७} ।
 'योगमेव समासाध्य सिद्धभोगी'^{१८} नरः कलौ ॥२५॥
 'अघोराश्च पाशुपती सहारो मोहिनोपि(ति) च'^{१९} ।
 षट्त्रिंशदस्त्रसस्तम्भः पञ्चास्त्रेण प्रजायते ॥२६॥
 पञ्चास्त्रशस्त्रविज्ञानी पाञ्चभौतिकसिद्धियुक् ।
 आद्यस्तु रणबाणास्त्र^{२०} रणादिस्तम्भने जपेत् ॥२७॥

१. रा. ०सहस्रवान् । ख सहस्रं त्रिसहस्रकम् । २. ख. हुनेद्दशसहस्र वा हरिद्रा-
 घृतमिश्रितैः ॥ ३. '—' अयमशो नास्ति घ. रा. पुस्तकयो । ४. '—' ख. तर्पणात्तालनिरर्णय-
 चणहेतु । ५. ख. ब्राह्मणान् सुवासिनीं । ६. '—' ख. भक्ता बाला वा च कुमारिकाम् ।
 ७. ख. ब्राह्मीमुद्राभि । रा. ब्राह्मीमुद्रादि । ८. '—' ख. बन्धनानिष्ठुरश्चैव दीपिकास्त्रस्य ।
 ९. '—' ख. रा कृत्याविपस्तम्भनाख्यो योगः सर्वविषापहः ॥
 १०. ख. कवच । ११. इलोकोऽर्थं ख पुस्तके नास्ति । १२. ख. ० समासक्तः । १३.
 ख. सिद्धिभागी । रा ०भोगी । १४. ख मदिनी । १५. ख. रा चलति । १६. '—' ख
 अन्ययोगः शरभवत् कृते सिद्धमानवः ।
 १७. ख रा '—' योगमेतं समासाद्य सिद्धिभागी । १८. ख रा. अघोराश्च पाशुपते-
 सहारे मोहनेऽपि च । १९. ख. वटवाबाणो ।

उल्कामुखीद्वितीयास्त्रं 'स्तम्भन भुवनत्रये' ।
 ज्वालामुखीतृतीयास्त्रं स्तम्भन ऋषिदैवतैः ॥२८॥
 जातवेदमुखीबाणो ब्रह्मविष्णवादिरक्षणे^३ ।
 'सर्वकर्मस्तम्भने च'^३ चतुर्थं प्रजपेत् सुत ॥२९॥
 बृहद्भानुमुखीवाणं^४ पञ्चमं^५ परिकीर्तितम्^६ ।
 षट्पञ्चकोटिचामुण्डा कालीकोटिशतं सुत ॥३०॥
 सपादकोटित्रिपुरा पञ्चाशत्कोटिभैरवाः ।
 नारसिंहा-यातुषानाः पूतनाः कोटिचेटकाः^७ ॥३१॥
 समस्तस्तम्भन पुत्र पञ्चमेन प्रजायते ।
 हस्ते सम्पाद्य^८ 'पञ्चास्त्रं शासनास्त्र'^९ स्मरेन्मुखे ॥३२॥
 स कल्पमुखभागी^{१०} स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
 त्रैलोक्यविजयाख्य च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ॥३३॥
 यथोक्तकुण्डेषु हुनेद् वेदिकायां विशेषतः ।
 चुल्ल्या शकट्यां प्रेताग्नी पञ्चस्थाने हुनेदपि ॥३४॥
 चत्वरे सर्वकार्यार्थं होमयेदुक्तमार्गतः ।
 'सकूर्चं स्रुकस्रुवौ चैव तद्ध्रिष्व (वि)श्च इति क्रमात्'^{११} ॥३५॥
 प्रणि (णी)ता प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली च षण्मुख^{१२} ।
 सकलं^{१३} पूर्णपात्र च 'ब्रह्मचर्येण योगतः'^{१४} ॥३६॥
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद्य होमं कुर्यात् प्रयत्नतः^{१५} ।
 'क्रूरकर्माणि नश्यन्ति'^{१६} तालकेन हुनेत् सुत ॥३७॥
 पीतपुष्पंश्च जुहुयात् क्रूरकर्मविनाशने^{१७} ।
 'क्रूरतर्पणयोगेन क्रूरविघ्ननिवारणम्'^{१८} ॥३८॥

१. '-' ख. त्रिलोकीस्तम्भने जपेत् । २. ब्रह्मविद्या० । ३. ख. सर्वकर्मणसंस्तम्भे ।
 रा सर्वकर्माणि स्तम्भे च । ४. ख. ०बाणः । ५. ख. पञ्चमः । ६. ख. परि-
 कीर्तितः । ७. ख. कटपूतनाः । रा. ०पूतनाः । ८. ख. सघायं । ९. '-' ख. चापास्त्रं
 प्रसिंतास्त्रं । १०. ख. कल्पसुखभागी । रा. संकल्पमुखिभोग । ११. '-' ख. -
 समित्कुशा स्रुकस्रुवौ च त्विहमावर्हीति च क्रमात् । १२. ख. सन्मुखाः । १३. ख. कलशं ।
 १४. ख. ब्रह्मचर्यो तु जापकः । रा. ब्रह्माचार्येण योगकः । १५. ख. प्रयोगवित् । १६. ख. रा.
 क्रूरकर्माणिननिशे । १७. ख. कूटकृत्त्रिमनाशने । १८. '-' ख. -पीतेन तर्पयेदेव क्रूर-
 ग्रहनिवारणम् । रा. क्रूरे तर्पण्या देवी० ।

इति संक्षेपतः पूर्वं^१ किमन्यं^२ श्रोतुमिच्छसि ।

इति श्रीपञ्चविद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे चतुस्त्रिंशत्पटलः^३ ॥३४॥

॥ अथ पञ्चत्रिंशः पटलः ॥

योषिदाकर्षणासक्तां^४ फुल्लचम्पकसन्निभाम्^५ ।

दुष्टस्तम्भनमासक्तां^६ वगला स्तम्भिनी भजे ॥१॥

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश कपूरद्युतिसन्निभं^७ ।

योगिन्^८ सर्वादिसर्वज्ञ बीजभेद वद प्रभो ॥२॥

ईश्वर उवाच—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वगलामन्त्रनिर्णयम् ।

षट्त्रिंशदक्षरी विद्या 'त्रिपुरे चैव तिष्ठति'^९ ॥३॥

सांख्यायनमते देव्या^{१०} नारायण^{११} ऋषिः स्मृतः^{१२} ।

'गायत्रीछन्द उद्दिष्ट देवता वगलाह्वया'^{१३} ॥४॥

सांख्यायनमते देवि वामाचारविधिर्मतः ।

ब्रह्मयामलसम्मत्या ब्रह्मा चास्य ऋषिः स्मृतः ॥५॥^{१४}

'गायत्री छन्दे आदिष्ट देवता सैव कीर्तिता'^{१५} ।

'जयद्रथाख्ययामले तु'^{१६} ऋषिर्नारद एव हि ॥६॥

छन्दादिक पूर्ववत् स्यादिति संक्षेपतो मतम् ।

हारिद्रसहितायां तु ऋषिर्नारायणो मतः ॥७॥

अनुष्टुप्छन्द आख्यात^{१७} देवता वगलामुखी ।

सांख्यायनमत देवी(वि)कली जागति^{१८} केवलम् ॥८॥

मृत्युञ्जयजप कृत्वा ततो विद्यां जपेत् सुत^{१९} ।

मृत्युञ्जय विना देवी 'वगला नहि सिद्ध्यति'^{२०} ॥९॥

१. ख. प्रोक्त । २. ख. किमन्यच् । ३. ख. द्वात्रिंशति(एकत्रिंशत्)पटलः ॥३२॥
 ४. घ. ०सक्तां । ५. ख. लसच्चम्पकं । ६. ख. ०स्तम्भनासक्ता । ७. रा. कपूर-
 षवल ० । ८. ख. योगी । ९. '—' ख. त्रिंश च परितिष्ठिता । रा. ०चैव तिष्ठि ।
 १०. ख. देवी । ११. ख. नारदोऽस्य । १२. ख. मतः । १३. '—' ख. —अनुष्टुप्छन्द-
 आख्यातं देवता वगलाह्वया । रा. ०देवता सैव कीर्तिता । १४. पद्यमिदं घ. पुस्तके नास्ति ।
 १५. घ. पुस्तके नास्ति पद्याद्धमिदम् । १६. ख. जयद्रथाख्ययामले । रा. जयद्रथाख्ययामले
 तु । १७. ख. त्रिंशुप् छन्द. समाख्यात । १८. ख. जागति । १९. ख. सुखी । २०.
 '—' घ. पुस्तके नास्ति ।

‘ऋषिच्छन्दत्रितयक मतभेदात् प्रदर्शितम् ।

बीजसंज्ञां प्रवक्ष्यामि’^१ सांख्याग्रनमुखोद्भवाम्^२ ॥१०॥

शिवबीजं^३ वह्नियुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम् ।

‘वह्निशिवान्तराले तु’^४ भूबीजं योजयेत्(पेत्) सुतं^५ ॥११॥

स्थिरमाया इति^६ प्रोक्ता विद्या त्वेकाक्षरी शुभा ।

अनया विद्यया देवि किञ्च सिद्धयति भूतले ॥१२॥

पीतवासामते पुत्रं^७ स्थिरमायां ऋणु प्रिये ।

‘स्थिरमायासमायुक्तं स्थिरं बीजमितीरितम्’^८ ॥१३॥

तदुद्धारं ऋणु प्राज्ञं^९ गगनाद्धं^{१०} समुद्धरेत् ।

स्थिरबीजं समुद्धृत्य रतिबिन्दुसमन्वितम्’^{११} ॥१४॥

स्थिरमाया ‘द्वितीयां तु इन्द्रस्तं चन्द्रभूषितम्’^{१२} ।

‘इयं शप्ता’^{१३} महाविद्या कीलिता^{१४} स्तम्भिता शिवे^{१५} ॥१५॥

रेफयोगान्महेशानि^{१६} निश्शप्ता^{१७} फलदायिनी ।

रेफयुक्तां जपेद्विद्या ‘फलसिद्धिर्न सशयः’^{१८} ॥१६॥

रेफहीना जपेद्विद्यां कोटिजाप्यं^{१९} न सिद्धयति ।

‘तस्माद्भ्रूफेण सयुक्तं’^{२०} स्थिरदा^{२०} परमेश्वरि ॥१७॥

सजपेच्च ‘च ततः पुत्रं’^{२२} तस्य सिद्धिर्भविष्यति ।

लघुषोढां महाषोढा पञ्जर न्यासमेव हि ॥१८॥

वगलामातृकान्यासं^{२३} ‘कुल्लुका च विचिन्त्य वै’^{२४} ।

सेत्वादिकामराजान्तं^{२५} न्यासमृत्युञ्जयं^{२६} जपेत् ॥१९॥

१. ‘-’ चिन्हस्थोऽशो घ. पुस्तके नास्ति । २. घ. रा. समुद्भवात् । ३. ख. जीव-
बीजं । ४. ख. वह्निर्शैवा० । रा. वह्नितः शि० । ५. ख. शिवे । ६. ख. त्विय । ७.
ख. देवि । ८. ख.—स्थिररूपा तु या माया स्थिरमाया तु सा मता ।

रा. स्थिररूपा तु मामाया स्थिरमाया समायतु ।

९. ख. प्राज्ञे । १०. ख. रा गगनार्णं । ११. ख. ०विभूषितम् । १२. ख. त्वियं
देवि बिन्दुद्धं चन्द्रभूषिता । १३. घ. रा. इम समा । १४. घ. रा. कलिता । १५. घ.
रा. सुत । १६. घ. रा महा सैव । १७. घ. रा. नित्यभाक् । १८. ख. रेफहीनां
न सजपेत् । १९. ख. ०जाप्ये । २०. ख. तस्माद्भ्रूफे तु सयोज्य । रा तस्माद्भ्रूफेस्तु
संयुक्त । २१. ख. स्थिराशः । २२. ख. प्रयतो देवि । रा स जपे शतद. पुत्र । २३.
ख. ०मातृकां न्यस्य । २४. घ. रा. सकृदाचरित तदा । २५. घ. सत्वादि० । २६.
घ. रा न्यस्य ।

ततो वै प्रजपेद्विद्यां सदा जाग्रत्स्वरूपिणीम् ।
 पीतवासामते देवि^२ पञ्चप्रैतगता^१ स्मरेत् ॥२०॥
 चतुर्भुजां वा द्विभुजा पीतार्णवनिवासिनीम् ।
 सुघार्णवसमासीतां मणिमण्डपमध्यगाम् ॥२१॥
 सांख्यायनमते देवि^४ संस्मरेद् यत्नतः शिवे^५ ।
 सुन्दर्याः पश्चिमाग्नाये वगला परितिष्ठति^६ ॥२२॥
 श्रीकाल्यामु(उ)त्तराग्नाये वगला पूज्यतां सुत ।

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चत्रिंशत्पटलः^७ ॥३५॥

॥ अथ षट् त्रशः पटलः ॥

योगिनोकोटिसहितां पीताहारोपचञ्चलाम्^८ ।
 वगला परमां वन्दे^९ परब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥१॥

ऋचिभेदन उवाच-

चिदानन्दघनावास^{१०} 'वरमन्यं च मां वद'^{११} ।
 सर्व्वीतीत परेशान 'सर्व्वभूतहिते रत'^{१२} ॥२॥

ईश्वर उवाच-

अथ 'स्कन्द प्रवक्ष्यामि'^{१३} 'सर्व्वकर्माणि नाशनम्'^{१४} ।
 किं केन 'तामसं प्राप्त'^{१५} किं केन शान्तिकारणम्^{१६} ॥३॥

कारणं तत्र केन स्यात् तत्सर्व्वं कथ्यते श्रुणु ।

आदौ मन्त्र जपेत् पुत्र त्रिसहस्रमतन्द्रितः ॥४॥

ततः कवचमालम्ब्य^{१७} पुनर्मन्त्रं जपेत् तथा^{१८} ।

षट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्य^{१९} पुरश्चरणमुच्यते ॥५॥

सर्व्वकर्माणि निनशि^{२०} योगोऽयं परिकीर्तितः ।

अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥६॥

१. घ. रा. पुत्र । २. घ. मतां । ३. घ. रा. इचरेत् । ४. घ. रा. पुत्र । ५. घ. रा. सुत । ६. ख. परिनिष्ठिता । रा. परितिष्ठिताम् । ७. ख. त्रिंश (द्वात्रिंश) पटलः । ८. घ. पीताहारोपि० । रा. पीतहारो० । ९. घ. रा. देवी । १०. ख. षनस्वामिन् । ११. ख. सारमन्यन्महेश्वर । रा. सारमन्यं च मां वद । १२. ख. सर्व्वभूतहिताश्वर । १३. ख. पण्मुख-मध्यामि । १४. ख. सर्व्वकर्माणुनाशनम् । १५. ख. रा. नाम सम्प्राप्तं । १६. ख. ङकारकम् । १७. घ. रा. ङमारम्य । १८. घ. रा. तत । १९. घ. रा. षट्त्रिंशद्द्वारमावृत्या । २०. ख. सर्व्वकर्माणुनिनशि ।

त्रिंशत् च शतं चापि अष्टोत्तरसहस्रकम् ।
 अष्टोत्तरशतं चापि कवचं पूर्ववद् भजेत्^१ ॥७॥
 क्षुद्रकर्मणि^२ निर्नाशि योगोऽयं परिकीर्तितः ।
 अनुलोमविलोमेन योगो वसुविधः स्मृतः ॥८॥
 षट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्य 'भवेदेवं' विधिः सुत'^३ ।
 कवचं प्रपठेदादौ मध्ये स्तोत्रं 'तु उच्चरेत्'^४ ॥९॥
 शतावर्त्तनमात्रेण 'क्रूरकर्मणाशनम्'^५ ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१०॥
 गायत्री कवचं पुत्र मन्त्रं स्तोत्रं पुनश्च सा ।
 षड्विंशद्द्वारमावर्त्य षट्त्रिंशावर्त्तनं चरेत् ॥११॥
 अनेन क्रमयोगेन सर्वकर्मविनाशनम्^६ ।
 तारायां कालिकायां च 'छिन्नायामेवमेव तु'^७ ॥१२॥
 अनुक्रमेण^८ सर्वत्र कुर्यादावर्त्तनं बुधः ।
 मन्त्रमात्रकार्यमेतत्^९ सर्वदोषनिवारणम्^{१०} ॥१३॥
 कवचं प्रथम'^{११} बाणः कवचं च द्वितीयकम्^{१२} ।
 कवचं च तृतीय'^{१३} स्यात् कवचं च चतुर्थकम्^{१४} ॥१४॥
 कवचं पञ्चम'^{१५} बाणः कवचं प्रपठेत् कृती'^{१६} ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१५॥
 रणस्तम्भे 'सर्वकर्मान्नाशने मृत्युस्तम्भने'^{१७} ।
 'प्राणरक्षादिव्यरक्षादेव्यो रक्षणकर्मणि'^{१८} ॥१६॥
 योगोऽयं कथितः पुत्र वगलामन्त्र ईरितः^{१९} ।
 शताक्षरी जपेदादौ कवचं हृदयं तथा ॥१७॥

१. घ. रा. भवेत् । २. घ. रा. क्षुद्रकर्मणि । ३. ख. भवेदेकं पुनस्तथा । रा. भवेदेकं
 ४. ख. पुनश्च तत् । ५. घ. रा. क्रूरकर्मणि० । ६. ख. सर्वकर्मणाशनम् । ७.
 घ. रा. चिन्मयामेव एव च । ८. ख. अनुक्रमेण । ९. ख. मन्त्रयाम्ने० । १०. ख.
 ०विनाशनम् । ११. ख. पञ्चमो । १२. ख. द्वितीयकः । १३. ख. तृतीय । १४.
 ख. चतुर्थकः । १५. ख. रा. पञ्चमो । १६. घ. रा. ततः । १७. ख. मनःस्तम्भे
 सर्वकर्मणाशने । १८. '—'ख.—

मृत्युस्तम्भे प्राणरक्षादिव्यरक्षणकर्मणि ।

१९. ख. कात्यादौ मन्त्रयोगतः । रा. कल्पादी० ।

कवचं वेदवर्णं च कवचं चन्द्रवर्णकम्^१ ।
 अनेन क्रमयोगेन 'योगः कर्मणनाशनः'^२ ॥१८॥
 'एकाक्षरी जपेदादी'^३ कवच प्रपठेद् यतः^४ ।
 वेदाक्षरी जपेदादी कवच प्रपठेत्तथा ॥१९॥
 वेदाक्षरी^५ ततो जाप्य कवचं तदनन्तरम् ।
 षट्त्रिंशदक्षरी जाप्यः कवच तदनन्तरम् ॥२०॥
 वेदाक्षरीमनुपुरं^६ कवच प्रथम तथा ।
 'कवचं च द्वितीयः स्यात् कवचं च तृतीयकः'^७ ॥२१॥
 'कवच च चतुर्थः स्यात् कवचं पञ्चमस्तथा'^८ ।
 कवच हृदयं^९ वाच कवच शतवर्णकम् ॥२२॥
 'कवचात् कीलन योगः त्रैलोक्यरक्षणकरः'^{१०} ।
 अनेन क्रमयोगेन त्रैलोक्यस्तम्भनं भवेत्^{११} ॥२३॥
 इन्द्रादिपदसस्तम्भे समुद्रस्तम्भनेऽपि^{१२} च ।
 'महाविद्यास्तम्भनं च सत्य ब्रह्मास्त्रस्तम्भनम्'^{१३} ॥२४॥
 'महापाशुपतादीना स्तम्भने'^{१४} मृत्युपातने ।
 महाब्रह्मास्त्रयोगो हि^{१५} गोपनीय प्रयत्नतः ॥२५॥
 इति षड्विद्यागमे साख्यायनतन्त्रे 'ईश्वरपण्मुखसवादे महादिव्यप्रयोग-
 कथन नाम'^{१६} षट्त्रिंशत्पटलः^{१७} ।

॥ अथ पञ्चत्रिंशः पटलः ॥

पीतवर्णसमासीना पीतगन्धानुलेपनाम् ।
 पीतोपहाररसिका भजे पीताम्बरा पराम् ॥१॥

श्रीञ्चभेदन उवाच-

स्वामिन् सिद्धगु(ग)णाध्यक्ष समस्तगणपारग ।
 रहस्य सूचितं पूर्वं किन्न मह्य प्रदर्शितम् ॥२॥

१. ख. पटवर्णक. । २. घ. रा. योगकर्माण नाशनः । ३ घ. जपेदादी कवच
 ४. ख. तथा । ५ घ. वेदाक्षरी । ६. ख. पञ्चचत्वारिंशन्मनु । रा. चत्वारिंशन्मनुपुर
 ७. न. '—' चिह्नन्त्याषाढयो घ. पुस्तके नास्ति । ८. ख. हृदया । १०. ख.—

कवचात्कीलयन मनु प्राणत्रैलोक्यरक्षणः ।

११. ख. क्षणात् । १२. घ. ०स्तम्भनेति । १३. अयमशो नास्ति ख. पुस्तके । १४.
 ख महापाशुपतास्त्रादिपातने । १५. घ. रा. पि । १६. घ. रा नास्त्ययमशः । १७.
 स. चतुस्त्रिंशत् (त्रिंशत्) पटलः :

ईश्वर उवाच—

तत्त्वं वद महादेव यदि पुत्रोऽस्मि ते वद ।
 रहस्यातिरहस्यं च कथ्यते शृणु पुत्रक ॥३॥
 अमात्यानां च दुष्टानां दूषकानां दुरात्मनाम् ।
 क्षुद्रग्रहादिजातीना संन्यानामपि पुत्रक ॥४॥
 क्रूरग्रहविनाशाय सर्वशान्त्यर्थमेव च ।
 पराभिचारशान्त्यर्थं रक्षार्थं च विशेषतः ॥५॥
 अपमृत्युविनाशार्थं रोगशान्त्यर्थमेव च ।
 परसेनाविनाशाय स्वसेनारक्षणाय च ॥६॥
 आत्मार्यं च परार्थं च विजयार्थं च षण्मुख ।
 वेतालाश्च विनाशार्थं भैरवादिप्रशान्तये ॥७॥
 ससस्तविषनिर्नाशे मुष्टिकृत्स्नविधावपि ।
 शस्त्रास्त्रदाणसघाने संहारास्त्रादिनाशने ॥८॥
 शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र तद्वच्छवि (व) विधावपि ।
 स्तब्धीकरणनिर्नाशे (र्णाशे) मृतकोत्थापनेऽपि च ॥९॥
 देशोपद्रवनाशार्थं राष्ट्रभङ्गे समागते ।
 कोटिकृत्याविनाशार्थं स्वेष्टरक्षणकर्मणि ॥१०॥
 हृतनष्टप्रणष्टादिवारुणाग्नेयजातिषु ।
 पत्रपुष्पफलं शाखाजटात्वक्क्षीरनीरके ॥११॥
 महाविषे तैजसे तु विष्णुत्रविजरकृते ।
 उद्भ्रान्तवृत्तिनाशार्थं घटकृत्याविनाशने ॥१२॥
 जलकृत्याविनाशार्थं स्यलकृत्याविनाशने ।
 वृक्षकृत्यानाशनाशार्थं गन्धकृत्याविधावपी (पि) ॥१३॥
 महेन्द्रपदनिर्नाशे विरुडानाशनेऽपि च
 भेरुडनाशनाशार्थं च रिक्तधावेशभैरवे ॥१४॥
 सस्यस्तभे दाहनाशे मन्त्रमण्डलरोगहृत् ।
 सप्तब्रह्मास्त्रयोगोऽयं सर्वथा चलति ध्रुवम् ॥१५॥
 अमोघमृत्युनाशाय समाश्चर्यकमाय (प) दि ।
 त प्रयोगमहायोग शृणु सावहितो भव ॥१६॥

कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्यां चत्वरि पितृकानने ।
 चुल्यां सकटया(शकट्यां)वा देवि होतव्यं सर्वकर्मणि ॥१७॥
 शुभ्रवृक्षादियोगे तु प्रयोगमादरे(त्)सुत ।
 स्वस्तिवाचनमासाद्य द्विजानां वरणं चरेत् ॥१८॥
 वगलास्त्र मध्यमागे करे निष्ठुरवंघनम् ।
 पञ्चास्त्रं दक्ष(क्षि)णांशे च मूलास्त्रं होमकर्मणि ॥१९॥
 त्रैलोक्यविजयास्त्रं च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ।
 निष्ठुरांश्चालयेदेव दीपकास्त्रं प्रयोजयेत् ॥२०॥
 पूर्वभागे तु पञ्चास्त्रमुत्तरे मुण्डमुत्तमम् ।
 महोग्रविजय दक्षे विजयास्त्रं प्रयोजितम् ॥२१॥
 हेलाकर्का चदला तूर्या तथा पञ्चाङ्गुली प्रिया ।
 पश्चिमे कीर्त्तिता विद्या बंधद्वयपुरस्सरम् ॥२२॥
 आदौ गणपतिं पूज्य द्वारपूजादिसंयुतम् ।
 विप्राणां वरणं कृत्वा वगलादीपमाचरेत् ॥२३॥
 मण्डले वगलादीपो(पः) कवचे मूलदीपकः ।
 पीताशा(शी) पीतवस्त्राढ्या(ढ्यः) पीतयज्ञोपवीतवान् ॥२४॥
 पीताशनी पीतभक्षी पीतशय्यापरायणः ।
 हरिद्राक्षेण मणिना सर्वं कार्यं जपादिकम् ॥२५॥
 हरिद्राभिः सुरक्ताभिः रोचनाघृतमिश्रितैः ।
 बिल्वप्रसूनैर्जुहुयात् सर्वोत्पातनिवारणम् ॥२६॥
 अथवा पीतपुष्पैस्तु हरिद्रामधुयोजनम् ।
 हरिद्रया दरिद्राणि नश्यन्त्येव न सशयः ॥२७॥
 अनेन योगच(व)र्षेण सर्वोत्पातनिवारणम् ।
 पीताभरणभूषाढ्ये (ढ्यः) पीतशालानिवासकृत् ॥२८॥
 शतमष्टोत्तरशतं त्रिशतं च सहस्रकम् ।
 त्रिसहस्रं पञ्च तथा दिग्विशत्यादिरेव च ॥२९॥
 पञ्चविंशच्च पञ्चाशत् सहस्रं लक्षमानकम् ।
 लक्षोपरि महेशानि न होमोऽस्ति महीतले ॥३०॥
 सुन्दर्या कालिकाया च वैदिके कोटिमात्रकम् ।
 होमस्य तु दशाशेन तर्पणं माज्जनं तथा ॥३१॥

सुरया तर्पणं पुत्र तेन माज्जर्जनमाचरेत् ।
 अभिषेको विप्रभोज्यं साङ्गयोग प्रसिद्धयति ॥३२॥
 नातः परतरो योगो विद्यते भुवि मण्डले ।
 सर्वकर्मविनाशार्थं विषनाशार्थमद्भुतम् ॥३३॥
 गोपनीय गोपनीय गोपनीय प्रयत्नतः ।
 रहस्यातिरहस्य च रहस्यातिरहस्यकम् ॥३४॥
 इति सक्षेपतः प्रोक्त तोपयेद्वक्षिणादिना ।
 प्रयोगस्योपसहार (रः) कर्त्तव्य. सिद्धिमिच्छता ॥३५॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे
 पञ्चत्रिंशत् (चतुस्त्रिंशत्) पटल. ॥३५॥



परिशिष्टम्—(क)

ऋष्यादिन्यासध्यानादिपुताः

॥ सांख्यायनतन्त्रगता मन्त्राः ॥

१. एकाक्षरीबगलामन्त्रः— ह्रीं ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुख्येकाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः। श्रीबगलामुखी देवता लँ बीज, ह्रीं शक्ति, ईं^१ कीलक श्रीबगलामुखीदेवताम्बा-प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः— ब्रह्मर्षये नम गिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, लँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नम पादयोः, रँ कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यासः— ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नम, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्र्ले अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः— ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं गिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्र्ले कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— वादी मूकति रङ्गति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जन सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिन कल्याणि तुभ्य नमः ॥

[पञ्चम. पटल — पृष्ठ—१२, १३]

२. श्रीबगलाषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रः— ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाच मुख पद स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामहामन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः, बृहतीछन्दः,^२ श्रीबगलामुखीदेवता, लँ बीज, ह्रूं शक्ति, ईं^३ कीलक, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

१ 'र' इत्यन्यत्र । २. 'अनुदुप्लन्द.' इत्यन्यत्र दृश्यते । ३. 'रं' इत्यन्यत्र ।

ऋष्यादिन्यास—श्रीनारदर्षये नमः शिरसि, पृहतोच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लं बीजाय नमो गुह्ये, हं शक्तये नमः पादयोः, ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टाना मध्यमाभ्या वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्या वौषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्या फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टाना शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ।

त्रिगूल पानपात्र च गदा जिह्वां च विभ्रतीम् ॥

विम्बोष्ठी कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।

पीताम्बरा भदाधूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥

[सप्तमः पटलः—पृष्ठ-१६-१७]

३. श्रीवगलामुखीगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-
चाणाय धीमहि तन्नो वगला प्रचोदयात् ।

ॐ अस्य श्रीवगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, ब्रह्मास्त्र-
वगलादेवता, ॐ बीजं, ह्रीं^१ शक्तिः, विद्महे कीलक, श्रीवगलामुखीदेवताप्रसाद-
सिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीब्रह्मास्त्रवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, विद्महे कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, स्तम्भनवाणाय धीमहि तर्जनीभ्या स्वाहा, तन्नो वगला प्रचोदयात् मध्यमाभ्या वषट्, ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अनामिकाभ्या हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, तन्नो वगला प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्या फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे हृदयाय नमः, स्तम्भनवाणाय धीमहि शिरसे स्वाहा, तन्नो बगला प्रचोदयात् शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे कवचाय हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि नेत्रत्रयाय वीषट्, तन्नो बगला प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

ध्यान पूर्ववत् ।

[द्वादशः पटल.—पृष्ठ-२६]

४ पञ्चपञ्चाशदक्षरो बगलामुखीपञ्चास्त्रमन्त्र —ॐ ह्रीं हू ग्लौ बगला-
मुखि ह्रीं ह्रीं ह्लूं सर्वदुष्टानां हलं ह्रीं ह्ल वाचं मुख पदं स्तम्भय स्तम्भय
ह्लः ह्रीं हलं जिह्वा कीलय ह्लूं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशय ग्लौं ह्रीं ॐ
स्वाहा ।^१

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीपञ्चास्त्रमहामन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः,
रणस्तम्भनकारिणी बगलामुखी देवता, लं बीज, ह्रीं शक्तिः, र कीलक श्रीबगला-
मुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदऋषये नमः शिरसि, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो
हृदये, लं बीजाय नमो गुह्ये, हूं शक्तये नमः पादयो ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाम्यां नमः, ॐ ह्रीं बगलामुखि तर्जनीम्या
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टानां मध्यमाम्यां वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पद स्तम्भय
अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि
विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एव हृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा देवी द्विसहस्रभुजान्विताम् ।

सान्द्रजिह्वा गदा चास्त्र धारयन्ती शिवा भजेत् ॥

[पञ्चदश पटल —पृष्ठ ३५-३६]

५. अष्टपञ्चाशदक्षर उल्कामुख्यस्त्रमन्त्र —ॐ ह्रीं ग्लौ बगलामुखि ॐ ह्रीं
ग्लौ सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुख पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं
ग्लौ जिह्वा कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि विनाशय ॐ ह्रीं ग्लौ ह्रीं ॐ स्वाहा ।^२

१. "ॐ ह्रीं ह्रीं ग्लौ बगलामुखि ह्रीं ह्रीं ह्लूं सर्वदुष्टानां हलं ह्रीं ह्लः वाच मुखं पदं
स्तम्भय ह्ल ह्ल ह्लं जिह्वां कीलय ह्रीं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशय ह्रीं ह्रीं ह्लूं ग्लौं ह्रीं
ह्रीं ॐ स्वाहा" इत्येवंविधो मन्त्रोऽप्यन्यत्र दृश्यते ।

२ "ॐ ह्रीं ग्लौ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुखं पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय
स्तम्भय ॐ ह्रीं ग्लौ जिह्वा कीलय कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्रीं ग्लौ
स्वाहा" इत्यपि मन्त्रभेदो दृश्यतेऽन्यत्र ।

ॐ अस्य श्रीउल्कामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअग्निवराह^१ ऋषि, ककुप्^२ छन्दः,
श्रीउल्कामुखी देवता, ह्री वीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी
श्रीउल्कामुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीवराहर्षये नम शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे,
श्रीउल्कामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्री वीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः
पादयोः, ग्लौं कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—विलयानलसकागा वीरा वेदसमन्विताम् ।

विराण्मयी महादेवी स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ॥

[पञ्चदश. पटलः—पृष्ठ-३६]

६. षष्टिवर्णात्मिक श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्र.—ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ वगला-
मुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं
ह्रौं ह्रीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रौं
ॐ स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीकालाग्निरुद्र ऋषिः, पक्तिश्छन्दः,
श्रीजातवेदमुखी देवता, ॐ वीज, ह्रीं शक्तिः, ह्रौं कीलकम्, मम श्रीजातवेद-
मुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास.—श्रीकालाग्निरुद्रर्षये नमः शिरसि, पक्तिच्छन्दसे नमो
मुखे, श्रीजातवेदमुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ वीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये
नमः पादयोः, ह्रौं कीलकाय नम. सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः—

ध्यानम्—जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणीम् ।

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भिनीं^४ विश्वरूपिणीम् ॥

[षोडश. पटलः—पृष्ठ-४०-४१]

१. 'यज्ञवाराह' इत्यपि पाठ । २. 'अनुष्टुप्' इत्यन्यत्र ।

३. मन्त्रोऽयं सूत्रानुसारेण तु द्वाषष्टिवर्णात्मिको जायते किन्त्वन्यत्र निम्नोद्धतरीत्या दृश्यते
षष्टिवर्णा—

“ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय
स्तम्भय ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ जिह्वा कीलय ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ॐ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रौं
ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

४. 'ह्रौं' इत्यपि पाठः । ५. चिन्मयीमिति पाठः ष्वचित् ।

ॐ अस्य श्रीवृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवृहद्भानुमुखी देवता, ह्रीं वीज, ह्रीं शक्ति, ॐ कीलक, श्रीवृहद्भानुमुखी-देवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास.—श्री सवित्यृपये नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवृहद्भानुमुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्रीं वीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नम पादयो, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—कालानलनिभा देवी ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।

कोटिबाहुसमायुक्ता वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥१॥

स्तम्भनास्त्रमयी देवी दृढपीनपयोवराम् ।

मदिरामदसयुक्तां बृहद्भानुमुखी भजे ॥२॥

[सप्तदशः पटलः- पृष्ठ-४२-४३]

६ श्रीवगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रः—ह्रीं ऐं ह्रीं वली श्री ग्लौं ह्रीं वगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वद्रुष्टाना वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वा कीलय महाभ्रमकरि बुद्धि नाशय विराण्मयि^१ सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नागय उन्मादीकुरु^२ कुरु मनोपहारिणि ह्रीं ग्लौं श्री वली ह्रीं ऐं ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ अस्य श्रीवगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखी देवता, ह्रीं वीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलक, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा सौम्यां पीतभूषणभूषिताम् ।

स्वर्णसिंहासनस्था च मूले कल्पतरोरघः ॥१॥

वैरिजिह्वाभेदनार्थं छुरिकां^३ विभ्रती शिवाम् ।

पानपात्र गदां पाश धारयन्ती भजाम्यहम् ॥२॥

(सप्तदशः पटलः-- पृष्ठ-४४--४५)

१. 'विरामय' इत्यपि पाठः
इति पाठोऽन्यत्र ।

. 'उन्मादं कुरु' इति पाठोऽपि दृश्यते ।

३. 'छुरिकां'

१०. अष्टाविंशत्युत्तरैकशताक्षर श्रीवगलामुखीपरविद्याभेदनमन्त्रः^१—ॐ
 ह्री श्री ही 'ग्लौ ऐं क्ली ह्रौ'२ वगलामुखि परप्रयोग ग्रस ग्रस ॐ
 ह्री श्री ही ग्लौ ऐं क्ली ह्रौ क्षी ब्रह्मास्त्ररूपिणि परविद्याग्रसिनि भक्षय
 भक्षय ॐ ह्री श्री ही ग्लौ ऐं क्ली ह्रौ क्षी परप्रज्ञाहारिणि प्रज्ञा भ्रगय
 भ्रगय ॐ ह्री श्री ही ग्लौ ऐं क्ली ह्रौ क्षी स्तम्भनास्त्ररूपिणि वृद्धि
 नाशय नाशय पञ्चेन्द्रियज्ञान भक्ष भक्ष ॐ ह्री श्री ही ग्लौ ऐं क्ली ह्रौ क्षी
 वगलामुखि ह्रौ, फट् स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीपरविद्याभेदिनीवगलामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि, गायत्रीछन्द, परविद्याभक्षिणी श्रीवगलामुखी देवता, आं बीज, ह्री शक्तिः क्रो कीलकं, श्रीवगलादेवीप्रसादसिद्धिद्वारा परविद्याभेदनार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास—श्रीब्रह्मर्षये नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, परविद्याभक्षिणीश्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, आ बीजाय नमो गुह्ये, ह्री शक्तये नम पादयो, क्रो कीलकाय नम. सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—आं ह्री क्रो अङ्गुष्ठाभ्या नमः, वद वद नर्जनीभ्या स्वाहा, वाग्वादिनि मध्यमाभ्यां वषट्, स्वाहा अनामिकाभ्या-ह्रौ, ऐं क्ली सौ कनिष्ठिकाभ्या वीषट्, ह्री करतलेकरपृष्ठाभ्या फट् ।

हृदयादिन्यास.—आं ह्री क्रो हृदयाय नमः, वद वद शिरसे स्वाहा, वाग्वादिनि गिखायै वषट्, स्वाहा कवचाय ह्रौ, ऐं क्ली सौ नेत्रत्रयाय वीषट्, ह्री अस्त्राय फट् ।

० ध्यानम्—सर्वमन्त्रमयीं देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम् ।

सर्वविद्याभक्षिणी च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥

[विश्वः पटलः—पृष्ठ-५४-५५]

११. त्रिचत्वारिंशदक्षरो वगलास्त्रमन्त्रः—ॐ^३ ह्री हु ग्लौ ह्रीं
 वगलामुखि मम शत्रून् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणित पिब पिब
 वगलामुखि ह्री ग्लौ हुं 'फट् स्वाहा'^४ ।

१. सूत्रानुसारेण वर्णोद्धारादयं मन्त्रः सप्तविंशोत्तरशताक्षर एव भवति । २. 'ग्लौ ह्रौ ऐं क्ली ह्रौ' तथा 'घ्रुं ऐं क्ली ह्रौ क्षी' इति पाठभेदा क्वचिद्दृश्येते ।

३. यद्यपि पुस्तके तु 'ॐ' शब्दस्योपयोगो नावलोक्यते, न चैतादृश एव 'स्वाहा' शब्दव्यवहारस्तथापि शब्दद्वयी अत्यावश्यकी सभाष्या वर्णसंख्यानुपूरकत्वात् ४. रा.कृ. पुस्तके 'फट्-स्वाहा' स्थाने 'ह्रीं स्वाहा' इति दृश्यते । अत्र पुस्तकेऽप्ययं मन्त्रो द्विचत्वारिंशदक्षरात्मक एव गृहीतः किन्त्वसौ ऋष्यादिन्यासे 'फट् कीलक' मिति ग्रहणादसाधुरेव प्रतीयते ।

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रमन्त्रस्य श्रीदुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्द, अस्त्र-
रूपिणीश्रीवगलामुखी देवता, ग्लौ वीज, ह्री शक्तिः, फट् कीलक श्रीअस्त्र-
रूपिणीवगलाम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीदुर्वाससे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो
मुखे, अस्त्ररूपिण्यै श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ग्लौ वीजाय नमो गुह्ये, ह्री
शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास.—ॐ ह्री अङ्गुष्ठाम्या नम, वगलामुखि तर्जनीम्यां स्वाहा,
सर्वदुष्टाना मध्यमाम्या वषट्, वाचं मुख पद स्तम्भय अनामिकाम्यां हूं, जिह्वा
कीलय कनिष्ठिकाम्या वीषट्, बुद्धि विनागय ह्री ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाम्यां
फट् ।

हृदयादिन्यास.—ॐ ह्री हृदयाय नम, वगलामुखि शिरसे स्वाहा,
सर्वदुष्टाना शिखायै वषट्, वाच मुखं पद स्तम्भय कवचाय हूं, जिह्वां कीलय
नेत्रत्रयाय वीषट्, बुद्धि विनागय ह्री ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजां त्रिनयना पीनोन्नतपयोधराम् ।

जिह्वा खङ्ग पानपात्र 'गदां धारयन्ती पराम्' ॥१॥

पीताम्बरधरां देवी पीतपुष्परलङ्कृताम् ।

विम्बोष्ठी चारुवदना मदाघृणितलोचनाम् ॥२॥

सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ।

भजेऽहं चास्त्रवगला सर्वाकर्षणकर्मसु ॥३॥

[द्वाविंश. पटल.—पृष्ठ-५६-६०]

१२. श्रीवगलाचतुरक्षरीमन्त्र.—ॐ आं ह्री क्रो । ॐ अस्य श्रीवगला-
चतुरक्षरीमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीवगला देवता, ह्री वीज,
आं शक्तिः, क्रो कीलक श्रीवगलामुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ह्री वीजाय नमो गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयोः,
क्रो कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास —ॐ ह्री अङ्गुष्ठाम्या नमः, ॐ ह्री तर्जनीम्या स्वाहा,
ॐ ह्रौ मध्यमाम्या वषट्, ॐ ह्रौ अनामिकाम्या हूं ॐ ह्रौ कनिष्ठिकाम्या
वीषट्, ॐ ह्रौ अस्त्राय फट् ।

१. '—' 'गदामस्त्र च विभ्रतौ' तथा च 'गदां धारयन्ती शिवान्' इति पाठभेदे क्वचित् ।

ध्यानम्—युवती^१ च मदोद्विक्तां^२ पीताम्बरधरां शिवाम् ।

पीतभूषणभूषाङ्गी समपीनपयोधराम् ॥१॥

मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ।

'पानपात्र च गुद्वि च'^३ विभ्रती वगला स्मरेत् ॥२॥

[त्रिंशः पटल -पृष्ठ-८१]

१५. एकोनषष्टिवर्णात्मकः श्रीवगलोपसहारविद्यामन्त्रः—ग्लौं हूं ऐं

ह्रीं श्री कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तभनास्त्रशमनि हूं फट् स्वाहा ।^४

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रोपसहारविद्यामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, स्तभनास्त्रविभेदिनी श्रीकालिका देवता, क्री वीज, फट् शक्ति, स्वाहा कीलक श्रीवगलाप्रसादमिद्विद्वारा ब्रह्मास्त्रोपसहारार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः गिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, स्तम्भनास्त्रविभेदिनीश्रीकालिकादेवतायै नमो हृदये, क्री वीजाय नमो गुह्ये, फट्शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ क्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्री तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्रीं अनामिकाभ्यां हूं, ॐ क्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ क्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ क्रीं हृदयाय नमः, ॐ क्री शिरसे स्वाहा, ॐ क्री शिखायै वषट्, ॐ क्रीं कवचाय हूं, ॐ क्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रीं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—काली करालवदना कलाधरधरा शिवाम् ।

स्तम्भनास्त्रैकसहारी जानमुद्रासमन्विताम् ॥१॥

वीणापुस्तकसयुक्ता कालरात्रि नमाम्यहम् ।

वगलास्त्रोपसहारीदेवता विभवतोमुखीम् ॥२॥

भजेऽहं कालिका देवी जगद्वशकरा शिवाम् ।

[द्वात्रिंशः पटल.—पृष्ठ—८७-८८]

१. 'श्रीवती' मित्यन्यत्र । २. 'मदोद्विक्ता' मित्यपि पाठः । ३. 'वेरिजिह्वा पानपात्र' इति पाठोऽपि दृश्यते । ४. 'क्रीं' इत्यन्यत्र । ५. एष मन्त्रस्तु रा० पुस्तकधृतसूत्रोद्धार-स्वरूपः । पुस्तकस्थसूत्रात् त्रिपञ्चाशद्वर्णात्मक एष मन्त्रो जायते 'कालरात्रि' पदान्ते 'आवेशय आवेशय' इति पदद्वयविरहात् ।

पीताम्बरा सहस्राक्षी ललाटे कामितार्थदा ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रोः [मे]पातु पीताम्बरसुवारिणी ॥५॥
 कर्णयोश्चैव युगपदतिरत्नप्रपूजिता ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला नासिका मे गुणाकरा ॥६॥
 पीतपुष्पं पीतवस्त्रं पूजिता वेददायिनी ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला ब्रह्मविष्ण्वादिसेविता ॥७॥
 पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद्भ्रुवोः ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला बलदा पीतवस्त्रधृक् ॥८॥
 अघरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वा च मुखगा मम ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला पीताम्बरसुवारिणी ॥९॥
 गले हस्ते तथा दाहौ युगपद्द्विदा सताम् ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला पीतवस्त्रावृता घना ॥१०॥
 जङ्घाया च तथा चोरो गुल्फयोश्चातिवेगिनी ।
 अनुक्तमपि यत्स्थानं त्वक्केशनखलोम मे ॥११॥
 असृग्मास तथास्थीनि सन्धयश्चाति मे परा ।

श्रीशिव उवाच —

इत्येतद्वरद गोप्यं कलावपि विशेषतः ॥१२॥
 पञ्जर वगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यचनाग्नम् ।
 पञ्जर य पठेद्भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते ॥१३॥
 अव्याहतगतिश्चापि ब्रह्मविष्ण्वादिस्तपुरे ।
 स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नारयस्तं कदाचन ॥१४॥
 प्रवाधन्ते नर व्याघ्राः पञ्जरस्थं कदाचन ।
 श्रतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥१५॥
 पठनीयं प्रयत्नेन सर्वनिर्यविनाशनम् ।
 महादारिद्र्यशमन सर्वमाङ्गल्यवर्द्धनम् ॥१६॥
 विद्याविनयसत्सौख्य महासिद्धिकरं परम् ।
 इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जर साधु गोपितम् ॥१७॥
 पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीयान्मरणं नरः ।
 य पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ॥१८॥

कौलिको वा कौणिको वा व्यासवद् विचरेद् भुवि ।
चन्द्रसूर्यप्रभुभूत्वा वसेत् कल्पायुत दिवि ॥१६॥

सूत उवाच—

इति कथितमग्रेषु श्रेयसामादिवीज,
भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्वकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्रातरेवात्र मर्त्यो,
यदि विशति सदा यः पञ्जर पण्डितः स्यात् ॥२०॥
इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये श्रीपीताम्बरायाः

पञ्जरं सम्पूर्णम् ॥

श्रीप्रसन्नास्तु ॥ श्रीवगलामुखी प्रीयता मिति पोष तुदि १३,
सवत् १६२२ लिखित काश्यां दुर्गावाई इदं पुस्तकम् ॥



परिशिष्टम् (ग)

॥ अथ वगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचम् ॥

श्रीभैरव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम् ।
श्रुत्वा गुप्ततम गोप्यं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि ॥१॥
कवचं वगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ ।
यत्सर्वं च परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मनः ॥२॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मनोरमम् ।
मन्त्रगर्भं मन्त्ररूपं सर्वसिद्धिविनायकम् ॥३॥
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपिणम् ।
ब्रह्मविद्यामयं वर्मं दुर्लभं प्राणिना कलौ ॥४॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णमन्त्रमयैर्युतम् ।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेभिः गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५॥

श्रीदेव्युवाच—

भगवन् करुणासागर विश्वनाथ सुरेश्वर ।
कर्मणा मनसा वाच्यं न वच्म्यग्निभुवोऽपि च ॥६॥

भैरव उवाच—

चैलोक्यविजयाख्यस्य कवचस्यास्य पार्वति ।

मन्त्रगर्भस्य मु (सू?) त्तस्य ऋषिदेवस्तु भैरवः ॥७॥

जपिणक् चन्द्रः समाख्यात देवी क्ली (च?) वगलामुखी ।

बीज क्ली ओ च शक्ति. स्यात् स्वहा कीलकमुच्यते ॥८॥

विनियोगः समाख्यातस्त्रिवर्गफलसाधने ।

देवी ध्यात्वा पठेद्वर्म मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥९॥

विना ध्यानेन नरे सिद्धि. सत्य जप्तीहि पार्वति ।

चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजा रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकरां,

चमला पीतस्रगुज्वलां मधुमदारक्तां जटाजूटिनीम् ।

शत्रुस्तम्भनकारिणी शशिमुखी पीताम्बरोद्भासितां,

प्रेतस्था वगलामुखी भगवती कारुण्यरूपां भजे ॥१०॥

ॐ क्लीं मम गिरसि पातु देवी हली वगलामुखी ।

ॐ क्ली पातु मे भाले देवी स्तम्भनकारिणी ॥११॥

ॐ अं इं ह भ्रुवौ पातु वगला क्लेशहारिणी ।

ॐ ह क्ष पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री पातु मे जङ्घे अं अं इं भुवनेश्वरी ।

ॐ क्ली सः मे श्रुती पातु इं उं ऊ ऋं मुखेश्वरी ॥१३॥

ॐ ह्रीं क्ली ह्रीं सदाव्यान्मे नासां ऋं लृ सरस्वती ।

ॐ ह्रीं ह्रीं मे मुख पातु छूं ए ऐं छिन्नमस्तका ॥१४॥

ॐ श्रीं मे अघरी पातु ओं श्रीं दक्षिणाकालिका ।

ॐ ह्रीं ह्रूं मे दन्ताच् पातु अं अ्र मे भद्रकालिका ॥१५॥

ॐ क्लीं श्रीं रसना पातु क खं म घ चरसत्तिका ।

ॐ ऐं सौः मे हनौ पातु इ च छ ज च जानकी ॥१६॥

ॐ श्रीं श्रीं (वली) मे गल पातु भ्रं अ्र ट ठं गणेश्वरी ।

ॐ ह्रीं स्कन्धी सदाव्यान्मे ड ढ ण चैव तोतला ॥१७॥

ॐ ह्रीं मे भुजौ पातु तं थ दं चरवर्णिनी ।

ॐ वलीं सौ. मे स्तनी पातु घ न प परमेश्वरी ॥१८॥

- ॐ जूं क्रो मे रक्ष वक्ष. फ व भ भगवासिनी ।
 ॐ क्राँ ह्राँ पातु मे कुक्षि म य र चन्नि.वृहभा ॥१६॥
 ॐ श्रीं ह्रू पातु मे पार्श्वी ल व लम्बोदरप्रसू ।
 ॐ क्रौ ह्रू पातु मे नाभि श ण षण्मुखपालिनी ॥२०॥
 ॐ ऐं सौ पातु मे पृष्ठ स ह हाटकरूपिणी ।
 ॐ क्ली ऐ पातु मे शिश्न ळ क्ष ह तत्वरूपिणी ॥२१॥
 ॐ वली ह्रू मे कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमातृका ।
 ॐ ऐ वली पातु मे गुह्यं अ आ क गुह्यकेश्वरी ॥२२॥
 ॐ श्रीं ऊरू सदाव्यान्मे इ ई ख रगगामिनी ।
 ॐ जू सः पातु मे जानू उ ऊ ग गणवल्लभा ॥२३॥
 ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे जङ्घे ऋं ऋ घ च महारिणी ।
 ॐ श्री स. पातु मे गुल्फौ लृ लृ ड च च कालिका ॥२४॥
 ॐ ऐं ह्री पातु मे सन्धी ए ऐ छ ज जगत्प्रिया ।
 ॐ श्री क्ली पातु मे पादौ ओ औ ऋ अ भगादरी ॥२५॥
 ॐ ह्री मे सर्ववपु पातु अ अः ह्रीं त्रिपुरेश्वरी ।
 ॐ श्रीं पूर्वे सदाव्यान्मा अ आं ट ठ शिखामुखी ॥२६॥
 ॐ ह्रीं याम्या सदाव्यान्मा इ इ ढ ण च तारिणी ।
 ॐ ह्रीं मा पातु वारुण्या ईं त थ द च खेश्वरी ॥२७॥
 ॐ य मां पातु कौवेर्यां उ ध न प पिलपिला ।
 ॐ श्री पातु चैशान्यां ऊ फ वं वैन्दवेश्वरी ॥२८॥
 ॐ श्री मा पातु चाग्नेय्या ऋ भ म य च योगिनी ।
 ॐ ऐं मा पातु नैर्ऋत्या ऋ र राजेश्वरी सदा ॥२९॥
 ॐ श्री मां पातु वायव्यां लृ ल लम्बितकेशिनी ।
 ॐ प्रभाते च मा पातु लृ व वागीश्वरी सदा ॥३०॥
 ॐ मध्याह्ने च मां पातु ए श शङ्करवल्लभा ।
 ॐ ह्री क्ली श्री पातु मा साय ऐ ष शावरी सदा ॥३१॥
 ॐ ह्री निशादौ च मां पातु औं स सागरशायिनी ।
 ॐ क्ली निशीथे च मा पातु औं ह हरिहरेश्वरी ॥३२॥

वली ब्राह्मे मां मुहूर्त्तोज्ज्यादं च त्रिपुरसुन्दरी ।
विस्मारितं च यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥३३॥

ह्री तन्मे सकल पातु अ. क्ष. क्ली वगलामुखी ।
इतीदं कवचं गुह्यं मन्त्राक्षरमय परम् ॥३४॥

त्रैलोक्यविजय नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम् ।
अप्रकाश्यमदातव्यं न श्रोतव्यमवाचकम् ॥३५॥

दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति ।
न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥३६॥

श्रीदीक्षित उपाध्यायविहीनः शक्तिभक्तिमान् ।
कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत् ॥३७॥

कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम् ।
ब्रह्मविद्यामयमिदं यथाभीष्टफलप्रदम् ॥३८॥

न कस्य कथितं चैतत् त्रैलोक्यविजयेश्वरी ।
यस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशीभवेत् ॥३९॥

पठनाद्वारणाच्चास्य कवचेशस्य साधकः ।

कली विचरते वीरो यथा ह्री वगलामुखी ॥४०॥

इमं मन्त्रं स्मरन्मन्त्री संग्रामं प्रविशद् यथा ।

त्रिः पठेत् कवचेशन्तु युयुत्सु साधकोत्तमः ॥४१॥

शत्रून् कालसमानान् तु जित्वा स्वगृहमेष्यति ।

मूर्ध्नि घृत्वा तु कवचं मन्त्रगर्भं तु साधकः ॥४२॥

ब्रह्माद्यानमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत् ।

घृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि ॥४३॥

वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसा गणाः ।

उत्पातेषु च घोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥४४॥

रोगेषु कवचेशं च मन्त्रगर्भं पठेन्नरः ।

कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शान्तिमेष्यति ॥४५॥

श्रीदेव्या वगलामुख्याः कवचेशं मया स्मृतम् ।

त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्रघनप्रदम् ॥४६॥

ऋणहर्त्तारिमेतत्स्याल्लक्ष्मीभोगविवर्द्धनम् ।

वन्ध्या धारयते कुक्षौ पुत्रं पश्यति नान्यथा ॥४७॥

मृतवत्सा च विभृत्याथ कवच वगले, सदा ।
 दीर्घायुर्व्याधिहीनस्तु तत्पुत्रस्तु भविष्यति ॥४८॥
 इतीदं वगलामुख्या, कवचेश सुदुर्लभम् ।
 त्रैलोक्यविजय नाम न देय, यस्य कस्यचित् ॥४९॥
 अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय देहिने ।
 लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्य कदाचन ॥५०॥
 शिष्याय भक्तियुक्ताय गुरुभक्तिपराय च ।
 लोभदन्तविहीनाय कवचेश प्रदीयताम् ॥५१॥
 अभक्तेभ्यो विपुत्रेभ्यो दत्त्वा कुष्ठी भवेन्नरः ।
 फल गृह न चाप्नोति पर च नरक व्रजेत् ॥५२॥
 दीपमुज्ज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मदमुत्तमम् ।
 प्राप्ते कन्यार्कंवारे च राजा तद्गृहमेष्यति ॥५३॥
 मण्डलेशो महेशानि सत्य सत्यं न संशयः ।
 इदं तु कवचेश तु मया दिव्यं नगात्मने ॥५४॥
 पूजनात् पठनाच्चास्य चतुर्वर्गफलप्रदम् ।
 गोप्यं गुप्ततरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५५॥

इति रुद्रयामले उर्गामहेश्वरसवादे वगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचं सम्पूर्णं
 श्रीजगदम्बार्पणमस्तु । मिति माघकृष्ण ५ सवत् १९२२ ईवं दुर्गाद्याः ।

परिशिष्टम् (घ)

॥ अथ, श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपीताम्बरायै, नमः ॥

श्रीङ्कारद्वयसम्पुटान्तरपुटं मायास्थिराद्वन्दितं,
 तन्मध्ये वगलामुखीतिं विमलं सम्बोधनं सर्वं ध ।
 दुष्टानामथ वाचमाशु च मुख^१ संस्तम्भयेत्यक्षरं,
 जिह्वां कीलय कीलयेति च^२ लिखेद् बुद्धिं तथा नाशय ॥१॥
 अह्मास्त्रं सकलार्थसिद्धिजनकं पट्त्रिंशदंशत्मकं-
 म्प्रोक्तं पद्मभुवा हितायै जगतां यन्नरिदाग्रे पुरां ।

जीवन्मुक्तपदे विभान्ति सुधियो येषा मुखे भांसते,
निर्द्वन्द्वामृतसागरेन्दुकिरणाहाराश्चकोरास्तु ते ॥२॥
ओमित्यादिस्वरूप^१ जपति तव शिखरे शब्दतन्मात्रगर्भा-^२
वाचो यस्मात् परार्थप्रकटितपटवो वर्णरूपा निरीयुः ।
ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्त्वैः परिवृतमनघं चित्रबोधाधिगम्य,
दुर्ज्ञेयं योगयुक्तं कथमपि मनसा^३ योगिभिर्गृह्यमाणम् ॥३॥
ह्ली^४ वीज 'हृदि यस्य'^५ भाति विमल लक्ष्मी स्थिरा तद्गृहे,
धैर्यं तस्य कलेवरेऽपि विगते^६ दीर्घायुषो भूतले ।
कल्पान्तेष्वपि वृद्धिमेति विमला तद्वशवल्ली परा,^७
शौर्यं स्वैर्यमुपैति तस्य पुरतस्त्रस्यन्ति वादीश्वराः ॥४॥
ब्रह्म वारिधिमुद्यतो जनकजानाथोऽपि पीताम्बरे !
त्वा ध्यात्वाऽर्णवशोषणे कृतमतिः सेतुं प्रचक्रं द्रुतम् ।
जित्वा रावणमुग्रगत्रुमवलान् वन्दीन् विमुच्याऽमरान्,
कीर्त्तिं लोकसुखोदया व्यरचयत् कल्पस्थिरामम्बिके ॥५॥
गर्वो रूर्वति रङ्कति क्षितिपतिमूर्कायते वाक्पति-
र्वह्निः शीतति दुर्जनः सुजनते पुष्पायते वासुकि ।
श्रीनित्ये वगले तवाक्षरपदैर्यन्त्रीकृता^८ यन्त्रिताः,
के के नो निपतन्ति^९ स्रस्तमुकुटाश्चन्द्रार्कतुल्या अपि ॥६॥
लावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा
^{१०}ब्रह्मोगादिदिगीशंवृन्दमपि ते जानन्ति गुञ्जोर्षमम् ।
येषा चेतसि संस्थिताऽसि वगले ! ते विश्वरक्षाक्षमा,
प्रारब्ध द्रढयन्ति सत्वरतरं विघ्नैरविघ्नीकृताः ॥७॥
मुख्यत्व समुपैति ससदि तवाऽपाङ्गावलोके नरः,
किं तच्चिन्नमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वसने ।
यश्चित्ते तव 'भाति मामक इति'^{११} त्वद्दर्शनं यस्य वा,
त सर्वा ह्यणिमादयोऽप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम् ॥८॥
क्षीणानां^{१२} बलदायिनी जलनिधौ 'पोतस्थितौ नाविका',^{१३}
तत्त्राण^{१४} घनकुञ्जगह्वरगिरिच्याघ्रादिभीतेष्वपि^{१५} ।

१. स. ओमित्याद्यं । २. ०गर्भं । ३. तपसा । ४. झू । ५. हृदये वि । ६. भजते ।
७. ततिः । ८. ० ये निश्चयो । ९. अष्टपु० । १०. ब्रह्मेन्द्रादिदिगीशमृतमपि ।
११. स नक्तिमामु कुल्ले । १२. लिप्ताना । १३. पोतस्थिताना गतिः । १४. त्व घ्राण ।
१५. ० सत्वेष्वपि ।

त्वां पीताम्बरधारिणी 'परशिवा चन्द्राद्ध्वञ्चूडा गदा-'^१
 हस्ता वामकरे^२ प्रतीपरसनामुन्मीलयन्ती^३ भजे ॥६॥
 स्वेच्छ^४ ये प्रणमन्ति पादयुगल पीताम्बरे । तावक,
 ते वाञ्छाधिकमर्थमाप्य सकला सिद्धि भजन्ते पुनः ।
 यद्यत्कर्तुं मुरीकरोति वगले ! त्वत्साधकोऽत्राघुना,
 तत्सञ्जातमिवेक्षते तव कृपाऽभाङ्गावलोके क्षणात् ॥१०॥
 वाणी^५ सूक्तिसुधारसद्रवमयी सालङ्कृतिस्तन्मुखे,
 शापानुग्रहकारिणी कविजनानन्दैकसर्वद्विनी ।
 व्याकर्तुं क्षमते विशालमतिमास्त्वत्सेवको वाङ्मय,^६
 किं चित्र यदि सृष्टिमाशु रचते ब्रह्माण्डकोट्यायते^७ ॥११॥
 देवि ! त्वद्भक्तदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखाः पर्वताः पासुतुल्या
 ज्वालामालाश्च चन्द्रामृतकरसदृशाः पुष्पता यान्ति नागाः ।
 मूकत्व वाक्पतीन्द्रा सरसि समतुलामाश्रयन्ते समुद्रा
 राजानो रङ्गभाव रणभुवि रिपवो विद्रवन्ते विशस्त्राः ॥१२॥
 लेख्य^८ तावकमन्त्रवीजममल दुष्टीघसस्तम्भन,
 वश्याकर्षणमारणप्रमथनप्रक्षोभणोच्चाटने ।
 व्यक्त वज्रसिवापर यदि मुखे जागर्ति तस्याग्रतः,
 पादान्तः परिसञ्चरन्ति रिपवो ये सप्तद्वीपेश्वराः ॥१३॥
 नानारत्नविभूषितामलमणिद्वीपे सुधासागरे,
 कल्पानोकहकाननान्तरगता या रत्नवेदी पुरा ।
 तत्राकारितपञ्चप्रेतकमये सिंहासने सस्थिता,
 ध्यायेद्गृह करुणाकरां हरिहराराध्यामशेषार्थदाम् ॥१४॥
 वाग्देवी वदने वसत्यविरतं नेत्रे च लक्ष्मी करे,
 दातुं दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजी सदा ।
 त्वद्भक्तस्य भवाव्विपारतरणे तत्त्वोदयो जायते,
 तेनेद नलिनीदलोपरि जलाकारं जगद् भासते ॥१५॥
 चञ्चत्काञ्चनतुल्यपीतवसनां चन्द्रावतसोज्ज्वलां,
 केयूराङ्गदहारकुण्डलधरा भक्तोदयायोद्यताम् ।

१. परचमूत्रिद्रावणोद्यद्गदा । २. वामकरेण । ३. शत्रुरसना० । ४. स्पृष्ट ।
 ५. मुक्ति० । ६. ऽत्राघुना । ७. ०कोट्यालये । ८. दृष्टा ।

त्वा ध्यायामि चतुर्भुजा त्रिनयनामुग्रारिजिह्वा करे,
कर्पन्तीमहमम्ब पाहि वगले । त्राणं त्वमेवासि मे ॥१६॥
मातस्ते महिमानमुग्रमधिक प्रोक्त स्वय मानवै—

वक्त्रय सन्द्रियते^१ श्रमेण यदि वा गक्त्या गुणाम्भोनिवेः ।
नो निश्शेषतया सुरैरविदितप्रान्तस्य पद्मालये,

तस्मात् सर्वगता त्वमेव सदसद्रूपा सदा गीयते ॥१७॥

खञ्जं ताक्ष्यसमोद्यम^२ प्रकुरुते तादर्यं च खञ्जाधिकं,

वान्त^३ स्तम्भयते जलाग्निशमने याऽव्यक्तशक्तिः शिवे ।

तद्वीज वगलेति मेऽस्तु रसनालग्न सदैवामल,

यद्ब्रह्मादिमुदुर्लभ भुवि नरैः सत्प्राक्तनैर्लभ्यते^४ ॥१८॥

स्तम्भत्व पवनोऽर्षि^५ याति भवती^६ भक्तस्य पीताम्बरे ।

किं चित्र यदि वारिधि स्थलपद मेरुस्तु माषोपमाम् ।

कल्पानोकहकामयेनुप्रमुखं रत्नैरजिन्दस्थितं^७—

वञ्छार्थाधिकदानमाशु कुरुते दीनेष्वदीनेष्वपि ॥१९॥

भाग्याद्यस्य मुखे विभाति विमला विद्या विशेषाधिका,

षट्त्रिंशद्भिरथोदिता बहुगुरोर्वीजैस्तु सर्वार्थदा ।

त सर्वे प्रणमन्ति मानवममी^८ सेन्द्राः सुरा भूसुराः,

क्रान्ताशेषमहोदय स्वकलनाक्रान्तत्रिलोकालयम्^९ ॥२०॥

यत्किञ्चिद्भुवने विभाति विमल रत्न महानन्दनं,^{११}

या या वृत्तिरुदारतां जनयते यद्यत्पर सुन्दरम् ।

यत्किञ्चिद्भुवनेऽथवा नु^{१२} महता शब्देन वा कीर्त्यते,^{१३}

तत्सर्वं तव रूपमेव वगले । ससारपारप्रदे ॥२१॥

जाग्रत्पूर्णाकृपा मृतौघभरिते श्रीमत्कटाक्षेक्षणो,

सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निमग्ना नरा ।

तेषा भाग्यमतीन्द्रिय निगदितु ब्रह्मादयो न क्षमा

ये सङ्कल्पविकल्पमात्ररचना प्राणात्यये हेतव ॥२२॥

हस्ते सगृह्यं चाप^{१४} शरधरनिकरैर्यत्किरान महाजौ,

पार्थो ब्रह्मास्त्रविद्याभ्यसनपटुमतिर्द्वन्द्वयुद्धे तुतोष ।

१ ख 'सन्द्रियते' इत्यपि पाठ । २ 'ताक्ष्यजयोद्यत' इति पाठ । ३ 'वासु' क्वचित् ।
४ 'सत्प्राक्तनैर्लभ्यते' इति पाठ । ५ परमोऽपि । ६ पवनो । ७ रत्नैरनेकं स्थितं ।
८ मम । ९ कान्ताशेषः । १० स्वकलनाक्रान्त्याः । ११ महानन्दम् । १२ एणु ।
१३ कीर्तिते । १४ शितशरः ।

तत्सर्वं देववृन्दैरथ रिपुनिवहैर्वीक्षितं सिद्धलोकै-
 र्घैर्यं^१ शौर्यं च सर्वं^२ तव वरजनि त भाति पीताम्बरेऽत्र ॥२३॥
 पीतां पीतजटाधरा त्रिनयना पीतांशुकोल्लासिनी,
 हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्कमुकुटा सच्चम्पकस्रग्युताम् ।
 हस्तैर्मुद्गरवज्रवैरिरसना सविभ्रतीमादरात्,
 दीप्ताङ्गी वगलामुखी त्रिजगता सस्तम्भिनीं चिन्तये ॥२४॥
 कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगा श्वेतेन्दुमौलि^३ करैः,
 केयूराङ्गदपाशमुद्गरगदावज्रादिकान् विभ्रतीम् ।
 देवी पीतविभूषणामरिकुलध्वसोद्यतां ये नरा
 ध्यायन्त्याशु लभन्ति सिद्धिमतुला ते वालिशा^४ स्युः कथम् ॥२५॥
 लब्ध्वा मातरशेषकान्तिभरितानन्द^५ कृपावीक्षण,
 वर्षीयानपि मोहितु प्रभवति स्त्रीवृन्दमृन्मीलितुम् ।
 किं तच्चित्रमनेकधा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलोकीमिमां,
 सूर्येन्दुस्तनधारिणीमपि वलात् कन्दर्पदर्पाधिक^६ ॥२६॥
 यन्त्र जैत्रमनेकदु खशमन पीताम्बरे ! तावक-
 मोङ्कारद्वयसम्पुटेन पुटित शिष्टैस्तथावेष्टितम् ।
 तद्वाह्ये स्थिरमाययाष्टपुटित पाशाङ्कुशाद्यावृत,
 येषा चेतसि 'भाग्यतो निवसते ते विश्वसर्गक्षमा'^७ ॥२७॥
 कर्पूरागुरुचन्दनैर्मृगमदैर्गोरोचनाकेशरै-
 स्त्वत्पादाम्बुजमर्चयन्ति वगले^८ ये प्रत्यह मानवाः ।
 ते लब्ध्वा श्रियमद्भुतामपि चिर भोगाश्च भुक्त्वाऽवनौ,
 सायुज्यालयप्रमाविशन्ति परमानन्दोऽस्ति यत्राधिक ॥२८॥
 लब्ध्वा पादयुगे रतिं तव शिवे क्षुद्रोऽपि देवेन्द्रता-
 मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलैर्भोगैदिवि क्रीडति ।
 ये हित्वा तव भक्तिमन्यभजनानन्दाश्चिर ते नरा
 भ्रष्टा घर्मपराङ्मुखा भ्रमधियो भार वहन्ते भुवि ॥२९॥
 यामाराध्य हरो हरत्वमभजद् विष्णुस्तु विश्वात्मता,
 चक्रे सृष्टिमजोऽप्यवोचदखिल वेदादिसद्वाङ्मयम् ।
 ध्यात्वा ध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योऽपि पीताम्बरे ।
 तीव्रं ताममपाकरोति रजनीनाथोऽपि चूडाश्रितः ॥३०॥

१. ख स्यैर्यं । २. सनस्रं । ३. पीतेन्दु० । ४. ०भरितं विव्य । ५. ०दर्पाधिकाम् ।
 ६. '—' सस्यिताऽस्ति वगले ते विश्वरक्षाक्षमाः । ७. सतत ।

बुद्धि नागय कीलयाशु^१ रसनामङ्घ्र्यघोर्गति स्तम्भय,
 दुष्टान् द्रावय मारयारिनिवहान् दासाश्चिर पालय ।
 इत्थ ये वगलामुखी पदगति लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते,
 यन्त्रारूढमिवारिवृन्दमखिल कर्तुं समर्थाः सदा ॥३१॥
 ध्यात्वा त्वां वगले ! पुरा गिरिसुता चक्रे शिवं स्व वर,
 प्रोक्त नार्पयितुं शिवेन गदिता सकल्पनाग्नौ तदा ।
^२त्यक्ताग्निर्गलितावलिं गिरिसुतात् त्यक्त्वा गलस्तन्मुखात्,
 तस्मात् त्व वगलामुखी निगदिता नित्या परा योगिनी ॥३२॥
^३नागेन्द्रैर्देवसिद्धैर्मुनिवरनिवहैर्दानवै राक्षसेन्द्रै-
 दिक्पालैर्दिक्करीन्द्रैर्दिनकरप्रमुखैः सद्ग्रहैस्तारकाद्यैः ।
 ब्रह्माद्यै स्थूलसूक्ष्मैरविदितमुदिता त्व परा चोन्मनी त्व,
 नित्या पीताम्बेरा त्व रिपुभयशमनी भक्तिचित्तांसनस्था^४ ॥३३॥
^५शम्भुर्यद्गुणगानत्रोद्यत्तमतिनिट्योत्सवैस्ताण्डवे,
 चक्रे चन्द्रमयूखकम्पनकरा^६ नीराजना^७ पादयोः ।
^८हेमाम्भोजदलैर्जटाजलभरैरानन्दितैर्मौलिभि^९ ,
 पूजां प्रत्यहमातनोति नटयन् स्वैर्हस्ततालादिभि ॥३४॥
 या दध्ने चतुराननोऽपि वदने चित्तारविन्दस्थिता,
 या वक्ष स्थलसस्थिता हरिरजामालिङ्ग्य पीताम्बराम् ।
 यद्देहार्धमुरीचकार पुरजित्^{१०} सौन्दर्यसाराधिका,
 पट्चक्राक्षररूपिणीं भज सखे ! देवी जगत्पालिकाम्^{११} ॥३५॥
 हस्ते भाति गदा सदात्तिगमनी रत्नावली त्वद्भ्रूजे,
 पादे नूपुरमीशमौलिमणिभिर्नीराजित^{१२} राजते ।
 ताटङ्कं श्रवणे कुचोपरि सदा^{१३} कस्तूरिकालेपनं,
 काश्मीरद्रवमङ्गरागमधिका पीतच्छर्वि^{१४} तन्वते ॥३६॥
^{१५}कारद्वयसम्पुटेन पुटिता 'विद्यागमे सस्थिता,^{१५}
 पट्चक्राक्षरबीजसाररचितां पट्त्रिंशद्वर्णात्मिकाम्^{१६} ।

१. ख.कीलयारि । २. त्यक्त्वा० । ३. नागेन्द्रैर्देवसर्षभुर्वि० । ४. भक्त० ।
 ५. ०गुणगानत्रपरमतिनित्योत्सवे । ६. ०कम्पनमिवा । नीराजनं । ७. हेमाम्भोजदलैः ।
 ८. नन्दिता मौलिभि । १०. पुरभित् । ११. जगद्व्यापिकाम् । १२. ०नीराजनं ।
 १३. लसत् । १४. पीतां छर्वि- । १५. विद्यामजास्ये स्थिता । १६. सत्त्रन्ववर्णात्मिकाम् ।

ये जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा,
 ते वन्द्या विबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धार्चिता. सिद्धये'^१ ॥३७॥
 स्वाहाशक्तिरपासने तव ऋषिः श्रीनारदो देवता,
 नित्या श्रीवगलामुखी निगदिता छन्दो भवेत् त्रिष्टुभम् ।
 बीज तु स्थिरमायया विरचित नानाविधस्तम्भने,^२
 प्रोक्त पद्मभुवाऽखिलाम्निविनियोगोऽप्यच्युताकारता^३ ॥३८॥
 हृद्य सर्वसुरेश्वरैश्च ऋषिभिर्दुष्प्राप्यमेवादभुत,
 स्तोत्र गोप्यतम स्वभाग्यवशत. प्राप्त^४ पठिष्यन्ति ये ।
 सूक्त्या^५ देवगुरुं 'घनेन घनद'^६ जित्वा चिरञ्जीवितां,
 षण्मासात् सुखसागरे त्रिवसमाक्रीडा करिष्यन्ति ते ॥३९॥
 देवी स्वप्नगता स्वयैव लिखित मह्य ददावद्भुत,
 दिव्यास्त्र पुरतः पठस्व विमल सिन्दूरवर्णं. करं ।
 रोमाञ्चाङ्कितहर्षमाप्य लुलितैरङ्गैः^७ पठन्त नर-
 प्राप्नोऽह परमोदयप्रदमिद ज्ञानं कवीन्द्रादिदम्^८ ॥४०॥
 प्राप्ता श्रीवगलामुखीवदनत स्वप्ने सुविद्या मया,
 षट्त्रिंशद्भिरिमैः सुवर्णनिचयैः सद्बीजरत्नावली ।
 येषा कण्ठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा,
 वश्याकर्षणमोहमारणाविधौ स्तम्भे तथोच्चाटने ॥४१॥
 चलत्कनककुण्डलोल्लसितन्त्रारुगण्डस्थलाम्,
 लसत्कनकचम्पकद्युतिविराजिचन्द्राननाम् ।
 गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला,
 स्मरामि वगलामुखी विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम्^९ ॥४२॥

॥ श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥^{१०}

षवत् १८६० शके १७५५ आषाढमासे शुक्लपक्षे ५ मन्वासरे लिखितं ब्रह्मचारि-
 काशिनाथेन ॥ श्रीगङ्गाविश्वेश्वरान्या नमः ॥

१. ख पादद्वय एकचत्वारिंशच्छ्लोकादनन्तर विद्यते । २. नानाविधि० । ३. ०प्यसत्कारकः ।
 ४. नित्यं । ५. संज्ञया । ६. घनेर्घनपति । ७. ललितं० । ८. कवीन्द्राचितम् ।
 ९. ख श्लोकोऽप्य नास्ति । १०. इति श्रीनारदोक्तं पीताम्बरादेवीस्तवराजस्तोत्रम् ।

सांख्यायनतन्त्रस्थानाम्

पद्यानामनुक्रमः

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

अ

अग्निबीजादिगायत्री ३०-२०
 अङ्कुशेनैव मुद्राया. ६-७
 अङ्कुश बीजमुच्चार्य ७७-१५
 अङ्गप्रयेण सयुमत ६६-२४
 अङ्गुष्ठमात्रां कृत्वा ८४-४
 अघोराश्च पाशुपती ६६-२६
 अत्यन्तैश्वर्यसंयुक्तौ ५७-६
 अथवा पीतपुष्पस्तु १०४-२७
 अथवा पीताम्बास्यां वा ३६-१७
 अथवा वगलामन्त्रं ६७-१०
 अथ स्कन्द प्रवक्ष्यामि १००-३
 अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ६८-३
 अघमं च शिलापूजा ३३-१६
 अघुना स्तम्भयत्येतत् ४१-१४
 अनाथस्य चित्ती रात्रौ १६-६
 अनुक्रमेण सर्वत्र १०१-१३
 अनुष्टुप्छन्द आख्यातं ६८-८
 अनेन क्रमयोगेन १०१-१२
 अनेन (नया) विद्यया पुत्र ६३-२२
 अनेन योगवर्येण १०४-२८
 अनेन योगवर्येण ६५-१०
 अन्त्यपत्रे चाष्टवर्णान् १०-१२
 अन्त्यवर्णं समुच्चार्य ६१-टि०
 अक्षद्वेषो जायते च ७२-१४
 अन्नेन अन्वहो हृत्वा ४८-२०
 अन्ययोगसमारम्भं ६६-२५
 अपमृत्युविनाशाय १०३-६
 अपामागस्य बीजं तु ७५-२१
 अपात्यानां च दुष्टानां १०३-४
 अपमोघमृत्युनाशाय १०३-१६
 अर्म्बा पीताम्बरादौ वरणं ६४-१

अयुताच्चिन्तित कार्यं ७३-३०
 अयुताच्छत्रुसंहारो ७४-४
 अयुताज्ज्वररोगी च ७३-२६
 अयुतात्तास्य शत्रोश्च ७३-२८
 अयुतादरिगर्वं तु ७३-२४
 अयुतात्लभते भोग ८३-१६
 अयुत च दिवारात्री ५१-टि०
 अयुत जुह्वयान्मन्त्री ७४-टि०
 अयुत जुह्वयान्मन्त्री ७५-१७
 अयुत तर्पणात्पुत्र ७२-१६, २०
 अयुत तर्पणेनैव ७२-१५
 अयुतं तस्य मन्त्रन्तु ५५-२२
 अयुत मन्त्रयित्वा तु ८६-२७
 अरात्नहस्तमात्रं च १५-१४
 अकंपलकवर्णो ४०-८
 अकंपत्रद्वयेणैव ४६-२८
 अकंपत्रे लिखेन्नाम ५१-टि०
 अकंवारे तु सध्याया ८६-२६
 अर्चनं कलशे चैव ७१-५
 अर्चनं गौडदेशीयं ६६-३१
 अर्चनं गौडदेशे च ३४-४
 अर्चयेत् पञ्चमीं कुर्याद् ७०-४०
 अर्चयेत्पूर्ववत्पुत्र ७-१७
 अर्चयेत्पूर्ववद्यन्त्र २२-१४
 अर्चयेत् पद्मसोपेता ३६-२७
 अर्चयेदयुत मन्त्री ८०-२१
 अर्चयेद् विधिमागेण ३७-२६
 अर्द्धजिह्वा गदा चार्द्ध ३८-१६
 अलीकेन धुद्रमति ४७-१४
 अशोतिवर्णसयुततो ७८-२१
 अशोकमूले निवसन् ८१-१०
 अश्मयंद रिपोरङ्गे ५२-३४

अश्रुतानां च शास्त्राणां ८२-१५
 अश्वत्थमूलमाश्रित्य ७४-६
 अश्वत्थमूले प्रजपेद् ६२-५
 अश्वत्थंरिन्धनैरेव ६५-७
 अष्टकोणेषु विलिखेद् २१-६
 अष्टदिक्पालकोशाष्ट० १-३
 अष्टपत्रे न्यसेत्पुत्र ७-१२
 अष्टपाशसमायुक्त ५-१६
 अष्टमूर्त्ते नमस्तुभ्य ७८-२
 अष्टमूर्त्ते महामूर्त्ते २३-२
 अष्टमं कठवल्क्या च ८-२३
 अष्टम्या च चतुर्दश्यां ७६-टि०
 अष्टवेतालशमने ६४-४
 अष्टायुतं तर्पणं च ८२-११
 अष्टोत्तरशतं सम्यक् ५८-२०
 अस्त्रशस्त्रमयं मन्त्रं ५७-७

आ

आकर्षणं भवेच्छीघ्रं ४८-२५
 आगच्छेत्याज्ञया तस्य ४०-३३
 आज्येन मिश्रितं चैव ६८-२०
 आत्मार्थं च परार्थं च १०३-७
 आदौ गणपतिं पूज्य १०४-२३
 आदौ भास्वररूपिणीं कुरु तदा ६८-२२
 आद्यबीजं पुनश्चोक्त्वा ४२-२६
 आद्यबीजं मनोः सख्या ४२-८८
 आद्यास्त्रं बगलानाम्नी ३७-३
 आरनालस्य भाण्डे तु ८४-५
 आरनालेन तद्भस्म ८४-६
 आवाहिनीं स्थापनीं च ६-८
 आश्वयंजं महामन्त्रं ४२-२५
 आश्विने कार्तिके चैव ६-३

इ

इच्छया वर्तते सर्वं ४०-३२
 इति सक्षेपतः प्रोक्तं १०५-३५
 इन्द्रमध्ये लिखेद् विद्यां ६३-२४

इन्द्रादिपदसस्तम्भे १०२-२४
 इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य ७६-१०

उ

उच्चाटनार्थं जपेत्पुत्र ३०-टि०
 उत्तमं कुण्डहोमञ्च १४-३
 उत्पाटय कण्टकान्यादी ५३-३६
 उदरेत्तारमादौ तु ५४-४
 उन्मादौ च भवेच्छत्रु ७३-२३
 उपचारंः षोडशभि ७१-७
 उपस्थानं चैवमेतत् ११-टि०
 उपस्थानं त्रिकालस्य १०-१७
 उलूककाकयोः पत्रं १६-२५
 उल्कामुखी द्वितीयास्त्रं ६-२८
 उल्लव्य बगलामत्र ३३-टि०
 उष्णोदकं ताम्रपात्रे ६४-३८

ऊ

ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी १३-१४

ऋ

ऋषिच्छन्दश्रितयक ६६-१०
 ऋषिश्चाप्यग्निवाराहः ३६-२५
 ऋषिसिद्धामरेश्वरैव ३-२७

ए

एकाक्षरीमहामन्त्रं ६५-१२
 एकाक्षरीविद्यया च ५२-टि०
 एकाक्षरीं च बगलां ५८-१५
 एकाक्षरीं जपेदादौ १०२-१६
 एकाक्षरीं बगलां देवी ५०-४
 एतच्छूर्णप्रयोगं च ८६-२६
 एतत्पूजां विना पुत्र ३६-१८
 एतदर्चाविवर्तिनां ६६-२६
 एतदर्चाविविधैश्चैव ७०-४१
 एतदष्टाक्षरीमन्त्रं ८३ टि०-२५
 एतद्यन्त्रं लिखेद् भूय ६३-२७

एतद्यन्त्र हृदि ध्यात्वा ६३-३०
 एतद्यन्त्र हृदि ध्यायेद् ६२-१५
 एतद्राज्य स मासेन ५६-३४
 एतद्विद्यापुरश्चर्या ६०-३६
 एतन्मन्त्रवर पुत्र ५६-२२
 एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं ८२-३
 एता मुद्राश्च ततो ६-६
 एरण्डतैलेन जुहुयाद् ४८-२४
 एवमेव विधि-पुत्र ७०-४२
 एव कुर्यात् प्रातरेव ६२-१६
 एवं कृत्वा जपेन्मन्त्र ८६-२३
 एव कृते सप्तरात्र ५२-२४
 एवं च पूजयेद्यन्त्र २३-२७
 एव च पूजयेत् सम्यक् ३३-१७
 एव च मार्जनं कृत्वा १०-१५
 एवं च मार्जनं कृत्वा ८-२४
 एव च मालिकां कुर्यात् ६५-१३
 एवं त्रिविधपूजा च ६६-टि०
 एव ध्यात्वा जपेत् पुत्र ८१-६
 एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्र ५५-१६
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्र १३-२०
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्र ४३-३६
 एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्र ४५-१६
 एव ध्यात्वा तु देवर्षी १०-२१
 एवं न्यासविधि कृत्वा १३-१५
 एव भूतसहस्रं च २२-१२
 एवं मध्यदिनोपास्थि ११-२३
 एव मन्त्राभिपेक्षञ्च ८-२८
 एवं मासत्रयं कृत्वा ८४-६
 एव मासप्रयोगेण २४-१४
 एव यः कुरुते पुत्र ७६-टि०
 एवं रोगसमायुक्तो २०-२७
 एव लिखित्वा यत्र च ६२-१२
 एवं शुक्रदिने सम्यक् ६-६
 एवं होमप्रयोग च ७६-२६
 एहि-गन्धर्ह्यं चोक्त्वा ८७-६

श्री

ॐ नमो पदमुच्चार्य्यं ६१-७, टि०

क

कण्ठक पुरपक्षस्य ८५-१४
 कण्ठकान्तोपयेदकं ५२-टि०
 कण्ठे वा वाहूमूले वा ६२-१७
 कदलीमूलमाश्रित्य ६२-६
 कन्यका चाथवा पुत्र ३३-१५
 कन्यां चैव न्यसेदेव ३५-१४
 कपटादिविनाशार्थे ६५-६
 कपित्थवृक्षमूले तु ६२-७
 कपिलानवनीतं च ६१-३
 कर्पूरमिश्रित तोयं २७-१२
 कम्बुकण्ठीं सुताओष्ठी २३-१
 करञ्जमूलमाश्रित्या० ६२-१०
 करोति यस्य सन्तोषं ७७-१२
 कर्पासपत्रजद्रावः ४६-टि०
 कल्पते चित्तसंक्षोभ ३६-टि०
 कवचात् कोलनं योगः १०२-२३
 कवचं च चतुर्थः स्यात् १०२-२२
 कवचं पञ्चमं वाणः १०१-१५
 कवचं प्रथमं वाणः १०१-१४
 कवचं वेदवर्णं च १०२-१८
 कवीश्वरोऽपि चोन्मादी ७६-८
 कस्तूरीमिश्रित तोयं २७-१४
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात् २४-५
 काकपत्रेण सयुक्तं ७२-१०
 काकवद्भ्रमते शशुः ७२-११
 काकवद्भ्रमते शशुः ८६-२८
 काकोलुकदलं चैव ८५-१५
 कामराजं च हल्लेखां ४४-१०
 कामरूपाख्यदेशे तु ७०-३४
 कामुक काञ्चनासक्तं ५-टि०
 कारणं तत्र केन स्यात् १००-४
 कालानलनिर्मा देवीं ४३-३४

कालीशब्दद्वयं चोक्त्वा ८७-६
 काली करालवदना ८८-१४
 किं तस्य जपयुक्तानां ४०-टि०
 कुटिलालकसंयुक्ता ६८-१२
 कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्यां १०४-१७
 कुवेरसदृशः श्रीमान् २०-२०
 कुवेरसदृशः श्रीमान् ८२-१८
 कुवेरसदृशः श्रीमान् २७-१५
 कुवेरसदृशो भूत्वा ८०-१५
 कुमारक प्रवर्तन्ते ३६-३१
 कुरुपाञ्चालदेशाच्चर्चा ७०-४३
 कुर्यात् कृत्स्नमरोगेण ६२-२०
 कुर्यात् सौभाग्यसम्पूजां ३६-२४
 कुलाचारसमायुक्तः ३-२४
 कुशेन जुहुयात्तस्य ४६-४
 कुसुमेदचम्पकैरर्च्यं २३-२५
 क्रूरग्रहविनाशाय १०३-५
 कृत्वा एकाक्षरीमन्त्रं ६६-२५
 कृत्वा घर्मण्डलं चैव २४-१२
 कृत्वा पवित्रग्रन्थि च ७२-१२
 कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां ३५-८
 केतकीदलहोमेन ४७-११
 कैलाशशिखरासीनं १-२
 कोऽयस्तादृश्यं मनुश्चेति ६१-६
 कोमलं तत्फलं सम्यक् ७४-११
 कौटिल्यस्थापनं चैव ६४-३६
 कौलसारपरं नाम ७०-३६
 कौलसारं च तन्नाम ६६-३३
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद्य ६७-३७
 कौलागमैकसवेद्यां २६-१
 कौलार्चनविधानेन ७६-६
 क्षणादुच्चाटनं कुर्याद् ४-२७
 क्षयरोगी भवेच्छत्रुः २८-२७
 क्षयरोगी भवेन्मर्त्यो ७३-२७
 क्षीरेण भ्रमनाशश्च ४८-२१
 क्षुद्रकर्मणि निर्नाशि १०१-८

क्षुद्रप्रयोजनः पुत्र २०-१८

ख

खरस्य रक्तमादाय १६-७
 खरवालं च रोमं च ८६-३३
 खर्जूरजेन द्रव्येण ४८-२३
 खाने पाने च तद्भस्म १६-१६

ग

गङ्गाधरं नमस्तेऽस्तु ६-२
 गजाश्ववृषभोलूकं ८५-२२
 गतिगर्भं च वाक्यानि २६-७
 गत्वा तु रिपवः सर्वे ५६-२३
 गम्भीरां च मदीन्मर्त्ता १०-१८
 गरं च तिलतैलं च ४६-३०
 गर्भं कौलागमासकृतं ४-८
 गर्भस्तम्भनदोषं च ८६-२५
 गायत्री छन्द आदिष्टं ६८-६
 गायत्री वगलानाम्नी २६-६
 गायत्री वगलानाम्नी ३१-२६
 गायत्री कथंचं पुत्र १०१-११
 गुडोदकैस्तर्पणं च २६-४
 गुणश्च वर्त्तते पुंसां ७७-१०
 गुणहस्तं कौटिल्ये १५-१३
 गुप्तं कौलागमं नाम ३४-५
 गुरुशिष्यावुभौ मोहाद० ५-२२
 गुरुशुश्रूषया विद्या ५-१२
 ग्रस्तं कृत्वा वैरिनाम २०-१६
 गोक्षीरं प्रातस्तथाय ६४-३५
 गोपनीयं गोपनीयं १०५-३४
 गोपयेत् सर्वदा पुत्र ४३-४०
 गोमयस्था हरिद्रां च ६५-८
 गोमयैर्लेपनं दत्त्वा २६-२७
 गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री ४८-२२
 गौडीद्रव्यस्तर्पणेन २७-टि०
 गौडीद्रव्येण जुहुयात् ४७-१७

गीहो माध्वो च पैष्टो च ३३-१८
 प्रसनीति पदं चोक्त्वा ५४-७
 ग्राममध्ये हुनेन्मन्त्री ७४-६
 ग्रामं वा नगरं वाथ ५८-११
 ग्रामं वा नगर वाथ ७४-१२
 रत्नी वीजं ह्री च शक्तिरश्च ६०-१०

च

चक्रपूजासमायुक्त (क्तो) ४-११
 चतुरक्षरी च वगला ६७-७
 चतुर्थकोणे सम्पूज्य ३२-६
 चतुर्भुजां च द्विभुजां ३२-४
 चतुर्भुजा त्रिनयनां १७-११
 चतुर्भुजां त्रिनयनां ४६-१
 चतुर्भुजां वा द्विभुजां १००-२१
 चतुर्लक्ष पुरश्चर्या २६-८
 चतुर्ध्वर्णात्मिके मन्त्रे ६७-६
 चत्वरे सर्वकार्यार्थं ६७-३५
 चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु ४३-२
 चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादि ८३-२
 चमंघृग्वसनो भूत्वा ४१-१२
 चलत्कनककुण्डलोल्लसितं ६-१
 चापचर्यासुनिपुणं १-५
 चिताभस्म चिताङ्गारं ५१-१६
 चिताभस्म रवौ रात्री ८६-२७
 चितिवस्त्र रवौ ग्राह्यं २०-२१
 चित्रपीताम्बरधरां ६६-२३
 चिदानन्दघनावास १००-२
 चिन्मयी स्तभनीं देवीं ४२-२२
 चुह्ल्योपरि च तद्भाण्ड ६४-६

छ

छन्दादिक पूर्ववत् स्याद् ६८-७
 छागमासेन जुहुयान् ५५-१७

ज

जपसत्या यत्र नोषता ३१-२५

जपेच्च वायुवीजादि ३०-१६
 जपेत्तत्र सहस्रं कं ५०-१०
 जपेदमृतवीजानि ३०-१८
 जम्बीरतरुमूले तु ६३-१८
 जलकृत्याविनाशार्थं १०३-१३
 जातवेदमये देवि ७१-१
 जातवेदमुखीबाणो ६७-२६
 जातवेदमुखी मन्त्रं ४१-६
 जातिपवकसमिश्रं ४५-१७
 जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः २८-२४
 जात्याभिमानिनो ये च ५६-२६
 जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं ३-१
 जिह्वाग्रमादाय करेण देवी ४३-१
 जिह्वा मुख च कर्णाक्षि ८६-८
 जिह्वास्तम्भनमाप्नोति ६१-२०
 जिह्वास्तभो भवत्येव ७२-१८
 जिह्वास्तम्भ भवेच्छत्रो. ५०-८
 जिह्वां कीलय उच्चार्यं ३८-११
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं ३६-२३
 जिह्वां कीलय उच्चार्यं ४०-६
 जिह्वां कीलय उच्चार्यं ४४-७
 जिह्वां खङ्ग पानपात्र ६०-१२
 जिह्वा वाणी च वृद्धि च ६४-२५
 जीवन्मुक्तः स एवात्र ७०-४४
 जुहुयात्तत्क्षणात् पुत्र ७५-२०
 जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु ४६-३२
 जुहुयात् पट्सहस्रं तु ४६-२६
 जुहुयाद्द्विता व्यात्वा ४६-२८
 ज्वालामुखी तृतीयास्त्र ३७-४
 ज्वालामुखी देवता च ४१-२०
 ज्वालामुख्यमिव बाण ६५-१४

त

तक्षणे तर्पणं चैव २-१७
 तक्षणे सहितं पीत्वा ८६-२६
 तच्छ्रुणुं देवतागारे ८५-२१

तज्जल च समानीय ७१-६
 तज्जल वामचुलुके ६-१०
 नतो नागीश्वरी तद्वच् ५५-टि०
 ततोपरि लिखेत्सम्यक् २१-५
 ततो पलाशमूलं तु ६३-टि०
 ततो वै प्रजपेद्विद्या १००-२०
 ततः कवचमालम्ब्य १००-५
 ततः शिष्य समानीय ६-७
 तत्कारिपत्रजद्रावै. ४६-टि०
 तत्क्षणाभ्नाशमाप्नोति ८६-२६
 तत्तादेकाक्षरीबीज १२-३
 तत्पवित्रेण सयुक्त ७१-६
 तत्प्रयोग तत्र उच्यते ८ टि०
 तत्फलैर्न हुनेद् रात्रौ ७४-८
 तत्रस्थाः शत्रुभायिषिच ७५-२२
 तत्त्वलक्षप्रमाणेन ६६-२८
 तत्त्व वद महादेव १०३-३
 तदुद्धार शृणु प्राज्ञ ६६-१४
 तदुपरि च सवेष्टय ७६-टि०
 तदुपरि समम्यच्यं ३२-१२, १३, टि०
 तद्भस्म चूर्णमिश्रं ८४-११
 तद्भस्म तिलतैलेन ८४-१०
 तद्बीजोद्धारमनघ १२-५
 तद्यत्रधारणादेव ६३-२६
 तद्वस्त्र गुलिकीकृत्य ५०-५
 तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि २-८
 तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि ८७-४
 तन्मन्त्रसंख्यां वक्ष्यामि ६-४
 तन्मालिकां रवौ वारे ६५-१०
 तर्पणेनायुतेनैव ७३-२६
 तर्पणं च गवां क्षीरं ४२-२३
 तर्पणं च दिवा कुर्याद् ६८-१६
 तर्पणं च दिवा कृत्वा ६३-१५
 तर्पणं मन्त्रसंस्कार ७१-४
 तर्पण्येत्साद्दशाश च ६०-१५
 तर्पण्येत्साद्दशाश च १७-१६

तलतैलेन संयुक्तं १८-२५
 तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ४-६
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेना० ३७-३१
 तस्मिन्च मन्त्रयेत् सार्धं ५३-४०
 तस्य दर्शनमात्रेण ८०-१७, २२
 तस्य प्रज्ञा पलानीय ३३-२०
 तस्योपरि च पट्कोणे ७६-टि०
 तस्योपरि च सवेष्टय ७६-६
 तस्योपरि ततस्तीर्थं ३५-१०
 तस्योपाय च तद्विद्यां १-६
 तस्योर्ल्लंघनमात्रेण ७७-११
 ताडयेद् हृदये मन्त्री १६-११
 ताम्बूलचवर्णाच्छत्रु ६३-२२
 ताम्रपात्रे जल ग्राह्यं ६३-३१
 ताम्रपात्रे जल शुद्धं ६४-३७
 तार च वगलाबीज १६-४
 तारञ्च मातृकावर्णं १३-१७
 तारं च विलिखेत् पूर्वं ३८-८
 तार च स्तब्धमाया च ४०-३
 तारादि प्रजपेन्मन्त्र ३०-१०
 ताक्ष्यं बीजादिमन्त्रं ३०-१६
 ताक्ष्यस्य मालामन्त्रश्च ६१-६
 तालकेन हुनेत्तस्य ४३-३७
 तालकेन हुनेत् पुत्र ४५-२२
 तालकेन हुनेद्रात्रौ १६-६
 तालकेन हुनेल्लक्षं ३८-१७
 तालमध्ये लिखेन्नाम ५०-६
 तिलतैलसमायुक्तं १६-२६
 तिलतैलेन समिश्र ७५-२५
 तिलतैलेन सयुक्तं २५-१८
 तुलसीमञ्जरीभिश्च २३-२३
 तुलसीमञ्जरीभिश्च ६३-३२
 तुलसीमञ्जरीभिस्तु ८०-टि०
 तुलावज्ज्वलते शत्रु २८-टि०
 तृतीयकोणे सम्पूज्य ३२-८
 तेन कुर्यात् पुताली च ६६-२२

तेन कुर्यान्मालिकां च ६५-६
 तेन देवीकटाक्षेण २-१६
 तेन पूजा प्रकर्त्तव्या २२-१५
 तेन मूलेन सम्माज्यं १०-१३
 तेन चात्रुस्तत्क्षणाच्च ८४-११
 तेनायुत तर्पणेन ७२-१६
 तेनोक्तमाञ्जनेयाय ५६-४
 तेनोक्तविधिना सम्यक् ७१-८
 त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासक्ति ३६-२०
 त्यक्त्वा तन्मन्त्रगायत्रीं ३१-२४
 त्रिकाल तु समोसीनो ६२-३
 त्रिकालं पूजयेद्देवीं ३३-१६
 त्रिकालं लेपन कुर्यात् २५-१६, २४, २५, २६
 त्रिकालमयुतं जप्त्वा ६१-२६
 त्रिकालमाचरेत्सन्ध्यां ११-२७
 त्रिकालमेककाल वा ६३-३३
 त्रिकोणकुण्डे जुहुयात् १३-२१
 त्रिकोणे पूजयेत् पुत्र ३२-५
 त्रिदिन चाथवा पञ्च ५३-४१
 त्रिधा मूर्द्धनि द्विधा बाह्वो १०-१४
 त्रिपुरारे त्रिलोकज्ञ ५६-२
 त्रिमध्ववर्तं पायसेन ४५-१८
 त्रिमध्ववर्त ध्वेतदूर्वा ४६-५
 त्रिशत च शत चापि १०१-७
 त्रिसप्तमन्त्रित तोयं ७८-२४
 त्रिसहस्रं ध्यानयुक्तं ५७-८
 त्रिसहस्र सहस्र वा ६३-२८
 त्रैलोक्य वशमाप्नोति ८०-१६
 त्रैलोक्यविजय नाम ८६-२१
 त्रैलोक्यविजयात् च १०४-२०

द

दक्षिणामूर्तिमन्त्रेण ५६-२५
 दधिमिश्र गुहूषीमि. ४६-६
 दम्भुषावनकाष्ठ च ६३-२४
 दरिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् ७६-७

दशेन्द्रियस्तंभने तु १४-७
 दहयुग्म लिखेद् वाहो १६-१०
 दिने दिने सहस्रं कं ६३-१३
 दीक्षामार्गं विना मन्त्रं ४-४
 दीक्षाविधिं विना मन्त्रं ४-५
 दुरालापसमायुक्तं ५-१८
 दुर्वासा ऋषिरेवात्र ६०-६
 दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं ११-२२
 दुष्टानां पदमुच्चार्यं १६-५
 दूर्वाहोम त्रिमध्वक्तं १५-२१
 देवता कालिका नाम ८८-१३
 देवता वगलानाम्नी २६-७
 देवता वगलानाम्नी ८१-५
 देवता वगलानाम्नी ४४-१२
 देवता शान्तिमाप्नोति ५३-टि०
 देवदानवदैत्यारोन् ६४-५
 देवस्थेशानभागे तु ६-८
 देवी भूत्वा जपेद्देवीं ६५-१५
 देवी सम्पूजयेत्सम्यक् ६६-२६
 देवो भूत्वा स्वयं पुत्र ७०-३८
 देशोपद्रवनाशार्थं १०३-१०
 दौर्भाग्येन समायुक्तः ५६-२६
 द्रवेण तर्पणं कुर्यात् २६-५
 द्रव्याभिमानी पुरुषो ५६-टि०
 द्रव्यलाभ भवेत्तास्य ८०-१८
 द्विगुणां जपमात्रेण ६०-३७
 द्विगुणं जपमाप्नोति ६०-३६
 द्वितीयकोणं सपूज्य ३२-७
 द्वितीये विलिखेत् सम्यक् ६३-२६
 द्विपञ्चसप्तविंशद्भिः ६६-१८
 द्विशत मन्त्रित चैव ६३-२०

घ

घनजयपुर चैव ३५-टि०
 घीमहीति पदं चोक्त्वा २६-५
 घृष्येच्छत्रुसदने ८५-२०

धूपयेत्तौन सर्वाङ्ग ८६-२८
 धौतवस्त्रं परीषाय ६-६
 घत्तूरकुसुमेनैव २२-१८
 घत्तूरक च तन्मूर्ध्नि ५२-२७
 घत्तूरद्रवसयुक्तं २५-२२
 घत्तूरपत्रमादाय ८६-३१
 घत्तूर तिलदुकं वीज २४-१३
 ध्यानभेद प्रवक्ष्यामि ६०-११
 व्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्याद १३-१८
 ध्यान यत्नात्प्रवक्ष्यामि १७-१०
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३८-१५
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३६-२७
 ध्यान विना भवेत्तूकः ४३-२१
 ध्रुवाद्यैरिति मन्त्रेण ३५-१२

न

न कर्त्तव्यं मुमुक्षुश्च २१-२६
 नगरे वाथ ग्रामे वा ४६-टि०
 नग्नः प्रेतमुखे भौमे १६-२७
 न चाग्निषेकं न च मन्त्रदीक्षा ७६-५
 नद्या समुद्रगामिन्यां ६२-१२
 न ध्यानं न च होम च ७६-४
 नन्द्यावर्त्तेन सम्पूज्य २३-२४
 नमः कैलाशनाथाय ६७-२
 नमः कौलागमाचार्य १८-२
 नमः पापविद्धराय ८७-२
 नमः शिवाय साम्बाय ६०-२
 नमस्ते गिरिजानाथ ४०-२
 नमस्ते जगती देवी ४६-१
 नमस्ताण्डवरुद्राय ६२-२
 नमस्ते देवदेवेश ७८-१
 नमस्ते देवदेवेश ८१-१
 नमस्ते देवदेवेशी ५६-१
 नमस्ते पार्वतीनाथ ५४-२
 नमस्ते पार्वतीनाथ ४-२
 नमस्ते मौलिस्त्रसेव्य २६-२

नमस्ते योगिससेव्य ५७-टि०
 नमस्ते योगिसंसेव्य १४-२
 नमस्ते योगिससेव्य ५०-२
 नमस्ते लोकजननी ८३-टि०
 नमस्ते वगलादेवी २६-१
 नमस्ते वृषभारूढ ६४-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश २६-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ८१-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ६८-२
 नमस्ते सिद्धससेव्य ७१-२
 नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ ११-२
 नमामि वगलां देवी ६७-१
 नमोऽस्तु मन्त्रागमकोविदाय २१-२
 नागवल्लीदलेनैव ६२-१८
 नागवल्लीदल चैव ६३-२१
 नातः परतरो योगी १०५-३३
 नानाकृत्त्रिमदोषं च ८६-३३
 नानादेहज्जरोगाश्च ४५-१६
 नानामन्त्रेषु मन्त्रं वा १२-३
 नानारोगविनाशार्थं ६५-८
 नानारोगहरं चैव १६-४
 नानारोगैः कृत्त्रिमैश्च १५-१७
 नानालङ्कारशोभाढ्यां ७३-१
 नारदो ऋषिरेवात्र १७-१३
 नारी हृष्ट्वा मानसेन ७०-४५
 नाशयेदाशु तरसर्वं ८६-२७
 नि क्षिपेत्सप्तरात्र तु १६-१४
 निःक्षिपेन्नवभाण्डेषु ७-१४
 निःक्षिपेन्मन्त्रपूर्वं च ५३-३७
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु ८६-३२
 निक्षिपेद् रविवारे तु ८५-१६
 निक्षेपं लभते पुत्र ८३-टि०-२०
 नित्यं च त्रिसहस्रं तु ६२-४
 नित्यं चैव सहस्रं तु ८६-३०
 निघानं लभते तस्य ८०-२०
 निघाय पादं हृदि वामपाणिना ३१-१

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
निम्बार्ककुमुमेनाप	२२	२७	पञ्चाङ्गविविना स्नात्वा	६	५
निम्बार्कपत्र, जद्रावै	२६	८	पञ्चाशच्छान्तिकर्माख्ये	६६	१६
निम्बपत्रद्रव चैव	२५	२३	पञ्चाशदुत्तरं पञ्च	३८	१३
निम्बपत्रद्रवेणैव	४८	२७	पचाशद्दूर्ध्वं मन्त्रस्य	८७	६
निम्बार्कपत्रहोमेन	१६	२४	पञ्चास्त्रमन्त्रसिद्धिर्हि	४३	३६
निर्मत्सर निरालम्ब	५	२०	पञ्चास्त्रशस्त्रविज्ञानी	६६	२७
निवीर्यो जायते सद्यो	३८	१८	पञ्चास्त्रोद्धारमतुल	३८	७
निवेदयेत् पायस च	६५	११	पञ्चास्त्र पञ्चकोरोपु	३२	६
नेत्रवाण पुनः पञ्च	१२	१०	पञ्चास्यदेवतामन्त्र	३८	१४
नेत्रलक्ष जपेन्मन्त्र	६५	१६	पञ्चेन्द्रियैश्च सञ्चार	३	२८
नेत्रायुत तर्पणेन	२७	११	पत्रं विभोतकोद्भूत	४६	टि०
नेत्रायुत भवेच्छम्भु	२८	टि०	पद्मजो नारदो विद्या	२	१५
नेत्रायुतं हूनेद् घीमान्	७५	१५	पय पिवति वा सा स्त्री	७८	२३
नोत्पादयेत् कामनया	३६	टि०	परप्रजोपसहारी	५७	१
नो देय (या) विद्यया विद्या	५	१७	परप्रयोगकालेषु	५५	१६
न्यासध्यानादिकं सव	२६	६	परप्रयागविध्वसे	६५	६
न्यास वद्या च वगला	८१	६	परमन्त्रप्रयोगेषु	१३	२४
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि	१७	८	परविद्याच्छेदनं च	२	१६
			परविद्याभक्षणस्य	५६	२४
			परविद्याभक्षणी च	५४	१२
			परविद्याभक्षिणी ता	५७	टि०
			परानुष्ठानहरण	३	२०
			पर्यायान् त्रियते शत्रु	७५	१६
			पलाशकुसुमेनैव	२३	२१
			पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्	८८	११
			पलाशमूलमाश्रित्य	८७	१०
			पलापृकं च प्रत्येक	२८	२०
			पाठीनेत्रा परिपूर्णावकत्रां	१४	१
			पादादिमूर्द्धं निपर्यन्त	१०	टि०
			पादो प्रसार्य तत्कन्या	३५	१३
			पानपात्रं च शुद्धि च	८१	८
			पानपात्रं वैरिजिह्वा	५७	५
			पाशवीजं ततोच्चार्य	७८	टि०
			पाशवीजमतोच्चार्यं	७७	१८
			पाशाङ्कुशं च विलिखेद्	६२	११
पक्षे वाय त्रिसप्ताह	६२	२१			
पक्षाद् वा मासयोगेन	८६	३४			
पक्षान्मा रणमाप्नोति	२५	१७			
पक्षमात्रं द्भवेच्छत्रो	५६	२४			
पक्षिराजाय चोच्चार्य	६१	टि०			
पञ्चकोरणं लिखेन्मन्त्र	६३	२५			
पञ्चकोरोत्वेवमेत	३२	११			
पञ्चक्रमसमायुक्ता	६६	२३			
पञ्चक्रोशप्रमाणेन	३४	२५			
पञ्च पञ्च करे रोप्य	५२	३१			
पञ्चब्रह्ममयैर्मन्त्रै	८	२२			
पञ्चमी चैव कर्तव्या	७०	३७			
पञ्चमेपु च कोरोपु	३२	१०			
पञ्चविंशच्च पञ्चाशत्	१०४	३०			
पञ्चविंशतिभिर्मोक्षः	६५	१७			

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
पाशाङ्कुशान्तरितशक्ति०	६७	८
पाशाङ्कुशेनान्तरितः	५५	१३
पिचुमदतरोर्मूले	६२	८
पित्तरोगी भवेच्छत्रु	२६	२८
पीतपुष्पैश्च जुहुयात्	६७	३८
पीतयज्ञोपवीतस्तु	६५	११
पीतवर्णसमासीनां	१०२	१
पीतवर्णा मदाघूर्णा	३७	१
पीतवर्णा मदाघूर्णा	११	१
पीतवासामते पुत्र	६६	१३
पीताम्बरधरा देवी	१६	१
पीताम्बरधरा सोम्या	४४	१४
पीताम्बरा दक्षिणे च	१२	१२
पीताम्बरा लङ्कृतपीतवर्णा	२१	१
पीतावरणभूषी च	६५	११
पीताशनी पीतभक्षी	१०४	२५
पीताशी पीतवाणी च	६६	२२
पीनोत्तुङ्गजटाकलापविलसद्०	६०	१
पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्०	६	१
पुत्तलीं प्रेतवस्त्रेण	५२	३३
पुत्रवान् जायते मर्त्यो	२७	१६
पुत्रवान् जायते लोके	८३	२४
पुत्रो देय शिरो देयं	७८	टी०
पुनः पूजा प्रकर्तव्या	६	१६
पुनर्भो मनिशाका ले	१६	१२
पुनश्च मन्त्रयेत्ताम्र०	६३	२३
पुरश्चरणकाले तु	३१	२३
पुरश्चरणकृत्सिद्ध०	४	६
पुरश्चर्यां विना मन्त्रं	१७	१६
पुराणज्वरमत्यग्र	२७	१३
पुलिन्दकन्यका चैव	३७	२८
पुष्पवाट्यां जपेन्मन्त्रं	८३	टि०-२२
पुस्तके लिहितामन्त्रान्	४	३
पूजयेद्यत्रराज च	२६	३
पूजा शैकानिकी नित्य	१७	१८

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
पूजाधारण्यन्त्रज्ञ-	६	२
पूजायत्र क्रमेणैव	३३	१४
पूजायंत्रमिदं पुत्र	२२	६
पूर्ति चार्द्धं पल नित्य	२४	७
पूर्वभागे तु पचास्त्र	१०४	२१
पूर्ववत्पूजयन्त्र	२३	२२
पूर्ववन्नवबीज च	५४	६, १०
पूर्ववन्न्यासविद्या च	४३	३३
पूर्ववन्न्यासविद्यां च	४१	१०
पूर्ववत्लेपन चैव	२५	२१
पूर्वोक्तविधिवत्सध्या	१७	२८
पूर्वोक्तं यन्त्रमालिख्य	२३	३
पूर्वोक्तां न्यासविद्यां च	४४	१३
पैठोद्रव्येण जुहुयान्	४८	१६
पीरुपैणैव सूक्तेन	८	२१
प्रजपेद् बगलायाश्च	७६	टि०
प्रजा बुद्धि श्रिय चैव	८६	२६
प्रणव वह्निजायां च	६६	२४
प्रणीता प्रोक्षणीपात्र	६७	३६
प्रतिवादि भवेत्स्तम्भो	३३	२२
प्रत्येक त्रिसहस्रं च	४५	२४
प्रथमं बगलाबीज	५६	५
प्रदिक्षणत्रय कृत्वा	५८	१०, १४
प्रपञ्चस्तम्भन कृत्वा	३६	२६
प्रयोगशान्तिर्न भवेन्	६०	३८
प्रयोगादीनि सर्वाणि	८३	१६ टि०
प्रयोग चैव न भवेद्	३४	२६
प्रयोग चोपसहार	२	१७
प्रयोग तर्पणं चैव	७१	३
प्रस्थ चैव चतुर्विंशं	७	११
प्रस्थानज्ञानपारीणां	४	१०
प्रस्फुरद्वितीय चैव	४१	१५
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	५१	२३
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु	६४	टि०
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	६६	२४

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
प्राणप्रतिष्ठां यंत्रस्य	६२	१०
प्राणिनां प्राणहरण	१५	२०
प्रातःकाले भक्षयित्वा	८८	२०
प्रादेशं शतहोमे च	१५	१२
प्राप्नुयाच्छत्रमुद्दिश्य	५६	टि०
प्रियङ्गुशालिगोधूम	७	१०
प्रेतभस्म रवौ ग्राह्यं	१६	१५
प्रेतम षडे लिखेन्नाम	५०	११
प्रेतवस्त्र रवौ ग्राह्यं	६४	२६
प्रेतवन्धो प्रेतकाष्ठे	५१	१६
प्रेताग्नी प्रेतकाष्ठे तु	५०	१२
प्रेताग्नी प्रेतकाष्ठे च	१६	८
प्रेताग्नी रजकार्गनी च	७५	२४
प्रेताङ्गारमपी (यी) कृत्वा	५०	३
प्रेतान्न प्रेतभस्म च	२७	१०
प्रेतान्न प्रेतभस्म च	२४	१५
फ		
फलितं पुष्पितं चैव	५८	१३
फलित पुष्पित वाथ	८५	२४
ब		
बगलाबीजमध्यस्थं	५१	२२
बगलामत्रसिद्धिस्तु	३४	२४
बगलामुखिपत्र चोक्त्वा	५९	६
बगलामुखिपद चोक्त्वा	४०	४
बगलामुखीपद चोक्त्वा	३६	२१
बगलाया विना मन्त्र	३४	२७
बदरीकण्टक चैव	८४	४
बदरीमूलतो गत्वा	५२	२८
बन्धनं त्रिपुरश्चैव	६६	२०
बन्धककुसुमाभासां	४०	१
बाणायुत जपेद्दीमान्	२४	४
बालभानुप्रतीकाशा	७६	१
बिन्दुं त्रिकोणं वृत्तं च	२१	४

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
बिन्दुत्रिकोणषट्कोण	७८	३
बिन्दुना भूषित पुत्र	६१	टि०
बिन्दुपात्रयुता पूजा	६६	२७
बिन्दुमध्ये च सम्पूज्य	३२	३
बिन्दुमध्ये लिखेदबीज	२१	टि०
बिन्दुमात्रं गृहीत्वा तु	७०	३५
बिभीतकसमिद्धिर्वा	१५	२३
बिभीतकोद्भूत पुष्पं	२२	१६
बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठी च	१७	१२
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां	१८	१
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां	६०	१३
बीज च बगलाबीज	३६	२६
बीज च बगलाबीज	४३	३२
बीजपञ्चकमुच्चार्य	४०	५
बुद्धिभ्र शो भवेत् सद्यो	६१	२१
बुद्धिशब्द ततोच्चार्य	१६	६
बुद्धि विनाशयोच्चार्य	४२	३०
बुद्धि विनाशय चोक्त्वा	४१	१८
बृहद्भानुमुखीवाण	६५	१५
बृहद्भानुमुखीवाण	६७	३०
ब्रह्मविष्णुमहेशाना	३७	५
ब्रह्मस्थाने तालुदेशे	५२	३०
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय (न्दोऽस्य) १२	७	७
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय	६७	११
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली	८७	३
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या	२	६
ब्रह्मास्त्रायपद चोक्त्वा	२६	४
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्	६०	१७
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्	१३	२२
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्	१७	१७
ब्रह्मीरस समादाय	८६	३२
भ.		
भक्षयुगम ततोच्चार्य	६०	७
भक्षयेत् प्रातस्तयाय	८८	१८

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
भक्षयेद् वदरीमात्र	६२	१३	मनसा त जपन्मन्त्रं	५७	४
भगाकारे सुकुण्डेऽस्मिन्	६०	१६	मनोपहारिणी चोषत्वा	४४	६
भजेऽह कालिका देवी	८८	१६	मन्त्रजीवनविद्या च	२	१०
भजेऽह चास्त्रवगलां	६०	१४	मन्त्रान्ते च प्रकर्तव्यं	४३	३८
भजेऽह स्तम्भनार्थं च	४१	११	मन्त्रमध्यापयेत् सम्यक्	६	३
भवेद्विद्याविहीनोऽपि	५६	२८	मन्त्रेत् त्रिसहस्रं तु	८६	३०
भुजागशोणितेनैव	२८	टि०	मन्त्रयेन्निम्बपत्रेण	५२	२५
भूतप्रेतपिशाचाद्याः	२२	१३	मन्त्रराजस्य गायत्री	३१	२२
भूताविपरित चं च	६४	४	मन्त्रसन्ध्या विना मन्त्र	११	२६
भूपुर वृत्तायुग्म च	६३	२३	मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति	८८	१२
भूर्जपत्रे लिखेन्नाम	५०	७	मन्त्रमिद्धिर्भवेत् क्षिप्रं	३१	टि०
भूशुद्धि भूतशुद्धिञ्च	१२	६	मन्त्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र	३६	३०
भृगुवारे च सगृह्य	६४	३	मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो	६०	१८
भृगुवारे च संगृह्य	६६	२०	मन्त्रादौ तव बीजपूर्वकमथ०	८७	१
भैरवीं बीजमाद्य च	३०	१७	मन्त्रि त जुहुयान्मन्त्री	५२	टि०
भौमवारे निशानग्नौ	१८	२६	मन्त्रेण सिद्धोऽसिद्धोऽपि	५६	३१
भ्रमज्ञान व्यपोहति	२८	२१	मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	२६	३
भ्रष्टराज्य लभेत्पुत्र	८२	१६	मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	३६	२०
भ्रान्तचित्तो भवेच्छत्रु	७३	२२	मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	५४	३
म			मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	६७	५
मण्डलज्वररोग च	८६	२४	मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	१६	३
मण्डलद्वययोगेन	२४	६	मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि	४४	३
मण्डलाच्छत्रु मन्मोह	६१	२५	मन्दापित्तमन्दबुद्धिश्च	२०	२६
मण्डलान्नाशमाप्नोति	१०	३४	ममैव हृदयेऽयुक्त्वा	७८	२०
मण्डलान्नाशमाय ति	६१	३०	मदिनी सर्वशत्रूणां	६६	२४
मण्डले वगलादीपो	१०४	२४	मल्लिकाकुमुभेनैव	४७	१२
मत्तङ्गमुनिनोक्त च	३७	३०	महाक्रान्तो भवेन्नो चेन्	५६	३३
मदिर,मोदवदना	८१	८	महापाशुपताक्रान्त	१६	२
मधुकपुष्पसन्मिश्र	६८	१६	महापाशुपताक्रान्त	१	४
मध्वाक्त छागमांस च	४७	१६	महापाशुपतादीनां	१०२	२५
मध्ये एकाक्षरीमन्त्रं	१०	११	महाविषे तैजसे तु	१०३	१२
मध्ये देवी समावाह्य	७	१५	महास्तमनमाप्नोति	२४	१०
मध्ये लिखेन्महामन्त्र	७६	४	महेन्द्रपदनिर्नाशे	१०३	१४
मध्ये सुधाविषमणिमण्डप०	१	१	मातभञ्जय मद्भिपक्षवदनं	११	२४
			माध्वीद्रव्येण जुहुयात्	४८	१८

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

मानो लघुतरश्चैव	७७	६
मायादि प्रजपेत् पुत्र	३१	२१
मारणो चाष्टकोणे तु	१४	६
मारण भ्रान्तिरुद्वेग	२	१३
मारणं मण्डलाच्छत्रो	४६	३४
मारणं स्तम्भवाणं च	४२	२६
मार्जारबालरोमाञ्च	८५	१८
मालामन्त्र ताक्ष्यविद्या	६१	टि०
मासान्मृत्युवशो भूत्वा	५१	१४
मानेन शत्रुमरण	२६	२८
मांस सपुटमयुक्तं	४७	१५
मुदगर दक्षिणे पाश	१०	१६
मुकाश्च कुस्ते प्राजान्	२८	२२
मूलमन्त्रेण चान्यर्च्य	३५	१५
मूलमन्त्रेण सम्पूज्य	२२	१०
मूलेन मन्त्रित तोय	१०	१६
मुगाणा चत्र शत्रूणां	८६	२५
मृत्युञ्जयजपं कृत्वा	६८	६
मैत्रस्य कलहोत्पत्ति	१५	१६
मोक्षार्थं च गुरु यत्नात्	५	१६
मोहिनीद्रवसमिधं	२६	६
म्रियते न च मन्देहो	७४	१३
म्रियते नात्र सन्देहः	४६	टि०
म्रियते सप्तरात्रेण	८५	२३
य		
यत् परस्मै न वक्तव्य	६६	२७
यत्र कुत्रापि रिपव	५५	२१
यत्र गत्वा समासीनः	५६	३२
यथोक्तबुण्डेषु हुनेद्	६७	३४
यदा शत्रुभयोत्पन्नं	६७	४
यन्त्रप्रयोगं यमशासने कलो	२१	३
युवतीं च मदोद्विक्तां	८१	७
ये (य इ)च्छन्त्याकर्षशान्त्यादि	३	२२
ये वा विजयमिच्छन्ति	३	२१

योगिनीकोटिमहिती	१००	१
योगिनी पूजयेत् पश्चात्	६८	२१
योगिनी पूजयेत् पश्चाद्	८२	१२
योगिनी वीरपूजां च	५५	१८
योगोऽय कथितः पुत्र	१०१	१७
योषिच्छुद्धिद्रव्यपूजा	६६	२६, टि०
योषिदाकर्षणासक्तां	६८	१
यः करोत्यर्चनं चैव	३६	२६
र		
रजते स्वर्णपट्टे वा	२२	८
रणमन्त्रे सवकर्मा	१०१	१६
रत्नसिंहासना वन्दे	१०	टि०
रत्नायुतं तर्पणेन	२७	१६
रम्भोरुपादपद्मा ता	६८	१४
रवी गुरो भृगावर्ज	६	४
रवी रात्री च नि क्षिप्य	२०	२५
रवी रात्री च सग्राह्य	८५	१६
रवी रात्री च सलिख्य	२०	२२
रवी रात्री शत्रुगेहे	८५	१३
राजराजः स वै श्रीमान्	३७	२
राजलाभो भवेत्तस्य	८३	टि० २३
राजस चैव तद्विद्याद्	५	१५
राजा चैव यथो भूत्वा	८३	टि० २१
राजा वा राजपुत्रो वा	३१	टि०
राजीलवणमादाय	१८	३
राजीलवणसंयुक्त	१८	२४
रात्री पूजासमायुक्ती	६१	२८
रात्रीहोमं च कर्तव्य	६८	१७
रिपुन्धो भवेत् पुत्र	७२	२१
रूपयौवनवाच्छत्रुं	६१	२४
रूपाभिमानिनो ये च	५५	२३
रूपिणीपदमुच्चार्य	५४	६
रेफयोगान्महेशानि	६६	१६
रेफहीनां जपेद्विद्यां	६६	१७

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

रोगी च जायते मासाच्च	४८	२६
रोपयेत् पादयुग्मे तु	५२	३२
रोहिणीश्रवणं चैव	६	५
रौप्ये वा स्वर्णपट्टे वा	६२	१६
ल		
लक्षं जप्त्वा मनोरेवं	५८	१६
लक्षमेकं जपेन्मन्त्री	६०	३५
लक्ष्मीवान् जायते पुत्र	८२	१४
लक्ष्मीः शान्तिस्तथा पुष्टिः	१४	५
लघुषोढा च विन्यस्य	५५	१४
लाटार्चनं चावलम्ब्य	३५	६
लिखित्वा शुभलग्ने तु	७६	७
लौकिके चैव गुप्तात्र	६६	२३
लं बीजं चैव हं शक्तिः	१७	१४
लं बीजं ह्रीं च शक्तिश्च	१२	८
व		
वकुलं पूजयेद्यन्त्रं	८०	१३
वक्ष्ये होमविधिं सम्यक्	७४	३
वक्ष्येऽहं चोपसहारं	५३	३५
वक्ष्येऽहं चोपसहारं	८८	१७
वक्ष्येह तत्र सर्वञ्च	७७	१४
वक्ष्येह पञ्जरं न्यासं	१२	११
वक्ष्येऽहं विधिवत्पुत्र	६६	२८
वक्ष्येऽहं स्थण्डिलं ह्रीं मं	१४	२०
वगलामातृकान्यास	६६	१६
वगलाष्टाक्षरीमन्त्रं	८४	७
वगलास्त्रकृतं यद्यत्	८६	३१
वगलास्त्रं मध्यमागे	१०४	१६
वगलास्त्रमिदं पुत्र	५६	३
वगलाहृदयेनैव	७६	११, १२
वगलाहृदये मन्त्रं	७६	३, ६
वज्रार्कक्षीरमिश्रं च	२७	६
वज्रीक्षीरं त्रिकालं तु	२५	२०

वडवानलनामानं	६५	१३
वनेचरास्तामसजन्तवश्च	५८	२१
वन्दे पाशुपताध्यक्ष	७३	२
वन्द्या पूत्रवती चैव	७८	२२
वन्यैश्च मल्लिकापुष्पं	२३	२६
वल्गोपलाशमूले तु	६३	१४
वशीकरं तु सम्मोह	२४	८
वशीकरणकार्येषु	१७	२१
वशीकरणसम्मोहे	१४	६
वशीकरणसम्मोही	८२	१७
वश्यं जनानां सर्वेषां	१५	१८
वह्निजायासमायुक्त	४०	७
वह्निजायां समुच्चार्यं	१७	७
वह्निबीजेन सवेष्टय	२०	२३
वह्नी यद्वत् प्रविशति	३३	२१
वाक्पाणिचदनाक्षणां च	५८	१६
वाग्बीजं च ततो	८७	५
वाग्मवादि जपेन्मन्त्र	३०	१३
वाङ्मयं चैव वैचित्र्यं	५७	३
वाञ्छं मुखं पदं चोक्त्वा	३६	२२
वाणी चैव रमा गौरी	७	१६
वादी मूकति रङ्गति क्षितिपतिः	१३	१६
वाममार्गक्रमेणैव	१३	२३
वामोहपरि विन्यस्य	८	२५
वायव्ये च मदोन्मत्ता	१२	१३
वाराहं शक्तिवाराह	३०	१२
वाराहं ब्रह्मलाबीज	३८	१२
वाराहीबीजमध्यस्था	३०	१४
विह्वराहमजारोमः	७२	१३
विघ्नराजं समभ्यर्च्यं	६१	२६
विदारं विवशो भावाद्	४८	टि०
विद्यामाकर्षणार्थं च	३३	२३
विद्यारूपे भवेत् पुत्र	८	टि०
विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र	८०	१४
विद्वे पण्ये च जुहुयात्	१८	२३

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

विद्वेषणे तु जुहुयाद्	१४	८
विद्वेषणे स्तम्भने च	१४	११
विना च स्तम्भनीविद्यां	२	१४
विप्रचाण्हालयोः शत्य	८४	१२
विभीतकतरोर्मूले	६२	६
विराट्स्वहृषिणीं देवीं	८३	१
विरामय पद चोक्त्वा	४४	८
विलिखेतादर्यंवीजं च	५४	५
विशदमिः स्तम्भनं च	६५	टि०
विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु	७६	२
विश्वमेतद्भक्तिमय	५७	२
विश्वाराध्य भवानीषा	६४	२
विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या	६४	१
विषतिन्दुकपुष्पेण	२२	१६
विषतिन्दुकमूलं च	६२	११
वीणापुस्तकसयुक्ता	८८	१५
वीर विद्रूप विश्वेश	३४	२
वीराम्नायमहादेव	३६	१८
वृक्षमूले जपेन्मन्त्र	५०	६
वृत्तोपु विलिखेत्पुत्र	२१	७
वेतालडाकिनीप्रेत	४१	१३
वेदलक्ष जपं कुर्यात्	६८	१५
वेदवेदाङ्गपारज्ञ	४	७
वेदवेदांगपारीण०	७	१६
वेदाक्षरी ततो जाप्यः	१०२	२०
वेदाक्षरीमनुपुरं	१०२	२१
वेदादि विलिखेत् पूर्वं	८१	३
वेदादि विलिखेत् पूर्वं	६७	६
वेदायुत तर्पणेन	२८	२३
वैदिकं च परित्यज्य	५६	२७
वैरिजिह्व भेदानार्थं	४५	१५
व्यालव्याघ्रादयश्चैव	५८	१८
घणन क्रियते राघु	२८	२५
श		
शक्ति वाराहमुच्चार्यं	६०	८

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

शतमष्टोत्तर चैव	५१	१५
शतमष्टोत्तरशत	१०४	२६
शतवार मन्त्रयित्वा	८८	२२
शतवार मन्त्रित च	६३	१६
शताक्षरीमहामन्त्र	४४	११
शतावर्त्तिनमात्रेण	१०१	१०
शतोत्तर भवेद्विशद्	४१	१६
शतोत्तर मंत्रवीज	५४	११
शत त्रिशतक पुत्र	६६	१७
शत वाऽय सहस्रं वा	३५	१६
शतं सहस्रमयुतं	२०	२८
शत्रवश्च पुरुश्चर्या	५५	२०
शत्रुक्षय भवेत् सद्यो	६१	१६
शत्रूणां मारणा पुत्र	७३	२५
शमन्तकुसुमैर्नैव	२३	२०
शमीमूले हुनेत्पुत्र	७५	१६
शमीमूल समाश्रित्य	७५	२३
शयनीकृत्य कन्यां च	६६	३२
शल्यदारुमय तत्र	६२	१४
शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र	१०३	६
शाकुनादिपु मन्त्रेषु	७	२०
शाश्वितवश्यस्तम्भनानि	१५	१६
शान्ताद्य (न्यथै) जुहुयाच्छालि	१७	२०
शालिसवतुं घृतोपेत	४७	६
शिवबीज वह् नियुक्त	६६	११
शिष्टाक्षराणि कोरोपु	६१	५
शिष्यस्य हृदयं चैव	८	२७
शीतोष्णे समतां कृत्वा	३६	११
शुभशुक्लादियोगे तु	१०४	१८
शुश्रूषया गुरु सम्यक्	५	१३
शून्यागारे जपेदेव	६३	१७
शेषभापापतिप्रहय.	७४	७
शेषभापापति साक्षाद्	६४	२७
शमशाने प्रजपेन्मन्त्र	६३	१६
श्रद्धाभञ्जितसमोपेत	५	२१

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
श्रीकण्ठ श्रीगराधार	३१	२	सद्यो नैर्मल्यमाप्नोति	८८	१६
श्रीखण्डरोचनागरु	६६	२१	सद्यो यौवनहीन तु	५६	२५
श्रीबीज भुवनेशी च	७७	१६	सद्यः स्तम्भनमाप्नोति	६१	२३
श्रीवीणादि जपेत् पुत्र	३०	१५	सन्तपेद्दीपशिखया	२५	१६
श्रीमायामातृका चैव	१७	६	सतपेद्दीपशिखया	५१	टि०
श्रीसूक्तेर्नैव जिह्वायां	६३	३४	मतोप जनयेत्तस्य	७७	१३
श्रेष्ठराज्य भवेत्पुत्र	८०	१६	सध्यामत्रेषु सर्वेषु	११	२६
श्रोत्रालीगण्डभ्रूमध्ये	५२	२६	स पतितो भवेत् पुंसा	३६	२२
श्वानवज्ज्वलते शत्रु	२८	२६	सपर्णा क्षालयेत् क्षीरैः	५२	२६
			सपादकोटित्रिपुरा	६७	३१
ष			सप्तकोटिमहामन्त्रं	६७	६
षट्कोणकुण्डे जुहुयान्	४५	२६	सम सम रिपूच्छिष्ट	५१	१७
षट्कोणमध्ये विलिखेद्	६१	टि०	समस्तकर्मणा ध्वसे	६४	३
षट्कोणां चाष्टकोणञ्च	१४	४	समस्तविपनिर्नाशि	१०३	८
षट्कोण चाष्टकोण च	६१	४	समस्तस्तम्भन पुत्र	६७	३२
षट्कोणे वा लिखे-मन्त्र	७६	५	सम्पूजयेत् पञ्चमी चैव	७०	३६
षट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्य	१०१	६	सम्मोहनार्थं प्रजपेत्	३०	११
षट्पञ्चकोटिचामुण्डा	३७	६	सम्यग्ज्ञान महेशान	४६	२
षट्प्रयोगास्त्रयो विद्ये	२	११	सर्पमण्डूकयोः शल्य	८५	१७
षट्सहस्र देवकुसुम	४७	१३	सर्वकर्माणि निर्नाशि	१००	६
षट्सहस्र हुनेत् पुत्र	४५	२१	सर्वत्रैवोन्नत पुत्र	१५	१५
षट्सहस्र हुनेत् पुत्र	४६	३	सर्वं न्यासविधिं कृत्वा	१३	१६
षट्सहस्र हुनेत्पुत्र	४७	८	सर्वमन्त्रमयी देवीं	५५	१५
षोडशाङ्गुलमान तु	७	६	सर्वशब्दं ततोच्चार्यं	६१	८
षोडशरूपचारंश्च	७	१३	सर्वशब्दं ततोच्चार्यं	४१	१६
			सर्वशब्दं ततोच्चार्यं	४२	२८
स			सर्वाङ्गसुन्दरीं श्यामा	३५	७
स कल्पमुखमागी स्यात्	६७	३३	सर्वाङ्ग वायुना शत्रुः	६१	२७
सङ्कल्पपूर्वक मन्त्र	१७	१५	सर्वाङ्गे लेपनं कुर्यात्	३५	११
सग्रहेत्क्षालयेत् सम्यक्	२२	११	सर्वाविषयशोभाहृत्वा	५४	१
स जीवन्नेव चाण्डालः	५३	४३	सर्वे स्वं देहजं मह्य	५६	३०
संचारवान् भवेत् पङ्कः	७६	टि०	सर्पपास्त्रिकदूर्वेश्च	२४	११
स तु भापापतिः साक्षाद्	५७	६	सर्पं लवणं चैव	८४	३
सत्सम्प्रदायविधिना	३	२३	सर्पं लवणोपेतं	४७	७
सद्यो नाशनमायान्ति	४५	२०	सविता च ऋषिः श्यातो	४२	३१

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
सविषं जलसंयुक्तं	६४	५	सहरेच्छन्तिमाप्नोति	५३	४२
स शत्रुः सप्तरात्रेण	१६	१३	सहारार्चा कामरूपे	६६	३०
सस्यस्तभे दासनाशे	१०३	१५	स्तव्यमायां च वाग्बीज	४४	४
सस्याविभिनश्यन्ति	५८	१२	स्तव्यमायां ततोच्चार्यं	७७	१७
सहस्रं ध्यानपूर्वं तु	५१	१३	स्तव्यमाया तारक च	४२	टि०
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं	७६	८	स्तव्यीकरणनिर्नाशो	१०३	६
सहस्रं द्विनयं चैव	४२	२४	स्तम्भद्वयमुच्चार्यं	४४	६
सहस्रवारं विधिवन्	५३	३८	स्तम्भद्वितय चोक्त्वा	४१	१७
सहिरण्योदके पूर्वं	८	२६	स्तम्भनार्थं जपेत्पुत्र	३०	टि०
सांख्यायनमते देवि	६८	५	स्तम्भनास्त्रपद चोक्त्वा	८७	८
सांख्यायनमते देवि	१००	२२	स्तम्भनास्त्रमयीं दवी	४३	३५
सांख्यायनमते देव्या	६८	४	स्तम्भनेन विना शान्ति	२	१२
साधयेत्कुलमार्गेण	३	२५	स्तम्भनेषु हुनेद्दीमान्	१७	२२
साधु साधु महाप्राज्ञ	१	७	स्तम्भन च भवेत् पुत्र	४५	२३
सान्तं रान्तसमायुक्तं	१२	६	स्तम्भन च भवेच्छीघ्रं	१६	१७
सायमीपास्थि कसंघ्यं	११	२५	स्तम्भयेत् नदीवेग	५८	१७
सिद्धिदो जायते षत्स	६१	२२	स्तम्भित मन्त्रयोगेन	८८	२१
सुखापेक्षेण यत् कुर्याद्	३६	२५	स्थापयेच्च कपाले तु	२०	२४
सुगन्धपत्रपुष्पादीन्	७	१८	स्थापयेच्चुल्लयषोभागे	५१	२१
सुषाब्धौ रत्नपर्यङ्के	३४	१	स्थापयेत् तेन मंत्रेण	५३	१६
सुन्दर्या कालिकाया च	१०४	३१	स्थिरमाया इति प्रोक्त्वा	६६	१२
सुमन्तकुसुमैराज्यं	१५	२२	स्थिरमाया द्वितीयां तु	६६	१५
सुरया तर्पणं पुत्र	१२५	४२	स्तुत्या क्षीरेण सयुक्त	५१	२०
सुवर्णशैलसुप्रहय	६८	१३	स्फुरद्वय तथा चोक्त्वा	४४	५
सुवासिन च तैलेन	२५	६	स्फुरद्वय समुच्चार्यं	८७	७
सुवासिनीं ब्राह्मणांश्च	६६	१६	स्फोटकत्रणसयुक्तो	७४	१०
सूचिप्रयोगविश्वसे	६५	७	स्फोटव्रणाश्च जायन्ते	४६	३१
सृष्टि स्थिति च सहारं	३४	३	स्वप्रिया बिन्दुपात्र च	७१	४६
सौभाग्यचर्यासमायुक्तं	३	२६	स्वमन्त्राक्षरणी विद्या	२	१८
सौभाग्यार्चनकत्तूणा	३६	२३	स्वर्णविहासनासीनां	६२	१
सौभाग्यार्चाविधिश्चैव	६६	२५	स्वल्प वा बहुल चाथ	५	१४
सौभाग्यार्चा विना पुत्र	३६	१६	स्वामिन् सिद्धगुणाध्यक्ष	१०२	२
संक्षेपेन मया प्रोक्तु	८३	टि०			
संजपेच्च ततः पुत्र	६६	१८			
संस्कारेण विना मन्त्रं	३८	१६			
			हरिद्रापङ्कज वस्तु	६६	टि०

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

हरिद्रामयपुष्प च	६५	१४
हरिद्रां चाक्षमाला च	६८	१८
हरिद्राक्षमणि पीत	६५	१२
हरिद्राखण्डहोम तु	४७	१०
हरिद्राखण्डहोमेन	१६	५
हरिद्रातालक चैव	२४	६
हरिद्राभिः सुरक्ताभिः	१०४	२६
हरिद्राम्भस्तपेणेन	२७	१८
हरिद्राहोममात्रेण	६६	१८
हरीतकीश्च होमेन	४६	टि०
हस्तमात्रं भगाकारं	७५	१४
हारिणीति पदं चोक्त्वा	५४	८
हिक्वारोगो भवेत्तस्य	७२	१७

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

हृनेच्च पूर्ववत् कुण्डे	७५	१८
हृनेत् त्रिकोणकुण्डे तु	७४	५
हृनेद्दधानसमायुक्तः	४५	२५
'हृ फट् स्वाहा'-समायुक्तं	८१	४
हृतनष्टप्रणप्रादि	१०३	११
हृदये तु समुच्चार्यं	७८	१६
हृदि सन्नाम चालिख्य	५१	१८
हेमकुण्डलभूपङ्गी	१०	२०
हेलाकर्का चदला तूर्था	१०४	२२
हृत्स्तयाप्युच्चरेत् पुत्र	४२	२७
ह्रीं ह्रीं ह्रीं च ततोच्चार्यं	३८	६
ह्रीं ह्रीं ह्रींश्च ततश्चैव	३८	१०



